Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भारतीय गणराज्यका २०वाँ वर्ष

सं० २०२५ माघ शु० ९ रविवार दि. २६ जनवरी १९६९ को प्रातः स्टे. टा. ७।११ पर मकर लग्नमें भारतीय गणतंत्र का २० वां वर्ष प्रवेश होगा। इस समय की ग्रह स्थिति यह है—

गणतन्त्र वर्ष लग्न

गणतन्त्र जन्म लग्न

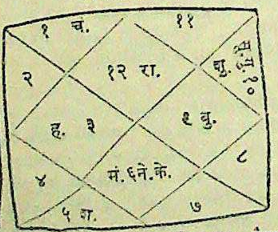

२० वें गणतन्त्र वर्ष लग्नमें अष्टमेश सूर्य, षष्ठेश बुधके साथ बैठा है, यह राजनैतिक साम्प्रदायिक आर्थिक चिन्ताओं से राष्ट्र को उद्विग्न करने वाला योग है। [illegible] और [illegible] में विशेष सावधानी आवश्यक है। वर्ष के पूर्वार्ध में [illegible] तक) भारत में प्रकृति-प्रकोप उग्र प्रदर्शन [illegible] (७ मार्च से १० सितम्बर [illegible] कहीं [illegible] तो कहीं बाढ़ से प्रजा त्रस्त होगी। सीमा विवाद [illegible] वैमनस्य के रूप में बढ़ेगा। श्रम-[illegible] विवाद और प्रान्तीय [illegible] होगा। इसी अवधि में सुरक्षा सैनिक व्यय बहुत [illegible] आक्रमण संभव है। काश्मीर समस्या [illegible] भारत में भयंकर षडयंत्र करेंगे। [illegible] केन्द्र और प्रान्तीय शासन [illegible] होंगे। [illegible] समस्याओं में [illegible] यथा—

[illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

बार्हस्पत्यमान से वर्तमान रुद्रविंशति में इस नये वर्ष का नाम 'दुन्दुभि' है, इसका फल पूर्व देशके लिए विशेष अनिष्टप्रद लिखा है। यथा—

"पूर्व देशविनाशः स्यात्तत्र दुन्दुभिवत्सरे"

दो वर्ष पहले सं २०२४ के पचांग में पृष्ठ ३४ पर हमने लिखा था—

" वर्तमान रुद्र विंशतिके इस रौद्र वर्ष से आगे के शेष ६ वर्ष क्रमशः दुर्मति रुधिरोद्गारी, रक्ताक्षी, क्रोधन और क्षय नामके होंगे। इनमें से कोई भी संसार के लिए शुभकारक नहीं है। नामसे ही फलकी कल्पना की जा सकती है। संहारकारिणी रुद्रविंशति के समाप्त होते-होते क्षय संवत्सर तक संसार की प्रमूल्य सम्पत्ति और अधिकांश प्राणियों का क्षय हो जाय तो आश्चर्य नहीं।"

इस नये वर्ष की ग्रहस्थिति को देखते हुए 'दुन्दुभि' वर्ष के अन्त तक भारत में भी 'रण दुन्दुभि' बजना सम्भव है। भारत के गणतन्त्र जन्म-लग्न में भी सं० २०२७ के आषाढ़ मास (६ जुलाई १९७०) तक तृतीयेश अष्टमेश शुक्र की महादशा रहेगी, यह शुभ नहीं है। मेष का शनि गणतंत्र जन्म लग्न से धनस्थान एवं जन्म-राशि पर नीच में रहेगा, अतः आगामी २-३ वर्ष का समय भारत ही नहीं, संसार के लिए कठिन कसौटी का है। गत डेढ़सौ वर्ष के इतिहास में जबजब भी मेष में शनि रहा तब कहीं न कहीं युद्ध उत्पातादि की ऐतिहासिक घटनाएं घटी हैं (१) सन् १८२१ से २४ मेष के शनि में अंग्रेजों से बर्मा असमका प्रथम युद्ध (२) सन् १८५१से ५३ लार्ड डलहौजी के समय बर्मा का द्वितीय युद्ध (३) १८८० से ८२ में अंग्रेजों का अफगानिस्तान से युद्ध (४) १९१० से १२ मेष के शनि में प्रथम महायुद्ध का बीजा-रोपण (५) सन् १९३९ मेष के शनि में द्वितीय महायुद्ध का प्रारम्भ। अब सन् १९६९ से ७१ तक मेष का शनि संसार में क्या कुछ करेगा यह भविष्य के गर्भ में है।

भारत के कोने-कोने से पंचांग प्रेमी अनेक सुविज्ञ पाठकों ने भारत के भावी चुनाव और मध्यावधि चुनाव के परिणाम तथा वर्तमान शासन तंत्र के भविष्य के सम्बन्ध में इस 'रजत-जयन्ती अंक' में विशद जानकारी चाही है। पाठकों की जिज्ञासा पूर्ति के लिए हमने भारत के कुछ मूर्धन्य ज्ञानवृद्ध वयोवृद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्यों के विचार भी प्राप्त किये हैं—उनमें से एक ख्यातिप्राप्त अनुभवी ज्योतिर्विज्ञानाचार्य का अभिमत हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। नामधामादि प्रसिद्धि प्रपंच से वे परे हैं, अतः उनकी आज्ञा न होने से नाम प्रकाशित नहीं किया गया।

देश, जनता, शासन सावधान रहे।

"देश की इस समय जो दशा हो रही है, उसे प्रत्यक्ष देखकर कोई भी [illegible] एवं तटस्थ विवेचक व्यक्ति आज यह सहज ही निर्णय कर सकता है कि हम किस दिशा की ओर प्रगति (?) करते जा रहे हैं, तथा हमारी भावी क्या होने वाली है। [illegible] दिखाई देते हुए ग्रहों की गति-विधि और गणना के माध्यम से कुछ [illegible] आवश्यकता नहीं रहती। किन्तु जो भावी दिखाई दे रहा है उसी को [illegible] भी [illegible] समर्थन करती है तो यह अधिक स्पष्ट हो जाता है कि हमारा [illegible] कितना अन्धकाराच्छन्न होने जा रहा है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

...वाले अन्धकार का सही स्वरूप समझने के लिए साधारण जनता अधिक चिन्तित बने यह स्वाभाविक ही है। विशेष रूप से देश की स्थिति और शासन के भविष्य जानने की उत्सुकता रहती है, इस लिए उस पर एक निगाह डालना जरूरी है, और वह सावधानी के लिए अधिक स्पष्ट होना जरूरी है।

यह तो स्पष्ट है कि हमारा केन्द्र और प्रदेशों के शासन का तंत्र स्वार्थ-पद-प्रपचों में, छापाधापी में उलझा हुआ है और समस्त प्रयासों के बाद भी कहीं न कहीं प्रकृति उससे इस बारे में आंखमिचौनी खेलती जा रही है कि सारे प्रयासों पर पानी फिर जाए। स्थिति सुधरने के बजाय विषम ही बन जाती है। जनता यह अनुभव करने लगी कि शासनतन्त्र नाम की कोई वस्तु भी है या नहीं ? और इस स्थिति को लाने में ग्रहयोग भी निरन्तर सहायक बनते जा रहे हैं। यह दशा जहां तक हमारी ग्रहों के मर्म समझने की क्षमता है—उससे प्रतीत होता है कि १९६९ के आधे भाग तक देश की दशा सतत गिरती ही जाएगी। आगामी जनवरी ६९ से लेकर ६ महीने का समय निरन्तर संकटों में फँसता जाएगा। चाहे वह मानव-कृत विपत्ति हो, या प्राकृतिक, देश की दुर्दशाका छुटकारा सम्भव न होगा। हां, सीमाप्रान्तीय संकट, संघर्ष और आतङ्क अधिक बढ़ता जाएगा। हम अपनेको विपत्तिमें घिरे हुए ही अनुभव करेंगे। वह कम हो, या अधिक, परन्तु वह व्यापक विपत्ति नहीं होगी, उससे हमारी आन्तरिकस्थिति बहुत नाजुक-निर्बल-और उलझनों से भरी हुई होगी। निर्बल हाथोंसे आन्तरिक कमजोरियोंके साथ जूझते रहना पड़ेगा। उसके साथ सत्ता संघर्ष भी होगा। आन्तरिक फूट जनता में ही नहीं, केन्द्र और प्रान्तोंमें भी होगी और सत्ता अपने स्वरूपको अस्तित्व हीन सिद्ध करती रहेगी।

पूछा जा सकता है कि आगामी सन् १९७२ के चुनावका क्या स्वरूप होगा ? कांग्रेसका भावी क्या होगा ? किन्तु ये बातें आगे की हैं, इसके पूर्व हमें यह समझना चाहिए कि क्या आगामी चुनाव होगा भी या नहीं ? हमारी आशंका स्पष्ट है कि देशमें जो पिछला चुनाव हो गया है यह अन्तिम चुनाव ही है। अब शायद चुनावका प्रसङ्ग आए ही नहीं। और कदाचित् (सम्भव कम है) आया भी तो सत्ता का स्वरूप ही सर्वथा पलटा हुआ दिखाई देगा। कोई पक्ष प्रभावशाली नहीं होगा। अनेक दलों की अन्त्येष्टि हो जाएगी। आश्चर्य नहीं कि सत्ताका कोई सर्वथा अभिनवरूप दिखाई दे, वह या तो सैनिक हो या अधिनायकवादी हो।

अभी इस बीच हमारे समक्ष कई प्रान्तोंमें मध्यावधि चुनाव आनेको है। उसमें भावी के चित्र की एक झलक हमें मिल जाएगी। यह सर्वत्र 'भानमती का कुनबा' होगा और विषमतासे भरा हुआ होगा, इससे प्रदेशों के शासनोंमें तो अस्थिरता होगी ही—पर केन्द्र भी अधिक निर्बल-लड़खड़ाता हुआ दिखाई देगा। १९६९ के पिछले भागमें जो ग्रहस्थिति बनती है उसमें अत्यन्त क्रान्तिकारी परिवर्तन चक्र चलता हुआ दिखाई देगा, यह कहीं हमारी स्वाधीनता की समाधि न बन जाये, यह गम्भीर आशङ्का उत्पन्न हो जाएगी। जिस समय नीचराशिमें शनि आयेगा वह स्वयं एक शासकीय क्रान्तिको जन्म देगा। यह भारत में ही नहीं विश्वमें एक भयंकर परिवर्तनकी आंधी लाने वाला होगा। और जिस समय नीचके शनि में उच्चका सूर्य समाविष्ट होगा; तथा जिस समय नीच के शनिके साथ नीचके सूर्य और उच्चके मंगलका समागम होगा वह समय हमारे देशके साथ विश्वके अनेकों महत्वपूर्ण राष्ट्रों और विशेषतः श्रमप्रधान राष्ट्रों एवं एशियामें अकल्पनीय तूफानका क्रान्तिकारी काल होगा-वहां अनेकों राष्ट्रोंके रंगरूप पलटते दिखाई देंगे। इतिहास नवीनरूप लेता दिखाई देगा। नक्शे ही पलट जाएंगे, अनेकोंका अस्तित्व भी स्वप्नवत् बन जाएगा। उत्थान-पतनों का यहां चक्र चलेगा। ग्रहों की विषम स्थिति से यह आशंका उत्पन होती है कि सर्वनाशी हथियारों का प्रयोग होना भी असम्भव नहीं, चाहे सहज घटना ही उस का ,निमित्त-कारण बन जाए। इससे भारतकी मुक्ति नहीं है। भारतीय जनताने पराधीनता देखी है, स्वाधीनताका स्वप्न भी लिया है; परन्तु १९६९ के अर्धभागके अनन्तर २।३ वर्ष आगेके समयमें शायद इस देशको कोई तीसरे स्वरूपको देखने का भी प्रसंग आ जाए तो असम्भव नहीं होगा। भारत की अनेकों समस्याएँ या तो समाप्त हो जाएँगी, सहसा परिवर्तन चक्रके साथ सुलझ जाएंगी, अथवा नये रूपमें समस्यासमूह बनकर समक्ष आएंगी। आन्तरिक एवं बाह्य संघर्षोंमें हमारा अस्तित्व खतरेमें पड़ता प्रतीत होता है। संघर्ष और विषमताके कारण १९६९ में भारत ही नहीं एशिया महाद्वीप तथा उससे सम्बन्धित राष्ट्र नए-नए आकस्मिक अकल्पित संकटसे गुजरते जाएंगे और उसी संकट समूहसे एक भीषण विस्फोट होगा, जो सर्वनाशकी ओर (मानवताको विनाशकी ओर) ले जाता दिखाई देगा। बाहर और भीतरके अनेक मानचित्र पलटते जाएंगे। विद्रोह अराजकताकी ओर ले जाता दिखाई देगा, यह १९६९ से १९७३ तकका काल है। १९६७ के आरंभमें ही हमने बतलाया था कि—"यह (पिछला) चुनाव देशकी स्थितिमें नवीनरूप प्रकट करेगा, अनेक मंत्रियोंका अदर्शन हो जाएगा और यह अस्थिरताका कारण बनेगा।' प्रस्तुत शासनका अभी १ वर्ष अस्तित्व तो रहेगा, किन्तु जड़ें हिलती हुई दिखाई देंगी। अधिकांश प्रदेशोंका पलटा हुआ रूप दिखाई देगा। आज यह स्पष्ट हो गया है, किंतु अब १९६९ में हिलती हुई जो जड़ें दिखलाई पड़ती हैं वे उखड़ने लगेंगी, और रूप विद्रोही हो जाएगा। केन्द्रका काया-पलट हो जाएगा। प्रस्तुत प्रधानोंका भावी अंधेरेमें पड़ जाएगा, आगेका भावी भीषण है, अन्धकारमय है। लगातार आगे संघर्ष विद्रोह बढ़ता जाएगा और आश्चर्य नहीं कि सत्ता का आसन डिग जाए। १९६९ से १९७१ तक आपत्तियोंसे घिरे रहना पड़ेगा। विनाश की ओर बढने का अवसर है, कोई प्रकाशका मार्ग १९७२ से पूर्व दिखाई नहीं देता। हां, उसके बाद यह देश सही मार्ग पर नए रूपमें आता दिखाई देगा। अभी १९६९-७० में अनेक मित्र शत्रु, और शत्रु मित्र बनते दिखलाई देंगे। वह चित्र कुछ और ही होगा, जिसकी कल्पना आज समयसे पूर्व देना सरल नहीं है। अभी सिवा संघर्ष और आन्तरिक अशान्तिके समाधानका मार्ग मिलना सम्भव नहीं है।

अभी १४ मार्च १९६९ को जब मीनका सूर्य राहु से युक्त होगा और २२ मार्च को मेषका शनि होकर १३ अप्रेल को मेषके सूर्यसे जुड़ेगा वह समय अन्दर बाहरके संघर्ष और अशान्ति को जन्म देने वाला खतरे का समय बन जाने वाला है, सावधानीके योग्य है। जगह-जगह जनता-शासन और सीमाएँ खतरेका विषय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बन जानेकी सम्भावना है। किन्तु, जो शासन ज्योतिष का महत्व स्वीकार नही करता, उसे सावधानीकी या खतरेकी सूचना क्यों सुनाई देने लगी ?"

वायु मण्डल वर्षा रोगोत्पातादि

इस वर्ष आर्द्रा प्रवेश लग्नमें लग्नेश शनि नीचराशिगत केन्द्रमें है और चन्द्रमा अष्टम भावमें सिंहराशिका है। वर्षारम्भमें ही कन्याराशिमें वक्रावस्थामें गुरुहर्शलका युद्ध (युति) हो रहा है। चान्द्रवर्षारम्भमें सूर्यग्रहण हो रहा है (भारतमें नहीं) मंगल वर्षारम्भसे ६ मास तक वृश्चिकराशिमें उत्पातक नेपच्यूनके साथ डेरा डालकर शनिसे षडष्टक योग बना रहा है, यह सब योग संसारके वायुमण्डल वर्षा उपज एवं जन स्वास्थ्यके लिए उत्तम नहीं है। प्रकृति-प्रकोप कहीं अवर्षण कहीं अतिवर्षण, कहीं भूकम्प, दुर्घटना अग्निकाण्ड, तो कहीं आंधी तूफानसे जनधनका विनाश करेंगे। मानवकृत विग्रह युद्धादि एवं प्रकृतिकृत दुर्भिक्ष उत्पातादिसे प्रजा त्रस्त होगी। असामयिक वर्षा होगी। ऋतुवैपरीत्य (शरदी में गरमी और गरमीमें शरदी) के लक्षण दिखाई देंगे। वैशाखसे आषाढ़ तक नगरों एवं जंगलों में भयंकर अग्निकाण्ड होंगे। शत्रुओं द्वारा तोड़फोड़की घटनाएँ भी अधिक होंगी। मरुस्थलमें भीषण जलसंकट उपस्थित होगा। इस वर्ष खण्डवृष्टि के योग हैं। प्रथम आषाढ शु० में कहीं साधारण वृष्टि होगी। पूर्वमें विशेष होगी। द्वितीय आषाढ शु० में सार्वत्रिक वृष्टि होगी। श्रावण भाद्रपद आश्विनमें कहीं अनावृष्टि तो कहीं अतिवृष्टिसे फसल को हानि होगी।

इस वर्ष यान दुर्घटनाएँ अधिक होंगी। हिमपात भूस्खलनसे विशेष हानि होगी। टिड्डी [illegible] भयंकर [illegible] [illegible] रोग फैलेंगे और फसलको हानि होगी। [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] उन्माद आदि रोगोंकी वृद्धि होगी। पूर्व [illegible] [illegible] [illegible] अधिक होगा। समुद्र में भीषण तूफान आयेंगे। [illegible] आंधी तूफान से वृक्ष धराशायी होंगे, छप्पर उड़ेंगे। मई जूनमें अग्निकाण्ड और विद्युत्पात आदि [illegible] भी हानि होगी। इन दैवी आपत्तियों का मूलकारण हमारे [illegible] महर्षियों ने अधर्म और अनाचारको बताया है। इस समय धर्मप्राण भारतमें [illegible] और अधर्म अनाचारका बोलबाला है। गांधीजन्मशताब्दी मनाई जा रही है [illegible], गांधीजीके सत्य अहिंसा [illegible] ब्रह्मचर्य सिद्धान्तसे राष्ट्र विमुख हो गया है। आज भारतमें कोई भी ऐसा नेता दिखाई नहीं देता जो महात्मा गांधी और महामना [illegible] भांति [illegible] [illegible] [illegible] आदर्श उपस्थित करें। सब शासनकी [illegible] में उन्मत्त हुए कुरसी-[illegible]-[illegible] पीछे भाग रहे हैं और जनताको संयम [illegible] [illegible] उपदेश देकर "[illegible] [illegible]" बघारते हैं। जहां राष्ट्रके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो जायें वहां देवगण कुपित होकर प्रकृतिप्रकोप उत्पातके रूपमें [illegible] का दण्डित करते हैं। भगवान् आत्रेयने 'चरकसंहिता' में [illegible] विमान में स्पष्ट बताया है कि ऐसे रोग उत्पात [illegible] विकृति दुर्भिक्ष युद्धादि क्यों उत्पन्न होते हैं, जिससे देशके देश उजड़ जाते हैं ? इसका मूल कारण उन्होंने अधर्मको ही बताया है। इस—

"समुवाच भगवानात्रेयः—सर्वेषामग्निवेश ! वाय्वादीनां यद् वैगुण्यमुत्पद्यते तस्य मूलमधर्मः तन्मूलं चासत्कर्म पूर्वकृतम्, तयोर्योनिः प्रज्ञापराध एव।……………… प्रागपिचाधर्मादृते नाशुभोत्पत्तिरन्यत:।" इत्यादि। जनपदोध्वंसके कारण विस्तृत रूपमें बताकर अन्तमें महर्षिने इस रोगसे मुक्ति पानेकी रामबाण चिकित्सा या उपाय धर्माचरण, सदाचारका पालन, सत्य, दया, दान, देवतार्चन, गुरुजनसेवा, सर्वभूतहितेरति, ब्रह्मचर्य और शान्ति आदिसे बताई है।

"सत्यं भूते दया दानं बलयो देवतार्चनम्। सद्वृत्तस्यानुवृत्तिश्च प्रशमो गुप्तिरात्मनः। हितं जनपदानां च शिवानामुपसेवनम्। सेवनं ब्रह्मचर्यस्य तथैव ब्रह्मचारिणाम्॥……इत्येतद् भेषजं प्रोक्तमायुषः परिपालनम्।" यहां अति संक्षेपमें केवल संकेतमात्र ही किया जा सका है। आज आसुरी भावापन्न संसार सदाचार और धर्मका उपदेश सुननेके लिए प्रस्तुत नहीं; 'विनाशकाले विपरीतबुद्धिः' होना स्वाभाविक ही है। संसारमें सत्वगुण सम्पन्न दैवीविभूतियां थोड़ी अवश्य होती हैं, परन्तु अन्तमें विश्वका कल्याण होता है उन्हीं के द्वारा, यह प्रकृतिका अटल नियम है। जो राष्ट्र समाज एवं व्यक्ति महर्षि के उक्त आदेशानुसार धर्माचरण पर आरूढ रहेंगे वे ही संसारमें अपना अस्तित्व स्थिर रख सकेंगे।

धर्मनिरपेक्ष राज्यकी देन

स्वतंत्रता प्राप्तिके बाद भारत जबसे धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित हुआ, तबसे वस्तुमात्रके भाव पहलेसे चौगुणे बढ गये और सुरसाके मुखकी भांति बढ़ते ही जा रहे हैं। भ्रष्टाचार मंत्रीसे लेकर चपरासी तक दशगुणा बढ़ गया है। भू० पू० गृहमंत्री श्री नन्दाजीने भ्रष्टाचार समाप्त करनेकी प्रतिज्ञा की थी, परन्तु उस घोषणाके बाद सर्वत्र भ्रष्टाचार विशेष रूपसे पनपा और नन्दाजीको धर्म निरपेक्षशासन ने उखाड़ फेंका। श्री मोरारजी भाई देसाई ने स्वर्णनियंत्रण और नशाबन्दी कानून लागू किया, पर न तो जनता को स्वर्ण-नियंत्रणसे कोई लाभ हुआ और नाहीं दारू-बन्दी से। पिछली तीन पंचवर्षीय योजनाओंमें अरबों रुपये व्यय हुए, उससे देश प्राप्त ऋणका ब्याज चुकाने योग्य भी समर्थ न हो सका और अब चौथी योजना शिर पर है। परन्तु विदेशों से इच्छित धनराशि न मिलनेसे अनेक कार्य स्थगित करने पड़े हैं। ये सब स्वतंत्र भारतमें धर्मनिरपेक्षता की उपलब्धियां हैं।

अन्न-समस्या

विगत चार वर्षों से हम इस पंचांग और 'ज्योतिष्मती' पत्रिका में आगे से आगे अन्न-समस्या के अधिक [illegible] [illegible] बनने और मँहगाई बढ़ने की सूचना बराबर देते आ रहे हैं, वह सत्य सिद्ध हो रहा है। इस वर्ष (सं० २०२५ में) गेहूं की फसल पंजाब हरियाणा उत्तरप्रदेश मध्यप्रदेश राजस्थान में गत वर्ष की अपेक्षा बहुत अधिक होने पर भी शासन तंत्र की अदूरदर्शिता, उत्पादक उपभोक्ताओंमें भेदभाव, जोन-बन्दी, [illegible]-[illegible] प्रतिबन्ध, [illegible] [illegible] आदि दुष्प्रवृत्तियों के कारण गेहूं आदि [illegible] की [illegible] मँहगाई में कोई कमी नहीं हुई। पहले कुछ प्रान्तों में अनुकूल [illegible] से फसल अच्छी हुई थी तो शेष पूर्वी भारत बंगाल आसाम उड़ीसा में भयंकर बाढ़

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और राजस्थान में सूखा से फसल नष्ट होकर त्राहित्राहि मची है। जिस देश में अधर्म अनाचार पराकाष्ठा पर पहुँच जावे वहां प्रकृति-प्रकोप से दुर्भिक्ष स्वाभाविक ही है। शासक वर्ग रासायनिक खाद और नये-नये वैज्ञानिक उपायों के द्वारा अधिक अन्न उपजाकर देश को आत्मनिर्भर करना चाहता है, परन्तु प्रकृति पलभर में इन सभी भौतिक साधनों को विफल कर देती है। पृथ्वी के लिए गोबर का खाद ही सर्वोत्तम है। रासायनिक खाद से कुछ वर्षों में पृथ्वी की उत्पादन शक्ति क्षीण हो जाती है, इस तथ्य को अंग्रेजों के मानसपुत्र चाहे भले ही न मानें, परन्तु १०-१५ वर्ष बाद राष्ट्र को इसका फल भोगना पड़ेगा। करोड़ों रुपया रासायनिक खादउत्पादन में जो प्रति वर्ष व्यय किया जा रहा है उसे बचाकर गोधन वृद्धि में लगावें। देहात में जो गोबर जलाने आदि में नष्ट कर दिया जाता है उसे खाद के रूप में उपयोग की राष्ट्रव्यापी योजना बनावें तो राष्ट्र का अधिक कल्याण होगा। यदि भारत ने अपनी नीति न बदली और पश्चिमका अन्धानुकरण करता रहा तो आगामी १०-१५ वर्षों में अन्न के लिए आत्मनिर्भर होना तो दूर रहा, भयंकर दुर्भिक्ष का सामना करना पड़ेगा। इस समय विदेशों से जितना अन्न मिल रहा है आगे वह भी पूरा नहीं मिल पायेगा। हम तो यह बात गत ४ वर्षों से ग्रहगति के आधार पर लिखते आ रहे हैं। अन्न संकट के विषय में हमारी भविष्यवाणी का समर्थन अब खाद्य स्थिति का अनुसन्धान अध्ययन करने वाले दो अंग्रेज विद्वानों के मत से भी हो जाता है। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त वर्तमान भारत के जो शासक ग्रहगति में विश्वास नहीं रखते वे अपने गुरु अंग्रेज वैज्ञानिकों के इस मत को ध्यान से पढ़ें। गत मई १९६८ के समाचार-पत्रों में लन्दन का समाचार इस प्रकार छपा है—

"१५ वर्षों बाद विश्वव्यापी भीषण दुर्भिक्ष पड़ने की भविष्यवाणी। लन्दन ९ मई (नाफेन) दुनियां में खाद्यान्न की स्थिति का अध्ययन करने वाले अनुसन्धान कर्त्ता दो विद्वानों डब्ल्यू० पडक और पी० पंडक ने '१९७५ का दुर्भिक्ष' नामक अपनी नयी पुस्तक द्वारा यह चेतावनी दी है कि अब से १५ वर्ष बाद दुनियां में अन्न का जो अभाव होगा उसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ेगा समग्र एशिया, अफ्रिका और लेटिन अमेरिका पर। इन दोनों विद्वानों का मत है कि खेती बाड़ी की आधुनिक विधियां तथा जन संख्या बढ़ना रोकने की वैज्ञानिक विधियां भी कहत पड़ना नहीं रोक सकेंगी और दुर्भिक्ष के दो सौतेले भाई बन्धु अनाचार और सामाजिक अस्तव्यस्तता अगले दो दशकों के अन्दर समग्र भूमण्डल को अपने उदरस्थ कर लेंगे।"

इस नये वर्ष (सं० २०२६) की यह स्थिति अन्न समस्या के लिए समाधान कारक नहीं है। कुछ प्रान्तों में उत्पादन अधिक होने पर भी दूषित शासन व्यवस्था से जनता को उसका लाभ नहीं मिल पायेगा। कई प्रान्तों में प्रकृति-प्रकोप अनावृष्टि अतिवृष्टि से भी फसल नष्ट होगी। वर्षारम्भ से भाद्रपद कृष्ण १४ दि १० सितम्बर तक मंगल मेष राशि में दुर्भिक्ष उत्पात एवं सभी जीवनोपयोगी वस्तुओं में महार्घता कारक है। यथा—

यदा वृश्चिकराशिस्थो जायते च महीसुतः।
महार्घं सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्॥

मंगल के वक्रत्वकाल में अनेक अकल्पित दुर्घटनाएँ होंगी। वर्षान्त में फाल्गुन मास २६ फरवरी १९७० से मंगल के मेष राशि में शनि से योग करने पर संसार और भारत में युद्ध दुर्भिक्ष रोगादि उपद्रवों का प्रकोप बढ़ेगा। मेष वृश्चिक के मंगल में कुछ राजपुरुष दुर्घटना ग्रस्त होंगे, कुछ का अवसान होगा।

उत्पादन में वृद्धि

इस वर्ष का धनेश मंगल है, भारतीय गणतंत्र के दशम भाव में है, और जगत् लग्न में पराक्रमस्थ होने से भारत का सैनिक सुरक्षा व्यय इस वर्ष बहुत बढ़ेगा। उत्पादन में वृद्धि होगी। शस्त्रास्त्र और अणुशक्ति तथा विद्युत् संस्थानों सीमिण्ट कागज खाद्य और छोटे मोटे कल पुर्जे बनाने के कारखानों की वृद्धि होगी। मंगल बलवान् होने से भूमि संरक्षण उत्पादन और सीमाप्रान्त पर्वतीय प्रदेश में परिवहन मार्ग में पर्याप्त प्रगति होगी। कुछ प्रान्तों में पहली फसल, तो कुछ में दूसरी फसल अच्छी होगी। पूर्वोत्तर और दक्षिण भारत में प्रकृति-प्रकोप से हानि होगी। शत्रु आक्रमण एवं प्रकृति-प्रकोप का सामना करने के लिए भारत अपने अदम्य साहस का परिचय देगा।

वाणिज्य-व्यवसाय

वाणिज्याधिपति बुध इस वर्ष का राजा है, यह जगत् लग्न में शनि सूर्य के साथ अष्टम है अतः संसार का वाणिज्य व्यवसाय अस्थिर डावांडोल स्थिति में रहेगा। व्यापारी वर्ग सशङ्क उद्विग्न से रहेंगे। प्राकृतिक राजनैतिक कारणों से वस्तुमात्र के भावों में अकस्मात् अकल्पित उलट फेर के कारण अनेक व्यापारी अपना सन्तुलन खो बैठेंगे। वर्षराज बुध होने से भारत के नगरों एवं ग्रामों में अनेक सरकारी अर्ध-सरकारी छोटे बड़े कारखाने स्थापित होंगे; उस व्यवसाय में कुछ लोगोंको रोजगार मिलेगा; परंतु शिक्षित नवयुवकोंमें बेकारी बढ़ेगी। अनेक उच्चशिक्षाप्राप्त नवयुवक नौकरी या रोजगार पाने के लिए मारे-मारे फिरेंगे। कोई भी वाणिज्य व्यवसाय निरापद नहीं समझा जावेगा। चोर बाजारी मिलावट और घूसखोरी का बोलबाला होगा। विदेशों से अनेक व्यापारिक संधि-समझौते होंगे उनसे राज्य और बड़े पूंजीपति ही लाभ उठा सकेंगे, सर्वसाधारण जनता को कोई लाभ नहीं होगा। इस वर्ष वैशाख ज्येष्ठ मास में अन्नादि खाद्य पदार्थ का भाव मंदा होनेपर निर्वाह योग्य संग्रह करना लाभप्रद होगा। आगे तेजी बनेगी। कार्तिकमासके प्रारम्भमें ही २६ अक्टूबर को मंगल मकर में जाकर नीचस्थ शनिसे पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध बनावेगा। दीपमाला रविवार को चतुर्ग्रह योग और १२ नवम्बर से तुलामें गुरु आकर शनिसे सप्तम दृष्टि सम्बन्ध बनावेगा अतः कार्तिक मास संसार के लिए अनिष्ट प्रद है, यहासे आगे संसारमें युद्ध उत्पात दुर्भिक्ष का भय बढेगा और जीवनोपयोगी वस्तुओं का ह्रास होगा। शास्त्रकारों ने लिखा है—

यदा जीवयुतो मंदो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्चान्नपरिक्षयः॥

१३ अप्रेलसे १३ मई तक सूर्य उच्चमें और शनि नीच में रहेंगे, यह समय भी अशान्ति एवं उत्पातकारक है। वर्षभर अन्नादि पदार्थोंमें विशेष मंदीका योग नहीं है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हां, मंगल के कारण गुड़ शक्कर खाण्ड के भाव कुछ मंदे रहेंगे । सोना चांदी ताम्बा रुई कपास और तिलहनमात्र के भावोंका रुख तेजीकी ओर ही रहेगा । मंदी अस्थायी होगी । जूट पाट शेयरोंके भावमें अकल्पित उलट फेर होगा । प्रत्येक मासका भविष्य इस पंचांगके अन्तमें व्यापारभविष्य लेखोंमें दिया है । इससे अधिक सूक्ष्मविचार हमारी त्रैमासिक पत्रिका 'ज्योतिष्मती' में देखें ।

संरक्षण और चौथी पंचवर्षीय योजना

गत वर्षके पंचांग और 'ज्योतिष्मती' में हम यह सूचना दे चुके हैं कि-"शत्रु-देशके गुप्तचर अवैधरूपसे भारतमें घुसकर षड्यंत्र रचेंगे, तथा योजना पूर्ण रूपेण सफल नहीं हो पायेगी ।" यह सूचना सत्य प्रमाणित होने लगी है । अब इस वर्ष के प्रारम्भसे ही काश्मीर से नेफा असम तक और कच्छ काठियाड़ राजस्थान की हजारों मील लम्बी सीमा पर सुरक्षाके लिए सेनाको तय्यार रखना पड़ेगा । चीनके साथ मिलकर पाकिस्तान पूर्वपश्चिम दोनों ओर से भारतपर चोट पहुँचानेकी कुचेष्टा करेगा, अतः भारतका संरक्षणव्यय बहुत बढ़ जायेगा । प्रान्तोंकी घाटेकी अर्थव्यवस्था भी केन्द्रके लिए चिन्ताका कारण बनेगी । केन्द्र प्रान्तोंकी मांगको पूरा नहीं कर पायेगा । अर्थाभाव विदेशी मुद्राकी कमीके कारण चौथी पंचवर्षीय योजना अधूरी रहेगी । योजनाकी सफलताके लिए नये वित्तीयवर्षमें जनता पर नये करोंका भार भी पड़ेगा । आगामी बजटपर [illegible] आलोचना होगी । श्रम और शिक्षाके क्षेत्र (छात्रवर्ग) में असन्तोष फैलेगा । लोकसभा व विधानसभाओंमें अभूतपूर्व हुल्लड़ होंगे । राजाओंके भत्ते (प्रीवीपर्स) का प्रश्न उग्ररूप धारण करेगा । राजाओंकी सुविधाएँ समाप्त कर दी जायेंगी । भत्ता सर्वथा समाप्त नहीं होगा, कुछ वर्षों के लिए आंशिक कटौती कर दी जायेगी ।

प्रान्तीय राज्य संघ

काश्मीर—[illegible] २०२५ के पंचांगमें हमने [illegible] ३ वर्षका समय काश्मीरके लिए [illegible] लिखा था । इस नव वर्ष २०२६ में शनि मेष [illegible] और [illegible] रहेगा, कूर्मचक्रमें [illegible] केदार [illegible] भारी [illegible] सूचक [illegible] है । यथा—

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥

वर्षारम्भसे पूर्व [illegible] काश्मीर समस्या फिर [illegible] । पाकिस्तानकी [illegible] । भारतको [illegible] सजग रहना चाहिए । [illegible] १९६५ को [illegible] [illegible] करेंगे । [illegible] काश्मीर समस्या [illegible] बनेगी । [illegible]

वर्षान्तमें मंत्रिमण्डल भंग होगा । आर्थिक दृष्टिसे काश्मीरकी दशा अत्यधिक शोचनीय होगी । राष्ट्रपति-शासन ही समस्याका समाधान माना जावेगा । प्रकृति प्रकोप और साम्प्रदायिक उत्पातसे वर्षके उत्तरार्धमें जनधन की हानि होगी । आगे चलकर (१९७०-७२ में) बृटेन, रूस, अमेरिका, काश्मीर का अधिकांश भाग पाकिस्तान को दिलाकर समझौता करानेका व्यर्थ प्रयत्न करेंगे । युद्धके बिना काश्मीर समस्या का समाधान संभव नहीं । काश्मीर भारतका अभिन्न अङ्ग है और रहेगा ।

पंजाब-हरियाना-हिमाचल-प्रदेश—इन तीनों प्रान्तोंकी राजनैतिक, आर्थिक समस्या वर्ष भर उलझी रहेगी । पंजाबमें साम्प्रदायिक वैमनस्य बढ़ेगा । पश्चिमोत्तरी पंजाबमें प्रकृतिप्रकोप और सीमा पर पाकिस्तानी घुसपैठसे हानि होगी । वर्षारम्भ से ही चण्डीगढ़-भाखड़ाका प्रश्न पंजाब-हरियाणामें तनाव पैदा करेगा । पंजाब के मध्यावधि चुनाव में कटुता बढ़ेगी । कांग्रेस स्थायी सुदृढ़ शासन पंजाबको नहीं दे पायेगी । कोई भी दल पंजाबकी जनतामें अधिक सफल नहीं हो पायेगा । वर्षारम्भ में जो मंत्रिमण्डल बनेगा उसके पूरे सदस्य वर्षभर भी नहीं टिक पायेंगे । पुनः राष्ट्रपतिशासन वा मंत्रिमण्डलमें परिवर्तनकी सम्भावना उपस्थित होगी । पंजाब में कोई भी प्रभावशाली त्यागी नेता दिखाई नहीं देगा । सिक्खों और कांग्रेसियोंमें (आपस में ही) फूट का विष बढ़ेगा । पंजाब हरियाणा में चोरी डाके हत्याकाण्ड और अपहरण की घटनाएँ अधिक होंगी । बैशाखसे आषाढ़ तक आंधी तूफान, अग्निकाण्ड, भयंकर गरमी, यत्रतत्र लू हैजा आदिके प्रकोपसे प्रजा पीड़ित होगी । श्रमिक छात्र एवं अध्यापकवर्ग असन्तुष्ट रहेगा, वर्षारम्भमें ही हरियाणा और हिमाचलके मंत्रि मण्डल को आन्तरिक फूटका धक्का लगनेसे लड़खड़ा जायेगा और वर्षके उत्तरार्धमें मंत्रिमण्डलमें परिवर्तन होगा । हिमाचल-प्रदेश परिवहन उत्पादनके क्षेत्रमें प्रगति करेगा, परंतु मंत्रिमण्डलमें वर्षभर गतिरोध बना रहेगा । हिमाचलकी फसल आलू, सेव आदि फलोंको ओले और कीड़े आदिसे हानि होगी । पंजाब हरियाणामें कपास, गेहूँ, चणा, ईख, तम्बाकू आदिकी फसलमें हानि होगी । इन प्रान्तोंके मुख्यमंत्रियोंको दुर्घटना से भी सतर्क रहना चाहिए, लोकप्रिय नेता का अवसान होगा ।

राजस्थान—इस वर्ष राजस्थान शनिके कुप्रभावमें है । पश्चिमोत्तर राजस्थान (जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर) में दुर्भिक्ष अनावृष्टि प्रकृतिप्रकोपसे हानि होगी । पूर्वदक्षिणी भागमें उत्पादन अधिक होगा । नये बांध, विद्युत, अणु, [illegible] संस्थान स्थापित होंगे । मेवाड़का पश्चिमोत्तरीय भाग [illegible] होगा। [illegible] के पूर्वार्ध में मंत्रिमण्डलीय गतिरोध उत्पन्न होगा । मेष के शनि में आगे राजस्थान [illegible] दुर्घटनाका मंत्रिमण्डलमें परिवर्तन अवश्यम्भावी है, इसी अवधिमें श्री सुखाड़ियाको [illegible] सामना करना होगा । भ्रष्टाचार और दलगत वैमनस्यसे प्रजा त्रस्त होगी । आर्थिक संकट बढ़ेगा । पश्चिमोत्तरीय सीमा संत्रस्त होगी । वर्षारम्भसे आषाढ़ तक और [illegible] कार्तिकसे आगे का समय प्रान्तकी राजनीतिमें क्रान्तिकारक सिद्ध होगा । भू० पू० [illegible] जागीरदार कांग्रेसशासनसे घोर असन्तुष्ट होंगे । जनसंघ स्वतंत्रपार्टी आदि विरोधी दलोंमें एकता का प्रयत्न होगा । विपक्षीदलमें स्थायी प्रभावशाली नेताका अभाव राजस्थानकी प्रगतिमें बाधक बनेगा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और राजस्थान में सूखा से फसल नष्ट होकर त्राहित्राहि मची है। जिस देश में अधर्म अनाचार पराकाष्ठा पर पहुँच जावे वहां प्रकृति-प्रकोप से दुर्भिक्ष स्वाभाविक ही है। शासक वर्ग रासायनिक खाद और नये-नये वैज्ञानिक उपायों के द्वारा अधिक अन्न उपजाकर देश को आत्मनिर्भर करना चाहता है, परन्तु प्रकृति पलभर में इन सभी भौतिक साधनों को विफल कर देती है। पृथ्वी के लिए गोबर का खाद ही सर्वोत्तम है। रासायनिक खाद से कुछ वर्षों में पृथ्वी की उत्पादन शक्ति क्षीण हो जाती है, इस तथ्य को अंग्रेजों के मानसपुत्र चाहे भले ही न मानें, परन्तु १०-१५ वर्ष बाद राष्ट्र को इसका फल भोगना पड़ेगा। करोड़ों रुपया रासायनिक खादउत्पादन में जो प्रति वर्ष व्यय किया जा रहा है उसे बचाकर गोधन वृद्धि में लगावें। देहात में जो गोबर जलाने आदि में नष्ट कर दिया जाता है उसे खाद के रूप में उपयोग की राष्ट्रव्यापी योजना बनावें तो राष्ट्र का अधिक कल्याण होगा। यदि भारत ने अपनी नीति न बदली और पश्चिमका अन्धानुकरण करता रहा तो आगामी १०-१५ वर्षों में अन्न के लिए आत्मनिर्भर होना तो दूर रहा, भयंकर दुर्भिक्ष का सामना करना पड़ेगा। इस समय विदेशों से जितना अन्न मिल रहा है आगे वह भी पूरा नहीं मिल पायेगा। हम तो यह बात गत ४ वर्षों से ग्रहगति के आधार पर लिखते आ रहे हैं। अन्न संकट के विषय में हमारी भविष्यवाणी का समर्थन अब खाद्य स्थिति का अनुसन्धान अध्ययन करने वाले दो अंग्रेज विद्वानों के मत से भी हो जाता है। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त वर्तमान भारत के जो शासक ग्रहगति में विश्वास नहीं रखते वे अपने गुरु अंग्रेज वैज्ञानिकों के इस मत को ध्यान से पढ़ें। गत मई १९६८ के समाचार-पत्रों में लन्दन का समाचार इस प्रकार छपा है—

"१५ वर्षों बाद विश्वव्यापी भीषण दुर्भिक्ष पड़ने की भविष्यवाणी। लन्दन ९ मई (नाफेन) दुनियां में खाद्यान्न की स्थिति का अध्ययन करने वाले अनुसन्धान कर्ता दो विद्वानों डब्ल्यू० पडक और पी० पडक ने '१९७५ का दुर्भिक्ष' नामक अपनी नयी पुस्तक द्वारा यह चेतावनी दी है कि अब से १५ वर्ष बाद दुनियां में अन्न का जो अभाव होगा उसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ेगा समग्र एशिया, अफ्रिका और लेटिन अमेरिका पर। इन दोनों विद्वानों का मत है कि खेती बाड़ी की आधुनिक विधियां तथा जन संख्या बढ़ना रोकने की वैज्ञानिक विधियां भी कहत पड़ना नहीं रोक सकेंगी और दुर्भिक्ष के दो सौतेले भाई बन्धु अनाचार और सामाजिक अस्तव्यस्तता अगले दो दशकों के अन्दर समग्र भूमण्डल को अपने उदरस्थ कर लेंगे।"

इस नये वर्ष (सं० २०२६) की यह स्थिति अन्न समस्या के लिए समाधान कारक नहीं है। कुछ प्रान्तों में उत्पादन अधिक होने पर भी दूषित शासन व्यवस्था से जनता को उसका लाभ नहीं मिल पायेगा। कई प्रान्तों में प्रकृति-प्रकोप अनावृष्टि अतिवृष्टि से भी फसल नष्ट होगी। वर्षारम्भ से भाद्रपद कृष्ण १४ दि १० सितम्बर तक मंगल मेष राशि में दुर्भिक्ष उत्पात एवं सभी जीवनोपयोगी वस्तुओं में महार्घता कारक है। यथा—

यदा वृश्चिकराशिस्थो जायते च महीसुतः।
महार्घं सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्॥

मंगल के वक्रत्वकाल में अनेक अकल्पित दुर्घटनाएं होंगी। वर्षान्त में फाल्गुन मास २६ फरवरी १९७० से मंगल के मेष राशि में शनि से योग करने पर संसार और भारत में युद्ध दुर्भिक्ष रोगादि उपद्रवों का प्रकोप बढ़ेगा। मेष वृश्चिक के मंगल में कुछ राजपुरुष दुर्घटना ग्रस्त होंगे, कुछ का अवसान होगा।

उत्पादन में वृद्धि

इस वर्ष का धनेश मंगल है, भारतीय गणतंत्र के दशम भाव में है, और जगत् लग्न में पराक्रमस्थ होने से भारत का सैनिक सुरक्षा व्यय इस वर्ष बहुत बढ़ेगा। उत्पादन में वृद्धि होगी। शस्त्रास्त्र और अणुशक्ति तथा विद्युत् संस्थानों सीमेण्ट कागज खाद्य और छोटे मोटे कल पुर्जे बनाने के कारखानों की वृद्धि होगी। मंगल बलवान् होने से भूमि संरक्षण उत्पादन और सीमाप्रान्त पर्वतीय प्रदेश में परिवहन मार्ग में पर्याप्त प्रगति होगी। कुछ प्रान्तों में पहली फसल, तो कुछ में दूसरी फसल अच्छी होगी। पूर्वोत्तर और दक्षिण भारत में प्रकृति-प्रकोप से हानि होगी। शत्रु आक्रमण एवं प्रकृति-प्रकोप का सामना करने के लिए भारत अपने अदम्य साहस का परिचय देगा।

वाणिज्य-व्यवसाय

वाणिज्याधिपति बुध इस वर्ष का राजा है, यह जगत् लग्न में शनि सूर्य के साथ अष्टम है अतः संसार का वाणिज्य व्यवसाय अस्थिर डावांडोल स्थिति में रहेगा। व्यापारी वर्ग सशङ्क उद्विग्न से रहेंगे। प्राकृतिक राजनैतिक कारणों से वस्तुमात्र के भावों मे अकस्मात् अकल्पित उलट फेर के कारण अनेक व्यापारी अपना सन्तुलन खो बैठेंगे। वर्षराज बुध होने से भारत के नगरों एवं ग्रामों में अनेक सरकारी अर्ध-सरकारी छोटे बड़े कारखाने स्थापित होंगे; उस व्यवसाय में कुछ लोगोंको रोजगार मिलेगा; परंतु शिक्षित नवयुवकोंमें बेकारी बढ़ेगी। अनेक उच्चशिक्षाप्राप्त नवयुवक नौकरी या रोजगार पाने के लिए मारे-मारे फिरेंगे। कोई भी वाणिज्य व्यवसाय निरापद नहीं समझा जावेगा। चोर बाजारी मिलावट और घूसखोरी का बालबाला होगा। विदेशों से अनेक व्यापारिक संधि-समझौते होंगे उनसे राज्य और बड़े पूंजीपति ही लाभ उठा सकेंगे, सर्वसाधारण जनता को कोई लाभ नहीं होगा। इस वर्ष वैशाख ज्येष्ठ मास में अन्नादि खाद्य पदार्थ का भाव मंदा होनेपर निर्वाह योग्य संग्रह करना लाभप्रद होगा। आगे तेजी बनेगी। कार्तिकमासके प्रारम्भमें ही २६ अक्टूबर को मंगल मकर में जाकर नीचस्थ शनिसे पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध बनावेगा। दीपमाला रविवार को चतुर्ग्रह योग और १२ नवम्बर से तुलामें गुरु आकर शनिसे सप्तम दृष्टि सम्बन्ध बनावेगा अतः कार्तिक मास संसार के लिए अनिष्ट प्रद है, यहांसे आगे संसारमें युद्ध उत्पात दुर्भिक्ष का भय बढेगा और जीवनोपयोगी वस्तुओं का ह्रास होगा। शास्त्रकारों ने लिखा है—

यदा जीवयुतो मंदो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूपश्चान्नपरिक्षयः॥

१३ अप्रेलसे १३ मई तक सूर्य उच्चमें और शनि नीच में रहेंगे, यह समय भी अशान्ति एवं उत्पातकारक है। वर्षभर अन्नादि पदार्थोंमें विशेष मंदीका योग नहीं है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हां, मंगल के कारण गुड़ शक्कर खाण्ड के भाव कुछ मंदे रहेंगे। सोना चांदी ताम्बा रुई कपास और तिलहनमात्र के भावोंका रुख तेजीकी ओर ही रहेगा। मंदी अस्थायी होगी। जूट पाट शेयरोंके भावमें अकल्पित उलट फेर होगा। प्रत्येक मासका भविष्य इस पंचांगके अन्तमें व्यापारभविष्य लेखोंमें दिया है। इससे अधिक सूक्ष्मविचार हमारी त्रैमासिक पत्रिका 'ज्योतिष्मती' में देखें।

संरक्षण और चौथी पंचवर्षीय योजना

गत वर्षके पंचांग और 'ज्योतिष्मती' में हम यह सूचना दे चुके हैं कि-"शत्रु-देशके गुप्तचर अवैधरूपसे भारतमें घुसकर षड्यंत्र रचेंगे, तथा योजना पूर्ण रूपेण सफल नहीं हो पायेगी।" यह सूचना सत्य प्रमाणित होने लगी है। अब इस वर्ष के प्रारम्भसे ही काश्मीर से नेफा असम तक और कच्छ काठियाड़ राजस्थान की हजारों मील लम्बी सीमा पर सुरक्षाके लिए सेनाको तय्यार रखना पड़ेगा। चीनके साथ मिलकर पाकिस्तान पूर्वपश्चिम दोनों ओर से भारतपर चोट पहुँचानेकी कुचेष्टा करेगा, अतः भारतका संरक्षणव्यय बहुत बढ़ जायेगा। प्रान्तोंकी घाटेकी अर्थव्यवस्था भी केन्द्रके लिए चिन्ताका कारण बनेगी। केन्द्र प्रान्तोंकी मांगको पूरा नहीं कर पायेगा। अर्थाभाव विदेशी मुद्राकी कमीके कारण चौथी पंचवर्षीय योजना अधूरी रहेगी। योजनाकी सफलताके लिए नये विभागोंमें जनता पर नये करोंका भार भी पड़ेगा। आगामी बजटपर पर्याप्त आलोचना होगी। श्रम और शिक्षाके क्षेत्र (छात्रवर्ग) में असन्तोष फैलेगा। लोकसभा व विधानसभाओंमें अभूतपूर्व हुल्लड़ होंगे। राजाओंके भत्तो (प्रीवीपर्स) का प्रश्न उग्ररूप धारण करेगा। राजाओंकी सुविधाएँ समाप्त कर दी जायेंगी। [illegible] समाप्त नहीं होगा, कुछ वर्षों के लिए आंशिक कटौती कर दी जायेगी।

प्रान्तीय राज्य संघ

काश्मीर—[illegible] के पंचांगमें हमने मेषके शनिका ६ वर्षका [illegible] किया था। इस नव वर्ष २०२६ में शनि मेष [illegible] रहेगा, कूर्मचक्रमें [illegible] गजनी खुरासान केदार [illegible] विनाशके सूचक माने गये हैं। यथा—

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥

वर्षारम्भसे पूर्व ७ मार्च १९६९ को [illegible] काश्मीर समस्या फिर उग्र बनने लगेगी। पाकिस्तानकी [illegible] और [illegible] बढ़ेगा। भारतको सतर्क सावधान रहना चाहिए। [illegible] पाकिस्तानको [illegible] १९६५ की [illegible] प्रेरित करेंगी। [illegible] काश्मीर समस्या अधिक [illegible] बनेगी। [illegible]

वर्षान्तमें मंत्रिमण्डल भंग होगा। आर्थिक दृष्टिसे काश्मीरकी दशा अत्यधिक शोचनीय होगी। राष्ट्रपति-शासन ही समस्याका समाधान माना जावेगा। प्रकृति प्रकोप और साम्प्रदायिक उत्पातसे वर्षके उत्तरार्धमें जनधन की हानि होगी। आगे चलकर (१९७०–७२ में) बृटेन, रूस, अमेरिका, काश्मीर का अधिकांश भाग पाकिस्तान को दिलाकर समझौता करानेका व्यर्थ प्रयत्न करेंगे। युद्धके बिना काश्मीर समस्या का समाधान संभव नहीं। काश्मीर भारतका अभिन्न अङ्ग है और रहेगा।

पंजाब-हरियाना-हिमाचल-प्रदेश—इन तीनों प्रान्तोंकी राजनैतिक, आर्थिक समस्या वर्ष भर उलझी रहेगी। पंजाबमें साम्प्रदायिक वैमनस्य बढ़ेगा। पश्चिमोत्तरी पंजाबमें प्रकृतिप्रकोप और सीमा पर पाकिस्तानी घुसपैठसे हानि होगी। वर्षारम्भ से ही चण्डीगढ़-भाखड़ाका प्रश्न पंजाब-हरियाणामें तनाव पैदा करेगा। पंजाब के मध्यावधि चुनाव में कटुता बढ़ेगी। कांग्रेस स्थायी सुदृढ़ शासन पंजाबको नहीं दे पायेगी। कोई भी दल पंजाबकी जनतामें अधिक सफल नहीं हो पायेगा। वर्षारम्भ में जो मंत्रिमण्डल बनेगा उसके पूरे सदस्य वर्षभर भी नहीं टिक पायेंगे। पुनः राष्ट्रपतिशासन वा मंत्रिमण्डलमें परिवर्तनकी सम्भावना उपस्थित होगी। पंजाब में कोई भी प्रभावशाली त्यागी नेता दिखाई नहीं देगा। सिक्खों और कांग्रेसियोंमें (आपस में ही) फूट का विष बढ़ेगा। पंजाब हरियाणा में चोरी डाके हत्याकाण्ड और अपहरण की घटनाएँ अधिक होंगी। वैशाखसे आषाढ़ तक आंधी तूफान, अग्निकाण्ड, भयंकर गरमी, यत्रतत्र लू हैजा आदिके प्रकोपसे प्रजा पीड़ित होगी। श्रमिक छात्र एवं अध्यापकवर्ग असन्तुष्ट रहेगा, वर्षारम्भमें ही हरियाणा और हिमाचलके मंत्रि मण्डल को आन्तरिक फूटका धक्का लगनेसे लड़खड़ा जायेगा और वर्षके उत्तरार्धमें मंत्रिमण्डलमें परिवर्तन होगा। हिमाचल-प्रदेश परिवहन उत्पादनके क्षेत्रमें प्रगति करेगा, परंतु मंत्रिमण्डलमें वर्षभर गतिरोध बना रहेगा। हिमाचलकी फसल आलू, सेब आदि फलोंको ओले और कीड़े आदिसे हानि होगी। पंजाब हरियाणामें कपास, गेहूँ, चणा, ईख, तम्बाकू आदिकी फसलमें हानि होगी। इन प्रान्तोंके मुख्यमंत्रियोंको दुर्घटना से भी सतर्क रहना चाहिए, लोकप्रिय नेता का अवसान होगा।

राजस्थान—इस वर्ष राजस्थान शनिके कुप्रभावमें है। पश्चिमोत्तर राजस्थान (जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर) में दुर्भिक्ष अनावृष्टि प्रकृतिप्रकोपसे हानि होगी। पूर्वदक्षिणी भागमें उत्पादन अधिक होगा। नये बांध, विद्युत, अणु, [illegible] संस्थान स्थापित होंगे। मेवाड़का पश्चिमोत्तरीय भाग [illegible] होगा। मेष के शनि में आगे राजस्थान वर्षके पूर्वार्द्ध में मंत्रिमंडलीय गतिरोध उत्पन्न होगा। [illegible] दुर्घटनाका मंत्रिमण्डलमें परिवर्तन अवश्यम्भावी है, इसी अवधिमें श्री सुखाड़ियाको दुर्घटनाका सामना करना होगा। भ्रष्टाचार और दलगत वैमनस्यसे प्रजा त्रस्त होगी। आर्थिक संकट बढ़ेगा। पश्चिमोत्तरीय सीमा संकटग्रस्त होगी। वर्षारम्भसे आषाढ़ तक और कार्तिकसे आगे का समय प्रान्तकी राजनीतिमें क्रान्तिकारक सिद्ध होगा। भू० पू० [illegible] जागीरदार कांग्रेसशासनसे घोर असन्तुष्ट होंगे। जनसंघ स्वतंत्रपार्टी आदि विरोधी दलोंमें एकता का प्रयत्न होगा। विपक्षीदलमें त्यागी प्रभावशाली नेताका अभाव राजस्थानकी प्रगतिमें बाधक बनेगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उत्तरप्रदेश—स्थायी सुदृढ़ शासन प्रदान करने में प्रदेश असमर्थ रहेगा। आर्थिक राजनैतिक प्रश्नों को सुलझाने में भारतका यह सबसे बड़ा प्रान्त उत्तरप्रदेश 'निरुत्तर-सा' रहेगा। मध्यावधि चुनाव में कांग्रेस को पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं हो सकेगा, स्वल्प बहुमतसे कदाचित् शासन-सूत्र सम्भाल लिया तो वह सम्पूर्ण मेषके शनिमें ३ वर्ष तक स्थिर नहीं रह पायेगा। वर्षान्तमें ही आपसी फूट प्रतिस्पर्धा भ्रष्टाचारसे मंत्रिमण्डल लड़खड़ा जायेगा और राष्ट्रपतिशासन की सम्भावना होगी। त्रिपाठी-गुप्त गुटके प्रति आगे चलकर जन विरोध भड़केगा। कांग्रेसका गढ़ उत्तार प्रदेश अब कांग्रेस में कोई भी त्यागी तपस्वी ईमानदार नेता नहीं दे पायेगा। पूर्वोत्तारीय उत्तारप्रदेश प्रकृतिप्रकोपसे पीड़ित रहेगा। धार्मिक सांस्कृतिक साम्प्रदायिक और औद्योगिक क्षेत्रोंमें भी यदा कदा अशान्ति रहेगी। दो नेता दुर्घटनाग्रस्त होंगे। किसी महानगरमें भयंकर अग्निकाण्ड और रेल दुर्घटनासे हानि होगी।

मध्यप्रदेश—वर्षारम्भसे विजयादशमी (२० अक्टूबर ६९) तक ज्येष्ठा मूला पू० पा० का मंगल कूर्मचक्रानुसार मध्यप्रदेश की राजनीतिक आर्थिक सामाजिक स्थितिके लिए प्रतिकूल है। विशेषकर मालवा मध्यभारत में प्रकृतिप्रकोप एवं उत्पात अधिक होंगे। यहां मंगल नेपच्यूनके साथ शनि से षडष्टक योग कर रहा है अतः संविद मंत्रिमण्डल संकटग्रस्त होगा। कांग्रेस में भी फूट और प्रतिस्पर्धा होने से यशस्वी स्थायी शासन देने में असमर्थ रहेगी, अतः वर्ष के उत्तरार्ध में राष्ट्रपति शासन की सम्भावना उपस्थित होगी। राजमाता और मुख्यमंत्री को दलगत मतभेद और स्वार्थी तत्वों के आघात प्रत्याघातों से विक्षुब्ध हो विश्राम के लिए विवश होना पड़ेगा। मेष के शनि में दो-तीन बार मंत्रिमण्डल का पुनर्गठन वा परिवर्तन सम्भव है। वर्षभर राजनैतिक अस्थिरता बनी रहेगी। विधान सभा में भारी हुल्लड़ होगा। पूर्वी मध्यप्रदेश प्रकृति-प्रकोप से पीड़ित होगा। मध्य-भारत उज्जैन, इन्दौर, भूपाल, बस्तर और बिलासपुर के आदिवासी क्षेत्र में हिंसक उपद्रव होंगे। मध्यमालव और पश्चिमोत्तरीय मध्यप्रदेश में सुभिक्ष होगा। पहली फसल मध्यम और दूसरी उत्तम उपजेगी। प्रान्त के दो वरिष्ठ नेता दुर्घटनाग्रस्त वा काल कवलित हो सकेंगे।

दिल्ली—दिल्ली या इन्द्रप्रस्थ कूर्मचक्रानुसार रेवती अश्विनी भरणी नक्षत्र के प्रभाव क्षेत्र में है। और वृषभ राशि का प्रभाव भी इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) पर माना गया है। मेष का शनि दिल्ली राज्य के लिए शान्तिकारक नहीं है। प्रकृति-प्रकोप आन्धी तूफान, अग्निकाण्ड, दुर्घटना, राजनैतिक वा प्राकृतिक भूकम्प से दिल्ली की कीली हिल जाय तो आश्चर्य नहीं। इस वर्ष में शनि का बल युवावस्था (मध्य) में नहीं पहुँचेगा, अतः केन्द्र और महानगर का शासन तो यथापूर्व बना रहेगा। किन्तु, वर्षारम्भ में ही केन्द्रीय मंत्रिमंडल और महानगर-परिषद् के उच्चाधिकारियों में कुछ परिवर्तन होगा। दिल्ली विकाश-अधिकरण, परिवहन, बिजली और जल-मल अधिकरण की अन्धेरगर्दी से असन्तोष फैलेगा। दिल्ली का 'मास्टर प्लान' सफल नहीं हो पायेगा। संशोधन आवश्यक होगा। लोकसभा और महानगर-परिषद् निगम में अवाञ्छनीय काण्ड होंगे। वर्षारम्भ एवं वर्षान्त में हड़ताल उग्र प्रदर्शन होंगे। दिल्ली राज्य का कुछ भाग बाढग्रस्त और कुछ सूखाग्रस्त रहेगा। केन्द्रीय मंत्रिमंडल में आन्तरिक दल-बन्दी प्रतिस्पर्धा और जोड़तोड़की कूटनीति चलेगी। केन्द्रका प्रभाव सारे प्रान्तों पर पड़ेगा। दो-तीन वरिष्ठनेता दुर्घटनाग्रस्त होंगे। झुग्गी, झोंपड़ी और आवास समस्या में कोई सुधार नहीं होगा। खाद्य समस्या समाधान कारक रहेगी। ग्रीष्मकालमें दिल्ली में दुर्घटना, अग्निकाण्ड, तूफान और लू, हैजा आदि का प्रकोप अधिक होगा:

महाराष्ट्र, गुजरात, मद्रास, आंध्र, केरल, मैसूर—महाराष्ट्र में राजनैतिक आर्थिक असन्तोष बढ़ेगा। बम्बई में बन्दरगाह गोदी कर्मचारी और मिल-मजदूरों में असन्तोष, हड़तालें कई बार होंगी। कम्युनिस्ट तत्व शासन के सामने नई-नई समस्याएँ खड़ी करेगा। महाराष्ट्र की नगरपालिकाओं में भी असन्तोष, फूट, पार्टी बन्दी बढ़ेगी। शिवसेना का वर्चस्व बढ़ेगा। गुजरात महाराष्ट्र में उत्पादन क्षेत्र में वृद्धि होगी। नशाबन्दी सफल न होगी। गुजरात में पेट्रोल तेल शोध-संस्थान प्रगति पर होगा। नर्मदायोजना का कार्य इस वर्ष में पूर्ण नहीं हो पायेगा। मद्रास, मैसूर, केरल, आंध्र के मंत्रिमण्डल में फूट पड़ेगी, केरल में राष्ट्रपति शासन होगा। आंध्र, मैसूर, मद्रास मंत्रिमण्डल भी लड़खड़ाने लगेगा। कुछ मंत्री दुर्घटनाग्रस्त होंगे। चीन-पाक प्रेरित कम्युनिस्ट गुप्तचर इन प्रदेशों में अवाञ्छनीय गतिविधि उत्पन्न करेंगे। प्रकृति-प्रकोप आंधी तूफान बाढ या भूकम्प से भी वर्ष के उत्तरार्ध में विशेष हानि होगी। दो नेता दुर्घटनाग्रस्त होंगे। गांधी-जन्म-शताब्दी मनाते हुए भी इस वर्ष समस्तभारत तो दूर रहा, गांधीजीका जन्म स्थल गुजरात राज्य भी गांधीजी के आदर्शों का पूर्ण रूपेण पालन नहीं कर पायेगा। तथाकथित गांधीभक्त नेताओं की कथनी और करनी में बहुत अन्तर होगा।

बंगाल, बिहार, असम, उड़ीसा, नागालेण्ड, मणिपुर, गोवा—भारत के पूर्वाञ्चलस्थ इन ६ प्रदेशों और दक्षिणस्थ गोवा पर इस वर्ष शनिमंगल हर्षल नेप्च्यून का कुप्रभाव रहेगा। राजनैतिक आर्थिक सामाजिक साम्प्रदायिक संकट वर्ष भर बना रहेगा। बंगाल मकर राशि के प्रभाव में है और कूर्मचक्रानुसार अश्ले. मघा. पू. फा. नक्षत्र बंगाल बिहार असम के भूभाग पर प्रभाव रखते हैं, अतः मेष राशि का शनि उक्त प्रान्तों में उत्पात विग्रह हिंसक उपद्रव राज्यक्रान्ति प्रकृति-प्रकोप से हानिकारक है। बंगाल बिहार के मध्यावधि चुनाव सुखप्रद सिद्ध नहीं होंगे। बंगाल बिहार में कांग्रेस पुनः पूर्व प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर पायेगी। बंगाल में साम्यवादी वामपक्षी दल बल पकड़ेगा। बंगाल की अपेक्षा बिहार में कांग्रेस को अधिक सफलता मिलेगी। परन्तु सुदृढ यशस्वी शासन प्रदान करने में कांग्रेस असमर्थ रहेगी। प्रथम तो वर्षारम्भ में ही मंत्रिमण्डल को झटका लगेगा और आगे २ अक्टूबर से पू. फा. में केतु प्रवेश करेगा अतः यहां से एक वर्ष के अन्दर पुनः बंगाल, बिहार का मंत्रिमण्डल भंग होगा। प्रकृति-प्रकोप से भी हानि होगी। असम, उड़ीसा, नागालेण्ड, मणिपुर की आर्थिक राजनैतिक स्थिति विशेष अशान्त बनेगी। असम और नागालेण्ड भारत सरकार के लिए भारी शिर दर्द बनेगा। चीन-पाक एजेण्ट भयंकर षड्यंत्र रचेंगे। ये बंगाल, असम, उड़ीसा में ही नहीं भारत भर के हर राजनैतिक सामाजिक

(शेष पृष्ठ १३१/१३२ पर देखें)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दैनिक स्पष्ट ग्रह

इस पचाग मे यहां नीचे सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, स्पष्ट विकला पर्यन्त, और मंगल गुरु शनि राहु तथा हर्शल नेपच्यून कला पर्यन्त दिये गये हैं। यह दैनिक स्पष्ट ग्रह प्रातः स्टेण्डर्ड टाइम ५ बजकर ३० मिनट के है। इन स्पष्ट ग्रहों से प्रत्येक स्थान के तात्कालिक स्पष्ट ग्रह जानने की विधि यह है कि जैसे किसी दिन भारत में कहीं भी स्टेण्डर्ड टाइम से दिन के २ बजकर ४५ मिनट पर किसी व्यक्ति का जन्म या प्रश्न है तो यह प्रातः घण्टा ५ मिनट ३० से मध्याह्नोत्तर घण्टा १४।४५ तक ९ घण्टा १५ मिनट हुए। यही घण्टात्मक धन चालन हुआ। इसको २॥ से गुणने पर २३।७।३० घटी पल विकलात्मक धन चालन बन गया। इस चालन द्वारा दैनिक ग्रहगतिको त्रैराशिक या गोमूत्रिकाक्रम से गुणन करके कलादि फल को मार्गी ग्रह में जोड़ने और वक्री ग्रह में घटाने से तात्कालिक स्पष्ट ग्रह होगा। राहुमें ६ राशि जोड़ने से केतु बन जाता है। अतः यहां केतु को अलग नहीं लिया है। इन दैनिक ग्रहों से गति जानने का प्रकार यह है कि जिस दिनका स्पष्ट ग्रह करना है उस दिनके राश्यादि स्पष्ट ग्रहको उससे अगले दिन के राश्यादि स्पष्ट ग्रह में से घटा देवें, जो शेष रहे वह दैनिक गति होगी।

मार्च सन् १९६९ ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाईम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा: २३।२५।३६ मासारम्भे प्लूटो ५।०।१३ वक्री

ता०	सूर्य				चन्द्र				मंगल			बुध				गुरु			शुक्र				शनि			राहु			हर्शल			नेपच्यून			ता०
मार्च	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	रा	अं	क.	रा	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	मार्च
१९	११	४	४७	१०	११	१४	४०	३१	७	१५	२७	१०	१६	३२	१७	५	८	६	०	३	२३	७	०	१	२०	११	७	७	५	८	४२	७	५	१२	१९
२०	११	५	४६	४९	११	२७	४८	१५	७	१५	४८	१०	१८	१०	५३	५	७	५९	०	३	२१	१९	०	१	२७	११	७	३	५	८	४०	७	५	११	२०
२१	११	६	४६	२६	०	१०	३७	४४	७	१६	९	१०	१९	५०	४४	५	७	५१	०	३	१९	२४	०	१	३४	११	७	०	५	८	३८	७	५	११	२१
२२	११	७	४६	०	०	२३	९	५५	७	१६	२९	१०	२१	३१	५०	५	७	४३	०	३	८	५९	०	१	४१	११	६	५७	५	८	३५	७	५	१०	२२
२३	११	८	४५	३२	१	४	२६	५७	७	१६	४९	१०	२३	१४	१३	५	७	३५	०	२	५९	५	०	१	४८	११	६	५४	५	८	३२	७	५	९	२३
२४	११	९	४५	४	१	१७	३१	५८	७	१७	८	१०	२४	५७	५३	५	७	२८	०	२	४६	४०	०	१	५६	११	६	५१	५	८	३०	७	५	८	२४
२५	११	१०	४४	३२	१	२९	५८	५०	७	१७	२८	१०	२६	४२	५१	५	७	२०	०	२	३१	४६	०	२	३	११	६	४७	५	८	२७	७	५	८	२५
२६	११	११	४३	५८	२	११	२१	५४	७	१७	४७	१०	२८	२९	८	५	७	१२	०	२	१४	२६	०	२	१०	११	६	४४	५	८	२४	७	५	७	२६
२७	११	१२	४३	२२	२	२३	१५	४३	७	१८	५	११	०	१६	४३	५	७	४	०	१	५४	४१	०	२	१८	११	६	४१	५	८	२२	७	५	६	२७
२८	११	१३	४२	४१	३	५	१५	१६	७	१८	२३	११	२	५	३७	५	६	५७	०	१	३२	३७	०	२	२५	११	६	३८	५	८	१९	७	५	५	२८
२९	११	१४	४२	१	३	१७	२४	३६	७	१८	४१	११	३	५५	४४	५	६	४९	०	१	८	१८	०	२	३२	११	६	३५	५	८	१६	७	५	४	२९
३०	११	१५	४१	१८	३	२९	४७	५१	७	१८	५८	११	५	४७	३१	५	६	४१	०	०	४१	५०	०	२	४०	११	६	३२	५	८	१४	७	५	३	३०
३१	११	१६	४०	३२	४	१२	२३	८	७	१९	१५	११	७	४०	२८	५	६	३४	०	०	१३	२१	०	२	४७	११	६	२८	५	८	११	७	५	२	३१

अप्रैल सन् १९७० ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाईम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा: २३।२६।३४ मासारम्भे प्लूटो ५।२।१२ वक्री

ता०	सूर्य				चन्द्र				मंगल			बुध				गुरु			शुक्र				शनि			राहु			हर्शल			नेपच्यून			ता०
अप्रैल	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अप्रैल
१	११	१७	३८	३२	९	७	३९	४०	०	१४	३१	११	२६	०	४६	६	१०	१०	६	१०	९	३७	०	१४	४१	१०	१७	५	५	१३	८	७	७	१४	१
२	११	१८	३७	५४	९	२२	९	३०	०	१४	४४	११	२८	८	४९	६	१०	३	६	१०	३	२	०	१४	४८	१०	१७	१	५	१३	६	७	७	१३	२
३	११	१९	३७	४४	१०	५	३३	४३	०	[illegible]	[illegible]	०	०	८	१०	६	९	५६	६	९	५६	२२	०	१४	५५	१०	१६	५८	५	१३	३	७	७	१२	३
४	११	२०	३६	५४	१०	२१	६	११	०	[illegible]	११	०	२	६	५६	६	९	५०	६	९	४९	१३	०	१५	२	१०	१६	५५	५	१३	०	७	७	११	४
५	११	२१	३६	१	११	५	३७	४०	०	[illegible]	०	०	४	६	२१	६	९	४३	६	९	४२	४०	०	१५	९	१०	१६	५२	५	१२	५८	७	७	१०	५
६	११	२२	३०	६	११	२०	१	३७	०	[illegible]	[illegible]	०	५	५७	४१	६	९	३६	६	९	३५	४२	०	१५	१७	१०	१६	४९	५	१२	५५	७	७	९	६

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अप्रैल सन् १९९९ ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह । अयनांशाः २३।२५।३८ मासारम्भे प्लूटो ७।२९।५३ वक्री

ता०	सूर्य				चन्द्र				मंगल			बुध				गुरु			शुक्र				शनि			राहु			हर्शल			नेपच्यून			ता०
अप्रैल	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क	रा.	अ.	क.	अप्रैल
१	११	१७	३९	४१	४	२५	२७	३१	७	१९	३१	११	९	३४	४४	५	६	२६	११	२६	४२	५७	०	२	५५	११	६	२५	५	८	९	७	५	१	१
२	११	१८	३८	५१	५	८	४६	५१	७	१९	४७	११	११	३०	२१	५	६	१९	११	२९	१०	५४	०	३	१	११	६	२२	५	८	६	७	५	०	२
३	११	१९	३७	५९	५	२२	२५	२३	७	२०	२	११	१३	२७	२१	५	६	११	११	२८	३७	२०	०	३	१०	११	६	१९	५	८	४	७	४	५९	३
४	११	२०	३७	०५	६	६	२०	५५	७	२०	१७	११	१५	२५	३८	५	६	४	११	२८	२	२७	०	३	१७	११	६	१६	५	८	१	७	४	५८	४
५	११	२१	३६	०९	६	२०	२९	५४	७	२०	३१	११	१७	२५	११	५	५	५७	११	२७	२६	९	०	३	२५	११	६	१२	५	७	५९	७	४	५७	५
६	११	२२	३५	११	७	४	४७	५५	७	२०	४५	११	१९	२५	५७	५	५	४९	११	२६	४९	४०	०	३	३२	११	६	९	५	७	५६	७	४	५६	६
७	११	२३	३४	११	७	१९	१०	१०	७	२०	५९	११	२१	२७	५२	५	५	४२	११	२६	१२	५५	०	३	४०	११	६	६	५	७	५४	७	४	५५	७
८	११	२४	३३	१०	८	३	३१	८	७	२१	११	११	२३	३०	५१	५	५	३५	११	२५	३४	२८	०	३	४७	११	६	३	५	७	५१	७	४	५४	८
९	११	२५	३२	७	८	१७	४९	५५	७	२१	२४	११	२५	३४	४७	५	५	२८	११	२४	५६	३५	०	३	५५	११	६	०	५	७	४९	७	४	५३	९
१०	११	२६	३१	२	९	१	५९	३७	७	२१	३५	११	२७	३९	३३	५	५	२१	११	२४	१८	५१	०	४	२	११	५	५७	५	७	४६	७	४	५२	१०
११	११	२७	२९	५५	९	१६	२	११	७	२१	४७	११	२९	४४	५८	५	५	१५	११	२३	४१	३१	०	४	१०	११	५	५३	५	७	४४	७	४	५१	११
१२	११	२८	२८	४७	९	२९	५३	२३	७	२१	५७	०	१	५०	५२	५	५	८	११	२३	४	४९	०	४	१८	११	५	५०	५	७	४१	७	४	४९	१२
१३	११	२९	२७	३७	१०	१३	३२	२४	७	२२	७	०	३	५७	२	५	५	१	११	२२	२९	०	०	४	२५	११	५	४७	५	७	३९	७	४	४८	१३
१४	०	०	२६	२५	१०	२७	१	४०	७	२२	१७	०	६	३	१३	५	४	५५	११	२१	५४	१७	०	४	३३	११	५	४४	५	७	३७	७	४	४७	१४
१५	०	१	२५	११	११	१०	१७	४१	७	२२	२६	०	८	९	१०	५	४	४९	११	२१	२०	५३	०	४	४०	११	५	४१	५	७	३४	७	४	४६	१५
१६	०	२	२३	५४	११	२३	२०	५७	७	२२	३४	०	१०	१४	३१	५	४	४२	११	२०	४८	५६	०	४	४८	११	५	३८	५	७	३२	७	४	४४	१६
१७	०	३	२२	३६	०	६	११	१३	७	२२	४१	०	१२	१९	३	५	४	३६	११	२०	१८	४१	०	४	५६	११	५	३४	५	७	३०	७	४	४३	१७
१८	०	४	२१	१६	०	१८	४८	२२	७	२२	४८	०	१४	२२	२५	५	४	३०	११	१९	५०	१७	०	५	३	११	५	३१	५	७	२८	७	४	४२	१८
१९	०	५	१९	५५	१	१	१२	५१	७	२२	५४	०	१६	२४	१६	५	४	२४	११	१९	२३	५९	०	५	११	११	५	२८	५	७	२५	७	४	४०	१९
२०	०	६	१८	३२	१	१३	२५	४६	७	२३	०	०	१८	२४	१६	५	४	१९	११	१८	५९	२७	०	५	१९	११	५	२५	५	७	२३	७	४	३९	२०
२१	०	७	१७	६	१	२५	२८	५८	७	२३	५	०	२०	२२	६	५	४	१३	११	१८	३७	१६	०	५	२६	११	५	२२	५	७	२१	७	४	३७	२१
२२	०	८	१५	३८	२	७	२५	१७	७	२३	९	०	२२	१७	२६	५	४	८	११	१८	१७	२१	०	५	३४	११	५	१८	५	७	१९	७	४	३६	२२
२३	०	९	१४	०९	२	१९	१७	३६	७	२३	१३	०	२४	१०	१	५	४	७	११	१७	५९	४५	०	५	४२	११	५	१५	५	७	१७	७	४	३५	२३
२४	०	१०	१२	३७	३	१	१०	२९	७	२३	१६	०	२५	५९	३३	५	३	५७	११	१७	४४	३२	०	५	४९	११	५	१२	५	७	१५	७	४	३३	२४
२५	०	११	११	३	३	१३	८	१९	७	२३	१८	०	२७	४५	४७	५	३	५२	११	१७	३१	४३	०	५	५७	११	५	९	५	७	१३	७	४	३२	२५
२६	०	१२	९	२७	३	२५	१५	५७	७	२३	१९	०	२९	२८	३३	५	३	४७	११	१७	२१	२०	०	६	४	११	५	६	५	७	११	७	४	३०	२६
२७	०	१३	७	४८	४	७	३८	१०	७	२३	२०	१	१	७	३४	५	३	४३	११	१७	१३	२३	०	६	१२	११	५	३	५	७	९	७	४	२९	२७
२८	०	१४	६	८	४	२०	१९	२५	७	२३	२०	१	२	४२	४५	५	३	३८	११	१७	७	५१	०	६	२०	११	४	५९	५	७	७	७	४	२७	२८
२९	०	१५	४	२५	५	३	२३	१७	७	२३	१९	१	४	१३	५६	५	३	३४	११	१७	४	४४	०	६	२७	११	४	५६	५	७	५	७	४	२६	२९
३०	०	१६	२	४०	५	१६	५२	०	७	२३	१८	१	५	४०	५९	५	३	३०	मा ११	१७	४	१	०	६	३५	११	४	५३	५	७	३	७	४	२४	३०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मई सन् १९६६ ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाईम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३।२५।४२ मासारम्भे प्लूटो ४।२६।१४ वक्री

ता० मई	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	ता० मई
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	
१	० १७ ० ५२	६ ० ४५ ४३	७ २३ १५	१ ७ ३ ४५	५ ३ २६	११ १७ ५ ३८	० ६ ४२	११ ४ ५०	५ ७ १	७ ४ २३	१
२	० १७ ५९ ३	६ १५ २ २१	७ २३ १२	१ ८ २२ १४	५ ३ २२	११ १७ ९ ३६	० ६ ५०	११ ४ ४७	५ ६ ५९	७ ४ २१	२
३	० १८ ५७ १३	६ २९ ३७ ७	७ २३ ९	१ ९ ३६ १७	५ ३ १८	११ १७ १५ ४१	० ६ ५७	११ ४ ४३	५ ६ ५८	७ ४ २०	३
४	० १९ ५५ २२	७ १४ २३ १२	७ २३ ४	१ १० ४५ ५०	५ ३ १४	११ १७ २४ १०	० ७ ५	११ ४ ४०	५ ६ ५६	७ ४ १८	४
५	० २० ५३ २९	७ २९ १२ ३४	७ २२ ५९	१ ११ ५० ५०	५ ३ ११	११ १७ ३४ ५०	० ७ १२	११ ४ ३७	५ ६ ५४	७ ४ १६	५
६	० २१ ५१ ३४	८ १३ ५७ १७	७ २२ ५३	१ १२ ५१ ११	५ ३ ८	११ १७ ४७ ४३	० ७ २०	११ ४ ३४	५ ६ ५३	७ ४ १५	६
७	० २२ ४९ ३८	८ २८ ३० ४४	७ २२ ४६	१ १३ ४६ ४९	५ ३ ५	११ १८ २ १९	० ७ २७	११ ४ ३१	५ ६ ५१	७ ४ १३	७
८	० २३ ४७ ४१	९ १२ ४८ २६	७ २२ ३९	१ १४ ३७ ४२	५ ३ २	११ १८ १९ [illegible]	० ७ ३५	११ ४ २८	५ ६ ४९	७ ४ १२	८
९	० २४ ४५ ४२	९ २६ ४८ ६	७ २२ ३०	१ १५ २३ ४५	५ २ ५९	११ १८ ३७ ४[illegible]	० ७ ४२	११ ४ २४	५ ६ ४८	७ ४ १०	९
१०	० २५ ४३ ४२	१० १० २९ २४	७ २२ २१	१ १६ ४ ५५	५ २ ५७	११ १८ ५८ १७	० ७ ५०	११ ४ २१	५ ६ ४७	७ ४ ९	१०
११	० २६ ४१ ४१	१० २३ ५३ २२	७ २२ ११	१ १६ ४१ १०	५ २ ५४	११ १९ २० ३६	० ७ ५७	११ ४ १८	५ ६ ४५	७ ४ ७	११
१२	० २७ ३९ ३९	११ ७ १ ४२	७ २२ १	१ १७ १२ २५	५ २ ५२	११ १९ ४४ ३०	० ८ ४	११ ४ १५	५ ६ ४४	७ ४ ६	१२
१३	० २८ ३७ ३४	११ १९ ५६ १७	७ २१ ५०	१ १७ ३७ ४१	५ २ ५०	११ २० १० २१	० ८ १२	११ ४ १२	५ ६ ४३	७ ४ ४	१३
१४	० २९ ३५ २९	० २ ३८ ४८	७ २१ ३८	१ १७ ५९ ५६	५ २ ४८	११ २० ३७ ३०	० ८ १९	११ ४ ८	५ ६ ४२	७ ४ ३	१४
१५	१ ० ३३ २२	० १५ १० ३६	७ २१ २५	१ १८ १६ ९	५ २ ४७	११ २१ ६ २९	० ८ २६	११ ४ ५	५ ६ ४०	७ ४ १	१५
१६	१ १ ३१ १२	० २७ ३२ ४०	७ २१ ११	१ १८ २७ २१	५ २ ४५	११ २१ ३६ ४६	० ८ ३४	११ ४ २	५ ६ ३९	७ ३ ५९	१६
१७	१ २ २९ २	१ ९ ४५ ५५	७ २० ५७	व१ १८ ३३ ३८	५ २ ४४	११ २२ ८ ३०	० ८ ४१	११ ३ ५९	५ ६ ३८	७ ३ ५७	१७
१८	१ ३ २६ ५१	१ २१ ५१ ४३	७ २० ४३	१ १८ ३५ ३	५ २ ४३	११ २२ ४१ ३५	० ८ ४८	११ ३ ५६	५ ६ ३७	७ ३ ५६	१८
१९	१ ४ २४ ३९	२ ३ ४९ ४९	७ २० २७	१ १८ ३१ ५४	५ २ ४२	११ २३ १६ ०	० ८ ५५	११ ३ ५३	५ ६ ३६	७ ३ ५४	१९
२०	१ ५ २२ २५	२ १५ ४३ ३५	७ २० १२	१ १८ २३ ५१	५ २ ४१	११ २३ ५१ ३६	० ९ २	११ ३ ४९	५ ६ ३५	७ ३ ५२	२०
२१	१ ६ २० १०	२ २७ ३४ २६	७ १९ ५५	१ १८ ११ ३८	५ २ ४१	११ २४ २८ ३२	० ९ १०	११ ३ ४६	५ ६ ३४	७ ३ ५१	२१
२२	१ ७ १७ ५३	३ ९ २५ ३	७ १९ ३८	१ १७ ५५ १७	५ २ ४१	११ २५ ६ ३०	० ९ १७	११ ३ ४३	५ ६ ३३	७ ३ ४९	२२
२३	१ ८ १५ ३४	३ २१ २१ ३	७ १९ २१	१ १७ ३४ ७	मार्ग २ ४०	११ २५ ४५ ४३	० ९ २४	११ ३ ४०	५ ६ ३२	७ ३ ४८	२३
२४	१ ९ १३ १४	४ ३ २७ १५	७ १९ ३	१ १७ ११ ४२	५ २ ४०	११ २६ २५ ५६	० ९ ३१	११ ३ ३७	५ ६ ३२	७ ३ ४६	२४
२५	१ १० १० ५३	४ १५ ४५ १०	७ १८ ४४	१ १६ ४५ ०	५ २ ४१	११ २७ ७ १२	० ९ ३८	११ ३ ३३	५ ६ ३१	७ ३ ४४	२५
२६	१ ११ ८ २९	४ २८ २४ २०	७ १८ २५	१ १६ १५ ४४	५ २ ४१	११ २७ ४६ २७	० ९ ४५	११ ३ ३०	५ ६ ३०	७ ३ ४३	२६
२७	१ १२ ६ ६	५ ११ २५ ५९	७ १८ ६	१ १५ ४४ ५६	५ २ ४२	११ २८ ३२ ३६	० ९ ५१	११ ३ २७	५ ६ ३०	७ ३ ४१	२७
२८	१ १३ ३ ४०	५ २४ ५४ ५०	७ १७ ४६	१ १५ ११ ११	५ २ ४२	११ २९ १६ ४७	० ९ ५८	११ ३ २४	५ ६ २९	७ ३ ३९	२८
२९	१ १४ १ ११	६ ८ ५२ ३५	७ १७ २६	१ १४ ३८ ४१	५ २ ४३	० ० १ ४८	० १० ५	११ ३ २१	५ ६ २८	७ ३ ३८	२९
३०	१ १४ ५८ ४२	६ २३ १७ ४६	७ १७ ६	१ १४ ५ ३१	५ २ ४४	० ० ४७ ४०	० १० १२	११ ३ १८	५ ६ २८	७ ३ ३६	३०
३१	१ १५ ५६ १२	७ ८ ० ३३	७ १६ ४६	१ १३ ३१ ४३	५ २ ४६	० १ ३४ २२	० १० १९	११ ३ १४	५ ६ २८	७ ३ ३५	३१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उत्तर
आर्थिक र
'

ता० अप्रैल

जून सन् १९६६ ई० प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्टग्रह । अयनांशा: २३।२१।५७ मासारम्भे प्लूटो ४।२८।५६ वक्री

ता० जून	सूर्य				चन्द्र				मंगल			बुध				गुरु			शुक्र				शनि			राहु			हर्षल			नेपच्यून			ता० जून
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	
१	१	१६	५३	४१	७	२३	१२	२७	७	१६	२७	१	१२	५८	३१	५	२	४७	०	२	२१	५०	०	१०	२५	११	३	११	५	६	२७	७	३	३३	१
२	१	१७	५१	९	८	८	२३	३०	७	१६	७	१	१२	२७	१२	५	२	४९	०	३	१०	६	०	१०	३२	११	३	८	५	६	२७	७	३	३१	२
३	१	१८	४८	३६	८	२३	२९	५३	७	१५	४६	१	११	५७	४९	५	२	५१	०	३	५९	७	०	१०	३८	११	३	५	५	६	२७	७	३	२९	३
४	१	१९	४६	२	९	८	२२	१२	७	१५	२६	१	११	३०	५०	५	२	५३	०	४	४८	५०	०	१०	४५	११	३	२	५	६	२७	७	३	२८	४
५	१	२०	४३	२९	९	२२	५३	४५	७	१५	६	१	११	६	४२	५	२	५५	०	५	३९	१४	०	१०	५१	११	२	५९	५	६	२६	७	३	२६	५
६	१	२१	४०	५३	१०	७	१	२	७	१४	४५	१	१०	४५	५०	५	२	५७	०	६	३०	१८	०	१०	५८	११	२	५५	५	६	२६	७	३	२५	६
७	१	२२	३८	१७	१०	२०	४३	३१	७	१४	२५	१	१०	२८	३२	५	३	०	०	७	२२	०	०	११	४	११	२	५२	मा५	६	२६	७	३	२३	७
८	१	२३	३५	४१	१०	४	२	४८	७	१४	५	१	१०	१५	५	५	३	२	०	८	१४	१९	०	११	११	११	२	४९	५	६	२६	७	३	२२	८
९	१	२४	३३	४	११	१७	१	४९	७	१३	४५	१	१०	५	४४	५	३	५	०	९	७	१२	०	११	१७	११	२	४६	५	६	२६	७	३	२१	९
१०	१	२५	३०	२७	११	२९	४३	५५	७	१३	२५	मा१	१०	०	३८	५	३	८	०	१०	०	४०	०	११	२३	११	२	४३	५	६	२७	७	३	१९	१०
११	१	२६	२७	४९	०	१२	१२	२६	७	१३	६	१	९	५९	५६	५	३	११	०	१०	५४	४०	०	११	२९	११	२	३९	५	६	२७	७	३	१८	११
१२	१	२७	२५	११	०	२४	३०	१२	७	१२	४७	१	१०	३	४२	५	३	१५	०	११	४९	१२	०	११	३५	११	२	३६	५	६	२७	७	३	१६	१२
१३	१	२८	२२	३२	१	६	३९	४३	७	१२	२८	१	१०	१२	१	५	३	१८	०	१२	४४	१४	०	११	४२	११	२	३३	५	६	२७	७	३	१५	१३
१४	१	२९	१९	५२	१	१८	४२	३९	७	१२	१०	१	१०	२४	५३	५	३	२२	०	१३	३९	४५	०	११	४८	११	२	३०	५	६	२७	७	३	१४	१४
१५	२	०	१७	११	२	०	४०	२६	७	११	५३	१	१०	४२	१९	५	३	२६	०	१४	३५	४४	०	११	५३	११	२	२७	५	६	२८	७	३	१२	१५
१६	२	१	१४	३०	२	१२	३४	२०	६	११	३५	१	११	४	१४	५	३	३०	०	१५	३२	८	०	११	५९	११	२	२४	५	६	२८	७	३	११	१६
१७	२	२	११	४८	२	२४	२५	४७	७	११	१९	१	११	३०	४०	५	३	३४	०	१६	२८	५९	०	१२	५	११	२	२०	५	६	२९	७	३	१०	१७
१८	२	३	९	६	३	६	१६	३०	७	११	३	१	१२	१	३३	५	३	३८	०	१७	२६	१९	०	१२	११	११	२	१७	५	६	२९	७	३	८	१८
१९	२	४	६	२३	३	१८	८	४८	७	१०	४७	१	१२	३६	४८	५	३	४३	०	१८	२३	५७	०	१२	१७	११	२	१४	५	६	३०	७	३	७	१९
२०	२	५	३	४०	४	०	५	४०	७	१०	३२	१	१३	१६	२१	५	३	४७	०	१९	२२	२	०	१२	२२	११	२	११	५	६	३१	७	३	५	२०
२१	२	६	०	५६	४	१२	१०	५०	७	१०	१८	१	१४	०	९	५	३	५२	०	२०	२०	२९	०	१२	२८	११	२	८	५	६	३१	७	३	४	२१
२२	२	६	५८	११	४	२४	२८	३९	७	१०	५	१	१४	४८	७	५	३	५७	०	२१	१९	१८	०	१२	३३	११	२	४	५	६	३२	७	३	३	२२
२३	२	७	५५	२५	५	७	३	५२	७	९	५२	१	१५	४०	१२	५	४	२	०	२२	१८	२८	०	१२	३९	११	२	१	५	६	३३	७	३	१	२३
२४	२	८	५२	३९	५	२०	१	१७	७	९	४०	१	१६	३६	१९	५	४	७	०	२३	१८	०	०	१२	४४	११	१	५९	५	६	३४	७	३	०	२४
२५	२	९	४९	५२	६	३	२५	३	७	९	२९	१	१७	३६	२४	५	४	१३	०	२४	१७	५१	०	१२	५०	११	१	५५	५	६	३५	७	२	५९	२५
२६	२	१०	४७	५	६	१७	१७	५६	७	९	१८	१	१८	४०	२५	५	४	१८	०	२५	१८	१	०	१२	५५	११	१	५२	५	३	३६	७	२	५८	२६
२७	२	११	४४	१७	७	१	४०	१७	७	९	९	१	१९	४८	१७	५	४	२४	०	२६	१८	३१	०	१३	०	११	१	४९	५	६	३७	७	२	५६	२७
२८	२	१२	४१	२९	७	१६	२९	१२	७	९	०	१	२०	५९	५९	५	४	३०	०	२७	१९	१९	०	१३	५	११	१	४५	५	६	३८	७	२	५५	२८
२९	२	१३	३८	४१	८	१	३८	४	७	८	५२	१	२२	१५	२७	५	४	३६	०	२८	२०	२६	०	१३	१०	११	१	४२	५	६	३९	७	२	५४	२९
३०	२	१४	३५	५२	८	१६	५७	७	७	८	४४	१	२३	३४	३८	५	४	४२	०	२९	२१	५०	०	१३	१५	११	१	३९	५	६	४०	७	२	५३	३०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जुलाई सन् १९६९ ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्टग्रह। अयनांशाः २३।२४।५३ मासारम्भे प्लूटो ४।२६।११

ता० जुलाई	सूर्य रा. अ. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अ. क.	शुक्र रा. अ. क. वि.	शनि रा. अ. क	राहु रा. अ. क.	हर्शल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क	ता० जुलाई
१	२ १५ ३३ २	९ २ १४ ५१	७ ८ ३८	१ २४ ५७ १८	५ ४ ४८	१ ० २३ २८	० १३ २०	११ १ ३६	५ ६ ४१	७ २ ५२	१
२	२ १६ ३० ११	९ १७ २० २२	७ ८ ३२	१ २६ २३ ३८	५ ४ ५५	१ १ २५ २७	० १३ २५	११ १ ३३	५ ६ ४२	७ २ ५१	२
३	२ १७ २७ २३	१० २ ४ ५४	७ ८ २८	१ २७ ५४ ४	५ ५ १	१ २ २७ ४१	० १३ २९	११ १ २९	५ ६ ४४	७ २ ५०	३
४	२ १८ २४ ३४	१० १६ २३ १०	७ ८ २४	१ २९ २७ ४२	५ ५ ८	१ ३ ३० ११	० १३ ३४	११ १ २६	५ ६ ४५	७ २ ४९	४
५	२ १९ २१ ४५	११ ० १३ २१	७ ८ २१	२ १ ४ ३८	५ ५ १५	१ ४ ३२ ५६	० १३ ३९	११ १ २३	५ ६ ४७	७ २ ४८	५
६	२ २० १८ ५७	११ १३ ३६ २९	७ ८ १८	२ २ ४५ १८	५ ५ २१	१ ५ ३५ ५७	० १३ ४३	११ १ २०	५ ६ ४८	७ २ ४७	६
७	२ २१ १६ ९	११ २६ ३५ २६	७ ८ १७	२ ४ २९ ६	५ ५ २९	१ ६ ३९ १२	० १३ ४८	११ १ १७	५ ६ ५०	७ २ ४६	७
८	२ २२ १३ २१	० ९ १४ ६	७ ८ १६	२ ६ १६ ५	५ ५ ३६	१ ७ ४२ ४१	० १३ ५२	११ १ १४	५ ६ ५१	७ २ ४५	८
९	२ २३ १० ३४	० २१ ३६ ४१	मा० ७ ८ १६	२ ८ ६ ८	५ ५ ४३	१ ८ ४६ २४	० १३ ५६	११ १ १०	५ ६ ५३	७ २ ४४	९
१०	२ २४ ७ ४७	१ ३ ४७ १०	७ ८ १७	२ ९ ५९ ६	५ ५ ५०	१ ९ ५० २०	० १४ ०	११ १ ७	५ ६ ५४	७ २ ४३	१०
११	२ २५ ५ १	१ १५ ४९ ५	७ ८ १९	२ ११ ५४ ४६	५ ५ ५८	१ १० ५४ २९	० १४ ४	११ १ ४	५ ६ ५६	७ २ ४२	११
१२	२ २६ २ १५	१ २७ ४५ १९	७ ८ २२	२ १३ ५२ ५८	५ ६ ६	१ ११ ५८ ५१	० १४ ८	११ १ १	५ ६ ५८	७ २ ४१	१२
१३	२ २६ ५९ ३०	२ ९ ३९ १४	७ ८ २५	२ १५ ५३ २५	५ ६ १४	१ १३ ३ २४	० १४ १२	११ ० ५८	५ ७ ०	७ २ ४१	१३
१४	२ २७ ५६ ४४	२ २१ २९ ४२	७ ८ ३०	२ १७ ५५ ५३	५ ६ २१	१ १४ ८ १०	० १४ १६	११ ० ५५	५ ७ २	७ २ ४०	१४
१५	२ २८ ५३ ५९	३ ३ २१ १९	७ ८ ३५	२ २० ० ५	५ ६ ३०	१ १५ १३ ७	० १४ २०	११ ० ५१	५ ७ ३	७ २ ३९	१५
१६	२ २९ ५१ १४	३ १५ १४ ३८	७ ८ ४१	२ २२ ५ ४१	५ ६ ३८	१ १६ १८ १३	० १४ २४	११ ० ४८	५ ७ ५	७ २ ३८	१६
१७	३ ० ४८ २८	३ २७ ११ ३८	७ ८ ४७	२ २४ १२ २५	५ ६ ४६	१ १७ २३ ३२	० १४ २७	११ ० ४५	५ ७ ७	७ २ ३७	१७
१८	३ १ ४५ ४४	४ ९ २३ ५५	७ ८ ५५	२ २६ १९ ५७	५ ६ ५४	१ १८ २९ १	० १४ ३१	११ ० ४२	५ ७ ९	७ २ ३७	१८
१९	३ २ ४३ [illegible]	४ २१ २४ ४१	७ ९ ३	२ २८ २८ १	५ ७ २	१ १९ ३४ ४१	० १४ ३४	११ ० ३९	५ ७ ११	७ २ ३६	१९
२०	३ ३ ४० [illegible]	५ ३ ४७ [illegible]	७ ९ १२	३ ० ३६ १५	५ ७ ११	१ २० ४० ३१	० १४ ३७	११ ० ३५	५ ७ १३	७ २ ३६	२०
२१	३ ४ ३७ [illegible]	५ १६ २४ [illegible]	७ ९ २१	३ २ ४४ २५	५ ७ २०	१ २१ ४६ ३१	० १४ ४०	११ ० ३२	५ ७ १६	७ २ ३५	२१
२२	३ ५ ३४ [illegible]	५ २९ [illegible] [illegible]	७ ९ ३१	३ ४ ५२ १५	५ ७ २९	१ २२ ५२ ४०	० १४ ४४	११ ० २९	५ ७ १८	७ २ ३५	२२
२३	३ ६ ३२ [illegible]	[illegible]	७ ९ ४४	३ ६ ५९ ३०	५ ७ ३८	१ २३ ५९ ०	० १४ ४७	११ ० २६	५ ७ २०	७ २ ३४	२३
२४	३ ७ २९ [illegible]	[illegible]	७ ९ ५५	३ ९ ५ ३७	५ ७ ४७	१ २५ ५ २८	० १४ ४९	११ ० २३	५ ७ २२	७ २ ३४	२४
२५	३ ८ २६ [illegible]	[illegible]	७ १० ८	३ ११ ११ २९	५ ७ ५६	१ २६ १२ ६	० १४ ५२	११ ० २०	५ ७ ३५	७ २ ३३	२५
२६	३ ९ २४ [illegible]	[illegible]	७ १० २१	३ १३ १५ ४४	५ ८ ५	१ २७ १८ ५३	० १४ ५५	११ ० १६	५ ७ २७	७ २ ३३	२६
२७	३ १० २१ [illegible]	[illegible]	७ १० ३५	३ १५ १७ ४	५ ८ १५	१ २८ २५ ५०	० १४ ५८	११ ० १३	५ ७ २९	७ २ ३३	२७
२८	३ ११ १८ [illegible]	[illegible]	७ १० ५०	३ १७ २० [illegible]	५ ८ २४	१ २९ ३२ ५५	० १५ ०	११ ० १०	५ ७ ३२	७ २ ३२	२८
२९	३ १२ १६ [illegible]	[illegible]	७ ११ ५	३ १९ २१ [illegible]	५ ८ ३४	२ ० ४० ९	० १५ ३	११ ० ७	५ ७ ३४	७ २ ३२	२९
३०	३ १३ १३ [illegible]	[illegible]	७ ११ २१	३ २१ २० [illegible]	५ ८ ४३	२ १ ४७ ३१	० १५ ५	११ ० ४	५ ७ ३७	७ २ ३२	३०
३१	३ १४ १० [illegible]	[illegible]	७ ११ [illegible]	३ २३ [illegible] [illegible]	५ ८ [illegible]	२ २ ५४ ३	० १५ ७	११ ० ०	५ ७ ४०	७ २ ३२	३१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उत्तरा
आर्थिक र

अगस्त सन् १९६६ ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्टग्रह। अयनांशाः २३।२४।५८ मासारम्भे प्लूटो ४।२६।५२

ता० अगस्त	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता० अगस्त
१	३ १५ ८ ३	१० २४ ५६ ४९	७ ११ ५५	३ २५ १३ २३	५ ९ ३	२ ४ २ ४०	० १५ ९	१० २९ ५७	५ ७ ४२	७ २ ३१	१
२	३ १६ ५ २६	११ ८ ५४ ३१	७ १२ १३	३ २७ ७ ३७	५ ९ १३	२ ५ १० २८	० १५ ११	१० २९ ५४	५ ७ ४५	७ २ ३१	२
३	३ १७ २ ५०	११ २२ २४ ३०	७ १२ ३२	३ २९ ० १६	५ ९ २३	२ ६ १८ २४	० १५ १३	१० २९ ५१	५ ७ ४८	७ २ ३१	३
४	३ १८ ० १६	० ५ २८ ३४	७ १२ ५१	४ ० ५१ १९	५ ९ ३३	२ ७ २६ २९	० १५ १५	१० २९ ४८	५ ७ ५१	७ २ ३१	४
५	३ १८ ५७ ४३	० १८ १० ३	७ १३ १०	४ २ ४० ४६	५ ९ ४३	२ ८ ३४ ४१	० १५ १७	१० २९ ४५	५ ७ ५४	७ २ ३१	५
६	३ १९ ५५ १२	१ ० ३३ ६	७ १३ ३०	४ ४ २८ ३७	५ ९ ५३	२ ९ ४३ २	० १५ १९	१० २९ ४१	५ ७ ५६	७ २ ३०	६
७	३ २० ५२ ४२	० १२ ४२ १०	७ १३ ५१	४ ६ १४ ५४	५ १० ४	२ १० ५१ ३०	० १५ २०	१० २९ ३८	५ ७ ५९	मा ७ २ ३०	७
८	३ २१ ५० १३	१ २४ ४१ ३२	७ १४ १२	४ ७ ५९ ३५	५ १० १४	२ १२ ० ५	० १५ २२	१० २९ ३४	५ ८ २	७ २ ३०	८
९	३ २२ ४७ ४५	२ ६ २५ ७	७ १४ ३४	४ ९ ४२ ४३	५ १० २५	२ १३ ८ ४८	० १५ २३	१० २९ ३२	५ ८ ५	७ २ ३०	९
१०	३ २३ ४५ १८	२ १८ २६ १९	७ १४ ५६	४ ११ २४ १८	५ १० ३५	२ १४ १७ ३८	० १५ २४	१० २९ २९	५ ८ ८	७ २ ३१	१०
११	३ २४ ४२ ५३	३ ० १७ ५९	७ १५ १९	४ १३ ४ १९	५ १० ४६	२ १५ २६ ३६	० १५ २५	१० २९ २५	५ ८ ११	७ २ ३१	११
१२	३ २५ ४० ३०	३ १२ १२ २७	७ १५ ४२	४ १४ ४२ ४९	५ १० ५७	२ १६ ३५ ४०	० १५ २६	१० २९ २२	५ ८ १४	७ २ ३१	१२
१३	३ २६ ३८ ७	३ २४ ११ ३९	७ १६ ५	४ १६ १६ ४६	५ ११ ७	२ १७ ४४ ५५	० १५ २७	१० २९ १९	५ ८ १७	७ २ ३१	१३
१४	३ २७ ३५ ४५	४ ६ १७ १५	७ १६ ३०	४ १७ ५५ १३	५ ११ १८	२ १८ ५४ ७	० १५ २८	१० २९ १६	५ ८ २०	७ २ ३१	१४
१५	३ २८ ३३ २४	४ १८ ३० ५१	७ १६ ५४	४ १९ २९ ७	५ ११ २९	२ २० ३ ३१	० १५ २९	१० २९ १३	५ ८ २३	७ २ ३१	१५
१६	३ २९ ३१ ४	५ ० ५४ ६	७ १७ १९	४ २१ १ २९	५ ११ ४०	२ २१ १२ ५९	० १५ २९	१० २९ १०	५ ८ २६	७ २ ३२	१६
१७	४ ० २८ ४६	५ १३ २८ ५६	७ १७ ४५	४ २२ ३२ २१	५ ११ ५१	२ २२ २२ ३६	० १५ ३०	१० २९ ६	५ ८ २९	७ २ ३२	१७
१८	४ १ २६ २९	५ २६ १७ २६	७ १८ ११	४ २४ १ ४१	५ १२ ३	२ २३ ३२ १८	० १५ ३०	१० २९ ३	५ ८ ३२	७ २ ३२	१८
१९	४ २ २४ १४	६ ९ २२ ५३	७ १८ ३८	४ २५ २९ २८	५ १२ १४	२ २४ ४२ ७	० १५ ३१	१० २९ ०	५ ८ ३५	७ २ ३३	१९
२०	४ ३ २१ ५९	६ २२ ४४ २५	७ १९ ५	४ २६ ५५ ४१	५ १२ २५	२ २५ ५२ २	० १५ ३१	१० २८ ५७	५ ८ ३९	७ २ ३३	२०
२१	४ ४ १९ ४५	७ ६ २६ ४२	७ १९ ३२	४ २८ २० १९	५ १२ ३७	२ २७ २ ३	० १५ ३१	१० २८ ५४	५ ८ ४२	७ २ ३३	२१
२२	४ ५ १७ ३२	७ २० २९ २१	७ २० ०	४ २९ ४३ २१	५ १२ ४८	२ २८ १२ १०	० १५ ३१	१० २८ ५०	६ ८ ४५	७ २ ३४	२२
२३	४ ६ १५ २१	८ ४ ५१ २७	७ २० २८	५ १ ४ ४५	५ १३ ०	२ २९ २२ २३	० १५ ३१	० २८ ४७	५ ८ ४९	७ २ ३४	२३
२४	४ ७ १३ ११	८ १९ २९ ५९	७ २० ५६	५ २ २४ ४८	५ १३ ११	३ ० ३२ ४१	० १५ ३०	१० २८ ४४	५ ८ ५२	७ २ ३५	२४
२५	४ ८ ११ २	९ ४ १६ ४६	७ २१ २५	५ ३ ४२ २८	५ ११ २३	३ १ ४३ ६	० १५ ३०	१० २८ ४१	५ ८ ५५	७ २ ३५	२५
२६	४ ९ ८ ५५	९ १९ १३ ४९	७ २१ ५४	५ ४ ५८ ४२	५ १३ ३४	३ २ ५३ ३६	० १५ ३०	१० २८ ३८	५ ८ ५९	७ २ ३६	२६
२७	४ १० ६ ४९	१० ४ ४ ७	७ २२ २४	५ ६ १३ ६	५ १३ ४६	३ ४ ४ १२	० १५ २९	१० २८ ३५	५ ९ २	७ २ ३६	२७
२८	४ ११ ४ ४४	१० १८ ४२ ५१	७ २२ ५४	५ ७ २५ ३६	५ १३ ५८	३ ५ १४ ५४	० १५ २८	१० २८ ३१	५ ९ ५	७ २ ३७	२८
२९	४ १२ २ ४१	११ ३ ३ २९	७ २३ २४	५ ८ ३६ ८	५ १४ १०	३ ६ २५ ४२	० १५ २८	१० २८ २८	५ ९ ९	७ २ ३८	२९
३०	४ १३ ० ३९	११ १७ १ ३१	७ २३ ५५	५ ९ ४४ ३८	५ १४ २२	३ ७ ३६ ३५	० १५ २७	१० २८ २५	५ ९ १२	७ २ ३८	३०
३१	४ १३ ५८ ३८	० ० ३४ ४७	७ २४ २६	५ १० ५० ५८	५ १४ ३४	३ ८ ४७ ३४	० १५ २६	१० २८ २२	५ ९ १६	७ २ ३९	३१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सितम्बर सन् १९६९ ई० प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्टग्रह । अयनांशाः २३।२६।२ मासारम्भे प्लूटो ५।०।५२

ता० सित.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्शल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता० सित०
१	४ १४ ५६ ३९	० १३ ४३ ३	७ २४ ५७	५ ११ ५५ १	५ १४ ४६	३ ९ ५८ ३७	० १५ २५	१० २८ १९	५ ९ १९	७ २ ४०	१
२	४ १५ ५४ ४३	० २६ २९ ५६	७ २५ २९	५ १२ ५६ ४४	५ १४ ५८	३ ११ ६ ४८	० १५ २४	१० २८ १६	५ ९ २३	७ २ ४१	२
३	४ १६ ५२ ४९	१ ८ ५५ ४०	७ २६ १	५ १३ ५५ ५६	५ १५ १०	३ १२ २१ ४	० १५ २२	१० २८ १२	५ ९ २७	७ २ ४२	३
४	४ १७ ५० ५७	१ २१ ६ ३७	७ २६ ३३	५ १४ ५२ २९	५ १५ २२	३ १३ ३२ ३५	० १५ २१	१० २८ ९	५ ९ ३०	७ २ ४२	४
५	४ १८ ४९ ७	२ ३ ६ ३६	७ २७ ६	५ १५ ४६ १२	५ १५ ३४	३ १४ ४३ ५२	० १५ १९	१० २८ ६	५ ९ ३३	७ २ ४३	५
६	४ १९ ४७ १९	२ १५ ० ७	७ २७ ३८	५ १६ ३६ ५५	५ १५ ४६	३ १५ ५५ २४	० १५ १८	१० २८ ३	५ ९ ३७	७ २ ४४	६
७	४ २० ४५ ३३	२ २६ ५१ ३०	७ २८ १२	५ १७ २४ २६	५ १५ ५९	३ १७ ७ २	० १५ १६	१० २८ ०	५ ९ ४१	७ २ ४५	७
८	४ २१ ४३ ४९	३ ८ ४४ ४१	७ २८ ४५	५ १८ ८ ११	५ १६ ११	३ १८ १८ ४४	० १५ १४	१० २७ ५६	५ ९ ४५	७ २ ४६	८
९	४ २२ ४२ ७	३ २० ४३ ५	७ २९ १९	५ १८ ४८ ५५	५ १६ २३	३ १९ ३० ३२	० १५ १२	१० २७ ५३	५ ९ ४९	७ २ ४७	९
१०	४ २३ ४० २७	४ २ ४९ ३३	७ २९ ५३	५ १९ २५ २४	५ १६ ३६	३ २० ४२ २४	० १५ १०	१० २७ ५०	५ ९ ५२	७ २ ४८	१०
११	४ २४ ३८ ४८	४ १५ ६ १६	८ ० २७	५ १९ ५७ ४०	५ १६ ४८	३ २१ ५४ २१	० १५ ८	१० २७ ४७	५ ९ ५६	७ २ ४९	११
१२	४ २५ ३७ १२	४ २७ ३४ ५०	८ १ २	५ २० २५ २५	५ १७ १	३ २३ ६ २२	० १५ ६	१० २७ ४४	५ ९ ५९	७ २ ५०	१२
१३	४ २६ ३५ ३७	५ १० १६ १७	८ १ ३६	५ २० ४८ १९	५ १७ १	३ २४ १८ २९	० १५ ४	१० २७ ४१	५ १० ३	७ २ ५१	१३
१४	४ २७ ३४ ४	५ २३ ११ १४	८ २ १२	५ २१ ६ ४	५ १७ २६	३ २५ ३० ३९	० १५ २	१० २७ ३७	५ १० ७	७ २ ५३	१४
१५	४ २८ ३२ ३२	६ ६ २५ ४२	८ २ ४७	५ २१ १८ १८	५ १७ ३८	३ २६ ४२ ५५	० १४ ५९	१० २७ ३४	५ १० १०	७ २ ५४	१५
१६	४ २९ ३१ ३	६ १९ ४२ २१	८ ३ २२	५ २१ २४ ३८	५ १७ ५१	३ २७ ५५ १२	० १४ ५६	१० २७ ३१	५ १० १४	७ २ ५५	१६
१७	५ ० २९ ३४	७ ३ १७ ५४	८ ३ ५८	५ २१ २४ ४८	५ १८ ४	३ २९ ७ ३६	० १४ ५४	१० २७ २८	५ १० १८	७ २ ५६	१७
१८	५ १ २८ ८	७ १७ ५ ३४	८ ४ ३४	५ २१ १८ २९	५ १८ १६	४ ० २० ५	० १४ ५१	१० २७ २५	५ १० २१	७ २ ५८	१८
१९	५ २ २६ ४४	८ १ ७ १०	८ ५ ११	५ २१ ५ २१	५ १८ २९	४ १ ३२ ३७	० १४ ४८	१० २७ २१	५ १० २५	७ २ ५९	१९
२०	५ ३ २५ २२	८ १५ १८ ३१	८ ५ ४७	५ २० ४५ १४	५ १८ ४२	४ २ ४५ १४	० १४ ४५	१० २७ १८	५ १० २९	७ ३ ०	२०
२१	५ ४ २४ ०	८ २९ ३८ ४१	८ ६ २४	५ २० १८ ०	५ १८ ५४	४ ३ ५७ ५४	० १४ ४२	१० २७ १५	५ १० ३२	७ ३ २	२१
२२	५ ५ २२ ४०	९ १४ ० ३४	८ ७ १	५ १९ ४३ ३९	५ १९ ७	४ ५ १० ३९	० १४ ३९	१० २७ १२	५ १० ३६	७ ३ ३	२२
२३	५ ६ २१ २१	९ २८ ३१ २४	८ ७ ३९	५ १९ २ २४	५ १९ २०	४ ६ २३ २८	० १४ ३६	१० २७ ९	५ १० ४०	७ ३ ५	२३
२४	५ ७ २० ६	१० १२ ५५ ३६	८ ८ १६	५ १८ १४ २७	५ १९ ३३	४ ७ ३६ २१	० १४ ३३	१० २७ ६	५ १० ४४	७ ३ ६	२४
२५	५ ८ १८ ५२	१० २७ १२ २	८ ८ ५४	५ १७ २० ३१	५ १९ ४६	४ ८ ४९ १८	० १४ २९	१० २७ २	५ १० ४७	७ ३ ७	२५
२६	५ ९ १७ ४०	११ ११ १६ ४०	८ ९ ३२	५ १६ २१ ४१	५ १९ ५९	४ १० २ १९	० १४ २६	१० २६ ५९	५ १० ५१	७ ३ ९	२६
२७	५ १० १६ २९	११ २५ २ ३६	८ १० १०	५ १५ १९ १	५ २० ११	४ ११ १५ ३	० १४ २२	१० २६ ५६	५ १० ५५	७ ३ १०	२७
२८	५ ११ १५ २१	० ८ ३० ३७	८ १० ४९	५ १४ ११ ५०	५ २० २४	४ १२ २८ ३२	० १४ १९	१० २६ ५३	५ १० ५९	७ ३ १२	२८
२९	५ १२ १४ १४	० २१ ३७ ५८	८ ११ २७	५ १३ ५ १५	५ २० ३७	४ १३ ४१ ४५	० १४ १५	१० २६ ५०	५ ११ ३	७ ३ १३	२९
३०	५ १३ १३ ११	१ ४ २४ ४६	८ १२ ६	५ ११ ५७ [illegible]	५ २० ५०	४ १४ ५५ २	० १४ १२	१० २६ ४७	५ ११ ७	७ ३ १५	३०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अक्टूबर सन् १९६९ ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्टग्रह। अयनांशाः २३।-६।६ मासारम्भे प्लूटो ६। ।४८

ता० अक्टू०	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क वि.	मंगल रा अं. क	बुध रा. अ. क वि.	गुरु रा अ. क.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्शल रा. अ क.	नेपच्यून रा. अ. क.	ता० अक्टू०
१	५ १४ १२ ९	१ १६ ५३ ६	८ १२ ४२	५ १० ५२ ४	५ २१ ३	४ १६ ८ २१	० १४ ८	१० २६ ४३	५ ११ १०	७ ३ १६	१
२	५ १५ ११ ८	१ २९ ५ ५१	८ १३ २१	५ ९ ५० ५१	५ २१ १६	४ १७ २१ ४६	० १४ ४	१० २६ ४०	५ ११ १४	७ ३ १८	२
३	५ १६ १० १०	२ ११ ६ ५५	८ १४ ०	५ ८ ५५ १६	५ २१ २९	४ १८ ३५ १४	० १४ ०	१० २६ ३७	५ ११ १८	७ ३ २०	३
४	५ १७ ९ १६	२ २३ ० ४९	८ १४ ३९	५ ८ ६ ४७	५ २१ ४२	४ १९ ४८ ४७	० १३ ५६	१० २६ ३४	५ ११ २२	७ ३ २१	४
५	५ १८ ८ २४	३ ४ ५२ १७	८ १५ १८	५ ७ २६ ४३	५ २१ ५५	४ २१ २ २२	० १३ ५२	१० २६ ३१	५ ११ २६	७ ३ २३	५
६	५ १९ ७ ३४	३ १६ ४५ ७	८ १५ ५८	५ ६ ५६ ७	५ २२ ८	४ २२ १६ १	० १३ ४८	१० २६ २७	५ ११ ३०	७ ३ २५	६
७	५ २० ६ ४६	३ २८ ४६ ५३	८ १६ ३७	५ ६ ३५ ४१	५ २२ २१	४ २३ २९ ४४	० १३ ४४	१० २६ २४	५ ११ ३४	७ ३ २६	७
८	५ २१ ६ ०	४ १० ५८ ४१	८ १७ १७	मा ५ ६ २५ ५२	५ २२ ३४	४ २४ ४३ ३०	० १३ ३९	१० २६ २१	५ ११ ३७	७ ३ २८	८
९	५ २२ ५ १७	४ २३ २४ ४९	८ १७ ५७	५ ६ २६ ४८	५ २२ ४७	४ २५ ५७ १९	० १३ ३५	१० २६ १८	५ ११ ४१	७ ३ ३०	९
१०	५ २३ ४ ३६	५ ६ ७ ४०	८ १८ ३७	५ ६ ३८ २३	५ २३ ०	४ २७ ११ ११	० १३ ३१	१० २६ १५	५ ११ ४५	७ ३ ३२	१०
११	५ २४ ३ ५७	५ १९ ८ २५	८ १९ १८	५ ७ ० १८	५ २३ १३	४ २८ २५ ७	० १३ २६	१० २६ १२	५ ११ ४८	७ ३ ३४	११
१२	५ २५ ३ २०	६ २ २६ ५७	८ १९ ५८	५ ७ ३२ १	५ २३ २६	४ २९ ३९ ५	० १३ २२	१० २६ ८	५ ११ ५२	७ ३ ३५	१२
१३	५ २६ २ ४४	६ १६ १ ५३	८ २० ३८	५ ८ १२ ५६	५ २३ ३९	५ ० ५३ ६	० १३ १८	१० २६ ५	५ ११ ५६	७ ३ ३७	१३
१४	५ २७ २ ११	६ २९ ५० ४२	८ २१ १९	५ ९ २ २०	५ २३ ५२	५ २ ७ ११	० १३ १३	१० २६ २	६ ११ ५९	७ ३ ३९	१४
१५	५ २८ १ ३९	७ १३ ५० १०	८ २२ ०	५ ९ ५९ २५	५ २४ ५	५ ३ २१ १७	० १३ ८	१० २५ ५९	५ १२ ३	७ ३ ४१	१५
१६	५ २९ १ ९	७ २७ ५६ ४७	८ २२ ४१	५ ११ ३ २१	५ २४ १८	५ ४ ३५ २५	० १३ ४	१० २५ ५६	५ १२ ७	७ ३ ४३	१६
१७	६ ० ० ४१	८ १२ ७ १५	८ २३ २२	५ १२ १३ २७	५ २४ ३१	५ ५ ४९ ३७	० १२ ५९	१० २५ ५२	५ १२ ११	७ ३ ४५	१७
१८	६ १ ० १५	८ २६ १८ ४२	८ २४ ३	५ १३ २८ ५२	५ २४ ४४	५ ७ ३ ५२	० १२ ५५	१० २५ ४९	५ १२ १४	७ ३ ४७	१८
१९	६ १ ५९ ५१	९ १० २८ ५२	८ २४ ४५	५ १४ ४८ ५५	५ २४ ५७	५ ८ १८ ९	० १२ ५०	१० २५ ४६	५ १२ १८	७ ३ ४९	१९
२०	६ २ ५९ २९	९ २४ ३६ ०	८ २५ २६	५ १६ १२ ५५	५ २५ १०	५ ९ ३२ २८	० १२ ४५	१० २५ ४३	५ १२ २२	७ ३ ५१	२०
२१	६ ३ ५९ ८	१० ८ ३८ ३४	८ २६ ८	५ १७ ४० १५	५ २५ २३	५ १० ४६ ५०	० १२ ४०	१० २५ ४०	५ १२ २५	७ ३ ५३	२१
२२	६ ४ ५८ ४८	१० २२ ३५ ३	८ २६ ४९	५ १९ १० २२	५ २५ ३६	५ १२ १ १४	० १२ ३६	१० २५ ३७	५ १२ २९	७ ३ ५५	२२
२३	६ ५ ५८ ३१	११ ६ २३ ४२	८ २७ ३१	५ २० ४२ ४८	५ २५ ४९	५ १३ १५ ४०	० १२ ३१	१० २५ ३३	५ १२ ३२	७ ३ ५७	२३
२४	६ ६ ५८ १५	११ २० २ २८	८ २८ १३	५ २२ १७ ७	५ २६ २	५ १४ ३० ९	० १२ २६	१० २५ ३०	५ १२ ३६	७ ३ ५९	२४
२५	६ ७ ५८ २	० ३ २९ ११	८ २८ ५५	५ २३ ५२ ५५	५ २६ १५	५ १५ ४४ ४०	० १२ २१	१० २५ २७	५ १२ ४०	७ ४ १	२५
२६	६ ८ ५७ ५०	० १६ ४१ ५६	८ २९ ३७	५ २५ २९ ५४	५ २६ २८	५ १६ ५९ १३	० १२ १७	१० २५ २४	५ १२ ४३	७ ४ ३	२६
२७	६ ९ ५७ ४०	० २९ ३९ ९	९ ० १९	५ २७ ७ ४७	५ २६ ४०	५ १८ १३ ४९	० १२ १२	१० २५ २१	५ १२ ४७	७ ४ ५	२७
२८	६ १० ५७ ३२	१ १२ २० १७	९ १ २	५ २८ ४६ २१	५ २६ ५३	५ १९ २८ २७	० १२ ७	१० २५ १७	५ १२ ५०	७ ४ ७	२८
२९	६ ११ ५७ २६	१ २४ ४५ ४९	९ १ ४४	६ ० २५ २३	५ २७ ६	५ २० ४३ ७	० १२ २	१० २५ १४	५ १२ ५४	७ ४ ९	२९
३०	६ १२ ५७ २३	२ ६ ५७ २४	९ २ २६	६ २ ४ ४३	५ २७ १९	५ २१ ५७ ५०	० ११ ५७	१० २५ ११	५ १२ ५७	७ ४ १२	३०
३१	६ १३ ५७ २१	२ १८ ५७ ५१	९ ३ ९	६ ३ ४४ १३	५ २७ ३२	५ २३ १२ ३४	० ११ ५२	१० २५ ८	५ १३ १	७ ४ १४	३१

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

नवम्बर सन् १९६६ ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्टग्रह । [illegible] ।१० मासारम्भे प्लूटो ५।३।१०

ता० नवं०	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता० नवं०
१	६ १४ ५७ २१	३ ० ५० ५४	६ १ ५२	६ ५ २३ ४४	५ २७ ४४	५ २६ २७ १९	० ११ ४८	१० २५ ५	५ १३ ४	७ ४ १६	१
२	६ १५ ५७ २४	३ १२ ४१ ९	६ ४ ३४	६ ७ ३ १५	५ २७ ५७	५ २५ ४२ ७	० ११ ४३	१० २५ २	५ १३ ७	७ ४ १८	२
३	६ १६ ५७ २९	३ २४ ३३ ३४	६ ५ १७	६ ८ ४२ ४९	५ २८ १०	५ २६ ५६ ५८	० ११ ३८	१० २४ ५८	५ १३ १०	७ ४ २०	३
४	६ १७ ५७ ३७	४ ६ ३३ २६	६ ६ ०	६ १० २१ ५२	५ २८ २२	५ २८ ११ ५०	० ११ ३३	१० २४ ५५	५ १३ १३	७ ४ २२	४
५	६ १८ ५७ ४७	४ १८ ४५ ५५	६ ६ ४३	६ १२ ० ५२	५ २८ ३५	५ २९ २६ ४५	० ११ २८	१० २४ ५२	५ १३ १७	७ ४ २५	५
६	६ १९ ५७ ५९	५ १ १८ ४१	६ ७ २६	६ १३ ३९ ३७	५ २८ ४५	६ ० ४१ ४०	० ११ २४	१० २४ ४९	५ १३ २०	७ ४ २७	६
७	६ २० ५८ १२	५ १४ ६ ३०	६ ८ ९	६ १५ १८ ५	५ २९ ०	६ १ ५६ ३८	० ११ १९	१० २४ ४६	५ १३ २३	७ ४ २९	७
८	६ २१ ५८ २६	५ २७ २० ३९	६ ८ ५२	६ १६ ५६ १४	५ २९ १३	६ ३ ११ ३७	० ११ १४	१० २४ ४२	५ १३ २६	७ ४ ३१	८
९	६ २२ ५८ ४२	६ १० ५८ ३१	६ ९ ३६	६ १८ ३४ ५	५ २९ २५	६ ४ २६ ३८	० ११ ९	१० २४ ३९	५ १३ २९	७ ४ ३३	९
१०	६ २३ ५९ १	६ २४ ५८ ८	६ १० १९	६ २० ११ ३६	५ २९ ३८	६ ५ ४१ ५०	० ११ ५	१० २४ ३६	५ १३ ३२	७ ४ ३६	१०
११	५ २४ ५९ २२	७ ९ १५ १९	६ ११ ३	६ २१ ४८ ४८	५ २९ ५०	६ ६ ५६ ४४	० ११ ०	१० २४ ३३	२ १३ ३६	७ ४ ३८	११
१२	६ २५ ५९ ४४	७ २३ ४४ ४	६ ११ ४६	६ २३ २५ ४१	६ ० २	६ ८ ११ ४९	० १० ५६	१० २४ ३०	५ १३ ३९	७ ४ ४०	१२
१३	६ २६ ० ८	८ ८ १७ ३३	६ १२ ३०	६ २५ २ १५	६ ० १५	६ ९ २६ ५५	० १० ५१	१० २४ २७	५ १३ ४२	७ ४ ४३	१३
१४	६ २८ ० ३४	८ २२ ४९ १०	६ १३ १३	६ २६ ३८ ३०	६ ० २७	६ १० ४२ ३	० १० ४७	१० २४ २३	५ १३ ४५	७ ४ ४५	१४
१५	६ २९ १ ०	९ ७ १३ ३६	६ १३ ५७	६ २८ १४ २७	६ ० ३९	६ ११ ५७ ११	० १० ४२	१० २४ २०	५ १३ ४८	७ ४ ४७	१५
१६	७ ० १ २७	९ २१ २७ १८	६ १४ ४१	६ २९ ५० ४	६ ० ५१	६ १३ १२ १८	० १० ३८	१० २४ १७	५ १३ ५१	७ ४ ४९	१६
१७	७ १ १ ५६	१० ५ २८ ३४	६ १५ २५	७ १ २५ २७	६ १ ४	६ १४ २७ २९	० १० ३३	१० २४ १४	५ १३ ५४	७ ४ ५२	१७
१८	७ २ २ २६	१० १९ १७ ६	६ १६ ८	७ ३ ० ३५	६ १ १६	६ १५ ४२ ४०	० १० २९	१० २४ ११	-५ १३ ५६	७ ४ ५४	१८
१९	७ ३ २ ५७	११ २ ५३ २३	६ १६ ५२	७ ४ ३५ २७	६ १ २८	६ १६ ५७ ५२	० १० २५	१० २४ ८	५ १३ ५९	७ ४ ५६	१९
२०	७ ४ ३ ३०	११ १६ १८ १३	९ १७ ३६	७ ६ १० ६	६ १ ४०	६ १८ १३ ५	० १० २०	१० २४ ४	५ १४ २	७ ४ ५८	२०
२१	७ ५ ४ ४	११ २९ ३१ १०	९ १८ २०	७ ७ ४४ ३१	६ १ ५२	६ १९ २८ १८	० १० १६	१० २४ १	५ १४ ४	७ ५ १	२१
२२	७ ६ ४ ४०	० १२ ३३ २४	६ १९ ४	७ ९ १८ ४५	६ २ ३	६ २० ४३ ३३	० १० १२	१० २३ ५८	५ १४ ७	७ ५ ३	२२
२३	७ ७ ५ १७	० २५ २३ ४९	६ १९ ४९	७ १० ५२ ४८	६ २ १५	६ २१ ५८ ४९	० १० ८	१० २३ ५५	५ १४ ९	७ ५ ५	२३
२४	७ ८ ५ ५५	१ ८ ८ ३०	६ २० ३३	७ १२ २६ ४१	६ २ २७	६ २३ १४ ५	० १० ४	१० २३ ५२	५ १४ १२	७ ५ ७	२४
२५	७ ९ ६ ३५	१ २० ५९ ४९	६ २१ १७	७ १४ ० २६	६ २ ३९	६ २४ २९ २३	० १० ०	१० २३ ४८	५ १४ १४	७ ५ १०	२५
२६	७ १० ७ १६	२ ३ [illegible] ५५	६ २२ १	७ १५ ३८ २	६ २ ५०	६ २५ ४४ ४१	७ ९ ५६	१० २३ ४५	५ १४ १७	७ ५ १२	२६
२७	७ ११ [illegible] ५८	२ १५ १ ५६	६ २२ ४५	७ १७ ० ३०	६ ३ २	६ २७ ० १	० ९ ५३	१० २३ ४२	५ १४ २०	७ ५ १४	२७
२८	७ १२ ८ ४२	२ २७ ५२ २५	६ २३ ३०	७ १८ ४० ४३	६ ३ १३	६ २८ १५ २१	० ९ ४९	१० २३ ३९	५ १४ २२	७ ५ १६	२८
२९	७ १३ ९ २७	३ ९ ४० ४४	६ २४ १४	७ २० [illegible] ६	६ ३ २४	६ २९ ३० ४१	० ९ ४५	१० २३ ३६	५ १४ २५	७ ५ १८	२९
३०	७ १४ १० १२	३ २१ ३८ ४६	६ २४ ५८	७ २१ ४७ २०	६ ३ ३५	७ ० ४६ ३	० ९ ४२	१० २३ ३३	५ १४ २७	७ ५ २१	३०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिसम्बर सन् १९६९ ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्टग्रह । अयनांशाः २३।२६।१५ मासारम्भे प्लूटो ५।३।४२

ता० दिसं.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अ. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अ. क.	ता० दिसं.
१	७ १५ ११ १	४ २ २८ ४३	९ २५ ४३	७ २३ २० २४	६ ३ ४७	७ २ १ २३	० ९ ३८	१० २३ २९	५ १४ ३०	७ ५ २३	१
२	७ १६ ११ ५०	४ १४ २५ ३६	९ २६ २७	७ २४ ५३ २५	६ ३ ५९	७ ३ १६ ४६	० ९ ३५	१० २३ २६	५ १४ ३२	७ ५ २५	२
३	७ १७ १२ ४१	४ २६ ३४ ५२	९ २७ ११	७ २६ ३६ २३	६ ४ १०	७ ४ ३२ १०	० ९ ३२	१० २३ २३	५ १४ ३४	७ ५ २७	३
४	७ १८ १३ ३३	५ ९ १ ५९	९ २७ ५६	७ २७ ५९ १६	६ ४ २१	७ ५ ४७ ३४	० ९ २८	१० २३ २०	५ १४ ३६	७ ५ ३०	४
५	७ १९ १४ २७	५ २१ ५१ ५९	९ २८ ४०	७ २९ ३२ ५	६ ४ ३२	७ ७ २ ५९	० ९ २५	१० २३ १७	५ १४ ३८	७ ५ ३२	५
६	७ २० १५ २२	६ ५ ८ ४०	९ २९ २५	८ १ ४ ४८	६ ४ ४३	७ ८ १८ २५	० ९ २२	१० २३ १३	५ १४ ४०	७ ५ ३४	६
७	७ २१ १६ १८	६ १८ ५३ ५३	१० ० १०	० २ ३७ २७	६ ४ ५४	७ ९ ३३ ५२	० ९ १९	१० २३ १०	५ १४ ४२	७ ५ ३६	७
८	७ २२ १७ १६	७ ३ ९ ४५	१० ० ५४	८ ४ ९ ५८	६ ५ ४	७ १० ४९ १९	० ९ १६	१० २३ ७	५ १४ ४४	७ ५ ३८	८
९	७ २३ १८ १५	७ १७ ४३ ११	१० १ ३९	८ ५ ४२ २२	६ ५ १५	७ १२ ४ ४६	० ९ १३	१० २३ ४	५ १४ ४६	७ ५ ४०	९
१०	७ २४ १९ १५	८ २ ३६ १	१० २ २३	८ ७ १४ ३१	६ ५ २६	७ १३ २० १४	० ९ ११	१० २३ १	५ १४ ४८	७ ५ ४२	१०
११	७ २५ २० १५	८ १७ ३६ ४	१० ३ ८	८ ८ ४६ ३६	६ ५ ३६	७ १४ ३५ ४२	० ९ ८	१० २२ ५८	५ १४ ५०	७ ५ ४५	११
१२	७ २६ २१ १६	९ २ ३३ ३९	१० ३ ५३	८ १० १८ २२	६ ५ ४६	७ १५ ५१ ११	० ९ ६	१० २२ ५४	५ १४ ५२	७ ५ ४७	१२
१३	७ २७ २२ १८	९ १७ २० १९	१० ४ ३७	८ ११ ४९ ४९	६ ५ ५७	७ १७ ६ ३९	० ९ ३	१० २२ ५१	५ १४ ५४	७ ५ ४९	१३
१४	७ २८ २३ २०	१० १ ५० ४०	१० ५ २२	८ १३ २० ५३	६ ६ ७	७ १८ २२ ८	० ९ १	१० २२ ४८	५ १४ ५६	७ ५ ५१	१४
१५	७ २९ २४ २२	१० १५ ५९ ४५	१० ६ ७	८ १४ ५१ २८	६ ६ १७	७ १९ ३७ ३६	० ८ ५९	१० २२ ४५	५ १४ ५७	७ ५ ५३	१५
१६	८ ० २५ २४	१० २९ ४८ ४३	१० ६ ५२	८ १६ २१ २६	६ ६ २७	७ २० ५३ ३	० ८ ५७	१० २२ ४२	५ १४ ५९	७ ५ ५५	१६
१७	८ १ २६ २७	११ १३ १८ १३	१० ७ ३६	८ १७ ५० ४४	६ ६ ३७	७ २२ ८ ३२	० ८ ५५	१० २२ ३८	५ १५ ०	७ ५ ५७	१७
१८	८ २ २७ ३१	११ २६ ३० २०	१० ८ २१	८ १९ १९ १२	६ ६ ४७	७ २३ २४ ०	० ८ ५३	१० २२ ३५	५ १५ २	७ ५ ५९	१८
१९	८ ३ २८ ३५	० ९ २७ ३२	१० ९ ६	८ २० ४६ ३८	६ ६ ५७	७ २४ ३९ २९	० ८ ५१	१० २२ ३२	५ १५ ३	७ ६ २	१९
२०	८ ४ २९ ४०	० २२ १२ १	१० ९ ५१	८ २२ १२ ५१	६ ७ ६	७ २५ ५४ ५८	० ८ ४९	१० २२ २९	५ १५ ५	७ ६ ४	२०
२१	८ ५ ३० ४५	१ ४ ४५ ३१	१० १० ३५	८ २३ ३७ ३६	६ ७ १६	७ २७ १० २७	० ८ ४८	१० २२ २६	५ १५ ६	७ ६ ६	२१
२२	८ ६ ३१ ५०	११ १७ ९ १८	१० ११ २०	८ २५ ० ३८	६ ७ २५	७ २८ २५ ५६	० ८ ४६	१० २२ २३	५ १५ ७	७ ६ ८	२२
२३	८ ७ ३२ ५६	१ २९ २४ १३	१० १२ ५	८ २६ २१ ३५	६ ७ ३४	७ २९ ४१ २५	० ८ ४५	१० २२ १९	५ १५ ९	७ ६ १०	२३
२४	८ ८ ३४ २	२ ११ ३० ५८	१० १२ ५०	८ २७ ४० ६	६ ७ ४४	८ ० ५६ ५५	० ८ ४४	१० २२ १६	५ १५ १०	७ ६ १२	२४
२५	८ ९ ३५ ८	२ २३ ३१ २४	१० १३ ३५	८ २८ ५५ ४६	६ ७ ५३	८ २ १२ २४	० ८ ४२	१० २२ १३	५ १५ ११	७ ६ १४	२५
२६	८ १० ३६ १५	३ ५ २३ ४६	१० १४ १९	९ ० ८ ४	६ ८ २	८ ३ २७ ५३	० ८ ४१	१० २२ १०	५ १५ १२	७ ६ १६	२६
२७	८ ११ ३७ २२	३ १७ १२ ५९	१० १५ ४	९ १ १६ २७	६ ८ ११	८ ४ ४३ २३	० ८ ४०	१० २२ ७	५ १५ १३	७ ६ १८	२७
२८	८ १२ ३८ ३	३ २९ ० ३३	१० १५ ४९	९ २ २० १६	६ ८ १९	८ ५ ५८ ५२	० ८ ४०	१० २२ ४	५ १५ १४	७ ६ २०	२८
२९	८ १३ ३९ ३८	४ १० ५० ३	१० १६ ३४	९ ३ १८ ५१	६ ८ २८	८ ७ १४ २१	० ८ ३९	१० २२ ०	५ १५ १५	७ ६ २१	२९
३०	८ १४ ४० ४५	४ २२ ४५ ४३	१० १७ १८	९ ४ ११ २३	६ ८ ३७	८ ८ २९ ५०	० ८ ३८	१० २१ ५७	५ १५ १६	७ ६ २३	३०
३१	८ १५ ४१ ५३	५ ४ ५२ २३	१० १८ ३	९ ४ ५७ ३	६ ८ ४५	८ ९ ४५ २०	० ८ ३८	१० २१ ५४	५ १५ १७	७ ६ २५	३१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जनवरी सन् १९७० ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाईम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्टग्रह। अयनांशाः २३।२६।२१ मासारम्भे प्लूटो ५।३।५७

ता० जन०	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अ. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अ. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अ. क.	ता० जन०
१	८ १६ ४३ १	५ १७ १५ १६	१० १८ ४८	९ ५ ३४ ५६	६ ८ ५३	८ १० १ ४९	० ८ ३७	१० २१ ५१	५ १५ १७	७ ६ २७	१
२	८ १७ ४४ १०	५ २९ ५९ ४३	१० १९ ३३	९ ६ ४ ११	६ ९ १	८ १२ १० १९	० ८ ३७	१० २१ ४८	५ १५ १८	७ ६ २९	२
३	८ १८ ४५ २०	६ १३ १० १८	१० २० १७	९ ६ २३ ५२	६ ९ ९	८ १३ ३६ ४९	मा० ८ ३७	१० २१ ४४	५ १५ १८	७ ६ ३१	३
४	८ १९ ४६ ३०	६ २६ ५० १४	१० २१ २	व९ ६ ३३ ९	६ ९ १७	८ १४ ४७ १९	० ८ ३७	१० २१ ४१	५ १५ १९	७ ६ ३२	४
५	८ २० ४७ ४०	७ ११ ० २५	१० २१ ४७	९ ६ ३१ १९	६ ९ २५	८ १६ २ ५०	० ८ ३७	१० २१ ३८	५ १५ १९	७ ६ ३४	५
६	८ २१ ४८ ५१	७ २५ ३८ ३५	१० २२ ३१	९ ६ १७ ५१	६ ९ ३३	८ १७ १८ २०	० ८ ३७	१० २१ ३५	५ १५ २०	७ ६ ३६	६
७	८ २२ ५० १	८ १० ३८ ५३	१० २३ १६	९ ५ ५२ ३१	६ ९ ४०	८ १८ ३३ ५०	० ८ ३७	१० २१ ३२	५ १५ २०	७ ६ ३७	७
८	८ २३ ५१ १२	८ २५ ४७ १६	१० २४ १	९ ५ १६ २८	६ ९ ४७	८ १९ ४९ २०	० ८ ३८	१० २१ २९	५ १५ २०	७ ६ ३९	८
९	८ २४ ५२ २२	९ ११ ७ ५५	१० २४ ४६	९ ४ २७ १५	६ ९ ५५	८ २१ ४ ५०	० ८ ३८	१० २१ २५	५ १५ २१	७ ६ ४१	९
१०	८ २५ ५३ ३३	९ २६ १५ ८	१० २५ ३०	९ ३ २८ ५७	६ १० २	८ २२ २० २०	० ८ ३९	१० २१ २२	५ १५ २१	७ ६ ४२	१०
११	८ २६ ५४ ४२	१० ११ ५ ७	१० २६ १५	९ २ २२ ७	६ १० ९	८ २३ ३५ ४९	० ८ ४०	१० २१ १९	५ १५ २१	७ ६ ४४	११
१२	८ २७ ५५ ५१	१० २५ ३२ १६	१० २७ ०	९ १ ८ ४४	६ १० १५	८ २४ ५१ १७	० ८ ४१	१० २१ १६	५ १५ २१	७ ६ ४५	१२
१३	८ २८ ५७ ०	११ ९ ३३ ३२	१० २७ ४४	८ २९ ५१ ६	६ १० २२	८ २६ ७ ४६	० ८ ४२	१० २१ १३	व५ १५ २१	७ ६ ४७	१३
१४	८ २९ ५८ ७	११ २३ ९ ३६	१० २८ २९	८ २८ ३१ ४४	६ १० २९	८ २७ २२ १३	० ८ ४३	१० २१ ९	५ १५ २१	७ ६ ४९	१४
१५	९ ० ५९ १३	० ६ २२ १६	१० २९ १३	८ २७ १३ ९	६ १० ३५	८ २८ ३७ ४०	० ८ ४४	१० २१ ६	५ १५ २१	७ ६ ५०	१५
१६	९ २ ० १८	० १९ १४ ३६	१० २९ ५८	८ २५ ५७ २७	६ १० ४१	८ २९ ५३ ६	० ८ ४५	१० २१ ३	५ १५ २१	७ ६ ५२	१६
१७	९ ३ १ २३	१ १ ५० ९	११ ० ४३	८ २४ ४७ १९	६ १० ४७	९ १ ८ ३२	० ८ ४७	१० २१ ०	५ १५ २१	७ ६ ५३	१७
१८	९ ४ २ २७	१ १४ [illegible]	११ १ २७	८ २३ ४३ ४९	६ १० ५३	९ २ २३ ५८	० ८ ४८	१० २० ५७	५ १५ २१	७ ६ ५५	१८
१९	९ ५ ३ ३१	१ २६ [illegible]	११ २ १२	८ २२ ४८ २२	६ १० ५९	९ ३ ३९ २३	० ८ ५०	१० २० ५४	५ १५ २०	७ ६ ५६	१९
२०	९ ६ ४ ३५	[illegible]	११ २ ५६	८ २२ १ ४५	६ ११ ४	९ ४ ५४ ४८	० ८ ५१	१० २० ५०	५ १५ २०	७ ६ ५७	२०
२१	९ ७ ५ ३८	[illegible]	११ ३ ४१	८ २१ २४ २५	६ ११ १०	९ ६ १० १३	० ८ ५३	१० २० ४७	५ १५ १९	७ ६ ५९	२१
२२	९ ८ [illegible] ४०	[illegible]	११ ४ २५	८ २० ५६ २१	६ ११ १५	९ ७ २५ ३७	० ८ ५५	१० २० ४४	५ १५ १९	७ ७ ०	२२
२३	९ ९ [illegible] ४१	[illegible]	११ [illegible] ९	८ २० ३७ ३१	६ ११ २०	९ ८ ४१ १	० ८ ५७	१० २० ४१	५ १५ १९	७ ७ १	२३
२४	९ १० ८ ४१	[illegible]	११ ५ ५४	मा० ८ २० २७ ३२	६ ११ २५	९ ९ ५६ २५	० ९ ०	१० २० ३८	५ १५ १८	७ ७ ३	२४
२५	९ ११ ९ ४१	[illegible]	११ ६ ३८	८ २० २५ ५७	६ ११ ३०	९ ११ ११ ४८	० ९ २	१० २० ३४	५ १५ १८	७ ७ ४	२५
२६	९ १२ १० ३९	[illegible]	११ ७ २२	८ २० ३२ १३	६ ११ ३४	९ १२ २७ १०	० ९ ४	१० २० ३१	५ १५ १७	७ ७ ५	२६
२७	९ १३ ११ ३७	५ ४ ४९ ३०	११ ८ ६	८ २० ४५ ४८	६ ११ ३९	९ १३ ४२ ३२	० ९ ७	१० २० २८	५ १५ १६	७ ७ ६	२७
२८	९ १४ १२ ३४	५ १८ २३ [illegible]	११ ८ ५१	८ २१ ५ ५	६ ११ ४३	९ १४ ५७ ५४	० ९ ९	१० २० २५	५ १५ १५	७ ७ ८	२८
२९	९ १५ १३ ३१	[illegible]	११ ९ ३५	८ २१ ३२ ४७	६ ११ ४७	९ १६ १३ १५	० ९ १२	१० २० २२	५ १५ १४	७ ७ ९	२९
३०	९ १६ १४ २८	[illegible]	११ १० १९	८ २२ ५ ३९	६ ११ ५१	९ १७ २८ ३६	० ९ १५	१० २० १९	५ १५ १३	७ ७ १०	३०
३१	९ १७ १५ २२	[illegible]	११ ११ ३	८ २२ ४१ ३९	६ ११ ५५	९ १८ ४३ ५७	० ९ १८	१० २० १५	५ १५ १२	७ ७ ११	३१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिसम्बर सन् १९६९ ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्टग्रह । अयनांशाः २३।२६।१५ मासारम्भे प्लूटो ५।३।४२

ता० दिसं.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्शल रा. अं. क.	नेप्च्यून रा. अं. क.	ता० दिसं.
१	७ १५ ११ १	४ २ २८ ४३	९ २५ ४३	७ २३ २० २४	६ ३ ४७	७ २ १ २३	० ९ ३८	१० २३ २९	५ १४ ३०	७ ५ २३	१
२	७ १६ ११ ५०	४ १४ २५ ३६	९ २६ २७	७ २४ ५३ २५	६ ३ ५९	७ ३ १६ ४६	० ९ ३५	१० २३ २६	५ १४ ३२	७ ५ २५	२
३	७ १७ १२ ४१	४ २६ ३४ ५२	९ २७ ११	७ २६ ३६ २३	६ ४ १०	७ ४ ३२ १०	० ९ ३२	१० २३ २३	५ १४ ३४	७ ५ २७	३
४	७ १८ १३ ३३	५ ९ १ ५९	९ २७ ५६	७ २७ ५९ १६	६ ४ २१	७ ५ ४७ ३४	० ९ २८	१० २३ २०	५ १४ ३६	७ ५ ३०	४
५	७ १९ १४ २७	५ २१ ५१ ५९	९ २८ ४०	७ २९ ३२ ५	६ ४ ३२	७ ७ २ ५९	० ९ २५	१० २३ १७	५ १४ ३८	७ ५ ३२	५
६	७ २० १५ २२	६ ५ ८ ४०	९ २९ २५	८ १ ४ ४८	६ ४ ४३	७ ८ १८ २५	० ९ २२	१० २३ १३	५ १४ ४०	७ ५ ३४	६
७	७ २१ १६ १८	६ १८ ५३ ५३	१० ० १०	० २ ३७ २७	६ ४ ५४	७ ९ ३३ ५२	० ९ १९	१० २३ १०	५ १४ ४२	७ ५ ३६	७
८	७ २२ १७ १६	७ ३ ६ ४५	१० ० ५४	८ ४ ९ ५८	६ ५ ४	७ १० ४९ १९	० ९ १६	१० २३ ७	५ १४ ४४	७ ५ ३८	८
९	७ २३ १८ १५	७ १७ ४३ ११	१० १ ३९	८ ५ ४२ २२	६ ५ १५	७ १२ ४ ४६	० ९ १३	१० २३ ४	५ १४ ४६	७ ५ ४०	९
१०	७ २४ १९ १५	८ २ ३६ १	१० २ २३	८ ७ १४ ३५	६ ५ २६	७ १३ २० १४	० ९ ११	१० २३ १	५ १४ ४८	७ ५ ४२	१०
११	७ २५ २० १५	८ १७ ३६ ४	१० ३ ८	८ ८ ४६ ३६	६ ५ ३६	७ १४ ३५ ४२	० ९ ८	१० २२ ५८	५ १४ ५०	७ ५ ४५	११
१२	७ २६ २१ १६	९ २ ३३ ३९	१० ३ ५३	८ १० १८ २२	६ ५ ४६	७ १५ ५१ ११	० ९ ६	१० २२ ५४	५ १४ ५२	७ ५ ४७	१२
१३	७ २७ २२ १८	९ १७ २० १९	१० ४ ३७	८ ११ ४९ ४९	६ ५ ५७	७ १७ ६ ३९	० ९ ३	१० २२ ५१	५ १४ ५४	७ ५ ४९	१३
१४	७ २८ २३ २०	१० १ ५० ४०	१० ५ २२	८ १३ २० ५३	६ ६ ७	७ १८ २२ ८	० ९ १	१० २२ ४८	५ १४ ५६	७ ५ ५१	१४
१५	७ २९ २४ २२	१० १५ ५९ ४५	१० ६ ७	८ १४ ५१ २८	६ ६ १७	७ १९ ३७ ३६	० ८ ५९	१० २२ ४५	५ १४ ५७	७ ५ ५३	१५
१६	८ ० २५ २४	१० २९ ४८ ४३	१० ६ ५२	८ १६ २१ २६	६ ६ २७	७ २० ५३ ३	० ८ ५७	१० २२ ४२	५ १४ ५९	७ ५ ५५	१६
१७	८ १ २६ २७	११ १३ १८ १३	१० ७ ३६	८ १७ ५० ४४	६ ६ ३७	७ २२ ८ ३२	० ८ ५५	१० २२ ३८	५ १५ ०	७ ५ ५७	१७
१८	८ २ २७ ३१	११ २६ ३० २०	१० ८ २१	८ १९ १९ १२	६ ६ ४७	७ २३ २४ ०	० ८ ५३	१० २२ ३५	५ १५ २	७ ५ ५९	१८
१९	८ ३ २८ ३५	० ९ २७ ३२	१० ९ ६	८ २० ४६ ३८	६ ६ ५७	७ २४ ३९ २९	० ८ ५१	१० २२ ३२	५ १५ ३	७ ६ २	१९
२०	८ ४ २९ ४०	० २२ १२ १	१० ९ ५१	८ २२ १२ ५१	६ ७ ६	७ २५ ५४ ५८	० ८ ४९	१० २२ २९	५ १५ ५	७ ६ ४	२०
२१	८ ५ ३० ४५	१ ४ ४५ ३१	१० १० ३५	८ २३ ३७ ३६	६ ७ १६	७ २७ १० २७	० ८ ४८	१० २२ २६	५ १५ ६	७ ६ ६	२१
२२	८ ६ ३१ ५०	११ १७ ९ १८	१० ११ २०	८ २५ ० ३८	६ ७ २५	७ २८ २५ ५६	० ८ ४६	१० २२ २३	५ १५ ७	७ ६ ८	२२
२३	८ ७ ३२ ५९	१ २९ २४ १३	१० १२ ५	८ २६ २१ ३५	६ ७ ३४	७ २९ ४१ २५	० ८ ४५	१० २२ १९	५ १५ ९	७ ६ १०	२३
२४	८ ८ ३४ २	२ ११ ३० ५८	१० १२ ५०	८ २७ ४० ६	६ ७ ४४	८ ० ५६ ५५	० ८ ४४	१० २२ १६	५ १५ १०	७ ६ १२	२४
२५	८ ९ ३५ ८	२ २३ ३१ २४	१० १३ ३५	८ २८ ५५ ४६	६ ७ ५३	८ २ १२ २४	० ८ ४२	१० २२ १३	५ १५ ११	७ ६ १४	२५
२६	८ १० ३६ १५	३ ५ २३ ४६	१० १४ १९	९ ० ८ ४	६ ८ २	८ ३ २७ ५३	० ८ ४१	१० २२ १०	५ १५ १२	७ ६ १६	२६
२७	८ ११ ३७ २२	३ १७ १२ ५९	१० १५ ४	९ १ १६ २७	६ ८ ११	८ ४ ४२ २२	० ८ ४०	१० २२ ७	५ १५ १३	७ ६ १८	२७
२८	८ १२ ३८ ३	३ २९ ० ३३	१० १५ ४९	९ २ ३० १६	६ ८ १९	८ ५ ५८ ५२	० ८ ४०	१० २२ ४	५ १५ १४	७ ६ २०	२८
२९	८ १३ ३९ ३८	४ १० ५० ३	१० १६ ३४	९ ३ १८ ५१	६ ८ २८	८ ७ १४ २१	० ८ ३९	१० २२ ०	५ १५ १५	७ ६ २१	२९
३०	८ १४ ४० ४५	४ २२ ४५ ४३	१० १७ १८	९ ४ ११ २३	६ ८ ३७	८ ८ २९ ५०	० ८ ३८	१० २१ ५७	५ १५ १६	७ ६ २३	३०
३१	८ १५ ४१ ५३	५ ४ ५२ २३	१० ८ ३	९ ४ ५७ ३	६ ८ ४५	८ ९ ४५ २०	० ८ ३८	१० २१ ५४	५ १५ १७	७ ६ २५	३१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

जनवरी सन् १९७० ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाईम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्टग्रह । अयनांशाः २३।२६।२१ मासारम्भे प्लूटो ५।३।५७

ता० जन०	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अ. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अ. क.	हर्शल रा. अ. क.	नेपच्यून रा. अ. क.	ता० जन०
१	८ १६ ४३ १	५ १७ १५ १६	१० १८ ४८	९ ५ ३४ ५६	६ ८ ५३	८ १० १ ४९	० ८ ३७	१० २१ ५१	५ १५ १७	७ ६ २७	१
२	८ १७ ४४ १०	५ २९ ५९ ४३	१० १९ ३३	९ ६ ४ ११	६ ९ १	८ १२ १० १९	० ८ ३७	१० २१ ४८	५ १५ १८	७ ६ २९	२
३	८ १८ ४५ २०	६ १३ १० १८	१० २० १७	९ ६ २३ ५२	६ ९ ९	८ १३ ३६ ४९	मा० ८ ३७	१० २१ ४४	५ १५ १८	७ ६ ३१	३
४	८ १९ ४६ ३०	६ २६ ५० १४	१० २१ २	व९ ६ ३३ ९	६ ९ १७	८ १४ ४७ १९	० ८ ३७	१० २१ ४१	५ १५ १९	७ ६ ३२	४
५	८ २० ४७ ४०	७ ११ ० २५	१० २१ ४७	९ ६ ३१ १९	६ ९ २५	८ १६ २ ५०	० ८ ३७	१० २१ ३८	५ १५ १९	७ ६ ३४	५
६	८ २१ ४८ ५१	७ २५ ३८ ३५	१० २२ ३१	९ ६ १७ ५१	६ ९ ३३	८ १७ १८ २०	० ८ ३७	१० २१ ३५	५ १५ २०	७ ६ ३६	६
७	८ २२ ५० १	७ १० ३८ ५३	१० २३ १६	९ ५ ५२ ३१	६ ९ ४०	८ १८ ३३ ५०	० ८ ३७	१० २१ ३२	५ १५ २०	७ ६ ३७	७
८	८ २३ ५१ १२	८ २५ ४७ १६	१० २४ १	९ ५ १६ २८	६ ९ ४७	८ ११ ४९ २०	० ८ ३८	१० २१ २९	५ १५ २०	७ ६ ३९	८
९	८ २४ ५२ २२	९ ११ ७ ५५	१० २४ ४६	९ ४ २७ १५	६ ९ ५५	८ १९ ४ ५०	० ८ ३८	१० २१ २५	५ १५ २१	७ ६ ४१	९
१०	८ २५ ५३ ३३	९ २६ १५ ८	१० २५ ३०	९ ३ २८ ५७	६ १० २	८ २१ २० २०	० ८ ३९	१० २१ २२	५ १५ २१	७ ६ ४२	१०
११	८ २६ ५४ ४२	१० ११ ५ ७	१० २६ १५	९ २ २२ ७	६ १० ९	८ २३ २५ ४९	० ८ ४०	१० २१ १९	५ १५ २१	७ ६ ४४	११
१२	८ २७ ५५ ५१	१० २५ ३२ १६	१० २७ ०	९ १ ८ ४४	६ १० १५	८ २४ ५१ १७	० ८ ४१	१० २१ १६	५ १५ २१	७ ६ ४५	१२
१३	८ २८ ५७ ०	११ ९ ३३ ३२	१० २७ ४४	८ २९ ५१ ६	६ १० २२	८ २६ ७ ४६	० ८ ४२	१० २१ १३	व५ १५ २१	७ ६ ४७	१३
१४	८ २९ ५८ ७	११ २३ ९ ३६	१० २८ २९	८ २८ ३१ ४४	६ १० २९	८ २७ २२ १३	० ८ ४३	१० २१ ९	५ १५ २१	७ ६ ४९	१४
१५	९ ० ५९ १३	० ६ २२ १६	१० २९ १३	८ २७ १३ ९	६ १० ३५	८ २८ ३७ ४०	० ८ ४४	१० २१ ६	५ १५ २१	७ ६ ५०	१५
१६	९ २ ० १८	० १९ १४ ३६	१० २९ ५८	८ २५ ५७ २७	६ १० ४१	८ २९ ५३ ६	० ८ ४५	१० २१ ३	५ १५ २१	७ ६ ५२	१६
१७	९ ३ १ २३	१ १ ५० ६	११ ० ४३	८ २४ ४७ १९	६ १० ४७	९ १ ८ ३२	० ८ ४७	१० २१ ०	५ १५ २१	७ ६ ५३	१७
१८	९ ४ २ २७	१ १४ ११ ३	११ १ २७	८ २३ ४३ ४९	६ १० ५३	९ २ २३ ५८	० ८ ४८	१० २० ५७	५ १५ २१	७ ६ ५५	१८
१९	९ ५ ३ ३१	१ २६ २१ ३३	११ २ १२	८ २२ ४८ २२	६ १० ५९	९ ३ ३९ २३	० ८ ५०	१० २० ५४	५ १५ २०	७ ६ ५६	१९
२०	९ ६ ४ ३४	२ ८ २६ ३७	११ २ ५६	८ २२ १ ४५	६ ११ ४	९ ४ ५४ ४८	० ८ ५१	१० २० ५०	५ १५ २०	७ ६ ५७	२०
२१	९ ७ ५ ३६	२ २० २३ ४०	११ ३ ४१	८ २१ २४ २२	६ ११ १०	९ ६ १० १३	० ८ ५३	१० २० ४७	५ १५ १९	७ ६ ५९	२१
२२	९ ८ ६ ३८	३ २ १६ १३	११ ४ २५	८ २० ५६ २१	६ ११ १५	९ ७ २५ ३७	० ८ ५५	१० २० ४४	५ १५ १९	७ ७ ०	२२
२३	९ ९ ७ ३९	३ १४ ९ ४७	११ ५ ९	८ २० ३७ ३१	६ ११ २०	९ ८ ४१ १	० ८ ५७	१० २० ४१	५ १५ १९	७ ७ १	२३
२४	९ १० ८ ४१	३ २५ ५५ ५५	११ ५ ५४	मा८ २० २७ ३२	६ ११ २५	९ ९ ५६ २५	० ९ ०	१० २० ३८	५ १५ १८	७ ७ ३	२४
२५	९ ११ ९ ४१	४ ७ ४९ २	११ ६ ३८	८ २० २५ ५७	६ ११ ३०	९ ११ ११ ४८	० ९ २	१० २० ३४	५ १५ १८	७ ७ ४	२५
२६	९ १२ १० ४१	४ १९ ४५ ३८	११ ७ २३	८ २० ३२ १३	६ ११ ३४	९ १२ २७ १०	० ९ ४	१० २० ३१	५ १५ १७	७ ७ ५	२६
२७	९ १३ ११ ४०	५ १ ५३ ३४	११ ८ ७	८ २० ४५ ४८	६ ११ ३९	९ १३ ४२ ३२	० ९ ७	१० २० २८	५ १५ १६	७ ७ ६	२७
२८	९ १४ १२ ३५	५ १४ १२ ३५	११ ८ ५१	८ २१ ५ ५	६ ११ ४३	९ १४ ५७ ५४	० ९ ९	१० २० २५	५ १५ १५	७ ७ ८	२८
२९	९ १५ १३ ३२	५ २६ ४६ २९	११ ९ ३५	८ २१ ३२ ३४	६ ११ ४७	९ १६ १३ १५	० ९ १२	१० २० २२	५ १५ १४	७ ७ ९	२९
३०	९ १६ १४ २०	६ ९ ३८ २७	११ १० २०	८ २२ [illegible] ४२	६ ११ ५१	९ १७ २८ ३६	० ९ १५	१० २० १९	५ १५ १३	७ ७ १०	३०
३१	९ १७ १५ २२	६ २२ ० ९	११ ११ ४	८ २२ ४१ [illegible]	६ ११ ५५	९ १८ ४३ ५७	० ९ १८	१० २० १५	५ १५ १२	७ ७ ११	३१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फरवरी सन् १९७० ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्टग्रह । अयनांशाः २३।-६-२६ मासारम्भे प्लूटो ५।३।२० वक्री

ता० फर०	सूर्य रा अं. क. वि.	चन्द्र रां. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क. वि	गुरु रा अं. क.	शुक्र रा. अ. क. वि.	शनि रा. अ. क.	राहु रा. अं. क.	हर्शल रा. अं. क.	नपच्यून रा. अ. क.	ता० फर०
१	९ १८ १६ १५	७ ५ ३० २१	११ ११ ४८	८ २३ २३ ४४	६ ११ ५८	९ १९ ५९ १५	० ९ २१	१० २० १२	५ १५ ११	७ ७ १२	१
२	९ १९ १७ १९	७ १९ १८ १३	११ १२ ३२	८ २४ ९ ५३	६ १२ २	९ २० १४ ३४	० ९ २४	१० २० ९	५ १५ १०	७ ७ १३	२
३	९ २० १८ २	८ ३ ५३ १९	११ १३ १६	८ २४ ५९ ५४	६ १२ ५	९ २२ २९ ५३	० ९ २७	१० २० ६	५ १५ ९	७ ७ १४	३
४	९ २१ १८ ५५	८ १८ ४२ १८	११ १४ ०	८ २५ ५३ २५	६ १२ ८	९ २३ ४५ १२	० ९ ३०	१० २० ३	५ १५ ८	७ ७ १५	४
५	९ २२ १९ ४७	९ ३ ४८ ५१	११ १४ ४५	८ २६ ५० १३	६ १२ ११	९ २५ ० ३०	० ९ ३४	१० १९ ५९	५ १५ ७	७ ७ १५	५
६	९ २३ २० ३७	९ १९ ३ ३०	११ १५ २९	८ २७ ४९ ५०	६ १२ १४	९ २६ १५ ४८	० ९ ३७	१० १९ ५६	५ १५ ५	७ ७ १६	६
७	९ २४ २१ २६	१० ४ १६ २०	११ १६ १३	८ २८ ५२ ११	६ १२ १६	९ २७ ३१ ५	० ९ ४१	१० १९ ५३	५ १५ ४	७ ७ १७	७
८	९ २५ २२ १४	१० १९ १७ २०	११ १६ ५७	८ २९ ५७ ०	६ १२ १८	९ २८ ४६ २१	० ९ ४४	१० १९ ५०	५ १५ ३	७ ७ १८	८
९	९ २६ २३ ०	११ ३ ५८ २७	११ १७ ४१	९ १ ४ ५	६ १२ २१	१० ० १ ३७	० ९ ४८	१० १९ ४७	५ १५ २	७ ७ १९	९
१०	९ २७ २३ ४५	११ १८ १४ ७	११ १८ २४	९ २ १३ १६	६ १२ २३	१० १ १६ ५१	० ९ ५२	१० १९ ४४	५ १५ ०	७ ७ १९	१०
११	९ २८ २४ २८	० २ ३ ३४	११ १९ ८	९ ३ २४ २४	६ १२ २४	१० २ ३२ ४	० ९ ५६	१० १९ ४०	५ १४ ५९	७ ७ २०	११
१२	९ २९ २५ १०	० १५ २६ ४०	११ १९ ५२	९ ४ ३७ २०	६ १२ २६	१० ३ ४७ १७	० १० ०	१० १९ ३७	५ १४ ५७	७ ७ २१	१२
१३	१० ० २५ ५०	० २८ २३ ९	११ २० ३६	९ ५ ५१ ५९	६ १२ २७	१० ५ २ २९	० १० ४	१० १९ ३४	५ १४ ५५	७ ७ २२	१३
१४	१० १ २६ ३८	१ १० ५९ २९	११ २१ २०	९ ७ ८ १३	६ १३ २८	१० ६ १७ ३९	० १० ८	१० १९ ३१	५ १४ ५४	७ ७ २२	१४
१५	१० २ २७ ४	१ २३ १९ ४०	११ २२ ४	९ ८ २५ ५७	६ १२ २९	१० ७ ३८ ४८	० १० १३	१० १९ २८	५ १४ ५२	७ ७ २३	१५
१६	१० ३ २७ ३८	२ ५ २४ ४८	११ २२ ४७	९ ९ ४५ ४	६ १२ ३०	१० ८ ४७ ५६	० १० १७	१० १९ २४	५ १४ ५०	७ ७ २३	१६
१७	१० ४ २८ ११	२ १७ २१ ५०	११ २३ ३१	९ ११ ५ ३५	६ १२ ३१	१० १० ३ ३	० १० २२	१० १९ २१	५ १४ ४९	७ ७ २३	१७
१८	१० ५ २८ ४३	२ २९ १३ २०	११ २४ १५	९ १२ २७ २४	६ १२ ३१	१० ११ १८ १०	० १० २६	१० १९ १८	५ १४ ४७	७ ७ २४	१८
१९	१० ६ २९ १३	३ ११ २ २२	११ २४ ५८	९ १३ ५० २८	व६ १२ ३२	१० १२ ३३ १६	० १० ३१	१० १० १५	५ १४ ४५	७ ७ २४	१९
२०	१० ७ २९ ४२	३ २२ ५१ ३६	११ २५ ४२	९ १५ १४ ४४	६ १२ ३२	१० १३ ४८ २०	० १० ३६	१० १९ १२	५ १४ ४३	७ ७ २५	२०
२१	१० ८ ३० ९	४ ४ ४३ २०	११ २६ २५	९ १६ ४० १८	६ १२ ३२	१० १५ ३ २३	० १० ४१	१० १९ ९	५ १४ ४२	७ ७ २५	२१
२२	१० ९ ३० ३४	४ १६ ३९ ३६	११ २७ ९	९ १८ ६ ४५	६ १२ ३१	१० १६ १८ २५	० १० ४५	१० १९ ५	५ १४ ४०	७ ७ २५	२२
२३	१० १० ३० ५७	४ २८ ४२ १८	११ २७ ५२	९ १९ ३४ २८	६ १२ ३१	१० १७ ३३ २६	० १० ५०	१० १९ २	५ १४ ३८	७ ७ २६	२३
२४	१० ११ ३१ १८	५ २० ५३ २४	११ २८ ३६	९ २१ ३ १५	६ १२ ३०	१० १८ ४८ २७	० १० ५५	१० १८ ५९	५ १४ ३६	७ ७ २६	२४
२५	१० १२ ३१ १८	५ २३ १४ ५६	११ २९ १९	९ २२ ३३ ४	६ १२ २८	१० २० ३ २६	० ११ ४	१० १८ ५६	५ १४ ३४	७ ७ २६	२५
२६	१० १३ ३१ ५७	६ ५ ४९ ९	० ० २	९ २४ ३ ५९	६ १२ २८	१० २१ १८ २४	० ११ ६	१० १८ ५३	५ १४ ३२	७ ७ २७	२६
२७	१० १४ ३२ १४	६ १८ ३८ २९	० ० ४६	५ २५ ३५ ५८	६ १२ २७	१० २२ ३३ २१	० ११ ११	१० १८ ४९	५ १४ २९	७ ७ २७	२७
२८	१० १५ ३२ २९	७ १ ४५ १९	० १ २९	९ २७ ९ ०	६ १२ २६	१० २३ ४८ १६	० ११ १७	१० १८ ४६	५ १४ २७	७ ७ २७	२८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मार्च सन् १९७० ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्टग्रह । अयनांशः २३।२६।३० मासारम्भे प्लूटो ५।३।२ वक्री

ता० मार्च	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्शल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता० मार्च
१	१० १६ ३२ ४२	७ १५ ११ १०	० २ १२	९ २८ ४३ ३	६ १२ २४	१० २५ ३ १०	० ११ २२	१० १८ ४३	५ १४ २५	७ ७ २७	१
२	१० १७ ३२ ५५	७ २८ ५९ २३	० २ ५५	१० ० १८ १२	६ १२ २२	१० २६ १८ ४	० ११ २७	१० १८ ४०	५ १४ २३	७ ७ २७	२
३	१० १८ ३३ ७	८ १३ ८ २०	० ३ ३९	१० १ ५४ २३	६ १२ २०	१० २७ ३२ ५७	० ११ ३३	१० १८ ३७	५ १४ २१	व७ ७ २७	३
४	१० १९ ३३ १७	८ २७ ३७ १२	० ४ २२	१० ३ ३१ ३९	६ १२ १८	१० २८ ४७ ४९	० ११ ३९	१० १८ ३४	५ १४ १९	७ ७ २७	४
५	१० २० ३३ २५	९ १२ २२ २२	० ५ ५	१० ५ ९ ५८	६ १२ १६	११ ० २ ४०	० ११ ४४	१० १८ ३०	५ १४ १६	७ ७ २७	५
६	१० २१ ३३ ३२	९ २७ १८ १०	० ५ ४८	१० ६ ४९ २२	६ १२ १३	११ १ १७ ३०	० ११ ५०	१० १८ २७	५ १४ १४	७ ७ २७	६
७	१० २२ ३३ ३७	१० १२ १७ ७	० ६ ३१	१० ८ २९ ५०	६ १२ १०	११ २ ३२ १९	० ११ ५६	१० १८ २४	५ १४ १२	७ ७ २७	७
८	१० २३ ३३ ४०	१० २७ १० ५६	० ७ १४	१० १० ११ २५	६ १२ ७	११ ३ ४७ ६	० १२ २	१० १८ २१	५ १४ ९	७ ७ २७	८
९	१० २४ ३३ ४१	११ ११ ५१ ३८	० ७ ५७	१० ११ ५४ ६	६ १२ ४	११ ५ १ ५२	० १२ ८	१० १८ १८	५ १४ ७	७ ७ २६	९
१०	१० २५ ३३ ४०	११ २६ १२ ३९	० ८ ४०	१० १३ ३७ ५४	६ १२ १	११ ६ १६ ३६	० १२ १४	१० १८ १५	५ १४ ४	७ ७ २६	१०
११	१० २६ ३३ ३७	० १० १० ३४	० ९ २३	१० १५ २२ ५०	६ ११ ५८	११ ७ ३१ १९	० १२ २०	१० १८ ११	५ १४ २	७ ७ २६	११
१२	१० २७ ३३ १२	० २३ ४० २८	० १० ५	१० १७ ८ ५५	६ ११ ५४	११ ८ ४६ १	० १२ २६	१० १८ ८	५ १३ ५९	७ ७ २६	१२
१३	१० २८ ३३ २५	१ ६ ४५ ११	० १० ४८	१० १८ ५६ १०	६ ११ ५०	११ १० ० ४१	० १२ ३३	१० १८ ५	५ १३ ५७	७ ७ २५	१३
१४	१० २९ ३३ १६	१ १९ २७ १०	० ११ ३१	१० २० ४४ ३५	६ ११ ४६	११ ११ १५ १९	० १२ ३९	१० १८ २	५ १३ ५४	७ ७ २५	१४
१५	११ ० ३३ ४	२ १ ४९ १७	० १२ १४	१० २२ ३४ १०	६ ११ ४२	११ १२ २९ ५६	० १२ ४५	१० १७ ५९	५ १३ ५२	७ ७ २४	१५
१६	११ १ ३२ ४९	२ १३ ५६ २७	० १२ ५६	१० २४ २४ ५४	६ ११ ३८	११ १३ ४४ ३०	० १२ ५२	१० १७ ५५	५ १३ ४९	७ ७ २४	१६
१७	११ २ ३२ [illegible]	२ २५ ५२ ३१	० १३ ३९	१० २६ १६ ५२	६ ११ ३३	११ १४ ५९ ३	० १२ ५८	१० १७ ५२	५ १३ ४७	७ ७ २४	१७
१८	११ ३ ३२ १४	३ ७ ४२ १५	० १४ २१	१० २८ १० ०	६ ११ २९	११ १६ १३ ३५	० १३ ५	१० १७ ४९	५ १३ ४४	७ ७ २३	१८
१९	११ ४ ३१ ५४	३ १९ ३० २६	० १५ ४	११ ० ४ १९	६ ११ २४	११ १७ २८ ५	० १३ ११	१० १७ ४६	५ १३ ४२	७ ७ २३	१९
२०	११ ५ ३१ ३२	४ १ २० ५४	० १५ ४६	११ १ ५८ ४६	६ ११ १९	११ १८ ४२ ३४	० १३ १८	१० १७ ४३	५ १३ ३९	७ ७ २३	२०
२१	११ ६ ३१ [illegible]	४ १३ १७ [illegible]	० १६ २९	११ ३ ५५ २१	६ ११ १४	११ १९ ५७ ०	० १३ २४	१० १७ ४०	५ १३ ३७	७ ७ २२	२१
२२	११ ७ ३० ४२	४ २५ २१ ३४	० १७ ११	११ ५ ५४ ०	६ ११ ९	११ २१ ११ २५	० १३ ३१	१० १७ ३६	५ १३ ३४	७ ७ २२	२२
२३	११ ८ ३० १०	५ ७ ३६ ३८	० १७ ५४	११ ७ ५२ ४१	६ ११ ४	११ २२ २५ ४९	० १३ ३८	१० १७ ३३	५ १३ ३०	७ ७ २१	२३
२४	११ ९ २९ ४६	५ २० ५ ४१	० १८ ३६	११ ९ ५२ २१	६ १० ५८	११ २३ ४० १०	० १३ ४५	१० १७ ३०	५ १३ २९	७ ७ २०	२४
२५	११ १० २९ ९	६ २ [illegible] ४०	० १९ १८	११ ११ ५२ ५२	६ १० ५३	११ २४ ५४ ३०	० १३ ५१	१० १७ २७	५ १३ २६	७ ७ २०	२५
२६	११ १० २८ ३१	६ १५ [illegible] ४	० २० ०	११ १३ ५४ ०	६ १० ४७	११ २६ ८ ४९	० १३ ५८	१० १७ २४	५ १३ २४	७ ७ १९	२६
२७	११ ११ २७ ५४	६ २८ ४१ [illegible]	० २० ४३	११ १५ ५६ [illegible]	६ १० ४१	११ २७ २३ ६	० १४ ५	१० १७ २०	५ १३ २१	७ ७ १८	२७
२८	११ १२ २७ १६	७ १३ [illegible] ४६	० २१ २५	११ १७ ५८ ३०	६ १० ३५	११ २८ ३७ २१	० १४ १२	१० १७ १७	५ १३ १९	७ ७ १७	२८
२९	११ १४ २६ ४५	७ २७ ३८ ४६	० २२ ७	११ २० ० ५१	६ १० २९	११ २९ ५१ ३५	० १४ १९	१० १७ १४	५ १३ १६	७ ७ १६	२९
३०	११ १५ २६ २९	८ ११ ४२ ५२	० २२ ४९	११ २२ ३ ३५	६ १० २२	० १ ५ ४७	० १४ २६	१० १७ ११	५ १३ १३	७ ७ १५	३०
३१	११ १६ २५ ६	८ २६ २७ ४	० २३ ३१	११ २४ ७ ४४	६ १० १६	० २ १९ ५९	० १४ ३३	१० १७ ८	५ १३ ११	७ ७ १५	३१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फरवरी सन् १९५० ई० प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्टग्रह । अयनांशाः २३।६।२६ सामारम्भे प्लूटो ४।३।२० वक्री

ता० फर०	सूय रा अ. क. वि.	चन्द्र रां. अं. क. बि.	मगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क. वि	गुरु रा अं. क.	शुक्र रा. अ. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हशल रा. अ. क.	नपच्यून रा. अ. क.	ता० फर०
१	९ १८ १६ १५	७ ५ ३० २१	११ ११ ४८	८ २३ २३ ४४	६ ११ ५८	९ १९ ५९ १५	० ९ २१	१० २० १२	५ १५ ११	७ ७ १२	१
२	९ १९ १७ १९	७ १९ १८ १३	११ १२ ३२	८ २४ ९ ५३	६ १२ २	९ २० १४ ३४	० ९ २४	१० २० ९	५ १५ १०	७ ७ १३	२
३	९ २० १८ २	८ ३ ५३ १९	११ १३ १६	८ २४ ५९ ५४	६ १२ ५	९ २२ २१ ५३	० ९ २७	१० २० ६	५ १५ ९	७ ७ १४	३
४	९ २१ १८ ५५	८ १८ ४२ १८	११ १४ ०	८ २५ ५३ २५	६ १२ ८	९ २३ ४५ १२	० ९ ३०	१० २० ३	५ १५ ८	७ ७ १५	४
५	९ २२ १९ ४७	९ ३ ४८ ५१	११ १४ ४५	८ २६ ५० १३	६ १२ ११	९ २५ ० ३०	० ९ ३४	१० १९ ५९	५ १५ ७	७ ७ १५	५
६	९ २३ २० ३७	९ १९ ३ ३०	११ १५ २९	८ २७ ४९ ५०	६ १२ १४	९ २६ १५ ४८	० ९ ३७	१० १९ ५६	५ १५ ५	७ ७ १६	६
७	९ २४ २१ २६	१० ४ १६ २०	११ १६ १३	८ २८ ५२ ११	६ १२ १६	९ २७ ३१ ५	० ९ ४१	१० १९ ५३	५ १५ ४	७ ७ १७	७
८	९ २५ २२ १४	१० १९ १७ २०	११ १६ ५७	८ २९ ५७ ०	६ १२ १८	९ २८ ४६ २१	० ९ ४४	१० १९ ५०	५ १५ ३	७ ७ १८	८
९	९ २६ २३ ०	११ ३ ५८ २७	११ १७ ४१	९ १ ४ ५	६ १२ २१	१० ० १ ३७	० ९ ४८	१० १९ ४७	५ १५ २	७ ७ १९	९
१०	९ २७ २३ ४५	११ १८ १८ ७	११ १८ २४	९ २ १३ १६	६ १२ २३	१० १ १६ ५१	० ९ ५२	१० १९ ४४	५ १५ ०	७ ७ १९	१०
११	९ २८ २४ २८	० २ ३ ३४	११ १९ ८	९ ३ २४ २४	६ १२ २४	१० २ ३२ ४	० ९ ५६	१० १९ ४०	५ १४ ५९	७ ७ २०	११
१२	९ २९ २५ १०	० १५ २६ ४०	११ १९ ५२	९ ४ ३७ २०	६ १२ २६	१० ३ ४७ १७	० १० ०	१० १९ ३७	५ १४ ५७	७ ७ २१	१२
१३	१० ० २५ ५०	० २८ २३ ९	११ २० ३६	९ ५ ५१ ५९	६ १२ २७	१० ५ २ २९	० १० ४	१० १९ ३४	५ १४ ५५	७ ७ २२	१३
१४	१० १ २६ ३८	१ १० ५९ २९	११ २१ २०	९ ७ ८ १३	६ १३ २८	१० ६ १७ ३९	० १० ८	१० १९ ३१	५ १४ ५४	७ ७ २२	१४
१५	१० २ २७ ४	१ २३ १९ ४०	११ २२ ४	९ ८ २५ ५७	६ १२ २९	१० ७ ३८ ४८	० १० १३	१० १९ २८	५ १४ ५२	७ ७ २३	१५
१६	१० ३ २७ ३८	२ ५ २४ ४८	११ २२ ४७	९ ९ ४५ ४	६ १२ ३०	१० ८ ४७ ५६	० १० १७	१० १९ २४	५ १४ ५०	७ ७ २३	१६
१७	१० ४ २८ ११	२ १७ २१ ५०	११ २३ ३१	९ ११ ५ ३५	६ १२ ३१	१० १० ३ ३	० १० २२	१० १९ २१	५ १४ ४९	७ ७ २३	१७
१८	१० ५ २८ ४३	२ २९ १३ २०	११ २४ १५	९ १२ २७ २४	६ १२ ३१	१० ११ १८ १०	० १० २६	१० १९ १८	५ १४ ४७	७ ७ २४	१८
१९	१० ६ २९ १३	३ ११ २ २२	११ २४ ५८	९ १३ ५० २८	व६ १२ ३२	१० १२ ३३ १६	० १० ३१	१० १० १५	५ १४ ४५	७ ७ २४	१९
२०	१० ७ २९ ४२	३ २२ ५१ ३६	११ २५ ४२	९ १५ १४ ४४	६ १२ ३२	१० १३ ४८ २०	० १० ३६	१० १९ १२	५ १४ ४३	७ ७ २५	२०
२१	१० ८ ३० ९	४ ४ ४३ २०	११ २६ २५	९ १६ ४० १८	६ १२ ३२	१० १५ ३ २३	० १० ४१	१० १९ ९	५ १४ ४२	७ ७ २५	२१
२२	१० ९ ३० ३४	४ १६ ३९ ३६	११ २७ ९	९ १८ ६ ४५	६ १२ ३१	१० १६ १८ २५	० १० ४५	१० १९ ५	५ १४ ४०	७ ७ २५	२२
२३	१० १० ३० ५७	४ २८ ४२ १८	११ २७ ५२	९ १९ ३४ २८	६ १२ ३१	१० १७ ३३ २६	० १० ५०	१० १९ २	५ १४ ३८	७ ७ २६	२३
२४	१० ११ ३१ १८	५ १० ५३ २४	११ २८ ३६	९ २१ ३ १५	६ १२ ३०	१० १८ ४८ २७	० १० ५५	१० १८ ५९	५ १४ ३६	७ ७ २६	२४
२५	१० १२ ३१ १८	५ २३ १४ ५६	११ २९ १९	९ २२ ३३ ४	६ १२ २८	१० २० ३ २६	० ११ ४	१० १८ ५६	५ १४ ३४	७ ७ २६	२५
२६	१० १३ ३१ ५७	६ ५ ४९ ९	० ० २	९ २४ ३ ५९	६ १२ २८	१० २१ १८ २४	० ११ ६	१० १८ ५३	५ १४ ३२	७ ७ २७	२६
२७	१० १४ ३२ १४	६ १८ ३८ २९	० ० ४६	५ २५ ३५ ५८	६ १२ २७	१० २२ ३३ २१	० ११ ११	१० १८ ४९	५ १४ २९	७ ७ २७	२७
२८	१० १५ ३२ २९	७ १ ४५ १९	० १ २९	९ २७ ९ ०	६ १२ २६	१० २३ ४८ १६	० ११ १७	१० १८ ४६	५ १४ २७	७ ७ २७	२८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मार्च सन् १९७० ई० प्रातः स्टेण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्टग्रह। अयनांशः २३।२६।३० मासारम्भे प्लूटो ५।३।२ वक्री

ता० मार्च	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अ. क. वि.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अ. क.	हर्शल रा. अ. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता० मार्च
१	१० १६ ३२ ४२	७ १५ ११ १३	० २ १२	९ २८ ४३ ३	६ १२ २४	१० २५ ३ १०	० ११ २२	१० १८ ४३	५ १४ २५	७ ७ २७	१
२	१० १७ ३२ ५५	७ २८ ५६ २३	० २ ५५	१० ० १८ १२	६ १२ २२	१० २६ १८ ४	० ११ २७	१० १८ ४०	५ १४ २३	७ ७ २७	२
३	१० १८ ३३ ७	८ १३ ८ २०	० ३ ३९	१० १ ५४ २३	६ १२ २०	१० २७ ३२ ५७	० ११ ३३	१० १८ ३७	५ १४ २१	व७ ७ २७	३
४	१० १९ ३३ १७	८ २७ ३७ १२	० ४ २२	१० ३ ३१ ३९	६ १२ १८	१० २८ ४७ ४९	० ११ ३९	१० १८ ३४	५ १४ १९	७ ७ २७	४
५	१० २० ३३ २५	९ १२ २२ २२	० ५ ५	१० ५ ९ ५८	६ १२ १६	११ ० २ ४०	० ११ ४४	१० १८ ३०	५ १४ १६	७ ७ २७	५
६	१० २१ ३३ ३२	९ २७ १८ १०	० ५ ४८	१० ६ ४९ २२	६ १२ १३	११ १ १७ ३०	० ११ ५०	१० १८ २७	५ १४ १४	७ ७ २७	६
७	१० २२ ३३ ३७	१० १२ १७ ७	० ६ ३१	१० ८ २९ ५०	६ १२ १०	११ २ ३२ १९	० ११ ५६	१० १८ २४	५ १४ ११	७ ७ २७	७
८	१० २३ ३३ ४०	१० २७ १० ५६	० ७ १४	१० १० ११ २५	६ १२ ७	११ ३ ४७ ६	० १२ २	१० १८ २१	५ १४ ९	७ ७ २७	८
९	१० २४ ३३ ४१	११ ११ ५१ ३८	० ७ ५७	१० ११ ५४ ६	६ १२ ४	११ ५ १ ५२	० १२ ८	१० १८ १८	५ १४ ७	७ ७ २६	९
१०	१० २५ ३३ ४०	११ २६ १२ ३९	० ८ ४०	१० १३ ३७ ५४	६ १२ १	११ ६ १६ ३६	० १२ १४	१० १८ १५	५ १४ ४	७ ७ २६	१०
११	१० २६ ३३ ३७	० १० १० ३४	० ९ २३	१० १५ २२ ५०	६ ११ ५८	११ ७ ३१ १९	० १२ २०	१० १८ ११	५ १४ २	७ ७ २६	११
१२	१० २७ ३३ ३२	० २३ ४० २८	० १० ५	१० १७ ८ ५५	६ ११ ५४	११ ८ ४६ १	० १२ २६	१० १८ ८	५ १३ ५९	७ ७ २६	१२
१३	१० २८ ३३ २५	१ ६ ४५ ११	० १० ४८	१० १८ ५६ १०	६ ११ ५०	११ १० ० ४१	० १२ ३३	१० १८ ५	५ १३ ५७	७ ७ २५	१३
१४	१० २९ ३३ १६	१ १९ २७ १०	० ११ ३१	१० २० ४४ ३५	६ ११ ४६	११ ११ १५ १९	० १२ ३९	१० १८ २	५ १३ ५४	७ ७ २५	१४
१५	११ ० ३३ ४	२ १ ४९ १७	० १२ १४	१० २२ ३४ १०	६ ११ ४२	११ १२ २९ ५६	० १२ ४५	१० १७ ५९	५ १३ ५२	७ ७ २५	१५
१६	११ १ ३२ ४६	२ १३ ५६ २०	० १२ ५६	१० २४ २४ ५४	६ ११ ३८	११ १३ ४४ ३०	० १२ ५२	१० १७ ५५	५ १३ ४९	७ ७ २४	१६
१७	११ २ ३२ ३०	२ २५ ५२ ३१	० १३ ३९	१० २६ १६ ५२	६ ११ ३३	११ १४ ५९ ३	० १२ ५८	१० १७ ५२	५ १३ ४७	७ ७ २४	१७
१८	११ ३ ३२ १६	३ ७ ४२ २१	० १४ २१	१० २८ १० ०	६ ११ २९	११ १६ १३ ३५	० १३ ५	१० १७ ४९	५ १३ ४४	७ ७ २३	१८
१९	११ ४ ३१ ५४	३ १९ ३० २५	० १५ ४	११ ० ४ १९	६ ११ २४	११ १७ २८ ५	० १३ ११	१० १७ ४६	५ १३ ४२	७ ७ २३	१९
२०	११ ५ ३१ ३१	४ १ २८ ५४	० १५ ४६	११ १ ५९ ४६	६ ११ १९	११ १८ ४२ ३४	० १३ १८	१० १७ ४३	५ १३ ३९	७ ७ २३	२०
२१	११ ६ ३१ ६	४ १३ १७ ९	० १६ २९	११ ३ ५६ २१	६ ११ १४	११ १९ ५७ ०	० १३ २४	१० १७ ४०	५ १३ ३७	७ ७ २२	२१
२२	११ ७ ३० ३६	४ २५ २१ ३४	० १७ ११	११ ५ ५४ ०	६ ११ ९	११ २१ ११ २५	० १३ ३१	१० १७ ३६	५ १३ ३४	७ ७ २२	२२
२३	११ ८ ३० [illegible]	५ ७ ३५ ३८	० १७ ५४	११ ७ ५२ ४१	६ ११ ४	११ २२ २५ ४९	० १३ ३८	१० १७ ३३	५ १३ ३०	७ ७ २१	२३
२४	११ ९ २९ [illegible]	५ २० ३ ४१	० १८ ३६	११ ९ ५२ २१	६ १० ५८	११ २३ ४० १०	० १३ ४५	१० १७ ३०	५ १३ २९	७ ७ २०	२४
२५	११ १० २९ ९	[illegible]	० १९ १८	११ ११ ५३ ५२	६ १० ५३	११ २४ ५४ ३०	० १३ ५१	१० १७ २७	५ १३ २६	७ ७ २०	२५
२६	११ ११ २८ [illegible]	[illegible]	० २० ०	११ १३ ५५ ०	६ १० ४७	११ २६ ८ ४९	० १३ ५८	१० १७ २४	५ १३ २४	७ ७ १९	२६
२७	११ १२ २८ [illegible]	[illegible]	० २० ४२	११ १५ ५७ [illegible]	६ १० ४१	११ २७ २३ ६	० १४ ५	१० १७ २०	५ १३ २१	७ ७ १८	२७
२८	११ १३ २७ [illegible]	[illegible]	० २१ २४	११ १८ ० [illegible]	६ १० ३५	११ २८ ३७ २१	० १४ १२	१० १७ १७	५ १३ १९	७ ७ १७	२८
२९	११ १४ २६ [illegible]	[illegible]	० २२ ७	११ २० [illegible]	६ १० २९	११ २९ ५१ ३५	० १४ १९	१० १७ १४	५ १३ १६	७ ७ १६	२९
३०	११ १५ २५ [illegible]	[illegible]	० २२ ४९	११ २२ [illegible]	६ १० २२	० १ ५ ४७	० १४ २६	१० १७ ११	५ १३ १३	७ ७ १५	३०
३१	११ १६ २५ ६	[illegible]	० २३ ३१	११ २४ [illegible]	६ १० १६	० २ १९ ५८	० १४ ३३	१० १७ ८	५ १३ ११	७ ७ १४	३१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सिद्धमहामन्त्रस्वरूपिणी

श्रीपरशिवप्रार्थना

[आचार्य–श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीता]

प्रभो ! शम्भो ! दीनं विहितशरणं त्वच्चरणयो-
र्भवारण्यादस्माद्विषमविषयाशीविषवृतात् ।
समुद्धृत्य श्रद्धाविधुरमपि बद्धादरकर
दयादृष्ट्या पश्यन्निजतनयमात्मीकुरु शिव ! ॥ १ ॥

अर्थ—हे सर्वशक्तिमान् ! समस्त संसारका कल्याण करने वाले कल्याणरूप शिव भगवान् ! आपके चरणोंमें दीन भावसे शरण आए हुए मुझको विषयरूपी भयङ्कर विषधर सर्पोंसे भरे हुए इस संसाररूपी जंगलसे बाहर निकालकर अपनी दयादृष्टिसे देखते हुए अपने पुत्रको अपना आत्मीय बनाओ। यद्यपि श्रद्धा आदिका मुझे ज्ञान नहीं है, तथापि चारों ओरसे भयभीत होकर हाथ जोड़े हुए शरण में आया हूँ। अतः अपने इस दीन पुत्र को हे शिव ! अपने आप स्वीकार करो ॥१॥

इस मन्त्रके द्वारा सभी प्रकारके सांसारिक एवं पारमार्थिक मनोरथोंकी सिद्धि हो सकती है।

अनुभूत सिद्ध मन्त्र, यन्त्र, औषधि प्रयोग

मन्त्रोंमें अद्भुत शक्ति है, यदि श्रद्धा विश्वाससे विधि पूर्वक मन्त्रोंका प्रयोग किया जावे तो वे असाध्य कठिनतम कार्योंको सुसाध्य एवं सरलतम बनाकर अपनी अलौकिक शक्ति दिखा सकते है। भारतीय पुरातन आगम शास्त्रोंमें मंत्रात्मक अनेक अमूल्य निधि भरी पड़ी है, किन्तु उनका रहस्य गुरुपरम्परागत प्राप्त होने से सर्व सुलभ नही और यदि किसीको प्राप्त हो भी गया तो दृढ़ विश्वास और श्रद्धाके अभावमें वह उससे लाभ उठा नही सकता। वर्तमान युगमें वैदिक एवं तान्त्रिक मन्त्रोंका अर्थ समझना तो दूर रहा, जो संस्कृतानभिज्ञ लोग उनका शुद्ध उच्चारण तक नहीं कर सकते, ऐसे लोगोंके लिए गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी महाराजने रामचरितमानसका निर्माण करके महान् उपकार किया है। रामायणकी अनेक चौपाइयाँ और दोहे हिन्दी में सिद्ध मन्त्र रूप हैं। हम यहाँ कुछ ऐसे ही सिद्ध मन्त्रों का प्रयोग दे रहे हैं। दृढ़ निष्ठा एवं आत्मविश्वासी श्रद्धालु पुरुष इनसे पूर्ण लाभ उठा सकेंगे और अविश्वासी अपने भाग्यको कोसते रहेंगे।

"सकल पदारथ हैं जग माहीं। बिना भाग्य नर पावत नाहीं॥"

(१) दरिद्रता और दौर्भाग्य निवृत्तिके लिए—

लक्ष्मीवशीकरणचूर्णसहोदराणि त्वत्पादपङ्कजरजांसि चिरं जयन्ति।
यानि प्रणाममिलितानि नृणां ललाटे लुम्पन्ति दैवलिखितानि दुरक्षराणि॥

भगवती महालक्ष्मी वा इष्ट देवताकी प्रतिमा और घृत दीपके सामने पीतवस्त्र पीतासन पर बैठकर सपादलक्ष (१२५०००) जप करनेसे सर्व प्रकारके दुःख, दरिद्रताकी निवृत्ति होकर सुख समृद्धि प्राप्त होती है। जप पूर्ण होने पर पर दशांश हवन तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन कुमारी पूजनादि विधि पूर्वक करें। किसी सुयोग्य गुरुसे मन्त्र ग्रहण करके सुमुहूर्तमें जपारम्भ करनेसे विशेष लाभ होता है।

रामायणके कुछ सिद्ध मन्त्र

(१) जीविका प्राप्तिके लिए –

बिस्वभरन पोषनकर जोई। ताकर नाम भरत अस होई॥

(२) खोई हुई वस्तु पुनः प्राप्त करनेके लिए—

गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू॥

(३) लक्ष्मी प्राप्ति के लिए –

जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं। जद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
तिमि सुख सम्पति बिनहिं बोलाएँ। धरमसील पहिं जाहिं सुभाएँ॥

(४) पुत्र प्राप्तिके लिए—

प्रेम मगन कौसल्या निसिदिन जात न जान।
सुखत सनेह बस मात बालचरित कर गान॥

(५) विवाह के लिए—

तब जनक पाई बसिष्ठ आयसु ब्याह साज संवारि कै।
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुँअरि लईं हँकारि कै॥

(६) सङ्कट नाशके लिए—

जौं प्रभु दीन दयालु कहावा। आरतिहरन बेद जसु गावा॥
जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसङ्कट होहिं सुखारी॥
दीन दयालु बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम सङ्कट भारी॥

(७) अभियोग (मुकदमा) में विजय प्राप्तिके लिए –

पवनतनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना॥

(८) विद्या प्राप्तिके लिए

गुरु गृहँ गए पढ़न रघुराई। अलपकाल बिद्या सब आई॥

(९) महामारी विषूचिका—हैजा प्लेग– आदिसे सुरक्षा के लिए—

जय रघुबंस बनज बनभानू। गहन दनुज-कुल दहन कृसानू॥

मन्त्र सिद्ध करनेकी सरल विधि —

रामायणके इन चौपाई मन्त्रोंका विधान यह है कि श्रद्धालु साधक अपना चन्द्रबल देखकर सुमुहूर्त वाली रात्रिको १० बजेके उपरान्त एकान्त पवित्र स्थानमें काशीकी ओर मुख करके अष्टाङ्ग हवन सामग्रीसे एकमाला या १०८ मन्त्रसे आहुति देवे, अर्थात् एक बार चौपाई पढ़कर एक आहुति दे, इस प्रकार एकसौआठ बार मन्त्र

उच्चारणके साथ १०८ आहुतियाँ देने पर एक रात्रिमें ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

चर्मरोग और कर्णरोगकी अनुभूत औषधि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उच्चारणके साथ १०८ आहुतियाँ देने पर एक रात्रिमें ही मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर जब जिस कार्यके लिए आवश्यकता हो, इसका श्रद्धापूर्वक जप [illegible] कार्य सिद्ध न हो [illegible] रहना चाहिए।

अष्टाङ्ग हवनकी सामग्री यह है—

(१) [illegible], (२) तिल, (३) शुद्ध गोघृत, (४) शक्कर (खण्ड) (५) [illegible], (६) [illegible], (७) कपूर, (८) शुद्धकेशर, (९) नागरमोथा, (१०) पञ्चमेवा (११) जौ और, (१२) चावल।

रक्षारेखा—

मन्त्र सिद्ध करनेके लिए वा किसी सङ्कटपूर्ण स्थान पर रात्रि व्यतीत करने के लिए अपने चारों ओर रक्षाकी रेखा खींच लेनी चाहिए। श्रीलक्ष्मणजीने श्रीसीता जीकी कुटीके आसपास जो रक्षारेखा खींची थी, उसी लक्ष्य पर रक्षा मन्त्र बनाया गया है। इसे भी एक सौ आठ आहुति द्वारा पहले सिद्ध कर लेना चाहिए—

मामभिरक्षय रघुकुल नायक। धृतवर चाप रुचिर कर सायक॥

कुछ शावर मंत्र

आजकल कलियुगमें शावर मन्त्रों का भी अद्भुत चमत्कार देखने में आता है। ये शावर मन्त्र गुरु परम्परा जैसे लिख हुए उपलब्ध हैं वैसे ही इनका उच्चारण करना चाहिए, अपनी ओरसे शुद्ध करनेकी विद्वत्ता इन मन्त्रों में नहीं छाँटनी चाहिए।

बिक्री बढ़ाने का मन्त्र—

भँवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा।
उठे जो डण्डी बिकै जो माल भँवर वीर सोखे नहिं जाय॥

रविवारके दिन काले उड़द लेकर उन पर २१ बार यह मन्त्र पढ़कर दुकानमें डाल दे तो तीन रविवारोंमें बिक्री तीन चार गुणी बढ़ जायगी।

अर्श (बवासीर) नाशक मन्त्र—

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जो न आवे ओकरेता, जाके रहे न गुदा रेखा [illegible] [illegible] यह मन्त्र जपता जाय, शौच करता जाय, खूनी बादी बवासीर जाय, [illegible] [illegible] तो अगस्त मुनि ब्राह्मण न भवति, यह मन्त्र सुनके भी [illegible] न करे [illegible]।"

[illegible] ७ बार मन्त्र पढ़कर गुद प्रक्षालन करने से सब प्रकार की अर्श (बवासीर) नष्ट होती है।

व्यापार लाभ यन्त्र

७२	८०	२	७
६	३	७७	७५
७६	७४	८	१
४	७५	७२	७४

इस यन्त्रको लाल [illegible] पर अष्टगन्ध से लिख कर [illegible] दुकानमें [illegible] तो व्यापार लाभ होवे।

इस शावर [illegible] ग्रहणमें वा दीपमालाको रात्रिमें जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। मन्त्र [illegible] सिद्ध [illegible] जाते हैं।

चर्मरोग और कर्णरोगकी अनुभूत औषधि

पांच तोले तिलोंके तेलको अग्नि पर चढ़ाकर पका ले और जब तैल पक जाय तो उसमें एक तोला कालीमिर्च डाल दें, जब कालीमिर्च जल जाय तो अग्नि से उतारकर तेलको छान लें। यह तेल समस्त कर्ण रोग और चर्म रोगोंको दूर करता है। कई प्रकारके रक्त विकारोंके लिए भी अत्यन्त लाभदायक है। कैसी भी भयङ्कर कानमें पीड़ा हो इस तेलकी दो तीन बूंद कानमें डालते ही तुरन्त लाभ होता है। यदि कान बहता हो तब भी प्रातः सायं दो तीन बूंद कानमें डालनेसे बहना बन्द हो जायेगा। नित्य डालनेसे बहरापन भी दूर हो जाता है। चम्बल, खुजली पर मालिश करनेसे बड़ा लाभ होता है। इसी तेलको गर्म करके मालिश करनेसे रीह अर्थात् वायुका दर्द और चोट लगनेसे होने वाले दर्द आदि भी निश्चित रूपमें दूर हो जाते हैं।

कालीमिर्च एक महान् औषधि या रसायन है। परन्तु सर्वसाधारण इसके गुणोंसे परिचित नहीं और न प्रयोग करना ही जानते हैं। प्रतिदिन प्रातः काल कुछ व्यायाम या आसन करके दो तोले शुद्ध गौ घृत में ७ कालीमिर्च भूनकरचबा जावें और ऊपरसे घृत पी लेवें तो वृद्धावस्थाकी निर्बलता कभी नहीं व्यापती। नेत्रोंकी ज्योति यथापूर्व बनी रहती है और शरीरमें कभी कोई रोग नहीं होता। श्वास रोग (दमा) श्लेष्मा (जुकाम) खांसी और पुराने सुजाक जैसे भयङ्कर रोग भी कालीमिर्च मिश्रित प्रयोगसे दूर हो जाते हैं और अनेक रोगियोंके दूर हुए हैं।

[सं. २०११ वि. के 'श्रीविश्वविजयपंचांग' से]

गतवर्षके पंचांगमें हमने दरिद्रता निवृत्ति, जीविका प्राप्ति, वर प्राप्ति, पत्नी-प्राप्ति आदिके अनुभूत मन्त्र लिखे थे। अब इस वर्ष धन-प्राप्तिके लिए कुबेर-मन्त्र का सिद्ध प्रयोग दे रहे हैं। यह प्रयोग स्वयं वा योग्य सदाचारी विद्वान् ब्राह्मणके द्वारा तीर्थस्थान शिवालय वा बिल्ववृक्षके नीचे विधि-पूर्वक करनेसे अवश्य ही इच्छित द्रव्यकी प्राप्ति होती है।

अथ कुबेरमन्त्र प्रयोगः—"ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा।' इति पंचत्रिंशद्वर्णात्मको मन्त्रः। अस्य मंत्रस्य विश्रवा ऋषिः, बृहती छन्दः, कुबेरोदेवता सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः। ॐ विश्रव ऋषये नमः शिरसि, ॐ बृहती छन्दसे नमः मुखे, ॐ कुबेर देवतायै नमः हृदि। इति ऋष्यादिन्यासः॥ ॐ यक्षाय अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ कुबेराय तर्जनीभ्यां नमः, ॐ वैश्रवणाय मध्यमाभ्यां नमः, ॐ धनधान्याधिपतये अनामिकाभ्यां नमः, ॐ धनधान्य समृद्धिं मे कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ देहि दापय स्वाहा, करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः। एवं हृदयादिषडङ्गन्यासं कुर्यात्। एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत्—

मनुजबाह्यविमानवरस्थितं गरुडरत्ननिभं निधिनायकम्।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वरगदे दधतं भज तुन्दिलम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

...ध्यात्वा पीठ धर्मादि परनन्वान्त पीठदेवता: सम्पूज्य तद्देशे मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य पाद्यादि पुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य आवरण पूजां कुर्यात् । तद्यथा—षट्कोणे आग्नेयादिकोणे केसरेषु मध्ये दिक्षु च ॐ यक्षाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ कुबेराय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ वैश्रवणाय शिखायैवषट् ॥ ३ ॥ ॐ धनधान्याधिपतये कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ धनधान्यसमृद्धि मे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ देहि दापय स्वाहा अस्त्रायफट् ॥ ६ ॥ इति षडङ्गानि पूजयेत् । ततो भूपुरे इन्द्रादि दश दिक्पालान् तद्बाह्ये वज्राद्यायुधानि च पूजयेत् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नीराजनान्त सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । यथा—लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः । शिवालये जपेमन्त्रमयुतं धनवृद्धये ॥ बिल्वमूलोपविष्टेन जपेल्लक्षं धनर्द्धिदम् ।' इति कुबेरमंत्रप्रयोगः ।

पुत्रोत्पत्तिकर यन्त्र

१०	१	१२
८	१५	३
२	२	५

इस यन्त्रको चमेलीकी लेखनीसे भोजपत्र पर अष्टगन्धसे लिखकर वन्ध्या स्त्रीकी कमरमें बांधे तो पुत्र होगा । दीपमाला या ग्रहणमें किसी तीर्थ पर प्रत्येक यन्त्रको १०८ बार भोजपत्र पर अष्टगन्धसे लिखकर सिद्ध करनेके अनन्तर प्रयोगमें लाना चाहिए ।

गर्भस्तम्भन यन्त्र

१००	६१	२	७
६	३	८४	१०३
८००	११००	८	१०
४	५	१०२	८८

इस यन्त्रको चमेलीकी कलमसे भोजपत्र पर अष्ट-गन्ध से लिखकर गर्भिणी स्त्रीकी कमरमें बांधे तो गर्भस्तम्भन होगा । गर्भस्रावका भय नहीं रहता ।

पुंसवन यन्त्र

१०	१	१२
८	१५	३
२	२	५

इस यन्त्रको अष्टगन्धसे भोजपत्र पर लिख कर जिस स्त्रीको कन्याएं ही होती हों उसकी कमरमें बांधे तो पुत्रोत्पत्ति होगी ।

राजयक्ष्मा वा क्षयकी दिव्य औषधि

भारतमें राजयक्ष्मा वा टी बी रोग बहुत फैलता जा रहा है । इस भयानक असाध्यरोगसे असंख्य प्राणी प्रतिवर्ष कालके गालमें समा जाते हैं । धनी रोगी सहस्रों रुपये व्यय करके सेनीटोरियममें वर्षों तक डेरा डाले रहते हैं फिर भी उन्हें पूर्ण लाभ नहीं होता । इस वर्ष प्रसंगवश श्रद्धेय महामहोपाध्याय श्री पं० परमेश्वरानन्दजी ने इस भयानक रोगका एक अनुपम सरल प्रयोग हमें बताया वह पाठकोंके लाभार्थ हम यहां दे रहे हैं ।

जिस रोगीको क्षय हो उसे रविपुष्य गुरुपुष्य अथवा अमृतसिद्धियोगमें नीचे लिखी विधिसे लहसुनका प्रयोग प्रारम्भ करावें तो ४० दिनमें रोगी बिलकुल स्वस्थ हो जावेगा । फिर कभी उसे क्षयकी आशङ्का नहीं रहेगी ।

लहसुनकी बड़ी पुष्ट गांठ लेवें, एक गांठमें कई कलियां या फांकें अलग-अलग निकलती हैं । शुभ चन्द्रमामें रोगीको प्रथम दिन प्रातः लहसुनकी एक कली खिला देवें, दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन, इसी प्रकार प्रति दिन एक-एक लहसुनका दाना या कली बढ़ाते हुए ४० वें दिन ४० कलियां रोगीको खिला देवें । कलियां भली-भांति चबाकर निगल लेनी चाहिएं । लहसुन चबाकर यदि मुंहमें जलन प्रतीत हो तो ऊपरसे आधपाव या पावभर बकरीका दूध मिश्री मिला पी सकते हैं । बकरीका दूध न मिले तो गऊका पीना चाहिए । भैंसका दूध कदापि न लें । इस प्रयोगसे ६-७ दिन के अनन्तर ही ज्वर समाप्त हो जावेगा और भूख बढ़ने लगेगी । भोजनके साथ शुद्ध गोघृत और दूधकी मात्रा अधिक होनी चाहिए । घृत दुग्ध जितना पाचन कर सके देते रहें । ४० दिन में यह कल्प हो जावेगा और फिर कभी आयुपर्यन्त उसे क्षयरोग नहीं होगा । महामहोपाध्यायजीको यह दिव्य प्रयोग एक अनुभवी वृद्ध महात्मासे प्राप्त हुआ था, उन्होंने कई क्षयके रोगी इसी प्रयोगसे स्वस्थ किये हैं । कितना दिव्य सरल प्रयोग है । कुछ धार्मिक प्रवृत्तिके लोग लहसुन से घृणा करते हैं, परन्तु औषधिके रूपमें सेवन करनेसे कोई हानि नहीं । लहसुन उत्तेजक पदार्थ होनेके कारण ही संयमी सदाचारी सात्विक जनोंके लिये इसका निषेध किया गया है । वैसे यह वातादि अनेक रोगोंकेलिये महौषधि तो है ही । हमें पूर्ण विश्वास है कि ४० दिनके उक्त लहसुन-प्रयोगसे क्षयरोग अवश्य नष्ट हो सकता है । प्रयोगके दिनोंमें श्री मृत्युञ्जय जपानुष्ठानभी साथ चलता रहे तो विशेष लाभ होगा ।

वाजीकरण पौष्टिक दिव्य-औषधि

बल-वीर्य वृद्धिके लिये भारतके नवयुवक एवं वृद्ध पुरुष प्रतिवर्ष विशेषतः शीत कालमें स्वर्ण, मकरध्वज, वसन्तमालती आदि अनेक बहुमूल्य बलवर्द्धक वाजीकरण औषधियां सेवन करते रहते हैं । परन्तु उन बहुमूल्य औषधियोंके समान विशेष गुणकारी एक साधारण औषधि हम यहां बता रहे हैं, इससे सर्वसाधारण निर्धन मनुष्य भी उन बहुमूल्य औषधियोंसे भी अधिक लाभ उठा सकते हैं ।

छुहारेकी गुठलियां पर्याप्त मात्रामें इकट्ठी करके जलसे धोकर धूपमें सुखा देवें । जब खूब अच्छी प्रकार सूख जावे तो हमामदस्ते में बारीक चूर्ण बना लेवें, इस चूर्ण को कपड़छन करके सफेद प्याजके रसमें चूर्णको मिस्सी आटेकी भांति गूंदकर छोटे झाड़ी बेरके समान गोलियां बनाकर छाया में सुखा लेवें । एक गोली प्रातः आधसेर वा पावभर गायके दूधसे सेवन करें । २१ दिनमें ही शरीरमें विशेष स्फूर्त्ति और बल-वीर्य ओज तथा नवजीवनका संचार होते दिखाई देगा । घृत दुग्ध और फलोंका सेवन अधिक करना चाहिए । ४१ दिनमें सभी प्रकारके प्रमेह नष्ट होंगे और वीर्य पुष्ट होकर शरीर सुदृढ़ बनेगा । औषधिसेवन कालमें ४१ दिन तक ब्रह्मचर्यसे रहें और लाल मिर्च खटाई तेलके पदार्थोंका त्याग करें । जो लोग बहुमूल्य औषधियोंका सेवन कर चुके हैं वे एक बार इस अमूल्य दिव्य औषधिका भी सेवन करके देखेंगे तो उन्हें इसमें अधिक चमत्कार दिखाई देगा । यह प्रयोग भी श्री महामहोपाध्याय पं० परमेश्वरानंद

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

...का अनुभूत है। गत वर्षके पञ्चांगमें कालीमिर्चका एक अनुभूत प्रयोग दिया था, ... दो प्रयोग यहां और दे रहे हैं—

जुखाम, खांसी, श्वास और सुजाककी अद्भुत औषधि

पावभर कालीमिर्चको कूटकर सायंकालके समय चार सेर पानीमें भिगो दो। प्रातः मीठी-मीठी (मन्दी) आँच पर रखकर एक सेर पानी शेष रह जाने तक पकाओ! तदनन्तर कपड़ेसे छानकर इस पानीमें दो सेर खांड डालकर जैसे इलायचीदाना बनता है उसी प्रकार इलायचीदाना बना लो। इस इलायचीदानेको मुखमें रखकर चूसनेसे श्लेष्मा (नजला जुकाम, खांसी तथा आँख व सिरका भारीपन और साधारण श्वास रोग (दमा) को भी बहुत लाभ होता है। भोजनोपरान्त दोनों समय इसका रस चूसने से पाचन-शक्ति बढ़ती है। यदि किसी भाईको दमा या खांसीका कफ खुश्क हो गया हो और बार-बार खांसने पर भी कफ न निकलता हो तो उसे तुरन्त यह इलायचीदाना चूसनेको दीजिये, कफ निकलने लगेगा और शीघ्र आराम होगा।

जिस भाईको पुराना सुजाक होकर कुर्री पड़ गया हो तो उसको दूर करनेके लिए हमारे भाई आजीवन डाक्टरों, वैद्योंके चक्करमें पड़े रहते हैं। बहुत से निर्धन लोग जिनके पास पैसा नहीं है वे अपने स्वास्थ्यको नष्ट करके निराश हो जाते हैं तथा शरीरसे किसी प्रकारका परिश्रम करनेके योग्य नहीं रहते। 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग'के पाठकोंको चाहिये कि ऐसे रोगीको २ माशे कालीमिर्च पीसकर प्रातः सायं ताजा जल के साथ फंकी दें और ऐसे भयंकर रोगसे दुःखी हुए गरीबकी अन्तरात्माका आशीर्वाद प्राप्त करें।

[सं० २०१२ वि० के वि० वि० पञ्चाङ्ग से]

सर्वज्वरे बलिदानविधानम्

[illegible] रोगीके १ मुट्ठी चावलके भातसे पुतला बनावें, उसको [illegible] फिर उसके चारों ओर [illegible] पर [illegible] पुतलेके सम्पूर्ण शरीरमें हल्दीका लेप करें, [illegible] पूजन कर पीपलके [illegible] पुतलेके चारों ओर कोनोंमें स्थापन करें पीछे [illegible] (अथवा यथ यजमानस्य) [illegible] करे—ॐ ज्वरस्थि- [illegible] ! [illegible] !" इस [illegible] इस प्रकार आवाहन कर [illegible] पूजन करे। फिर [illegible] उस पुतलेको लेकर [illegible] ॐ नमो भगवते [illegible] ॥१॥ [illegible] ॥२॥ [illegible] ॐ ह्रीं [illegible] [illegible] इस प्रकार [illegible]

आक के अद्भुत गुण

(१) आकके पीले पत्ते पर घी लगा आग पर सेककर उसका रस निकालें और थोड़ा कानमें डाल देवें तो आधाशीशी (सूर्यावर्त्त) की पीड़ा और बहिरापन दूर होता है (२) आकके चौथाई पत्ते पर कत्था-चूना लगाकर पानकी भांति खानेसे दमारोग जाता रहता है। (३) आकके सूखे पत्तोंको आग पर डालकर उसका धुआं मलद्वार (गुदा) में लेनेसे अर्श (बवासीर) रोग नष्ट होता है (४) आकके फूलको जीरा और कालीमिर्चके साथ खानेसे खाँसी मिटती है। (५) आकका दूध पैरोंके अंगूठे पर थोड़ा२ दिनमें कई बार लगानेसे दुखती हुई आंख ठीक हो जाती है। (६) आककी जड़ दूधमें औटाकर उस दूधका घी निकालकर उस घृतको औषधिकी भांति खाते रहनेसे नहरुआ रोग जाता रहता है। (७) आककी जड़को जलाकर राख कर लेवें, इस राखको सरसों के तैलमें मिलाकर शरीरमें मलनेसे चर्म रोग नष्ट हो जाते हैं। [सं. २०१३ के 'विश्वविजय-पंचाग' से]।

वन्ध्या पुत्रप्रद प्रयोग—

आजकल अनेक सम्पन्न घरों में पुत्र सन्ततिका अभाव दिखाई देता है। पुत्र प्राप्तिके लिए शक्तिभर सभी सम्भव प्रयत्न किये जाते हैं, पर सफलता नहीं मिलती। ऐसे निराश गृहस्थोंके लिए हम मन्त्रशास्त्र और आयुर्वेदका एक अलौकिक सिद्ध प्रयोग यहां दे रहे हैं। इसके विधिवत् प्रयोग से सन्तानप्राप्ति अवश्य होगी। प्रयोगारम्भसे पहले स्त्री पुरुषकी जन्मकुण्डलियाँ योग्य अनुभवी विद्वान दैवज्ञको दिखाकर निर्णय करा लेवें कि कौन-कौन ग्रह सन्तान प्रतिबन्धक हैं। उन सबका प्रतिकार उपाय शान्ति, हरिवंशपुराण, सप्ताह, नवाह्न आदि श्रवण, सन्तान गोपाल जप, शिवार्चन, गयाश्राद्धादि जो भी उचित हो करवा दें। तदनन्तर नीचे लिखा प्रयोग (मन्त्र जप) स्वयं करें अथवा किसी विद्वान् से करवायें। जप अष्टमी मङ्गलवार से वट वृक्षके नीचे प्रारम्भ करें। दशांश हवन तर्पण मार्जनके अनन्तर दश सौभाग्यवती स्त्रियोंको भोजन करावें, तदनन्तर आठ माशा बचको १०८ षडक्षरी मन्त्रसे (जो नीचे प्रयोग में लिखा है) अभिमन्त्रित करके मिट्टीके बर्तन में सायंकाल भिगो देवें दूसरे दिन प्रातः उस भिगोई हुई आठ माशा बच को शुद्ध जलमें पीस कर तीन बटी (गोलियां) बना उनको गौके मक्खनमें लपेटकर ऋतुस्नानसे निवृत्त हो अर्थात् चौथे दिन प्रातः स्नान करके भीगे कपड़ों सूर्य को प्रणाम कर तीनों गोलियां निगल लेवें, उस दिन केवल दूध भात भोजन करें। शक्कर न लेवें, दूध में मिश्री मिला सकते हैं। कभी कभी स्त्रियों को इससे विरेचन या वमन भी होने लगता है, इसकी चिन्ता न करें।

"षडक्षरी महाविद्यायाः त्रिअयुत ३०००० संख्याकं कुजेऽष्टम्यां वटमूले स्थिरा- [illegible] निश्चल मानसो भवतः बालरूपां पूर्णचन्द्र समां [illegible] परदेवतां [illegible] पञ्चादश [illegible] जपेत्. त्रिअयुतं होमं कृत्वा तर्पण मार्जनादि विधाय [illegible] [illegible] वचां मन्त्रयित्वा तां वचां वन्ध्यास्त्रियं [illegible] चिरायुषं पुत्रं सा जनयेत्। नीच स्त्री पुरुष भाषणम् [illegible] [illegible] यथा—"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं स्वाहा।"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस प्रयोग को सिद्ध-भेषज-मणिमाला में यों लिखा है—

[illegible] निक्षिप्य सकले कर्षे [illegible] बधान् । प्रातर्वन्ध्यो कृताञ्जलिको नवनीतेन लिप्येत् ॥
[illegible] नारी नियतस्नानभा । अथोदितं रविं तथा [illegible] स्थिता ॥
[illegible] पुत्रिः स्याद् गर्भकारणम् । स्वापयेदकं हृदयं पाठार्थं ब्राह्मणानमुदा ॥
[illegible] केवल माहरेत् । [illegible] कारयेत् [illegible] द्विजानिति ॥

ऋण मुक्ति और लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग :—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चिरचिर गणपतिवर वरदेयं मम वांछितार्थं कुरु कुरु स्वाहा ।"

अंगारकी चतुर्थी के दिन नित्यकृत्य से निवृत्त हो विधिवत् श्री गणपतिका पूजन कर उपर्युक्त मन्त्रका दशसहस्र जप करें, पश्चात् हवन करें। हवनमें गुग्गुल डली १०१, रक्त करवीर पुष्प १०१, लड्डू (चूरमा) ये तीनों वस्तुएँ एकत्रित कर उपर्युक्त मन्त्रसे १०८ आहुति देवें, पूर्णाहुति सुपारी से देवें। पुनः श्री गणपतिका विधिवत् गन्ध पुष्पादि द्वारा पूजन करे और २१ लड्डुओं का नैवेद्य धरे। पश्चात् दक्षिणा आरती मन्त्र पुष्पाञ्जलि प्रणामादि करके लड्डुओंका भोजन करे और शुद्ध आचमन करके उपर्युक्त मन्त्रका पुनः १०८ बार जप करके आसन से उठे। जपारम्भ से लेकर अन्तिम १०८ बार जप करने तक एक ही आसन पर बैठा रहे तो विशेष लाभप्रद है। हवन में केवल पलाशकी समिधा लेना और कार्यारम्भसे अन्त तक घृत दीप प्रज्वलित रहना चाहिए। इस प्रकार तीन पुरश्चरण करने पर लक्ष्मीप्राप्ति, इष्टसिद्धि धन धान्य वृद्धि अवश्य होती है और ऋणग्रस्त व्यक्ति ऋणमुक्त होते हैं।

[सं० २०१४ के वि० वि० पचाङ्ग से]

अथ धनप्रद कुबेराख्ययन्त्रम्

वसुप्रोक्तौ कुबेराख्यो महाद्रव्यप्रदायकः । महाबाला सौम्यस्वामी भंडारी तु शचीपतेः ॥
[illegible] सर्वं पातालस्य तथैव च । स्वर्गस्य तु तथा द्रव्यं तदधीने प्रवर्तते ॥
[illegible] न कुर्यात्कुतो महाशयः । [illegible] निस्य कोऽपि दाता न तत्समः ॥
[illegible] विस्मयप्रदम् । कुबेरस्य [illegible] प्रयोगे [illegible] सति ॥
[illegible] कुर्यात् [illegible] । [illegible] महाशक्तं विश्वनायकम् ॥
[illegible] स्वर्णके कुर्याच्चन्दनेन [illegible] ॥
[illegible] हृदि ध्यात्वा धुमं बलम् । पुनः प्रज्वालयेद्दीप [illegible] प्रदीपकम् ॥
घृतेन [illegible] यन्त्राणां नवसंख्यकम् । शतानां फलके रम्ये पलाशस्य दृढेन वै ॥
कुमारी मृत्तिका [illegible] तस्योपरि लिखेत् । वटवृक्षपलाशस्य मन्त्रं स्मृत्वा लिखेत्ततः ॥
[illegible] स्मृत्वा मन्त्रं पुनर्लिखेत् । पुनःप्रध्वंसयेद्यन्त्रं एवं कुर्यान्निरन्तरम् ॥
मौनेनैकासने स्थिरवा यन्त्रं नवशतं लिखेत् । ततश्च भोजनं कार्यं जितेन्द्रियपरोभवेत् ॥
द्विसप्तति दिनपर्यन्तमेवं कुर्यान्निरन्तरम् । सन्तुष्टो धनदस्तस्य सर्वस्वं हि ददाति च ॥
धनदाधीनद्रविणं तस्याधीनं प्रजायते । कुबेरसदृशो भूयाद् महायन्त्रप्रभावतः ॥
[illegible] प्रार्थितं सर्वं कार्यं कुर्यान्न संशयः । दुष्टा प्राणहराश्चौराः राजानो ये दुराशयाः ॥
[illegible] सर्वे तस्य पादाग्रे लुंठन्ति धरणीतले । अगम्यो मानवानां च राक्षसानां तथैव च ॥
[illegible] रत्नमणिवज्रं मुक्ताविद्रुमनीलकम् । रत्नानि तस्य पादाग्रे कर्करी इव दृश्यते ॥

मन्त्रस्तु—"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अनुत्पन्नाना द्रव्याणामुत्पादकायोत्पन्नाना द्रव्याणां वृद्धिकराय वसुदाय नमः ।" ध्यानं तु—

मनुजबाह्य-विमानवरस्थितं गरुड़रत्ननिभं निधिनायकम् ।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वरगदं धनदं भज तुन्दिलम् ॥

यन्त्रं तु [illegible] यथा :—

२७	२०	२५
२२	२४	२६
२३	२८	२१

नवकोष्ठात्मकं यन्त्रं विंशत्यंकादिनांकितम् ।
नवकोष्ठे नवांकाः स्युर्द्विसप्तति यथांकका: ॥

धनप्रदं कुबेरयन्त्रं गुरु पुष्ये प्रारम्भः । प्रत्यहं नवशत-नवशतयन्त्राणि लिखेत् निरन्तरं द्विसप्ततिदिनपलाशपट्ट पर्णे वा मध्यमे हड़तरे यद्वा पलाश-पुष्प-रञ्जित-अम्बरेषा कुमारी मृत्तिका तदुपरि वटवृक्षपलाशस्य मृत्तिकातृणः ताल: मृत्तिकाचतुष्टयं तत्र प्रक्षिप्य उदङ्मुखोपविश्य धनदं मनुजबाह्येति ध्यात्वा धूपं घृतदीपं च प्रज्वाल्य एकासने मौनेन प्रत्यहं 'ॐ ह्रीं०' इत्यादि चतुस्त्रिंशदक्षरमन्त्रं जपन् एकैकं यन्त्रं लिखित्वा नाशयित्वा पुनर्लिखित्वा नाशयित्वा, एवं नवशतयन्त्राणि लिखेत् । इति धनप्रदकुबेरयन्त्रविधानम् ।

पत्नी प्राप्ति के लिए विश्वावसु गन्धर्वका सिद्ध मन्त्र

जिन नवयुवक पुरुषोंको सुयोग्य सुन्दर कुलीन पत्नी प्राप्त करने कीइच्छा हो, वे नीचे लिखे मन्त्र का सवालक्ष जप स्वयं करें या करायें तो शीघ्र ही सुन्दर कुलीन कन्या पत्नी रूप में प्राप्त होगी। यदि सवा लक्ष जप न कर सकें तो प्रतिदिन सातवार मन्त्र से तर्पण करने से भी कुछ काल में कार्य सिद्धि होती है। विनियोग ध्यान और मन्त्र निम्नलिखित है—

ॐ अस्य श्रीगन्धर्वराजविश्वावसुमन्त्रस्य संमोहन ऋषिर्गायत्री छंदः श्रीगन्धर्व विश्वावसुर्देवता भार्यालाभार्थे जपे विनियोगः ।

ध्यानम्—हेमाम्भोजभूषिते रथवरे पुंकेसुभिः कल्पिते,
[illegible] कमलैः कन्याजनैः सेवितम् ।
गन्धर्वाधिपतिं प्रसन्नहृदयं विश्वावसुं यः पुमान्
मन्त्रं तस्य जपेल्लभेत नियतं कन्यावतीं कांक्षितम् ।

मन्त्रः—"ॐ विश्वावसुर्नाम गन्धर्वः कन्यानामधिपतिः सुरूपां सालंकारां कन्यां देहि मे नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा" ।

सन्तानकारक सिद्ध औषधि प्रयोग

(१) अश्विनी नक्षत्र में पीपल के ऊपर के वन्दारू की पत्ती पुष्प आदि लेकर एक वर्णवाली सवत्सा गौ के दूध के साथ मिलाकर स्त्री को रजोधर्म से ७ दिन तक प्रति दिन पिलावे। ३ मास तक यह प्रयोग (औषधि सेवन) करने से अवश्य गर्भ होगा। यदि प्रथम मास में ही गर्भाधान हो जावे तो फिर औषधि बन्द कर दें। सात दिन तक गौ दुग्ध और भात (चावल) का सेवन करें। [illegible] फलका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[illegible] को लेवें । तेल, [illegible], खटाई से परहेज करें । [illegible] का बान्दा [illegible] पंजाब में बन्दा कहते हैं, किसी वृक्षकी डालमें वृक्षादन के रूप में होता है । [illegible] छोटी गुठली [illegible] होती है. पीला [illegible] पुष्प के समान फूल होता है । आम, नीम पर अधिक मिलता है । मात्रा एक तोले पत्तीको पाव दूध में पीसकर पिलावें ।

(२) [illegible], [illegible] और शिवलिंगी तीनों बराबर लेकर कूट पीस छान के, दो तोलेकी फंकी लेकर ऊपर से मिश्री मिला गोदुग्ध पीने से [illegible] [illegible] [illegible] पुत्र को सुखपूर्वक प्रसव [illegible] है । [illegible] कहना है कि केवल शिवलिंगी के [illegible] [illegible] गोदुग्धसे निगल जाये तो अवश्य [illegible] होकर पुत्र उत्पन्न करेगी ।

परिवार नियोजन (सन्तति निग्रह) की सिद्ध औषधियाँ

गर्भनिरोधक प्रयोग (१)—[illegible] का मल (बीट) आधा तोला [illegible] आधा पाव पानी में [illegible], दूसरे प्रातःकाल मलकर छानकर मिश्री या [illegible] मिला कर [illegible] दिन एक मास तक पिये तो सदा के लिए सन्तति [illegible] । यदि [illegible] निरन्तर न पी सके तो प्रतिमास रजोधर्ममें [illegible] दिन पिये, [illegible] (तीन-तीन दिन) पीने से जीवन पर्यन्त कभी गर्भ धारण नहीं होगा ।

(२) [illegible] और [illegible] दोनोंको बराबर दो-दो तोले पीसकर ऋतु की [illegible] पीने से जीवन पर्यन्त परिवार नियोजन (सन्तति निग्रह) हो जाता है । [सं० २०१५ के श्री वि. वि. पंचांग से]

[illegible] यंत्र प्रयोग

[illegible] प्रयोगयात् ।"

[illegible]

ऋणमोचन प्रयोग

खैर (कत्था) की लकड़ीके कोयलेसे तीन खड़ी रेखाएँ भूमि पर खींचें । फिर नीचे लिखे हुए दो मन्त्रोंको पढ़ता हुआ बाएँ पैरकी एड़ीसे रगड़कर मिटा दे । वे दोनों मन्त्र ये हैं—

दुःखदौर्भाग्यनाशाय पुत्रसन्तानहेतवे ।
कृतरेखात्रयं वामपादेनैतत्प्रमार्ज्म्यहम् ॥१॥
ऋणदुःखविनाशाय मनोऽभीष्टार्थसिद्धये ।
मार्जयाम्यसिता रेखास्तिस्रो जन्मत्रयोद्भवाः ॥२॥

इतना कर [illegible] मंगलके [illegible] का ध्यान करता हुआ यह स्तुति करे ।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥१॥
ऋणहर्त्रे नमस्तुभ्यं दुःखदारिद्र्यनाशिने ।
नमामि द्योतमानाय सर्वकल्याणकारिणे ॥२॥
देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षसपन्नगाः ।
सुखं यान्ति यतस्तस्मै नमो धरणिसूनवे ॥३॥
यो वक्रगतिमापन्नो नृणां विघ्नं प्रयच्छति ।
पूजितः सुखसौभाग्यं तस्मै क्ष्मासूनवे नमः ॥४॥
प्रसादं कुरु मे नाथ ! मंगलप्रद ! मंगल ।
मेषवाहन रुद्रात्मन् ! पुत्रान् देहि धनं यशः ॥५॥

प्रतिदिन अथवा केवल मंगलवारको ही ऊपर लिखा हुआ विधान करनेसे बहुत शीघ्र ऋण से छुटकारा मिल जाता है ।

सर्वरोग नाशक यंत्र

८	११	१४	१
१३	२	७	१२
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

इस ३४के यन्त्रको होली, दीपावली, ग्रहण, या नवरात्र आदिमें १०८ बार लिख [illegible] कागज पर अष्टगन्ध से लिखकर रोगी को दाना समय पानी में घोल कर पिलावें तथा एक यंत्र उसकी [illegible] बांध देना चाहिए । इस यंत्रसे कैसा भी पुराना रोग किसी भी [illegible] समाप्त हो जाता है । ठीक होने के समय तक प्रातः [illegible] [illegible] चाहिए । [illegible] भी यह यंत्र अवश्य कुछ समय तक पिलाया [illegible] है और रोगी स्वयं ही स्वस्थता अनुभव करता है ।

[illegible]

[illegible] शक्ति बढ़ती है ।
[illegible] बन्द हो जायगा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनिवार या रविवारको हाथीकी लीद चांदीमें मढ़कर बालकके गलेमें बांधने से बच्चे को नजर नहीं लगेगी।

शनिवारको सिंह (शेर) के दांत बालकके गलेमें बांधनेसे बच्चेके दांत शीघ्र निकल आते हैं। कोई कष्ट नहीं होता है।

जिस मनुष्य, स्त्री या बच्चे को ज्वर (बुखार) किसी भी तरह आता हो, सरदी से हो या बिना सर्दी प्रतिदिन ज्वर आता हो, दूसरे दिन आता हो या तीसरे दिन, एक ईंट पर रोगी का नाम चाकू या लोहेकी कीलसे भली प्रकार खोदकर (लिखकर) ३१ बार रोगी पर मस्तकसे पांव तक उतार कर शनि रवि या मंगलवार की रात्रिमें तीव्र अग्निके बीचमें रख दे अग्नि इतनी तेज होनी चाहिए कि ईंटका रंग लाल सुर्ख अग्नि समान हो जावे। रोगी का ज्वर पहली रात्रिमें ही उतर जायेगा। यदि तीव्र भयंकर ज्वर होगा तो तीन दिनके प्रयोगसे निश्चित रूपसे ज्वर उतर जायेगा, पहले दिन शनिवार दूसरे दिन रविवार और तीसरे दिन मंगलवार को ईंट का यह तन्त्र प्रयोग करना चाहिए।

खोई हुई वस्तु को प्राप्त करने का अनुभूत मंत्र

यदि किसी का पुत्र वा कोई भी प्रियजन कहीं चला जावे और पता न लगता हो तो नीचे लिखा मंत्र उसके पहने हुए वस्त्र (बनियान या कुरता) पर लिखकर उस वस्त्रको चरखेकी मालके साथ बांध देवे और गये हुए व्यक्तिकी माता बहन भाई या पिता प्रतिदिन आधा घण्टा से एक घण्टा तक चर्खेको उल्टा घुमावे और यह मंत्र पढ़ता रहे तो २१ दिन के अन्दर वह व्यक्ति घर आ जायेगा या पता चल जावेगा। अनुभूत प्रयोग है। **मन्त्र—"ॐ क्लीं कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहु सहस्रवान्। यस्य स्मरण मात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते॥ क्लीं ॐ"** यदि किसी का पुत्र चला गया हो तो 'गतं नष्टं' के स्थानमें 'गतं पुत्रं' पढ़ना चाहिए। खोई हुई वस्तु प्राप्ति के लिए भी इस मंत्र का जप करना चाहिए।

सन्तान कारक सिद्ध औषधि प्रयोग

(१) पुष्य नक्षत्रमें सफेद पुष्प वाली कटैय्या की जड़ लाकर ऋतु स्नानके अनन्तर चौथे पांचवें छठे दिन सवत्सा गायके दूधके साथ दोनों समय स्त्री को पिलावे। इस प्रकार तीन दिन औषधि सेवनसे छठे दिन पतिके पास जाने पर अवश्य गर्भधारण करती है। पुष्य नक्षत्रमें श्वेत कटैयाकी जड़ लाकर रख लेवे फिर ऋतुमती होने से १६ दिनके अन्दर जिस दिन भी पुष्य नक्षत्र आ जावे उस दिन जलमें या गायके दूधमें पीसकर यह औषधि देदेवें। यदि रवि-पुष्य या गुरु-पुष्य मिल जावे तो सर्वोत्तम सिद्धि दायक समझना चाहिए।

(२) सफेद पीपल (यह पीपल कहीं कहीं बहुत कम मिलता है इसकी पत्ती डाली आदि सफेद होती है) की जड़, सफेद जीरा और सरफोंका के पत्ते डाली आदि सब दो तोला मिलाकर पावभर सवत्सा (बछड़ेवाली) गौके दूधमें पीसकर मिश्री मिला यदि वन्ध्या स्त्री पिये तो उसका वन्ध्यत्व दोष मिट जायगा अर्थात् इस प्रयोगसे अवश्य गर्भवती होकर पुत्र उत्पन्न करेगी।

परिवार नियोजन (सन्ततिनिग्रह) की सिद्ध औषधियाँ

(१) चौलाईकी जड़को चावलके धोवनके साथ पीस कर तीन दिन ऋतुकाल (रजस्वला समय) में पिये तो गर्भ धारण नहीं होता।

(२) कृष्णपक्ष की चतुर्दशीके दिन धतूरेकी जड़को लाकर काले कपड़े में लपेट कर स्त्री अपनी कमरमें बांधकर रमण करे तो गर्भधारण नहीं होगा। कृष्ण चतुर्दशी को लाई हुई धतूरेकी जड़को पीसकर स्त्री अपने स्मरगृह (गुह्यस्थान) में रक्खे तो एक मास तक गर्भाधान नहीं होगा। [सं०२०१६ के 'विश्वविजयपंचांग' से]

अनुभूत सिद्ध मन्त्र प्रयोग

गायत्रीमन्त्र के प्रभाव और महत्त्व से द्विजातिमात्र परिचित है। इस महामन्त्र के प्रभाव से लौकिक पारमार्थिक सभी मनोरथ सिद्ध हो सकते हैं परन्तु इस महामन्त्र जप की विधि अनेक द्विजों को भी ज्ञात नहीं, केवल आरम्भ में एक प्रणव लगाकर के जप करते रहते हैं। इसी कारण पूर्ण फल प्राप्त न होकर उलटे त्रिविध तापों की वृद्धि होती जा रही है। गायत्री मन्त्रजप में पांच प्रणव लगाने चाहिएं। गायत्री त्रिपदा है। अतः तीन प्रणव तीनों पादों के प्रारम्भ में, एक व्याहृति से पूर्व और एक तीसरे पाद के अन्त में। यथा—

ॐकारं पूर्वमुच्चार्य भूर्भुवःस्वस्तथैव च। गायत्रीं प्रणवान्तां च मध्ये त्रिप्रणवां तथा। (विश्वामित्र कल्पद्रुम)।

जपनीय गायत्री मन्त्र यह है—

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ भर्गो देवस्य धीमहि। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ॐ नमः॥

इस प्रकार जपसे ही अपना तथा राष्ट्र का कल्याण है।

भूत प्रेतादि बाधा निवारक यंत्र

२	९	२	७
६	३	६	५
८	७	८	१
५	४	७	४

इस यंत्र को नवरात्र में अष्टमी की मध्यरात्रि के समय भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखें। रात्रि के १२ बजे से सवा बजे तक चामुण्डा का ध्यान करते हुए जितने यंत्र लिखे जा सकें लिखकर रख छोड़े। रविवार को तावीज में रखकर जिस बालक या स्त्री पर भूत प्रेतादि का आवेश हो उसके गले में गुग्गुल धूप देकर धारण करानेसे प्रेतादि बाधा निवृत्त होगी। महा अष्टमी को रात्रि के १२ से १॥ बजे तक जितने यंत्र लिखे जायेंगे वे ही उपयोग में आ सकेंगे, अन्य नहीं। [सं० २०१७ के वि. वि. पंचांग से]

दुर्घटनासे बचनेका अमोघ उपाय

यानायात के साधन जितने शीघ्रगामी और सुविधाजनक बनते जा रहे हैं उतनी ही आये दिन यान दुर्घटनाएँ भी बढ़ती जा रही हैं। भौतिक विज्ञानोन्नति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[illegible] दे कर हमने आध्यात्मिकता को तिलांजलि दे दी है, उसीका यह दुष्परिणाम है। भारतीय संस्कृतिके उपासकजन आज भी जब छोटी बड़ी यात्राके लिए प्रस्थान करते हैं तो वे सुमुहूर्तमें अपने इष्ट देवका स्मरण करके पैर आगे बढ़ाते हैं; ताकि उनकी यात्रा मंगलमय हो। अशुभ मुहूर्त और क्रूर ग्रहोंके योगमें प्रायः दुर्घटनाएँ अधिक होती हैं। यात्रा के प्रारम्भ में (चलते समय) नीचे लिखे मंत्रों का तीन बार एकाग्रचित्तसे जप कर लिया जावे तो किसी प्रकार की दुर्घटनाका भय नहीं रहेगा—

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषंगसंगिनौ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम् ॥ १ ॥
सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
गच्छन्मनोरथोऽस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः ॥२॥

[अक्षय बाणोंके तरकसको हाथमें लिये हुए, तथा धनुषपर बाण चढाये हुए भगवान् श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मण मेरी रक्षा करनेके लिये मेरे मार्गमें सदा आगे आगे चलें। कवच खड्ग और धनुष बाण धारण किये हुए युवा राम और लक्ष्मण यात्रामें मनोरथों को परिपूर्ण करते हुए हमारी रक्षा करें।]

निर्विघ्न यात्राके लिए 'श्रीपञ्चस्तवी' का यह मंत्र भी विशेष लाभप्रद है—

लक्ष्मीं राजकुले जयां रणमुखे क्षेमङ्करीमध्वनि
क्रव्याद द्विपसर्पभाजि शबरीं कान्तारदुर्गे गिरौ
भूतप्रेतपिशाचजृम्भकभये स्मृत्वा महाभैरवीं
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोयप्लवे ॥

प्रस्थानके समय चलते हुए एक या तीनबार इस मन्त्रका मनमें जप करें। [illegible] नीचे लिखे मन्त्र जपने [illegible] स्थान पर यात्री को आसन भोजन स्थान शय्या-[illegible] सुव्यवस्था मिलती है—

[illegible] ! [illegible] त्वं ग्रामेषु नगरेषु च।
आसनं भोजनं शय्यां [illegible] ॥

सर्वग्रह पीड़ा निवारक तांत्रिक प्रयोग

[illegible] प्राचीन 'श्रीदत्तात्रेय तंत्र' नामक [illegible] से यह [illegible] यहाँ दिये गये हैं।

अर्क (आक) [illegible], [illegible], दूर्वा, वट (बरगद या बड़) इन सब की जड़ें [illegible] और [illegible] के पत्ते, [illegible] के पत्ते, [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], मूंग, गेहूं, तिल, [illegible] [illegible] सरसों, चन्दन, [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के समय [illegible] [illegible] वृक्षके नीचे अथवा किसी [illegible] आकर "[illegible]" इस मंत्र का [illegible] जप [illegible] पीड़ा नाशनं कुरु कुरु स्वाहा।" [illegible]

करे तो सब ग्रहों का उपद्रव नष्ट हो जाता है और महादारिद्रा तथा पातकी योग भी मिट जाते हैं। "दत्तात्रेय तंत्र" में इस प्रयोग का मूल पाठ इस प्रकार लिखा है—

अर्कमूलं च धत्तूरमपामार्गस्य मूलकम्। दूर्वामूलं च वटमूलं अश्वत्थमूलमेव च ॥
शमीपत्रं चाम्रपत्रं पत्रमौदुम्बरमेव च। मृण्मय पात्रमध्यस्थ दुग्धघृतसमन्वितम् ॥
तण्डुल चणक मुद्गं गोधूम तिलसर्षपम्। गोमयं सर्वं [illegible]ता: कृष्णचन्दन संयुतम् ॥
मधुतक्रयांस्तत्र सन्ध्याकाले शनैर्दिने। अश्वत्थमूले निःक्षिप्त ग्रहोपद्रव नाशनम् ॥
यावज्जीवति लोकेऽस्मिन् ग्रहपीड़ा न भवन्ति च ॥

[सं० २०१८ वि० के 'श्री विश्वविजयपंचांग' से]

दरिद्रता नाशक त्रिलोह-मुद्रिका

जो लोग दरिद्रता से पीड़ित हों जिनकी जन्म-कुण्डली में प्रबल दारिद्र्य योग पड़ा हो, या जिन्हें रोजगार धन्धा करने में लाभ की अपेक्षा हानि होती हो, वे लोग नीचे लिखी विधि के अनुसार मुद्रिका धारण करेंगे तो निश्चित निर्धनता पिशाच के चंगुल से छुटकारा पा जायेंगे। उक्त मुद्रिका निर्माण करने और धारण करने की विधि यह है कि शुक्ल पक्ष में जिस दिन रविवार या गुरुवार को पुष्य नक्षत्र हो उस दिन शुद्ध ताम्बा १२ भाग, चांदी १६ भाग और सोना १० भाग के अलग अलग तीन तार स्वर्णकार से बनवा कर त्रिवेणी वा पवित्री की भांति तीनों तारों की सम्मिलित मुद्रिका (अंगुठी) बनवाकर उसी दिन पूजन करके दाहिने हाथ की अनामिका अंगुलि में धारण करें।

लक्ष्मीदाता सिद्ध यन्त्र

इस यन्त्र को सिद्ध करने के निमित्त किसी पुरश्चरणादि प्रयोग की आवश्यकता नहीं। शताधिक परीक्षणों में सर्वदा यह रामबाण रहा है। यह प्रयोग श्रावण मासमें ही किया जाता है। श्रावणके अतिरिक्त मासोंमें भी इसका प्रयोग किया जा सकता है, किन्तु परिणाम कितने प्रतिशत होगा यह नहीं कहा जा सकता। कारण कि वैसे परीक्षणका अवसर प्राप्त न हो सका। लेखकको ज्ञात होनेके उपरान्त अभी तक शताधिक साधकोंसे भिन्न-भिन्न लौकिक कामनाओंको लेकर यह प्रयोग श्रावण मास में ही करवाया है एवं शत-प्रतिशत सफलता उन्हें प्राप्त हुई है।

प्रयोग है भगवान् आशुतोष शङ्करका। श्रावण कृ० प्रतिपदा से ब्रह्मचर्य भूशय्या एवं नक्त भोजनादि पुरश्चरण नियमों के पालनपूर्वक पूर्णिमा पर्यन्त शिवलिंग (मन्दिर में प्रतिष्ठित) का निश्चित संख्या (११, २१, ४१, ५१, १०१, १११ आदि) के अर्क पुष्पों से पञ्चाक्षरी मन्त्र द्वारा अर्चन करे। अर्थात् प्रत्येक पुष्प शिव पञ्चाक्षरी (नमः शिवाय) उच्चारणपूर्वक चढ़ावे। पुनः अखण्ड १०८ बिल्व-पत्रों पर (तीनों पत्र पर अलग-अलग) रक्तचन्दन से मालती या दाड़िम की लेखनी (कलम) द्वारा निम्नांकित यन्त्र अंकित कर प्रत्येक बिल्व-पत्र को उसी पञ्चाक्षरी मंत्र द्वारा शिवलिंग पर अर्पित करे। तीस दिन के इस प्रयोग से निश्चय धनागम होना प्रारम्भ हो जाता है। इसमें सन्देह को कहीं स्थान नहीं। आज तक एक बार का भी प्रयोग असफल नहीं हुआ। जिसका जी चाहे परीक्षा कर देख सकता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यान रहे, दो बातों का दृढ़ता से आचरण हो। एक अर्चन का समय जो पहिले दिन निश्चित हो गया, पूरे मास वही रहेगा। यह न होगा कि आज प्रातःकाल मध्याह्न और परसों घरके काममें फंस गये तो अपराह्न या प्रदोष कालमें ही सही। दूसरे बिल्व-पत्रों की संख्या १०८ होगी, कम ज्यादा नहीं। इसी प्रकार अर्क (आक, मदार, आकड़ा) के पुष्पोंकी संख्या निर्धारित पहले दिन हो जायगी अन्त तक वही रहेगी। बीच में कम ज्यादा न हो सकेगी। श्रावण में अर्क-पुष्प कठिनाई से प्राप्त होते हैं। अतः सोच विचार कर संख्या निर्धारित करें।

वं	वं	वं	वं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

इस प्रयोग में उपर्युक्त नियम की पाबन्दी ही सफलता की जननी है। नियम व्यतिरेक होने पर सफलता संदिग्ध हो जाती है। फिर भी लाभ होता ही है। धन प्राप्तिके अतिरिक्त अन्य कामनाओंको लेकर भी यह प्रयोग किया जा सकता है। निश्चित शत प्रतिशत सफलता मिलती है। यन्त्र यह है।

वर प्राप्ति के लिए

जिन कन्याओं की जन्मकुण्डली में मंगली वा वैधव्य योग हो, उन्हें नियमित रूपेण सोमवार व्रत, शिवार्चन और गौरी पूजन करना चाहिए। तथा श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध उत्तरार्ध अध्याय ५२-५३-५४ इन तीनों अध्यायोंका नित्य पाठ करनेसे सुयोग्य वरकी प्राप्ति होकर सौभाग्य वृद्धि होती है। इसके लिए और भी कुछ अनुभूत उपाय हैं जो प्रत्यक्ष में ज्ञात किये जा सकते हैं।

अनिष्ट परिणाम से सुरक्षा का अनुभूत प्रयोग

श्रीदुर्गासप्तशतीके बारहवें अध्यायमें अखिल ब्रह्माण्ड-नायिका श्रीजगदम्बा ने अपने श्रीमुखसे प्रतिज्ञाकी हैकि—"जब भयकर ग्रहपीड़ा और त्रिविध उत्पातका समय हो तो मनुष्यको अनन्य श्रद्धा विश्वासके साथ मेरी शरणमें आना चाहिए, जो मेरे नाम का कीर्तन करेगा, जप पाठ पूर्वक माहात्म्यका श्रवण कीर्तन करेगा उसकी सभी आपत्तियां मैं दूर कर दूंगी।" इससे उत्तम शांति और कल्याणका मार्ग दूसरा कोई नहीं।

अतः प्रत्येक प्रान्त, नगर और ग्राममें और विशेषकर सिद्ध शक्तिपीठों और पुण्यतीर्थक्षेत्रोंमें आपत्ति निवारणार्थ सामूहिक या व्यक्तिगतरूपमें यथाशक्ति नवचण्डी, शतचण्डी, सहस्रचण्डी, अयुतचण्डी, लक्षचण्डीका प्रयोग विधिवत् होना चाहिये। चारों नवरात्रोंका समय प्रयोगारम्भके लिए विशेष उत्तम है।

जो लोग प्रतिदिन सम्पूर्ण दुर्गासप्तशतीका पाठ समयाभावके कारण न कर सकते हों वे दिन रात्रिमें कभी केवल चारों स्तुतियों (शक्रस्तुति अ० १, शक्रादिस्तुति अ० ४, देवीसूक्त अ० ५, और नारायणीस्तुति अध्याय ११) का श्रद्धापूर्वक एकाग्रचित्तसे पाठ करके भी सभी प्रकारकी विघ्नबाधाओंसे मुक्ति पा सकते हैं।

जो लोग इतना भी न कर सकें वे केवल—"करोतु सा नः शुभ हेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।" इस मंत्रका प्रतिदिन प्रातः सायं यथाशक्ति जप करें। आबाल वृद्ध इस महामंत्रका सामूहिक वा व्यक्तिगत रूप में श्रद्धापूर्वक जब भी समय मिले जपकर श्रेय प्राप्त कर सकते हैं।

देशकाल परिस्थितिके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति शान्त समाहित चित्तसे एकान्तमें जगदम्बा की मूर्ति वा चित्रके सम्मुख घृतदीपक और धूप प्रज्वलित करके अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड-नायिका जगदम्बाका तन्मयतासे ध्यान करता हुआ इष्ट मन्त्रका कम से कम १० माला जप करें। उस समय यह भाव होना चाहिएकि भक्त बड़े ही कारुण्यपूर्ण कातरस्वरसे त्राणार्थ मन्त्रमयी स्तुति कर रहा है और मां अभय मुद्रा द्वारा अपने वत्सको स्मितवदनसे निहार रही है। यह भी अनुभव करना चाहिएकि उस करुणामयी जगदम्बाके अभयदानसे सर्वत्र शांति व्याप्त हो रही है और भक्तवत्सला आनन्दमयी मांकी कृपासे ही हम अनिष्ट योगके असामयिक भय से मुक्त हो गये हैं। इससे भगवत्कृपाके साथ वायुमण्डल शुद्ध होगा और अणु परीक्षणों से दूषित वातावरणके प्रभाव (महामारी आदि रोगों) से भी रक्षा होगी। जो लोग निश्चित समय पर विधि पूर्वक मन्त्र, जप, स्तुति, पाठ न कर सकें वे अहर्निश आर्त भावसे केवल—'त्राहिमाम्' 'त्राहिमाम्' 'रक्षमाम्' 'त्वमेव शरणं मम' इन मन्त्रों मेंसे किसीका भी चलते फिरते, उठते बैठते मनमें जप करते हुए भी सभी आपत्तियोंसे मुक्ति पा सकते हैं।

सबके लिए यह आवश्यक नहींकि वे जगन्माताकी ही उपासना करें। रामभक्त प्रजा 'रामचरितमानस' पाठकी सामूहिक योजना बनावें। सभी आपत्तियोंके निवारणार्थ—

आपदामपहर्त्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥

इस महामन्त्र का जप भी रामबाण सिद्ध होगा। [सं० २०१९ के वि. वि. पंचांग से]

लक्ष्मी प्राप्ति और सर्व कार्य साधक मन्त्र-राज

"......सम्मेलन के अवसर पर आपके समक्ष मैंने जगज्जननी भगवती श्रीदुर्गा माँ के जिस सफल प्रार्थना स्वरूप सबीजपल्लव सिद्ध मन्त्रराज की चर्चा की थी, वह सर्वाङ्गपूर्ण मन्त्र सविधि निम्न है। मुझे तो इसके नैत्यिक अग्निहोत्र के साथ केवल ३ आहुतियां देने मात्र से ही अभीष्टसिद्धि के लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे हैं। यह निश्चय सत्य है कि नियमपूर्वक यदि एकासन पर अनुष्ठान किया जाय तो माँ का कृपा प्रसाद यथोक्त फलस्वरूप दुर्लभ नहीं हो सकता। मन्त्र यह है—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"ॐ श्रीं नमः दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॐ ह्रीं दारिद्र्य दुःख भयहारिणी का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता नमः श्री ॐ हुं फट् स्वाहा ।।

(The middle lines of this mantra are only partly legible: "पर्यन्तिके यच्च दूरके भयं विन्दतु मामिह पवमानावतञ्जहि यदुत्थितं भयं भगवति दुर्गे तत्सर्वं शमय स्वाहा । दुर्गा देवी शरणमहं प्रपद्ये प्रतिकूल सर्व नाशय, अनुकूलं मे प्रयच्छ ह्रीं")

इस मन्त्रराजके ५५ सहस्र जप किये जाय और नित्य एक सहस्र मात्र जप करे । उत्तराभिमुख बैठकर शुद्ध गोघृत दीपक प्रज्वलित करके नित्य जप करें । भोजन में एक बार दूध खिचड़ी मात्र रहे । ५५ दिन में यह प्रयोग सम्पन्न होता है । सिद्ध है, मैंने जिस रूप में इस मन्त्रराज को प्राप्त किया है बिल्कुल उन्हीं अक्षरों में आपके पास निवेदन कर रहा हूँ । यदि इससे जन कल्याण हुआ तो अपना श्रम सफल समझूंगा ।

भगवान् भास्कर का अनुभूत यंत्र और मंत्र प्रयोग

यह प्रयोग नृसिंहगढ़ के वयोवृद्ध विद्वान् राजज्योतिषी श्री पण्डित लक्ष्मीनारायणजी त्रिपाठी ने पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत किया है ।

सूर्य यन्त्र स्वर्ण तावीज में

६	३२	३	३४	३५	१
७	११	२७	२८	८	३०
[illegible]	१४	१६	१५	२३	२४
१८	२०	[illegible]	[illegible]	१७	१३
२५	२९	१०	९	२६	१२
३६	५	३३	४	२	३१

अनुभव सिद्ध सूर्य यन्त्र

रविवार को कृत्तिका नक्षत्र हो उस दिन यह यन्त्र भोज पत्र पर आमकी कलमसे आकके दूधमें केशर और गोरोचन से लिखकर सूर्य मन्त्रसे अभिमन्त्रित करें । मन्त्र "ॐ ह्रीं हंसः घृणि सूर्याय नमः" । इस यन्त्र को सुवर्ण तावीज में रखकर दक्षिण भुजा पर धारण करने से सर्वकार्य सिद्ध होते हैं । साधारण जन ताम्रतावीज में धारण कर सकते हैं ।

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र या ताम्र पत्र पर खुदवा प्राण प्रतिष्ठा करके नित्य पूजन में रखने से बहुत शीघ्र लाभ होता है । सब कार्य सिद्ध होते हैं ।

(१) जिसकी जन्म कुण्डली में लग्नेश अष्टम या [illegible] सूर्य होकर स्थित स्थान में बैठा हो तो उसका अनिष्ट फल निवृत्त करने के लिए सूर्यमन्त्र "ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः" का नित्य एक हजार मन्त्र जप करने से अनिष्ट दूर होता है ।

(२) यदि सूर्य कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में हो तो दारिद्र्य व रोग दूर करता है । इसकी शान्ति के लिये मन्त्र "ॐ ह्रीं घृणि सूर्यादित्य श्रीं ॐ" का जप करने से इसकी शान्ति हो जाती है और मान वृद्धि के साथ तेज भी बढ़ता है ।

(३) सूर्य ग्रह द्वारा पूर्व जन्म का अभिशाप दूर करने के लिए सूर्यगायत्री का प्रथम सवालक्ष जप करना चाहिए । बाद में सूर्य मन्त्र "ॐ ह्रीं श्रीं आं ग्रहाधिराजाय आदित्याय स्वाहा ।" इस मन्त्र का जप करने से सूर्य दोष दूर होकर सन्तान पक्ष की वृद्धि, स्त्री सुख और कौटुम्बिक सुख मिलता है ।

(४) सूर्य ग्रह जनित अनिष्ट फल निवृत्ति के लिए माणिक रत्न अंगूठी में रविवार पुष्य नक्षत्र अथवा कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र रविवार में माणिक रत्न अंगूठी में जड़वाकर प्रातः ९ से १२ बजे के भीतर धारण करने से तेज बढ़ता है और खाँसी, दमा, गर्मी आदि सूर्य कृत रोग नष्ट होते हैं । वंश वृद्धि सुख सम्पत्ति धन धान्य वृद्धि होती है । [सं. २०२० के "श्रीविश्वविजय पंचांग" से]

परीक्षा में शतप्रतिशत सफल होने का अद्भुत उपाय

जो विद्यार्थी परीक्षामें प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होना चाहते हैं उनके लिए हम एक सरस्वती का सिद्ध मंत्र प्रयोग और अध्ययनके कुछ नियम बता रहे हैं । श्रद्धा विश्वास पूर्वक प्रतिदिन एक माला जप और नियमपालन करने पर सफलता शतप्रतिशत निश्चित है । यह सरस्वती का सिद्ध मन्त्र हमारे चिरपरिचित स्नेही वयोवृद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्य श्री पं० हंसराजजी कपिल (हरियाना) का अनुभूत है, उन्होंने लिखा है—

इस मंत्रका पूर्णप्रभाव अनुभूत है । अध्ययन किया गया विस्मरण नहीं होता । विशेष साधना का तो कहना ही क्या है, जिसमें अनधीत भी अधीत सा भासता रहता है । यथावत् पंचोपचार पूजन हो जावे तो बहुत उत्तम । केवल शयन से पहले रात्रिमे बिना पंचोपचारके भी (हाथ पैर प्रक्षालन कर धूपबत्ती प्रज्वलित कर शुद्धासन पर बैठकर) प्रतिदिन एक माला भगवती वीणापुस्तकधारिणी हंसवाहिनी श्रीसरस्वती का ध्यान करते हुए दत्तचित्त होकर जपने से कभी अनुत्तीर्ण नहीं हो सकते । साधक विद्यार्थी को यथाशक्ति मिथ्यावाद अपलाप से बचना चाहिए । यही इसका नियम है । जपनीय मन्त्र यह है—

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुद्धीणं ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रः हं सं थः थः ठः ठः
सरस्वति भगवति विद्या प्रसादं कुरु कुरु स्वाहा ।।

जप करनेके अनन्तर विद्यार्थीको आरामसे सो जाना चाहिए ।

अध्ययन कैसे करना चाहिए इसके २१ अमूल्य नियम नीचे दिये जा रहे हैं ।

(१) पढ़नेसे पूर्व और पढ़ते समय एकाग्रता सर्वाधिक अपेक्षित वस्तु है ।

(२) याद रखनेके लिए पढ़ना है, केवल पढ़ने एवं पृष्ठ संख्या पूरी करने के लिए नहीं । कभी-कभी पृष्ठ के पृष्ठ पढ़ते चले जाते हैं परन्तु याद कुछ नहीं रहता, अतः आँख और मस्तिष्क का सामञ्जस्य आवश्यक है ।

(३) खूब पढ़ो, उससे अधिक लिखो और सबसे अधिक आवश्यक है मनन करो । पठन, लेखन और मनन तीनों कार्य अपेक्षित हैं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(४) बाह्य मुहूर्त में उठकर पढ़ियेगा। प्रातःकाल दो घंटे का अध्ययन । न के ४ घंटे के बराबर होता है। उस समय पढ़ा हुआ कभी निष्फल नहीं जाता।

(५) प्रतिक्षण यह याद रखियेगा कि आप क्या पढ़ रहे हैं, कौन सा विषय है। पाठ के प्रधान अंशों पर विशेष ध्यान दें।

(६) पढ़ने का एक निश्चित समय और स्थान आवश्यक है। स्थान का प्रभाव ऐसा पड़ता है कि जहां बैठते ही बस पढ़ना ही सूझे। मन्दिर में प्रवेश करते ही हमारा हृदय कितना शुद्ध और भक्ति भावना से ओतप्रोत हो जाता है।

(७) अध्ययन से पूर्व एक निश्चित उद्देश्य एवं कार्यक्रम बना लीजिए। सभी विषयों को समान दृष्टि से देखियेगा। हां, क्लिष्ट विषयों को अधिक समय दिया जा सकता है।

(८) पढ़ते समय मुख्य-मुख्य बातें एक नोट बुक में लिखते जाइएगा।

(९) अध्ययन के लिए सब कार्यों से निवृत्त होकर जम कर बैठिये। बीच-बीच का व्यवधान उचित नहीं।

(१०) चाहे आप चार की अपेक्षा तीन ही घंटे पढ़ें, ध्यानस्थ हो जायें। मस्तिष्क पर नियन्त्रण अत्यावश्यक है।

(११) पढ़ने के साथ-साथ मनोरंजन एवं खेल-कूद भी उतने ही आवश्यक हैं। दिन-रात पुस्तकों में आंखें गड़ाये रखना भी ठीक नहीं। अत्यधिक पढ़ने वाले उच्च श्रेणी नहीं ला पाते हैं।

(१२) स्मरणशक्ति आपकी कहीं गई नहीं है, वह तो आपके पास सुरक्षित है। हमारा अनुभव है कि आपकी स्मरणशक्ति यदि सुप्त है तो अभ्यास से जाग्रत की जा सकती है। आप याद रखने के लिए पढ़ें और इस शंका को निकाल फेंक दें—"मेरी स्मरणशक्ति तो कमजोर है।" स्मरणशक्ति जहां ईश्वरीय या पैतृक देन है वहां यह अर्जित भी की जा सकती है।

(१३) अध्ययन कक्ष में प्रकाश की समुचित व्यवस्था हो। पढ़ते समय बाएँ या पृष्ठ भाग से प्रकाश आये ऐसी व्यवस्था कीजिए। मन्द या तीव्र प्रकाश में न पढ़िये। पढ़ते समय मेरुदण्ड सीधा रखिये। त्रिफला या ठण्डे जल के छींटे आंखों पर मारना, ओस पड़ी घास पर नंगे पैर चलना आंखों के लिए अत्यन्त लाभदायक रहेगा।

(१४) स्वास्थ्य की रक्षा अध्ययन की पूर्वपीठिका है।

(१५) अकेले पढ़ें। एक से दो होने पर बात चीत और निन्दा स्तुति अधिक भी। हां, विचार-विनिमय के लिए एक उत्तम साथी के साथ कुछ समय बैठना [illegible] सिद्ध होगा।

(१६) कुछ उद्धरण याद कर लीजिये। ये डूबते को तिनके का सहारा देते हैं। शंकाओं का समाधान अवश्य करवाइये।

(१७) क्लिष्ट बातों को याद रखने के लिए मन ही मन कुछ संकेत निश्चित कर लीजिये। प्रत्येक अनुच्छेद की एक प्रमुख विचारधारा या वाक्य को ठीक-ठीक याद कर लीजिये।

(१८) अच्छी से अच्छी पुस्तकें और अध्यापिकाएँ, उत्तमोत्तम अध्यापक और साथी तब तक आपकी सहायता नहीं कर सकते जब तक आपकी अध्ययन के प्रति पूर्णनिष्ठा और लगन न हो।

(१९) सुन्दर अक्षर लिखना अधिक अंक प्राप्त करने की प्रथम सीढ़ी पर पैर रखने के समान है।

(२०) परीक्षा में उत्तर लिखना भी एक कला है। प्रत्येक विषय का ऐसा विवेचन किया जाये कि सभी मुख्य-मुख्य बातें आ जायें और पिष्टपेषण भी न हो।

(२१) अध्ययन के प्रारम्भ में विद्या के अधिष्ठाता देव श्रीगणेश अधिष्ठात्री देवी सरस्वतीका स्मरण करना न भूलें। स्मरणीय श्लोक है—

"या दुग्धापि न दुग्धेव कविदोग्धृभिरन्वहम्।
हृदि नः सन्निधत्तां सा सूक्तिधेनुः सरस्वती॥"

अर्थात्—"सुभाषित की धेनु जो कवियों द्वारा दुही जाने पर भी नहीं दुही की तरह बनी रहती है, ऐसी माता शारदा मेरे हृदय में वास करें।

(२) आदि कविका आदि श्लोक—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंच मिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

यदि आप अपने अध्ययन सम्बन्धी उपर्युक्त संकेतों का उच्च कक्षाओं तक समुचित रूप से पालन करते रहे तो हमारा अनुभव और विश्वास है कि सदैव सफलता देवी आपका सम्मान करेगी और आपके अंकों का प्रतिशत पूर्वापेक्षा उच्चतर होगा। बालकों के अभिभावकों एवं माता-पिताओं से भी प्रार्थना है कि अपने बच्चों—भावी आशाओं—की अध्ययन प्रणाली पर समुचित ध्यान देंगे।

सर्वकष्टहर मन्त्र

जब कभी मनुष्य किसी संकट में घिर जाये और उसकी बुद्धि काम नहीं देती हो तो उससे मुक्ति पाने के लिये निम्न मन्त्र का जप करना चाहिये। इस मन्त्र को सूर्य चन्द्रग्रहण के समय गायत्री मन्त्र से सम्पुटित कर कम से कम एक माला जपकर पहले सिद्ध कर लें—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ महेशाय त्रिनेत्राय नमस्ते शूलपाणये। प्रणतः क्लेशनाशाय महादेवाय ते नमः ॥१॥

वैष्णवों के लिये यह मन्त्र प्रसिद्ध है—

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने। प्रणतः क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः ॥१॥

कार्तवीर्यार्जुन-मंत्र

ॐ क्लीं कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान्।
यस्य स्मरणमात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते क्लीं ॐ ॥

श्रीकार्तवीर्यार्जुनाय नमः (पांच बार बोलना)

इस मन्त्र को ग्रहण के समय में गायत्री मन्त्र का सम्पुट देकर एक माला फिर किसी भी वस्तु के चोरी में चले जाने, खो जाने पर, उठाई जाने पर तथा छ बच्चों के घर से बिना कहे चले जाने पर इसका जप करता रहे तो वस्तु प्राप्त जाती है। जो बच्चा घर से भग गया हो, उसके शरीर का वस्त्र कुरता आदि लेकर उ पर लालचन्दन अष्टगंध या स्याही से उपर्युक्त मन्त्र लिख देवे तथा उस वस्त्र को चर के बड़े चक्रपर बांधकर उलटा घुमावे और मन्त्र बोलता रहे। चर्खे में डोरी न रखं जाये। इसे प्रतिदिन प्रातः मध्याह्न और सायं १०८ बार फिराने से भगे हुए बालक की बुद्धि परिवर्तित हो जाती है और वह लौट आता है। यह प्रयोग [illegible] अनुभूत है। आतुरता न करते हुए इसका जप करते रहने से अवश्य इच्छा पू होती है।

यह प्रयोग [illegible] के आधार पर प्रसिद्ध है।

[illegible]-सिद्धिप्रद-मंत्र

ॐ [illegible] ! [illegible] त्वं ग्रामेषु नगरेषु च।
[illegible] महामुने ! क्लीं ॐ ॥

[illegible] नमः (५ बार बोलना)

इस मन्त्र को [illegible] में १०८ बार जप करें। फिर जब [illegible] ५ बार इस मन्त्र को बोलकर प्रस्थान करें। [illegible] सिद्ध होती है। [illegible] इसका अनुभव किया गया है। [illegible] महापुरुष के द्वारा प्राप्त है। (स० २०२१ के '[illegible] पंचांग' से)

सिद्धिकरं त्रिकोणाङ्क यन्त्रम् (सिद्ध बीसा यन्त्र)

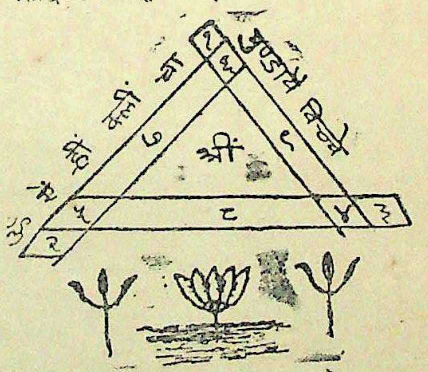

इस यन्त्र को रजत अथवा ताम्रपत्र पर रविपुष्य अथवा गुरुपुष्य योग में [illegible] कर पंचगव्य, पंचामृत से स्नान करवाएं और प्राणप्रतिष्ठा करवाकर प्रतिदिन दुर्गासप्तशती कवच में उक्त "प्रथमं शैलपुत्रीति द्वितीयं ब्रह्मचारिणी" आदि मंत्र से पूजन करें और प्रतिदिन प्रातः ३०० अर्थात् तीनमाला नवार्ण मंत्र का जप करें तो भगवती की कृपा से सर्वविध सिद्धि प्राप्त होती है।

धनप्राप्ति-प्रयोग

मंत्र जप से पहले "विशुद्ध ज्ञान देहाय०" का दस बार जप आवश्यक है।

मंत्र यह है—ॐ रं ह्रीं श्रीं ह्रीं रं क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ रं ह्रीं श्रीं ह्रीं रं ॐ ॥

[illegible] जप का विधान है। प्रातः पौने चार अथवा १० बजे के बाद जप प्रारम्भ करना चाहिए। प्रतिदिन जप ११ माला से कम नहीं होना चाहिए। ग्यारह हजार से अधिक भी एक दिन में नहीं करना चाहिए। जप के समय [illegible] [illegible] पर [illegible] चाहिए। सफेद तिल, कमल, बिल्वपत्र घृत से दशांश हवन [illegible] मार्जन और कन्या पूजन करें। इस प्रयोग से इच्छित धन की प्राप्ति निश्चय होती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आकर्षण-मंत्र

दमयन्ती नलाभ्यां तु नमस्कारं करोम्यहम्। अभिवादो भवेदत्र कलिदोषः प्रशान्तिदः ॥
ऐकमत्यं भवेदेवां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम् । ' रता च जायेत ंवादाग्ने प्रसीद मे ॥

इस मंत्र का जप रात्रि ९ बजे के बाद साढ़े ग्यारह बजे पहले प्रारम्भ करना स्मार्त प्राणायाम के बाद ३० दिन पर्यन्त एक सहस्र प्रतिदिन जप करना। खीर (चावल तथा दूध) और घृत से दशांश हवन तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन से सिद्धि होती है। मंत्र सिद्धि के बाद केवल दश बार जपने से अभीष्ट सिद्धि होती है। इस प्रयोग में परान्नभोजी नहीं होना चाहिए. संयम आवश्यक है।

[सं० २०२२ के "श्रीविश्वविजय पंचांग" से]

घण्टा कर्ण स्तोत्रम्

ॐ घण्टा कर्णो महावीरः सर्व व्याधि विनाशकः ।
विस्फोटक भय घोरं रक्ष रक्ष महाबल ॥
यत्र त्वं तिष्ठते देव, लिखिताक्षर पंक्तिभिः ।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति वात-पित्तकफोभद्वाः ॥
तत्र राजभयं नास्ति यान्ति कर्णे जपाक्षरम् ।
शाकिनी भूत वेताल राक्षसाः प्रभवन्ति न ॥
नाकाले मरणं तस्य न च सर्पस्य दंशनम् ।
अग्निचौरभयं नास्ति ॐ घण्टा कर्ण नमोस्तुते स्वाहा ॥

इस घण्टाकर्ण स्तोत्र को रेखाङ्कित मंत्र सहित दीपमालिका, होली व ग्रहण के पर्वकाल में अष्टगन्ध से दाडिम (अनार) की लेखनी से लिखकर अपने पास रक्खे। प्रतिदिन पाठ करने से अग्नि, सर्प, चौर, रोग एवं शत्रु का भय नहीं रहता। कुमारी कन्या के हाथ से कते सूत का तावीज बनाकर मन्त्रोच्चारण के साथ २१ गांठ लगा लें। बालक के गले में बांधने से नजर नहीं लगती। मंत्र पढ़कर मोर पंख से झाड़ने पर प्राणियों, पशुओं तक के रोग नष्ट होते हैं। ग्रहण होली दिवाली पर मंत्र का पुनर्नवीकरण कर लेना चाहिए।

९	१६	५	४
७	२	११	१४
१२	१३	८	१
६	३	१०	१५

इस स्तोत्र के साथ यदि निम्न लिखित यन्त्र का साधन भी कर लिया जाय तो सिद्धि में द्विगुणता आ जाती है। १६ कोष्ठकों के इस यंत्र को भोज पत्र पर ३४ बार लिखकर मंत्र के साथ ही सिद्ध करके फिर इसका चमत्कार देखें।

व्यापार व धनवृद्धि का मंत्र

"ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं क्लीं क्लीं श्रीं लक्ष्मी ममगृहे धनचिन्ता दूरं करोति स्वाहा।"

विधि—प्रातःकाल बिना किसी से बोले मुंह धोकर १०८ बार (एक माला) नित्य जप किया करें तो धनधान्य की वृद्धि एवं व्यापार खूब चले। अनुभूत है।

आयुर्वेद के सरल सस्ते अनुभूत प्रयोग

श्रवण नक्षत्र में काली एरण्ड की जड़ को लाकर धूपदीप दे पूजन कर स्त्री के गले में बांधे तो वन्ध्या दोष दूर होगा। तदनन्तर रजोधर्म से शुद्ध हो गोखरू के बीज निर्गुण्डी के रस में डालकर ९ माशे सात दिन तक पियें तो गर्भधारण होगा।

जिस दम्पति के सन्तान न होती हो वे दोनों थोड़ी पीली मिट्टी लेकर उसमें थोड़े जौ बो दें। खेत पृथक् पृथक् रक्खें। फिर जल की जगह वे दोनों प्रातःकाल अपने अपने खेत में पेशाब किया करें। दो तीन दिन में देखें कि किसके जौ पहले निकलते हैं, या नहीं। जिसके खेत में उत्पत्ति न हो उसी को विकारी (गर्भाधान के अयोग्य) मानना चाहिए। जो रोगी हो उसकी चिकित्सा अनुभवी वैद्य से करावें। पुरुष वाजीकरण औषधसेवन करें और स्त्रियों को फलघृतादि का सेवन लाभप्रद है।

गर्भधारण की औषधियां—शमी वृक्ष (जिसको जण्ड या खेजड़ी भी कहते हैं) की फलियां और पीपल वृक्ष की जड़ सुखाकर चूर्ण बना ५ माशे बछड़े वाली गाय के दूध से मासिक धर्म के चौथे दिन से ५ दिन तक सेवन करावें, फिर पतिसंग से अवश्य गर्भधारण हो जाता है।

हाथी दांत का बुरादा (चूरा) कूट पीस कपड़ छान कर मिश्री समान भाग मिलाकर नौ माशे की मात्रा से मासिक धर्म के तीसरे दिन से सात दिन तक सेवन कराने से वन्ध्यत्व दोष दूर होकर सन्तान प्राप्त होती है। पीपल, कालीमिर्च, नागकेशर, अदरक समभाग लेकर कपड़ छन चूर्ण कर ले, ऋतुकाल के चौथे दिन से ३ माशे थोड़े शुद्ध गौ घृत मिलाकर पांच दिन सेवन करावें तो गर्भधारण अवश्य होगा।

[सं० २०२३ के 'श्रीविश्वविजय पंचांग" से]

अभीष्टधन प्राप्ति का मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं त्रिभुवन स्वामिनि महादेवि महालक्ष्मि लल लल हं हः महाप्रभुत्वमर्थं कुरु कुरु ह्रीं नमः।"

प्रतिदिन पञ्चोपचार से लक्ष्मी का पूजन कर १०८ बार जप करने से अभीष्ट लाभ होगा। चन्द्रबल और शुभ मुहूर्त में यह प्रयोग प्रारम्भ करें। निशीथकाल (अर्धरात्रि) में जप किया जावे तो ३ मास में इसका चमत्कार प्रत्यक्ष दिखाई देगा।

सर्पभय निवारण मंत्र

"ॐ जरले नृसिंह करले दूत कालू कालू नृसिंहवैरी खैरदारी तुकमाही नहीं बांधे छः बांधे छः हाकूवाल डाकूवाल बड़ेलबड़ियाल सांप चोर कांटा गज्जा बाबभूल तुकमाही नहीं बांधे छः राम लक्ष्मण सीतामाता हनुमान नृसिंह से परे हंकार।"

यह मंत्र जहां सर्प हो, वा सर्प का भय हो, वहां तीन चार बार ऊंचे स्वर से पढ़ने पर सर्प नहीं रहेगा, भाग जावेगा। जहां तक मंत्र की आवाज जायेगी वहां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कि उस सीमा में सर्प नहीं आ सकेगा। यदि कोई सर्प आवाज की सीमा के अन्दर रह जावेगा तो वह अन्धा हो जावेगा। जब वह स्थान छोड़ देना हो तो "बांधे छः छः" के स्थान पर "खोले छः छः" लगाकर उसी प्रकार तीन बार मंत्र उच्चस्वर से पढ़ दें तो सर्पों के आवागमन का मार्ग खुल जावेगा। बहुतबार का अनुभूत प्रयोग है।

रक्षा मंत्र

"ॐ तारा तारा गारुड़मंत्र विस्सेखाय ब्राह्मण कम्पन नागे डोल, चल विस्सो हमारा बोल।" किसी ने जादू टोना अभिचार चलाया हो तो इस मंत्र से उस व्यक्ति को मोरपंख या लोहे के चीमटे से झाड़े तो आराम होगा। यह पहाड़ी गद्दी लोगों का सिद्ध मंत्र है।

रोगी बचेगा या नहीं ?—किसी रोगी के बचने या न बचने की परीक्षा करनी हो तो माष (उड़द) की दाल की पीठी का चौकोना (चार कोण का) बड़ा-भल्ला बनाकर सरसों के तेल में तलकर उस पर स्याही से 'ॐ ह्रीं' लिखकर रोगी के सिरहाने रात्रि में रख देवें। प्रातः उस बड़े को देखें, यदि मंत्र लिखा पड़ा हो तो रोगी बच जावेगा, और मंत्र मिटा मिले तो रोगी नहीं बचेगा, ऐसा निश्चय जानें।

अन्नपूर्णा मंत्र—"ॐ ह्रीं श्रीं [illegible] लक्ष्मी स्वाहा" इस मंत्र से सर्वधान्य [illegible] कोठार या बड़े बर्तन में रखदे [illegible]

अथ [illegible] स्तोत्रम्

[illegible]

(सं २०२४ के "श्रीविश्वविजय पंचांग" से) नक्षत्र के दिन से अगले पुष्य तक २७ दिन प्रतिदिन १० पाठ करें। अश्वत्थ (पीपल) वृक्ष के नीचे बैठकर २७ दिन में ही सिद्धि होती है।—शालिहासः।

(सं २०२४ के "श्रीविश्वविजय पंचांग" से)

राजयक्ष्मा (टी. बी.) आदि सर्व ज्वरनाशक अद्भुत प्रयोग

संसारमें राजयक्ष्मा सबसे भयंकर राजरोग है। वैद्य डाक्टर इस पर पूर्ण काबू नहीं पा सके हैं। रोगी वर्षों तक डाक्टरों के इलाज और सैनीटोरियममें शक्ति से अधिक धन और समय नष्ट करके भी कोई सौभाग्यशाली ही इस रोगसे शीघ्र छुटकारा पा सकता है। ज्वर या किसी भी रोग विशेष का डाक्टर ठीक निदान नहीं कर पाये तो उसे टी. बी. बता देते हैं और रोगी निराश हो जाता है। इसी क्षयरोग के जिस रोगी को डाक्टरोंने असाध्य कहकर छोड़ दिया था उस रोगीको वैदिकमंत्रप्रयोग और हवन के द्वारा कुछ ही दिनोंमें श्रीकपिलजी महाराजने स्वस्थ बना दिया। दैवज्ञवाचस्पति श्रीहंसराजजी कपिल अनेक ज्योतिषग्रन्थोंके निर्माता दैवीबलसम्पन्न वयोवृद्ध अनुभवी विद्वान् महानुभाव हैं। कृपापूर्वक इन्होंने अपना यह गुप्तप्रयोग लोककल्याणार्थ हमें बताया, वह पंचांग-पाठकों के लिए प्रस्तुत है। कोई भी वैद्य या डाक्टर इस सनातन वैदिकप्रयोग से अनुचित लाभ उठानेका प्रयत्न न करें। प्रयोग यह है—

कुबेर! ते मुखमिति ऋक् [illegible] शत सहस्र वाऽयुतं पायसाक्त तिल-तण्डुल संयुक्तं जुहुयात्। [illegible]ज्वराः क्षिप्रं नश्यन्ति, सद्यः सुखी भवति। अष्टोत्तर सहस्रं तर्पणं कुर्यात्। अथवा त्रिमध्वाक्त तिलहोमायुत सहस्रं वा [illegible] समिद्भिः त्रिमध्वाक्ताभिर्वा दूर्वाभिर्होमेन सर्वज्वरशान्तिर्भवति। पलत्रयं सुवर्णं दक्षिणा। मंत्र—

ॐ कुबेर! ते मुखं रौद्रं नन्दिरानन्दमावह।
ज्वरं मृत्युं भयं घोरं विषं नाशय मे ज्वरम्॥

१०८ आमके ताजा पत्ते ले आवें, उनको शुद्ध गोघृत में डुबो दें या घृत कम हो तो पत्तों पर चुपड़ दें। जिस कमरे में रोगी लेटा हो उसी कमरे में आम, बेरी पलाश, देवदार आदि जो भी मिले लकड़ी की समिधा में अग्निप्रज्वलित करके उक्त "ॐ कुबेर, ते" मंत्र से एक माला (१०८) आहुति देवें। यदि रोगी बैठ सकता हो तो हवनस्थल के समीप बैठा दें, अन्यथा पास में खाट या बिस्तर पर लेटा रहे, पर हवन के समय रोगी का मुख खुला नंगा रहना चाहिए। साधारण ज्वर तो [illegible] दिन के प्रयोग से ही निर्मूल हो जावेगा। प्रतिदिन १०८ आम्रपत्रों से [illegible] कम आहुति न डालें। विषम ज्वरों को १५ दिनसे पहले नहीं छोड़ना चाहिए। [illegible] राजयक्ष्मा (टी. बी.) ज्वर १५ या २१ दिन के हवन प्रयोग से सदा के लिए [illegible] रोगी स्वस्थ हो जावेगा। राजयक्ष्मा आदि असाध्य ज्वरों के लिए [illegible] निम्नलिखित औषधियों भी समभाग हवन सामग्री में मिला देवें [illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मण्डूकपर्णी, गुग्गुल, इन्द्रायणी की जड़, अश्वगन्ध, विधारा, शालपर्णी, मकोय
अडूसा (बांसा) गुलाब के पुष्प, जटामांसी, शतावरी, तगर, रास्ना, वंशलोचन,
जायफल, क्षीरकाकोली, पाण्डरी, गोखरू, पिश्ता, बादामगिरि, मुनक्का, लौंग, हरड़े
बड़ी (गुठली सहित), आंवला, अत्रिप्रवाल, जीवन्ती, पुनर्नवा, नगेन्द्र वामडी (निर्गन्ध
बांवरी) बीड़ का बुरादा, अपामार्ग, खूबकलां, ये सब समभाग । चार भाग गिलोय,
कुष्ठ चौथाई भाग केशर, शहद, देशी कपूर, दश भाग खांड (चीनी) अश्वत्थ पंचांग
(पीपलके पत्ते फल फूल लकड़ी और जड़) और यथाशक्ति गोघृत । समिधा ढाक
(पलाश) शुष्कबांसा या आमकी होनी चाहिए ।

राजयक्ष्मा रोगी के लिए मंत्र हवन प्रयोग के दिनों में और कोई औषध न दी
जाव । पथ्योपचार में गाय या बकरी का दूध, मूंग की दाल, दलिया, पुराने चावल,
गेहूँ की रोटी, सूजी, पालक, टमाटर, गाजर, आंवला दे सकते है। मियादी
बुखार (टाइफाइड) भी ३–४ दिन के उक्त प्रयोग से तोड़ा जा सकता है । असाध्य
ज्वरों के लिए विशेष मंत्र यह है—

त्रिपाद भस्मप्रहरणः त्रिशिरारक्तलोचनः । स मे प्रियः सुखं दद्यात् सर्वामयपतिर्ज्वरः ।।
ज्वर राजाय विद्महे त्रिशिरस्काय धीमहि । तन्नस्त्रिपात् प्रचोदयात् ।।

सर्वप्रकार के भय दुर्घटना और आपत्ति से बचाने वाला 'वन दुर्गा' का मंत्र

ॐ ह्रीं उत्तिष्ठ पुरिषि ! किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितम् । यदि शक्यम-
शक्यं वा तन्मे भगवति ! शमय स्वाहा ह्रीं ॐ ।।

इस मंत्र का प्रतिदिन एक माला जप करने से सब प्रकार के भय एवं
दुर्घटना से रक्षा होती है। अनुभव सिद्ध प्रयोग है ।

(सं० २०२५ के "श्रीविश्वविजय पंचांग" से)

।। श्री ।।

सामविधिः ब्राह्मणे—अथ यः कामयते न पुनः प्रत्याजायेयमिति अपुनर्भव-
नधिकृत्य तदनुसंधेयो देव्या मन्त्र उत्तमः ।

यथा—ॐ रात्रि प्रपद्ये पुनर्भूं मयोभूं कन्यां शिखण्डिनीं पाशहस्तां युवतिं
कुमारिणीम् । आदित्यश्चक्षुषेवान्तः प्राणाय सोमो गन्धायायः स्नेहाय
मनोऽनुज्ञाय पृथिव्यै शरीरम् इति । अस्य रात्रौ जपमात्रात्सिद्धिः । अस्य
फलं मरणकालज्ञानं, परमफलन्तु मोक्ष इति तत्रैवोक्तम् । अयं देविविषयको मन्त्रः ।
कन्याकुमारीं धीमहि इति तद्गायन्यर्थस्य कन्याकुमारिणीमित्यत्र प्रत्यभिज्ञानात् ।
रात्रि-तद्रूपा अस्यास्तनुस्तमो द्वारा निशादिवसनोर्भिनीमुपकल्य हरिवंशोक्तेः । पुनर्भूः
असुरवधार्थं नानावतारपरिग्रहात् । अत एव मयोभूः प्राणिनां सुखदात्री । कन्या
[illegible]नानुस्पर्शं इतिअवृष्या चातिसुन्दरीति शैवोक्तेः । शिखण्डिनी मयूरपिच्छभूषणा,
मयूरपक्षध्वजा च, "भूषणैस्त मयूराणामंगैर्दीर्घैश्च भास्वरा।" इति हरिवंशोक्तेः ।
"ध्वजेन शिखिवर्हाणे ह्यु च्छितेन समावृतेति" च तत्रैव । पाशहस्ता असुर बन्धनार्थम् ।
तदानी-
तया युवतिः नित्यबालवार्धक्यरहिता कंसमोहनावतारे क्षणं शैशवाभिनयेऽपि
मेव यौवनाविष्करणोक्तेः । कुमारिणीमिति कुत्सितान्मारयति तच्छीलाम् । एवंभूताया
रात्र्यभिमानिदेवतायाः प्रभावात् आदित्यश्चक्षुषे चक्षूरक्षितुं यत्नवान् भवतु इत्थं सर्वत्र
बोध्यम् । इतिक्रमेणार्थं मनस्तदधिष्ठात्री देवता अनुज्ञाय ज्ञातमात्रं रक्षितुं भवतु !
पृथिव्यै शरीरमित्यस्य विभक्ति परिणामेन पृथिवीशरीराय शरीरं रक्षितुं इति पूर्व-
वद्बोध्यम् । एवं रात्री रात्रिसूक्तजपोऽप्येतत्फलक इति ऋग्विधाने स्पष्टम्। समसंज्ञावाद्
ब्रह्मकृतः प्रथमाध्यायान्तर्गतस्तुतिपाठोऽप्येतत्फलक इति परे प्राहुः ।

भाग्योदय यंत्र

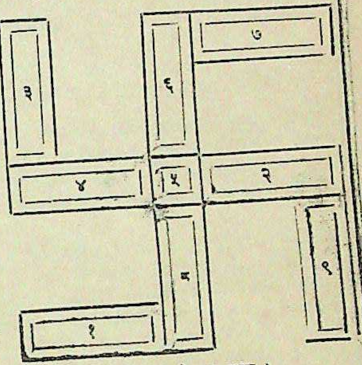

इस यंत्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर अनार की कलमसे लिखकर धूप दीप नैवद्य लगाकर तावीज में भरलें । दाहिनी भुजा में बांधे ।

ऐसे व्यक्ति जिनका भाग्य सोगया हो जो कार्य करे उसीमें असफलता मिलती रही हो तथा जीवन निराशामय हो गया हो उन्हें यह यंत्र अवश्य धारण करना चाहिये । इससे सभी कार्यों में सफलता मिलेगी । इसमें संदेह नहीं ।

इस यंत्र को सिद्ध करने के लिए दीप मालिका, होलिका की रात्रि तथा ग्रहण-समय, भोजपत्र पर अष्टगंध से १०८ बार लिखें ।

वैसे एकबार ही लिखकर बांधने से भी फल मिलता है पर न्यून ।

हजरत मुहम्मद की चौकी की सिद्धि और चमत्कार

[ले०—श्री अरुण कुमार शर्मा बी. ५/२३ हरिश्चन्द्र मार्ग वाराणसी-१]

लगभग बीस वर्ष पहले की बात है । मैं उन दिनों मुसलमानी तंत्र मंत्र में
हदसे ज्यादा दिलचस्पी ले रहा था । कुछ कुछ सफलता मुझे मिल चुकी थी । मगर
मैं उस सफलता से खुश न था । मैं मुसलमानी तंत्र-मंत्र विद्या की सबसे ऊंची किस्म
देखना चाहता था और उससे पूरी तौर पर वाकिफ होना चाहता था । इतना ही
नहीं, मेरी यह भी ख्वाहिश थी कि विद्या की उस ऊंची किस्म में पूरी तरह दखल
हासिल कर लूं । मैं मुसलमानी तंत्र-मंत्र विद्या की सबसे ऊंचीं किस्म-चौकी-मानी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

घने दरख्तों के पीछे से पतलासा चांद

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है। और चौकियों में "हजरत शाह मुहम्मद" और पीर जाफर की चौकी ऊंचे दर्जे की समझी जाती है। मगर 'चौकी' बनाने के लिये इस्लामी कायदों को बेतौर कबूल करना पड़ता है।

जिस वक्त मैं चौकी बनाने के चक्कर में किताबी दुनियां में भटक रहा था। तभी मेरी मुलाकात इस्लामी साहित्य और संस्कृति के प्रोफेसर आसिफ साहब से हुयी। और जब उनको मेरा मकसद मालूम हुआ तो उन्होंने मुझे काफी संजीदगीसे बतलाया कि वे एक ऐसे औलिया से वाकिफ हैं जो चौकी बनाने की विद्यामें माहिर है। वह मुल्तानके पहाड़ी और जंगली इलाके में बहने वाली पहाड़ी नदी के किनारे एक दरगाह में रहता है। वह न किसी से बोलता है और न तो किसी से कुछ [illegible] है। हर दम अपनी धुन में रहता है। हर दम खामोश। सचमुच वह [illegible] दर्जे का फकीर है। उन्होंने खुद अपनी आखों से उसके कुछ [illegible] मगर [illegible] पैदा करने वाले करिश्मे देखे हैं।

मगर कौन सा और कैसा करिश्मा देखा था। आसिफ साहब ने-यह मुस्कां नहीं बतलाया। सिर्फ इतना ही कहा-आप भी फकीर को आजमाइये, न शर्मा जी। और मैं एक दिन फकीर के [illegible] के लिये मुल्तान की सफर पर निकल पड़ा। उस वक्त [illegible] के जिस्म को दो टुकड़े नहीं किया गया।

आखिर मुल्तानके उस इलाके में पहुंच गया मैं-जहां फकीर रहता था। वहां पहुंचने पर मालूम हुआ कि फकीर का पूरा नाम आलम शाह औलिया है। और एक पहाड़ी नदी के किनारे बनी दरगाह में रहता है।

[illegible] पहाड़ और जंगलों को अपने आगोश [illegible] की सूनी मांग की [illegible] वह दरगाह, आसिफ साहब ने भी [illegible] बतलाया था।

[illegible] दरगाह के सामने-खड़ा रहा [illegible]

[illegible] जगह-जगह सुर्खो [illegible] नाम पर कुर्बान हुए [illegible]

[illegible]

पहन चुकी थी। [illegible] घने दरख्तों के पीछे से पतलासा चांद झांकने लगा था। हवायें अब नर्मी आ गयी थी।

सोचने लगा-औलिया किस हालत में होगा। और किस शक्लमें पेश आयेगा मुझसे। अगर ठीक तरह से पेश भी आया तो अपनी मतलब की बातोंका सिलसिला कैसे शुरू करूंगा। और तभी देखा-काले लिबासमें ढंकी एक साया दरगाह की टूटी, धूल से अटी जीने पर धीरे-धीरे कदम रखती हुयी नीचे उतर रही है।

क्या औलिया आलम् शाह तो नहीं है। दिलमें एक लहर-सी दौड़ गयी।

हां, वही थे।

वे आहिस्ते से आकर मेरे करीब खड़े हो गये। कौन हो तुम! औलिया आलम् शाह की खनकती हुयी-आवाज मेरे कानों से टकरायी। जी......जी......मैं आपसे मुलाकात के लिये बनारससे-इतनी दूर चलकर यहां आया हूं। डरसे लड़खड़ाती जुबान से जुबाब दिया मैंने। बड़ी अच्छी बात है।

......शुक्रिया! अल्लाह खैर करें। मगर आने का मकसद?-औलिया ने फिर खनकती हुयी आवाजमें सवाल किया।

मैं थोड़ा सहमा: दिलमें उठते हुए डर' के तुफान को कब्जे में किया और फिर बोला आप अल्लाके दाहिने हाथ हैं। परवर दिगार हैं आप। आपको मेरे आनेका मकसद साफ मालूम हो गया होगा। तो तुम औलियासे मुलाकातके लिये नहीं बल्कि उससे कमाल हासिल करनेके खयाल से यहां पर आये हो! और फिर हो, हो, कर हँस पड़े औलिया आलम् शाह। और उसी अन्दाजमें बोले-"जान प्यारी है तो चले जाओ यहांसे! यह सब तुमसे न होगा! जा बाबू बन कर घूम। इस राह पर चलना काफी खतरनाक है। सब नहीं चल सकते पगले! जा, भाग जा यहां से।"

और फिर मुड़ कर जाने लगे। मैं लपका-और यह कहते हुये-उनके कदमोंमें झुक गया-"नहीं नहीं ऐसा हुकुम मत करिये" आलम् शाह! ऐसा हुकुम मत करिये।"

आलम् शाह मान गये और मुझे राहत मिली।

उसके बाद क्या हुआ? वह सब बतलाया नहीं जा सकता। क्योंकि बाद की बातें—रूहानी दुनियासे ताल्लुक रखती है। खैर: मैं फकीर के खिदमतमें महीनों रहा। और उस दरम्यान कई ऐसे नजारें देखें—जिसे फिर देखनेका मौका न मिला। सच तो यह है कि वे सब नजारें इस दुनियाके नहीं थे।

बादमें खुश होकर फकीरने मुझे चौकी के बारेमें कई गहरी इल्में बतलायी। आलम शाह औलिया, पहुँचे हुये फकीर थे। आज मुल्तान, पाकिस्तानके कब्जेमें है और आज वह दरगाह भी उस कब्जे में मौजूद है—मगर यह ठीक तरह से नहीं बतलाया जा सकता कि वह फकीर अब उस दरगाहमें मौजूद है या नहीं। मुझसे कभी कदा ख्वाबमें फकीरकी मुलाकात हो जाती है। अभी एक हफ्ते पहले कार एक्सीडेन्टमें मेरे सिरमें काफी चोट आयी थी। तकलीफसे काफी बेचैन जब हुआ तो मैंने फकीरको याद किया! मैं जानता था वे ऐसे वक्त जरूर हाजिर होंगे।

आखिर रातके वक्त ख्वाबमें हाजिर हुये वह। और घाव पर प्याज का रस [illegible] रस लगाया। तुरन्त घावको [illegible]। दूसरे दिन मैंने खुद घाव पर प्याजका रस लगाया [illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रिसता हुआ खून बन्द हो गया ! और आज मैं भला-चंगा हूं । जबकि अभी तक अस्पताल में पड़ा होता ।

पर असल बात यह है कि इन सतरोंको पढ़ने वाला कोई भी शख्स सांझके वक्त जुम्मे के दिन—धूप लोहबान, इतर और खुशबूदार माला सामने रख कर-पाक दिल से आलमशाह औलियां से मदद मांग सकता है । वे जरूर मदद करेंगे ! मुझे इसका पूरा भरोसा है ।

जैसाकि मैंने बतलाया—आलम शाह औलियां पहुँचे हुये फकीर थे । ऊंची किस्म की राहें उनके कब्जे में थी । वे उनसे बाकायता काम लिया करते थे । मैंने पहली रात दरगाह में जो कुछ देखा था—वह सब अव्वल दर्जे की की राहों का करिश्मा था ! और वह औरत ईरानके एक घराउन की चहेती बेगम थी—मगर पचास वर्ष पहले—उसका कत्ल कर दिया गया था ! मौत के बाद वह फकीर की खिदमतमें आ गयी थी । फकीरने उसे अपने कब्जे में कैसे किया ! यह मुझे फकीरने नहीं बतलाया । खैर !

अब मैं आपके सामने आलमशाह औलिया की बतलायी हुयी 'हजरत मुहम्मद' की चौकी की सिद्धि पेश करता हूं । जिसके जरिये आप चौकी बना कर हजरत मुहम्मदको बुला सकते हैं और उनसे भूत, भविष्य और वर्तमान—इन तीनों कालोंमें से किसी एक कालसे ताल्लुक रखने वाले तीन सवालों का ठीक ठीक जवाब हासिल कर सकते हैं । मगर इस बात का ख्याल रखिये कि जरा सी ना पाकीसे जान का खतरा हो सकता है । इसलिये हर वक्त होशियारी रखनी चाहिये ।

पहले इस मंत्र को २१ जुम्मेरात और २१ जुम्मे के दिन शाम के वक्त पश्चिम दिशा की ओर मुखातिब होकर कमल गट्टे के दाने पर २१ बार जपे । मंत्र पढ़ते समय होशो हवास ठिकाने रखे । लोहबान धूनी दें । इत्र का फाहा और माला सामने धरें । किसी से कुछ न कहें ! सिद्धि के बारे में भी किसी को कुछ न बतलावें । सिर्फ जुम्मे रात और जुम्मे की शाम को मंत्र पढ़े । दूसरे दिन नहीं । २१ वें जुम्मेकी रातमें हलुवा पूड़ी मिठाई का नरात करें । मंत्र सिद्ध हो जायेगा ।

मंत्र :—ॐ बिस्मिल्ला हिर्रहमानीर्रहीम गजनी से चला मुहम्मदा पीर । चला चल सवा सेर का तोसा खाय । अस्सी कोस का धावा जाय । सफेद घोड़ा, सफेद लगाम । उस पर चढ़े मुहम्मदा जवान । नौ सौ पलटन आगे चले । नौ सौ पलटन पीछे चले । चल चल रे मुहम्मदा पीर । तेरे समान नहीं कोई वीर । हमारे दुश्मन को पकड़ तो लिआव । हाड़ २ चाम २ नख, शिख रोम, २ लिआव रे लिआव रे । ताईवा सिलार हिन्द । पीर मारता पीटता पछाड़ता तोड़ता । हाथ हथकड़ी पांव में बेड़ी । गले में नौक । उल्टी मुश्क चढ़ाव लिआव । शीत खिलाय कैसे भी लिआव । लिये बिना मत आव । आव आव मुहम्मदा पीर । जल्द आव । सवारी तेरी खाली पड़ी है । जल्दी आव, बैठो सवारी पर । सवारी कर । खेल खा खुश हो !,

प्रयोग की विधि :—जब मंत्र सिद्ध हो जाय तो किसी भी जुम्मेरात के दिन शाम के वक्त किसी सुनसान: मगर साफ-पाक जगह या कमरे में—पश्चिम दिशा की ओर एक सुहागिन औरतको मुखातिब कर बिठावें । औरतके और अपने जिस्म पर सफेद लिबास होना जरूरी है । अपने उत्तर दिशा की ओर मुखातिब हो कर बैठें ।

औरतका बाल खुलवा दें । और उसमें निडर हो कर बैठने को कहें । इसके बाद उसके सामने सवासेर चावल की कूरी लगा दे । और उस कूरी पर आटेके दीये में घीका खड़ा चिराग जलावें । और उस चिरागको सफेद खुशबूदार चार माला पहनावें । कूरीके सामने चार इत्र का फाहा: चार फल, चार मिठाई चार बीड़ा लगा पान, और चार लौंग रखें । इसके बाद कूरी के दाहिने ओर चार कुल्हड़ कुंये का पानी रखें । सवा पाव हलुआ रखें । और तब लोहेके कटोरेमें कोयलेकी आग में खूब लोहबान की धूनी दें । इन सब काम करते समय किसी को वहां आने न दें । वर्ना जान का खतरा होगा ।

इसके बाद कमल गट्टे की माला पर मंत्र पढ़ना शुरू करें । जब मंत्र की गिनती १०० के ऊपर पहुँचेगी तो 'औरत' की जिस्म भारी होने लग जायेगी । और कांपने लगेंगी । धीरे धीरे वह बाहरी होशो हवास खो बैठेगी । मगर डरना नहीं ! सावधान रहना । मंत्र पढ़ते जाना । और जब मंत्र की संख्या ४०० के करीब पहुँचेगी तो उस वक्त औरत को यह दिख लायी पड़ेगा कि बहुत से आदमी आकर उसको घेर कर बैठ रहे हैं । और एक खूब सूरत सा आदमी सफेद सिल्क का लिबास पहने, सफेद घोड़े पर सवार हो कर उसके करीब आयेगा । और औरत से मक्का, मदीना घूमने चलने को कहेगा । औरत खुश खुश मान जायेगी । और घोड़े पर सवार हो कर चली जायेगी । उस हालत में उसका जिस्म जमीन पर गिर पड़ेगा । मगर घबराना न चाहिये । तुरन्त उसके सिर पर चारो लौंग उठाकर रख दें । कुछ मिनट बाद वह वापस लौटेगी । और उसकी जिस्म पहले की हालत में हो जायेगी । और फिर उसकी जिस्म पर सवार हजरतमुहम्मद अरबी या हिन्दी के जुबान में बोलना शुरू करेंगे ।

उस वक्त सिर्फ अपने मतलब की तीन बातें पूछ लेनी चाहिये । और जब सवाल का जवाब मिल जाय तो सिर पर से लौंग हटा ले ! सवारी वापस लौट जायेगी ।

पाठकों को मालूम होना चाहिये कि आलमशाह औलिया की मुझ पर काफी मेहरबानी है । मैंने उनके हुकुम के मुताबिक, उर्दू लब्ज में, हिन्दी जुबान में यह इलम जाहिर की है ।

आखिर में मैं अपनी ओर से अर्ज करता हूं कि अतीत के आगोश में दफन इस तरह के इलमों को दुनियां के सामने जाहिर करने के पीछे मेरा अपना निजी मतलब नहीं है । आत्म सम्मान, आत्म विज्ञापन और आत्म प्रशंसा की नजर से कभी भी कलम नहीं उठायी है । सिर्फ मकसद इतना ही है कि हिन्दुस्तान की जिस विद्या और जिस इलम को लोग भूल गये हैं और जिस पर अतीत के गर्द की मोटी तहें जम चुकी है वह फिर से सामने आये और लोग उससे फायदा उठावें !

पाठकों को जब बहुत जरूरत हो ! और लेख के बनिस्बत कोई खास बात पूछनी जरूरी हो ! तभी मुझे खत लिखें ! क्योंकि मेरे पास वक्त कम और काम ज्यादे से ज्यादा है ।

(क्रमशः)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ चैत्र शुक्लपक्ष १

तारीख १९ मार्च से अप्रैल १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिती २८ फाल्गुन से १२ चैत्र तक । उत्तरायण, दक्षिणगोल वसंतऋतु

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं टा. घटा मिनटों में है।

अं.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	ति.	मु.	अं.	चंद्र संचार रा.घं.मि.	
२८	१	बु.	७	४७	६	३७	उ.	६	२७	६	४	[illegible]	५६	२२	न.	७	४८	२६	५३	६	३०	१८	२०	६	२८	१९	मीन	नवरात्रारम्भ, चान्द्रसम्वत्सरारम्भ, वर्षफलश्रवण, घटस्था.श्री B
२९	२	गु.	७	२५	६	२७	रे.	७	४०	७	३३	[illegible]	५८	४५	कौ	७	२५	२६	५८	६	२९	१८	२४	७	[illegible]	२०	रा. ९।३३	पंचकस.९।३३ मुहर्रम १ हिजरीसन् १३८९ प्रा. सिंघारा ३ मत्स्यज
३०	३	शु.	८	१०	६	५४	अ.	१०	२०	१०	३६	वै.	५३	२२	ग.	८	१०	३०	[illegible]	६	२८	१८	२८	८	२	२१	मेष	म.२२।२६ से पू. भा. मे बुध ७।५६ गणगौरीपूजन [सायनमेषमेंसूर्य A
१	४	श.	११	२०	१०	५८	भ.	१४	३५	१२	[illegible]	वि	५३	३७	वि.	११	२०	३०	६	६	२७	१८	२५	९	२	२२	वृ. १८।४७	म. १०।५८ तक ज्येष्ठामेंभौम १८।५२ रा. चैत्रारंभ, शक १८९१ प्रा
२	५	र.	१५	२०	१२	३६	कृ.	२०	[illegible]	१४	२८	प्री	५४	५४	बा.	१५	[illegible]	३०	१०	६	२५	१८	[illegible]	१०	[illegible]	२३	वृष	A २४।३९ उत्तरगोलमेंसूर्यप्र
३	६	सो.	२०	४७	१४	४२	रो.	२६	४७	[illegible]	[illegible]	आ	५६	४२	तै.	२०	४७	३०	२५	६	२४	१८	२६	११	[illegible]	२४	वृष	स्कन्द ६ मेला माईसरखाना B गौतमज. चंद्रदर्शनमु. ३०
४	७	मं.	२६	४५	[illegible]	[illegible]	मृ.	३८	[illegible]	१६	५६	सौ	५८	५३	ग.	२६	४५	३०	३६	६	२३	१८	२९	१२	६	२५	मि. ६।३२	म. १७।४ से ३०।१७ तक जैन आयंबिल ओली.प्रा.
५	८	बु.	३२	५२	१९	[illegible]	आ	४१	[illegible]	२२	४५	शो.	६०	०	भ.	३२	५२	३०	२४	६	२२	१८	३०	१३	[illegible]	२६	मिथुन	मीनमेंबुध २५।३९ बुधका अस्त पूर्वमें १२।५३ दुर्गा ८ मेला श्रीमनसा
६	९	गु.	३८	३	२१	[illegible]	पु.	४८	[illegible]	२४	३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा.	५	४५	[illegible]	०	६	२०	१८	३०	१४	[illegible]	२७	क. १६।१०	उ.भा.१ मेराहु उ. फा ३ मेंकेतु १३।४० श्रीरामनवमीनवरात्रस.
७	१०	शु.	४२	२७	२३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८	[illegible]	२	[illegible]	४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३०	३	६	१९	१८	३	१५	[illegible]	२८	कर्क	उ.भा.मेंबुध २१।४३ दिवी श्रीताराज. [क्रोधरात्री
८	११	श.	४५	[illegible]	२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	३०	[illegible]	१५	[illegible]	३०	३६	६	१८	१८	[illegible]	१६	१०	२९	[illegible] २१।५२	म.१२।२४ से २५।५ तक कामदा ११ व्र. सवकाताजिया (मुहर्रम)
९	१२	र.	४७	२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३०	४०	६	१६	१८	३२	१७	[illegible]	३०	सिंह	रेवती में सूर्य २९।१७ वक्री उ. फा. ३ में गुरु ६।१२
१०	१३	सो.	४८	१०	२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	[illegible]	[illegible]	३०	[illegible]	६	१५	१८	३३	१८	[illegible]	३१	सिंह	उदीरेवती ४ मीनमेंशुक्र १६।२ सोमप्रदोषव्रत श्रीजैनमहावीर ज.
११	१४	मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५४	२५	[illegible]	१८	२०	[illegible]	[illegible]	६	१४	१८	३३	१९	[illegible]	अ. १	क. १३।४८	रा.२५।२३ से शनिका अस्त पश्चिममें १२।१६ अप्रैलमाष्टता. ३० P
१२	१५	बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४६	४४	वि	१६	२५	३०	५२	६	१४	१८	३४	२०	[illegible]	२	कन्या	म.१२।४८ तक चैत्री १५ सत्यव्रत सिद्धाचलयात्राजैनआयंबिलओल
																												P व्यतिपात ७।४८ से १०।५२ तक । ५ वैशाख स्नान प्रा

चैत्र शु. १५ बुधे प्रातः स्टे. टा. ५।३० केतका ग्रहण ५४७६

[illegible]

इस पक्षमें शुक्र शनिका युद्ध (अंशसाम्य) होगा जिसमें शुक्र पराजित होगा और ... राशि के शनिका मंगल गुरु ने ... मीन तथा सामान्य में सूर्य बुध शुक्र राहु ... चतुष्ही ... है। ... स्थिति के ... संसार के ...

र.	च	मं.	बु.	गु.	शु	श	रा.	के
११	५	७	११	५	११	०	११	५
१८	८	१९	११	६	२९	३	६	६
२८	४६	४६	३०	१८	१०	१	२२	२२
५१	५१	४५	२३	३४	५८	२१	०	०
५९	८१४	१५	११८	७	३३	८	३	३
८	३२	१२	५८	२५	३३	१०	११	११
मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

... से उपद्रव उत्पन्न होगा। ... सीमा प्रान्तमें सैनिक हलचल बढ़ेगी। ... कोई नेता आपत्तिग्रस्त होगा। ... रस पदार्थ, घृत, गुड़, खाड, तिल, तेल मूंगफली अलसी, ... आकाश लक्षण—मध्यप्रदेश बंगाल महाराष्ट्र ... प्रान्तमें आंधी तूफान वर्षा गर्जके साथ कहीं कहीं छींटे पड़ेंगे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ वैशाख कृष्ण पक्ष २ ... १६ अप्रैल सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति १३ से २६ चैत्र तक उत्तरायण गोल, वसन्त ऋतु ॥

मान | सूर्योदय | सूर्यास्त | ह मु. | अं. | स्टे. टा.

स संदर्भ का सबसमय भारतीय स्टें. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	अंक	मुहूर्त	अंश	रा. घं. मि
१३	१	गु.	४१	०	२२	३०	ह	५६	३०	३०	४	व्या	४३	३७	ग्रा.	१३	०	३०	५९	६	१३	१८	३४	२१	१५	३	गु. १८. ३६
१४	२	शु	३६	२	२०	३६	स्वा	५६	७	२८	३८	ह.	३६	४७	तै.	८	३१	३१	१	६	११	१८	३५	२२	१६	४	तुला
१५	३	श.	३०	२०	१८	१८	वि.	५२	७	२७	१	व.	२९	२०	व.	३	११	३१	५	६	१०	१८	३६	२३	१७	५	गु २१।२९
१६	४	र.	२४	१५	१५	५१	अ.	४७	५२	२५	१८	सि.	२१	३५	ग	२४	१५	३१	९	६	९	१८	३६	२४	१८	६	वृश्चिक
१७	५	सो.	१८	१०	१३	२१	ज्ये.	४३	३५	२३	३४	व्य.	१३	४२	तै.	१८	१०	३१	१३	६	८	१८	३९	२५	१९	७	ध. २३।३४
१८	६	मं.	११	५७	१०	५४	मू.	२९	०	२१	५५	ग.	५८	१७	ग.	११	५७	३१	१७	६	७	१८	३८	२६	२०	८	धनु
१९	७	बु.	६	७	८	३३	पू.	३५	४७	२०	२५	शि.	५१	२	ग.	६	७	३१	२२	६	६	१८	३८	२७	२१	९	म. २६।१४
२०	८	गु.	०	५०	६	२४	उ.	३२	३७	१९	७	सि	४४	२०	कौ.	०	५०	३१	२६	६	४	१८	३९	२८	२२	१०	मकर
०	९	गु.	५६	२	२८	२९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
२१	१०	शु.	५१	५७	२६	५०	श्र.	३०	५	१८	५	ग	३८	५	ग.	२४	०	३१	३०	६	३	१८	४०	२९	२३	११	कुं २६।४०
२२	११	श.	१८	३७	२५	२९	ध.	२८	१५	१७	२०	शु.	३२	३०	ग.	२०	१७	३१	३४	६	२	१८	४०	३०	२४	१२	कुंभ
२३	१२	र.	४६	९	२४	२८	श.	२७	१५	१६	५५	ब्र.	२७	३२	कौ	१७	२२	३१	३८	६	१	१८	४१	१	२५	१३	कुंभ
२४	१३	सो.	४४	३२	२३	४६	पू.	२७	७	१६	५१	ऐ.	२३	२०	ग.	१५	२०	३१	४२	६	०	१८	४१	२	२६	१४	मी १०।५०
२५	१४	मं.	४३	५७	२३	३४	उ.	२७	५५	१७	९	वै.	१९	५०	व.	१४	१५	३१	४६	५	५९	१८	४२	३	२७	१५	मीन
२६	३०	बु.	४४	२७	२३	४५	रे.	२९	४५	१७	५२	वि.	१७	१०	न.	१४	१२	३१	५०	५	५८	१८	४३	४	२८	१६	मे. १७।५२

शुक्र वृद्धत्वारम्भ १७.५५
रेवती में बुध २०।२६ अश्वि २ में शनि १५।० गुडफ्राईडे
म. ७।२७ से १८।१८ तक श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २१।४०
शुक्र का अस्त पश्चिम मे १७।५५ ईस्टर सण्डे

म. १०।५४ से २१।४३ तक
* शुक्र का उदय पूर्व में ६।४ पंचक प्रा. २६।४० से
* से मेला वैशाखी वरुथिनी ११ व्रत निम्बार्कों का
नवमी का क्षय
म. १५।४० से २६।५० तक अश्वि. मेष में बुध ८।२१*
वरुथिनी ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का श्रीवल्लभाचार्य ज.
सं. अश्वि. मेष में सूर्य १८।४१ मु. ३० पुण्यकाल १२।५८
म. २३।४९ से सोम प्रदोष व्रत पंचक स. १०।५० शुक्र
म. ११।४१ तक [बाल्य स. ६।४
अमावस्या

वैशाख कृ. ८ गुरौ प्रातः स्टे. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५४६४

वैशाख कृ. ३० बुधे प्रातः स्टे. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५४९०

र.	च	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	६	७	११	५	११	०	११	५
२६	१	२१	२७	५	२४	४	५	५
३१	२९	३५	३९	२१	१८	२	५६	५६
२	३७	२६	३३	२०	५१	२३	३५	३५
५८	८२	११	१२५	६	३७	७	३	३
५३	३४	११	२५	४६	२०	३६	११	११
मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	अ	अ
रेवती ३	उ.षा ३	आश्लेषा ३	रेवती ४	उ.फा. ३	रेवती ३	अश्वि. ४	पू.भा. ४	उ.फा. ३

इस पक्ष मे नीच राशि का बुध सूर्य शुक्र राहु के साथ ता. ११ अप्रैल तक रहेगा और शुक्र उच्च राशि मे है, अतः यहां सभी राष्ट्र शांति चर्चा में प्रयत्नशील रहेंगे। राष्ट्र हित की चर्चाएं होंगी। पड़ोसी राष्ट्रों में भी अच्छी भावना जाग्रत होकर शांति

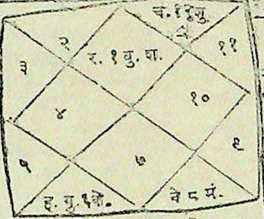

र.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	७	०	५	११	०	११	५
२	२३	२२	१०	४	२०	४	५	५
२३	२०	३३	१४	४२	४८	४८	३७	३७
१४	१७	२१	२१	१६	५६	४	३०	३०
[illegible]	[illegible]	७	७४	६	३०	७	३	३
४२	१६	५४	३२	६	१५	२८	११	११
मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ
अश्वि.	रेवती	आश्लेषा	अश्वि.	उ.फा.	रेवती	अश्वि.	पू.भा.	उ.फा.

का वातावरण बनेगा। एक ही पक्ष में शुक्र का अस्त तथा उदय होने से कहीं राष्ट्र विग्रह हिंसा हड़ताल आदि से हानिकारक सिद्ध होगा। पश्चिम देशों में कहीं उपद्रव अराजकता से अशांति उत्पन्न होगी। फ्रांस इंगलैंड युगोस्लाविया अरबराष्ट्र और अफ्रिका में सैनिक हल चल अधिक होगी। वैशाख की अमावस्या का रेवती नक्षत्र का होना सुख शांति एवं सुभिक्ष कारक है यथा "अमावस्यां च वैशाखे रेवत्यां च सुभिक्षता"। खाद्यपदार्थ अन्न गेहूं चना चावल जौ मटर आदि मंद होंगे। गुड़ खांड रसपदार्थ रूई कपास तिलहन शेयर मजीठ केसर किराने की वस्तुएं तेज होंगी। पक्षांत में तेजी का जोर कम होकर व्यापारिक वस्तुओं में मंदी होगी। तेल बनस्पति के व्यापारी सावधानी से काम करें, घटा बढ़ी अधिक होगी। आकाश लक्षण—पक्षारम्भ में उत्तरी भारत पंजाब राजस्थान में कहीं आंधी तूफान आदि से हानि होगी। कहीं कहीं ओले पड़ने की भी संभावना है बढ़ता हुआ तापमान फिर से सम होगा। मध्यप्रदेश के कुछ भागों में गरमी बढ़ेगी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्री संवत् २०२६ शक: १८९१ वैशाख शुक्ल पक्ष ३

दिन मान	स्टैण्डर्ड टाइम सूर्योदय सूर्यास्त	तारीख हि. मु. अ.	चन्द्र संचार स्टें. टा.	तारीख १७ अप्र. से २मई सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीयमिति २७ चैत्र से १२ वैशाख तक उत्तरायण गोल, वसन्तऋतु।

मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	हि.	मु.	अं.	रा.घं.मि.
२७	१	गु.	४६	५	२४	२३	भ.	३२	४०	१६	१	वि.	१५	२२	कि	१५	१६	३१	५४	५	५७	१८	४३	५	२६	१७	मेष
२८	२	शु.	[illegible]	५५	२५	३०	भ.	३६	४५	२०	३८	प्री	१४	३०	ग	१७	३०	३१	५८	५	५६	१८	४४	६	३०	१८	वृ.२७।७
२९	३	श.	५२	५२	२७	४	कृ.	४१	५७	२२	४२	आ	१५	३२	तै.	२०	५४	३२	२	५	५५	१८	४४	७	स.१	१९	वृष
३०	४	र.	५७	५२	२९	[illegible]	रो.	४८	१२	२५	११	सौ	१५	२७	व	२५	२२	३२	६	५	५४	१८	४५	८	२	२०	वृष
म.१	५	च.	६०	०	—	—	मृ.	५५	१२	२७	५८	शो	१७	५	ब	३०	४५	३२	१०	५	५३	१८	४६	९	३	२१	मि१४।३३
२	५	मं.	३	३७	७	१६	आ	६०	०	—	—	अ.	१९	१२	गा.	३	३७	३२	१४	५	५२	१८	४६	१०	४	२२	मिथुन
३	६	बु.	६	४२	८	४५	आ	२	३७	६	५५	सु.	२१	३०	तै.	९	४२	३२	१७	५	५१	१८	४७	११	५	२३	क.२७।७
४	७	गु.	१५	४२	१२	८	पु.	९	५७	९	५०	धृ.	२३	३७	व.	१५	४२	३२	२१	५	५१	१८	४७	१२	६	२४	कर्क
५	८	शु.	२१	०	१४	१७	पु.	१६	४०	१२	३०	शू.	२५	१५	ब.	२१	०	३२	२५	५	५०	१८	४८	१३	७	२५	कर्क
६	९	श.	२५	५	१५	५१	[illegible]	२२	१७	१४	४४	गं.	२५	५२	कौ	२५	५	३२	२९	५	४९	१८	४९	१४	८	२६	सिं१४।४४
७	१०	[illegible]	२५	३२	१६	४९	[illegible]	२६	२०	१६	२०	वृ.	२५	१७	ग.	२७	३२	३२	३३	५	४८	१८	४९	१५	९	२७	सिंह
८	११	[illegible]	२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८	३७	१७	१४	ध्रु.	२३	१७	वि.	२८	७	३२	३६	५	४७	१८	५०	१६	१०	२८	क.२३।२०
९	१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८	५७	१७	२१	व्या	१९	४२	बा	२६	४९	३२	४०	५	४६	१८	५०	१७	११	२९	कन्या
१०	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२७	२०	१६	४४	ह.	१४	३२	तै.	२३	१०	३२	४२	५	४५	१८	५१	१८	१२	३०	तु.२८।११
११	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२६	२०	१५	२९	व.	८	१०	व	१८	४०	३२	४७	५	४५	१८	५१	१९	१३	म.१	तुला
१२	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५५	१३	४२	सि.	०	३५	ब	१२	२५	३२	५१	५	४४	१८	५२	२०	१४	२	तुला

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टें. टा. घंटा मिनटों में है।

भरणी में बुध १७।२१ Eकुम्भदान विवाह मु.दि.ल.३।४
चन्द्रदर्शन मु. १५ श्रीशिवाजी ज. ‡मु.ल. १०
श्रीपरशुराम ज. अक्षया ३ श्रीमातंगी ज. सफर मु.२विवाह()
म. १६।३से२९।३ तक बुधका उदय पश्चिम में २७।२३सायन*
श्री जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य ज. रा. वैशाख प्रा. विवाह†
*वृषमेंसूर्य ११।५८श्रीबगलामुखी ज.श्रीसूरदास ज.ग्रीष्मऋतु R
श्रीरामानुजाचार्य ज. †मु.दि.ला.३।४धूलिमु.६उपनयनमु.
म.१२।८से२५।११तककृत्तिकामेंबुध१४।३८श्रीगंगा७गुरुपुष्या‡
अगस्त्य अस्त१९।५६दुर्गा ८ Tवै.स्ना.स.यमप्रीत्यर्थं जलE
वृषमें बुध १३।८विवाह मु.ल.गो. ९ ()अमृतयोग६।५०से
म.२८।५५ से भरणी में सूर्य १०।३१वक्री मंगल २८।३३विवाह
म.१७।२तक मोहनी ११ व्रत सबका [मु.दि.ल. ३।४
मार्गी शुक्र २०।२८ भोम प्रदोष व्रत Rविवा.मु.दि.ल.३।४
अश्वि३मेंशनि२२।८श्रीनृसिंह ज. P५ता.३१विवा.मु.ल.१०
म.१३।१३से२३।५७तक श्रीछिन्नमस्ता ज.सत्यव्रत मई मा. P
वक्री उ फा.२में गुरु१६।३वैशाखी१५बुद्ध पूर्णिमा कूर्म ज. T

वैशाख शु. ८ शुक्रे प्रातः स्टें. टा. ५।[illegible] केतकी अहर्गण ५४९९

वैशाख शु. १५ शुक्रे प्रातः स्टें. टा. ५।३० केतकी अहर्गण५५०६

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	७	१	५	११	०	११	५
१७	१५	२३	८	३	१७	६	४	४
१९	२	१२	२२	२१	९	४९	४६	४६
३	२१	१७	१४	३८	३३	५२	३८	३८
५८	[illegible]	३	७४	३	६	७	३	३
१०	४६	४३	३	४४	१३	३२	११	११
मा	मा	व	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	उ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

यहां जलवायुतायाः का कृत्तिका नक्षत्र मध्यम है, अन्य ग्रह योग उत्तम हैं अतः राष्ट्रों में तथा प्रजा में पारस्परिक मतभेद और आतंक कम होंगे। भारत में धार्मिक धर्मानुष्ठान एवं मांगलिक कार्य विशेष होंगे। पश्चिमी देशों में उग्र मतभेद बढ़ेंगे [illegible] को अपनी तरफ आकर्षित करेगा और चीन अमेरिका में [illegible] शनि का शुक्र उत्तम है। यथा "[illegible] प्रबल विरोध होगा। [illegible] संशयः॥" भारत में सुखशांति का [illegible] गुड़ खांड एवं तिलहन में तेजी [illegible] जोरदार आंधी तूफान आयेंगे और गर्ज के साथ वर्षा भी होगी। कहीं [illegible] होकर मंदी होगी। [illegible] विपरीत रहेगा। [illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री संवत् २०२६ शक: १८९१ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४ | दिनमान | स्टैंडर्ड टाईम सूर्योदय सूर्यास्त | तारीखें इं. मु. अ. | चन्द्र संचार स्टैं. टा. | ता. १३ से २६ मई सन् १९६९ ई० और राष्ट्रीय मिति १३ से २६ वैशाख तक। उत्तरायण गोल, ग्रीष्म ऋतु

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

१३	१	[illegible]	५	१२	७	[illegible]	ब	१४	३२	११	३	[illegible]	४३	०	को	५	१२	२२	४३	५	३३	[illegible]	३	२१	१५	३	वृ ६।६	रोहिणी में बुध १३।४१ [illegible] ज. गृहारम्भमु.
०	२	[illegible]	५९	२२	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	द्वितीया का क्षय
१४	३	[illegible]	५९	४२	२५	२७	अ	८	१०	६	१	[illegible]	३३	[illegible]	[illegible]	२३	२२	३३	[illegible]	[illegible]	४२	१८	[illegible]	२२	१६	४	वृश्चिक	म. १५।४से२५।२७ तक [illegible] आनन्दमयी जन्मोत्सव।
१५	४	[illegible]	४१	३	२२	१६	ज्ये	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	[illegible]	१५	२	३३	[illegible]	५	[illegible]	१८	५	२३	१७	[illegible]	ध. ६।४६	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय२२।५२ विवाह मु. दि. ल. ३गो१०
१६	५	[illegible]	३०	१७	१६	३	मू.	४१	४२	२६	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तो	७	६	३३	[illegible]	[illegible]	०	[illegible]	५४	२४	१८	[illegible]	धनु	शनि का उदय पूर्वमें १८।५६ उपनयन मु. [illegible] उपनयन मु.
१७	६	[illegible]	२	४०	१	४७	उ.	४७	४२	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	[illegible]	३३	[illegible]	५	३६	१	[illegible]	२५	११	७	म ७।५०	म. १६.४७ से २७।४१ तक विवाह मु. दि. ल. ४ घ.
१८	७	[illegible]	२२	४२	१४	३६	श्र.	४४	२५	२३	२६	[illegible]	५३	१५	[illegible]	२२	२२	३	[illegible]	[illegible]	६	[illegible]	[illegible]	२६	२०	[illegible]	मकर	[दानात् रविन्द्रनाथ ज. चेहलम (मुसा)
१९	[illegible]	[illegible]	१२	७	१२	४३	ध.	४२	४५	२२	४	[illegible]	४७	४२	को	१८	७	३	[illegible]	५	३८	[illegible]	५६	२७	२१	६	कुं. ११।१	पंचक प्रा. ११.३ से जीर्णगृह प्रवेश मु.
२०	९	[illegible]	१५	७	१	४०	श.	४२	७	२२	२	[illegible]	[illegible]	१०	[illegible]	[illegible]	७	३३	[illegible]	५	३७	[illegible]	[illegible]	२८	२२	१०	कुंभ	म. २३।१९ से कृत्तिका में सूर्य २८।४८ जीर्णगृह प्रवेश मु.
२१	१०	[illegible]	१३	२२	१०	५८	[illegible]	४२	४०	२२	[illegible]	[illegible]	१९	३	बे.	[illegible]	२२	३३	२	५	३७	[illegible]	५७	२९	२३	११	मी. १६।३२	म. १०।५८ तक
२२	११	[illegible]	१	७	२०	४३	[illegible]	४४	२५	२३	२२	बे.	३६	७	[illegible]	१२	४९	३३	२८	५	३६	[illegible]	५८	३०	२४	१२	मीन	अपरा ११ व्रत सबका
२३	१२	[illegible]	[illegible]	२	[illegible]	५६	[illegible]	४७	१०	२४	२७	तो	३५	१२	[illegible]	१२	२२	३	२७	५	३५	१८	६	३१	२५	१	मे. २४।२७	भौम प्रदोष व्रत पंचक स. २४।२७
२४	१३	[illegible]	१४	५	११	३३	[illegible]	५०	५५	[illegible]	६	[illegible]	३४	१०	[illegible]	१४	५	३३	३१	५	३५	१८	६	ज्ये १	२६	१४	मेष.	म. ११।३३ से २४।३ तक सं. वृष में सूर्य १५।३६ मु.
२५	१	[illegible]	१७	२७	१२	३३	[illegible]	५५	३०	२७	४६	तो	३३	१	[illegible]	१७	२९	३३	३४	५	३४	१९	०	२	२७	१५	मेष.	[३० पुण्यकाल ६।२० सं.
२६	३०	[illegible]	२०	५२	१३	५५	कृ.	६०	०	—	—	तो	३४	१७	ना.	२०	५२	३	४७	५	३४	१९	१	३	२८	६	वृ. १०।१७	मावुका ३० वट सावित्री व्रत अमा.पुण्य.

ज्येष्ठ कृ. ८ शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतका अहर्गण ५५१३

र.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	६	७	१	५	११	०	११	५
२४	२	२२	१२	२	१८	७	४	४
४५	४	३०	२३	५	३	४२	२४	२४
४३	६	१८	४५	१२	४५	१८	२२	२२
१८	२३	६	४१	२	२०	७	३	३
[illegible]	१८	३	१०	३०	३२	२५	११	११
मा	मा	व	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

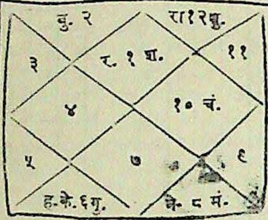

इस मासमें पांच शनिवार और शनिका गुरु मंगल से षडष्टक योग संसारमें अशांति कारक है। "शनिवारा यदा पंच. पाताले कंपते फली। ईशान देश भगत्र वह्निवाहो महर्घता॥" यहां रोगोत्पात विग्रह आदिसे हानि होगी। विरोधी राष्ट्रों की नीति विनाशक कार्योंमें प्रवृत्त होगी। सीमाओं पर संकट, महंगाई आदि बढ़ने से जनतामें असंतोष होगा। मध्यपूर्व एशिया आसाम बर्मा वियतनाम अमेरिका चीनमें एवं दक्षिण भारत में कोई भारी दुर्घटना होगी। भूकम्प भयंकर अग्निकाण्ड युद्धादि से भय व्यापेगा। धान्य गल्ला तिलहन रसकस कपास मिर्चो चांदी सोना शेयर पाट जूट बारदाना में मंदी होकर तेजी होगी। मंदी में संग्रह करने वाले व्यापारी लाभमें रहेंगे। १४ मई से तेजी जोर पकड़ेगा। व्यापारिक सभा वस्तुओंमें घटा बढ़ी होकर आगे तेजी होगी। आकाश लक्षण—दिल्ली पंजाब राजस्थान उत्तरप्रदेश जम्मू काश्मीर में भारी तूफान आंधी ओले आदि से हानि होगी। पश्चात में आकाश निर्मल होकर वायु तीव्र चलेगा। १० मई से तापमान बढ़ेगा। कहीं सांक्रमिक रोग हैजा आदि फैलेगा।

ज्येष्ठ म. ३० शुक्रे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५५२०

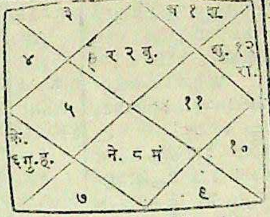

र.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	७	१	५	११	०	११	५
१	२७	२	१८	२	२१	८	४	४
३१	३२	१	२९	४५	३६	३३	२	२
१२	४०	२८	२	२१	४६	३६	६	६
१७	२४	१४	६	१	३१	७	३	३
५०	१५	३	१७	१५	४४	१८	११	११
मा	मा	व	मा	व	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

तारीख १७ से ३१ मई १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति २७ वैशाख से १० ज्येष्ठ तक। उत्तरायण गोल, ग्रीष्म ऋतु

स संदर्भ का सब समय भारतीय स्टें. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	तारीखें	मु.	अं.	चन्द्रसचार रा. घ. मि.
२७	१	श.	२५	१०	१५	३७	कृ.	१	०	५	५७	अ.	३५	२२	र.	२५	१०	३३	४०	५	३३	१९	१	[illegible]	२९	१७	वृष
२८	२	र.	३०	१५	१७	३८	रो.	७	१५	८	२६	सु.	३७	[illegible]	कौ.	३०	१५	३३	४३	५	३२	१९	[illegible]	५	र.१	१८	मि २१।४
२९	३	सो.	३५	५५	१९	५४	मृ.	१४	१०	११	१२	धृ.	३९	२०	तै.	३	५	३३	४५	५	३२	१९	२	६	२	१९	मिथुन
३०	४	म.	४२	२	२२	२०	आ.	२१	३८	१४	८	शू.	४१	३५	व.	८	५८	३३	४८	५	३१	१९	[illegible]	७	३	२०	मिथुन
३१	५	बु.	४८	१०	२४	४७	पु.	२९	५	१७	९	ग.	४४	[illegible]	व.	१०	६	३३	५०	५	३१	१९	[illegible]	८	४	२१	क. १०।२४
ज्येष्ठ १	६	गु.	५३	५[illegible]	२७	३	पु.	३६	२[illegible]	२०	[illegible]	वृ.	४६	२२	कौ.	२१	१	३३	५२	५	३०	१९	४	९	५	२२	कर्क
२	७	शु.	५८	४०	२८	५८	[illegible]	४२	५५	२३	१०	ध्रु.	४९	[illegible]	व.	२६	१६	३३	५५	५	३०	१९	४	[illegible]	६	२३	सि २२।४०
३	८	श.	६०	०	—	—	[illegible]	४८	२५	[illegible]	५६	व्या.	४८	[illegible]	वि.	३०	२४	३३	[illegible]	५	३०	१९	५	११	७	२४	सिंह
४	८	र.	२	७	६	२०	[illegible]	५१	५०	[illegible]	[illegible]	ह.	४७	२५	व.	२	७	३३	५६	५	२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	२५	सिंह
५	९	सो.	३	४२	६	५८	[illegible]	५[illegible]	३०	२६	५[illegible]	[illegible]	४५	[illegible]	[illegible]	३	४[illegible]	३३	[illegible]	५	२९	१९	६	१३	९	२६	क. ८।२८
६	१०	म.	३	१०	६	४७	[illegible]	५३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४०	५५	[illegible]	९	१५	३४	४	५	२९	१९	६	१४	१०	२७	कन्या
७	११	बु.	०	४०	५	४५	[illegible]	५०	३६	२५	४४	[illegible]	३५	१०	व.	०	४	३४	६	५	२९	१९	६	१५	११	२८	तु. १४।१०
०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
८	१२	गु.	४६	[illegible]	२४	२८	[illegible]	४५	२५	२४	[illegible]	[illegible]	२७	५७	कौ.	२२	५८	३४	८	५	२८	१९	७	१६	१२	२९	तुला
९	१३	शु.	४६	५०	२४	२४	[illegible]	४०	४०	२१	१६	[illegible]	[illegible]	६	[illegible]	१५	५६	३४	१०	५	२८	१९	८	१७	१३	३०	वृ १६।२४
१०	१४	श.	४२	[illegible]	२१	१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४०	३४	[illegible]	५	२८	[illegible]	८	[illegible]	१४	३१	वृश्चिक

ज्येष्ठ शु. ८ शनौ प्रातः स्टें. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५५२८

ज्येष्ठ शु. १५ शनौ प्रातः मध्यमोदये स्टें. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५५३५

श्रीनगर (बी.) [illegible] द्वादशी ब्रत [illegible] ब्रतपारण

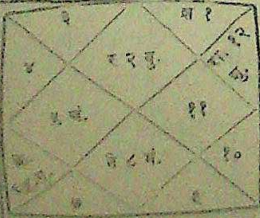

इस पक्ष में शनिवार को चन्द्रदर्शन तथा शनिवार की पूर्णिमा नेष्ट है। संसार में रोग उत्पात आदि विशेष होंगे। यत्र तत्र विग्रह विरोध सैन्य संघर्ष से अशांति होगी। अतिभय भूकम्प युद्धादि का भय होगा। अरब यूरोप चीन तिब्बत और पूर्वोत्तर भारत में बड़ी स्थिति [illegible] राजस्थान गुजरात दिल्ली और दक्षिण भारत [illegible] हानि होगी। मंगल वक्र [illegible] है, यथा— [illegible] है। [illegible] शनिवार नेष्टफल कारक है, यथा— [illegible]" [illegible] में भारी मतभेद होगा। अनाज गल्ला गुड़ खांड घृत तिलहन रुई रेशम [illegible] और मशीनरी कल पुर्जे तेज होंगे।

"ज्येष्ठशुक्लप्रतिपदि यदि [illegible]। [illegible] अतिवृष्टि भूकंप रोगभय से प्रजा त्रस्त होगी।

पाट बारदाना आदि में घटा बढ़ी [illegible]

आकाश लक्षण—[illegible]

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	७	१	५	०	०	११	५
१५	८	१६	१३	२	१	१०	३	३
२६	७	४७	३१	४२	३४	१८	१४	१४
१२	२३	३	१७	४१	२२	३१	२४	२४
१७	९०७	२०	३३	४४	७	६	३	३
२६	४	१५	४६	२७	२८	४०	११	११
मा	मा	ब	ब	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
रोहिणी	अनु.	[illegible]	रोहिणी	उ.फा.	अश्विनी	अश्विनी	पू.भा.	उ.फा.

जका बुध २०।२३ चन्द्र-दर्शन मु. ४५ श्रीग[illegible]दिशाश्रमवस्नानाP विउलअब्वल मु [illegible] विवा. मु. दि. ल ४ धुलि मु ६ उपनयन मु. बुध का अस्त पश्चिम में २१।१ श्री प्रताप ज. रंभा व्रत विवाह न ६। २२।२० [illegible] मु [illegible] अर्जुन नि. दि. [मु. दि. ल. ४ उपनयन मु. [illegible] मिथुन में सूर्य ११।२० Pरम्म विवाह मु. ल. धुलि मु. १० राष्ट्रीय ज्येष्ठ प्रारम्भ गुरुपुष्यामृतयोग २० ३ तक
म. ८ ५८से मार्गी गुरु २४।४२ S विवाह मु. ल धुलि मु. ९
म. १७।३९ तक रोहिणी में सूर्य २४।५८ दुर्गा ८ श्री धूमावती ज. S
B १५ फकीर ज. विवाह मु. दि ल. ४।५ गृहारम्भ मु.
F (बारावफात) विवाह मु. दि. ल ४।५ गृहारंभ मु. जीर्णगृह प्रवेश मु.
म १८।१६ से श्रीगंगा दशहरा श्रीबटुक भैरव ज.
म. ५।४५ तक अश्वि. मेष में शुक्र २८।३२ अश्वि. ४ में शनि
द्वादशी का क्षय । ११।४१ निर्जला ११ व्रत
पू. भा. ४ राहु उ. फा. २ में, केतु ११।१७ प्रदोष व्रत, ईद मिलाद F
म २२।१७ से विवाह मु. ल. ९ स्टे. टा. २१।४४ उ. २२।१७ या.
म. ८ ३२ तक वक्री अनुराधा में मंगल १४ ३३ सत्य व्रत ज्येष्ठी B

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ प्र. (शुद्ध) आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६ | दिन मान | स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय सूर्यास्त | तारीखें हि. मु. अ. | चंद्र संचार स्टें टा

ता० १ से १४ जून सन् १९६९ ई० और राष्ट्रीय मिति ११ से २४ ज्येष्ठ तक। उत्तरायण गोल, ग्रीष्म ऋतु

ता. मि.	ति	वार	घड़ी	पल	घंटा	मिनट	नक्ष.	घड़ी	पल	घंटा	मिनट	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	घड़ी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	हि.	मु.	अं.	रा.च.मि	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टें.टा. घंटा मिनटों में है।
११	१	र.	२४	०	१५	४	ज्ये.	२६	५२	१८	१३	सा.	४६	१२	कौ.	२४	०	३४	१४	५	२८	१६	८	१६	१५	जू१	ध.१६।१३	जून मा. ६ ता. ३० विवाह मु. ल. गो. १०
१२	२	चं.	१४	३७	११	१६	मू.	१६	३५	१३	१८	शु.	३८	५५	तै.	१४	३७	३४	१५	५	२८	१६	९	२०	१६	२	धनु.	म. २१।३१ से विवाह मु. दि. ल. ५ उपनयन मु. प्लुटो मार्गी
१३	३	मं.	५	३७	७	४३	पू.	१२	४२	१०	३३	शु.	२९	२	व	५	३७	३४	१७	५	२८	१६	९	२१	१७	३	म. १५।५५	म. ७।४३ तक श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २२।३४
०	४	मं.	५७	२२	२८	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	चतुर्थी का क्षय
१४	५	बु.	५०	१७	२५	३५	उ.	६	४२	८	९	ब्र.	२०	०	कौ.	२३	५०	३४	१९	५	२८	१६	१०	२२	१८	४	मकर	उपनयन मु. गृहारम्भ मु. वैधृति १०।१५ से १५।४९ तक
१५	६	गु.	४४	४०	२३	२९	श्र.	१ / ५८	४५ / ३५	६ / २८	१३ / ५३	ऐं.	१२	५	तै.	१७	२८	३४	२०	५	२७	१६	१०	२३	१९	५	कु १७।२८	म. २३।१९ से पंचक प्रा. १७।२८ से
१६	७	शु.	४०	३६	२१	४२	श.	५६	५२	२८	१२	वै.	५ / ५६	२० / ३७	वि.	१२	३८	३४	२२	५	२७	१६	११	२४	२०	६	कुंभ	म. १०।३१ तक
१७	८	श.	३८	१५	२०	४५	पू.	५६	४७	२८	१०	प्री.	५५	५५	श	९	२६	३४	२३	५	२७	१६	११	२५	२१	७	मी २२।७	मृगशिर में सूर्य २२।५७ बुध का उदय पूर्व में २२.५
१८	९	र.	३७	३२	२०	२८	उ.	५८	२२	२८	४८	आ.	५३	१२	नं.	९	५४	३४	२५	५	२७	१६	१२	२६	२२	८	मीन	विवाह मु. दि. ल. ३।८ धूलिमुख ९।१० [हर्शल मार्गी
१९	१०	चं.	३८	२०	२०	४७	रे.	६०	०	—	—	सौ.	५१	३७	त.	७	५६	३४	२६	५	२७	१६	१३	२७	२३	९	मीन	म. ८।३७ से २०।४७ तक
२०	११	मं.	४०	२७	२१	३८	रे.	१	२०	५	५९	शो.	५१	५	व.	९	२४	३४	२७	५	२७	१६	१३	२८	२४	१०	मे. ५।५९	मार्गी बुध १३।१ योगिनी ११ व्रत [illegible] पंच. स. ५।५९
२१	१२	बु.	४३	४०	२२	५५	अ.	५	३२	७	४०	अ.	५१	२०	कौ.	१८	३	३४	२८	५	२७	१६	१४	२९	२५	११	मेष	
२२	१३	गु.	४७	४५	२४	३३	भ.	१०	४२	९	४४	सु.	५२	१५	तै.	१५	४८	३४	३०	५	२७	१६	१४	३०	२६	१२	वृ १६।१८	म. २४।३३ से प्रदोष व्रत * शुक्र २०।५८
२३	१४	शु.	५२	३५	२६	२९	कृ.	१६	४०	१२	७	धृ.	५३	४२	वि.	२०	१०	३४	३१	५	२७	१६	१५	३१	२७	१३	वृष	म. १३।३१ तक उ. फा. ३ में गुरु १८।४ भरणी में*
२४	३०	श.	५८	०	२८	३८	रो	२३	१५	१४	४४	शू.	५५	४०	च.	२५	१६	३४	३२	५	२६	१६	१५	आ१	२८	१४	मि. २८।८	सं. मिथुन में सूर्य २२।१८ मु. ३० पुण्य काल १५।५४ से [अमापुण्य

प्र. आषा. कृ. ८ शनौ प्रातः स्टें. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५५४२

प्र. आषा. कृ. ३० शनौ स्टें. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५५४९

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	७	१	५	०	०	११	५
२९	२०	१४	१०	२	७	११	२	२
३८	४३	२५	२८	१९	२२	४	५२	५२
१७	३१	२	३२	३४	०	१९	९	९
५७	[illegible]	२०	१३	२	२२	६	३	३
२४	१७	५	२०	४१	२१	२०	११	११
मा	मा	व	व	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
रोहिणी ४	[illegible]	[illegible]	रोहिणी	[illegible]	[illegible]	अश्विनी ४	[illegible]	[illegible]

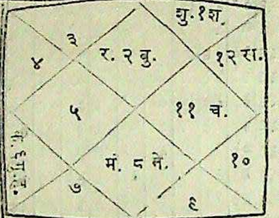

इस मास में पांच रविवार और मिथुन संक्रान्ति अमावस्या शनिवार की है। १२ जून को शुक्र शनि का युद्ध (अंशसाम्ययोग) होने से यह सारा मास ही संसार के लिये प्रकृति प्रकोप अग्नि भय गृह कलह विग्रह विरोधादि से हानिकारक है। रूस

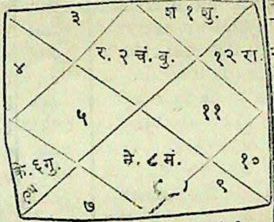

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	७	१	५	०	०	११	५
२९	१८	१२	१०	३	१३	११	२	२
१९	४२	१०	२४	२१	३९	४७	२९	२९
५२	३९	२०	५३	४९	४५	३०	५४	५४
५७	[illegible]	१७	१७	३	५५	५	३	३
१९	४७	४५	२६	५०	५९	५७	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मृग.	रोहि. ३	मृग. ३	रोहि. ४	उ. फा. ३	भरणी ४	अश्विनी ४	पू. भा. ४	उ. फा. २

चीन वियतनाम अफ्रीका अरब राष्ट्रों में विस्फोटक स्थिति बनेगी। पूर्व में जन धन की हानि होगी। अमेरिका घरेलू एवं बाहरी संकटों के अलावा प्रकृति प्रकोप का भी शिकार होगा। भीषण यान दुर्घटनायें होंगी। आसाम बर्मा नेपाल भूटान तिब्बत और मध्य पूर्व एशिया में विग्रह उत्पात प्रकृति प्रकोप आदि का भयव्याप्त होगा। भारत के ईशान कोण में शत्रु आक्रमण एवं सैन्यसंघर्ष होगा। अग्नि काण्ड और दुर्घटनाएँ अधिक होंगी। चीन पाकिस्तान में भयकर विनाश की स्थिति उत्पन्न होगी। जौ गेहूं चावल चना रस पदार्थ तिलहन तेल वनस्पति रुई पाट बारदाना कागज आदि तेजहोंगे। शेयर बाजार में घटा बढ़ी होगी। [illegible] आसाम गुजरात और दक्षिण भारत में १२ जून से वर्षा आरम्भ होगी। और उत्तरी भारत में तापमान बढ़ेगा, लू चलेंगी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ प्र. (अधिक) आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७	दिन मान	स्टेण्डर्ड टाइम सूर्योदय / सूर्यास्त	तारीखें हि. / मु. / अं.	चन्द्रदर्शन स्टें. टा.	तारीख १५ से २९ जून सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति २५ ज्येष्ठ से ८ आषाढ़ तक। उत्तरायणगोल ग्रीष्मऋतु।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	हि.	मु.	अं.	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टें टा. घंटा मिनटों में है।
२५	१	र.	०	०	—	—	मृ.	३०	१७	१७	३३	ग.	५७	५२	कि.	३०	५२	३४	३३	५	२६	१९	१६	२	२९	१५	मिथुन	अधिक (पुरुषोत्तम) मास प्रारम्भ
२६	१	चं.	४३		६	५७	आ	३५	४२	२०	३१	वृ.	६०	०	व	३	४७	३४	३४	५	२६	१९	१६	३	३०	१६	मिथुन	चन्द्रदर्शन मु. १५
२७	२	मं.	५०		६	२[illegible]	पु.	४५	१२	२३	३१	वृ.	०	१९	तै.	६	५०	३४	३५	५	२६	१९	१६	४	१	१७	मि. १६।४६	रविउलआखिर मु. ४
२८	३	बु.	१	५२	११	४८	पु.	५२	३७	२६	१०	ध्रु.	२	४५	ग.	१५	२[illegible]	३४	३६	५	२७	१९	१६	५	२	१८	कर्क	भ. २४।५८ से व्यतिपात ८।४ से १५।४ तक
२९	४	गु.	२	४५	११	६	श्ले.	५६	३७	२६	१८	व्या.	५	९	वि.	२१	४५	३४	३७	५	२७	१९	१७	६	३	१९	सि. २६।१८	भ. १४।१९
३०	५	[illegible]	२६	५[illegible]	१२	१	म.	६०	०	—	—	[illegible]	७	५	बा	२६	१७	३४	३७	५	२७	१९	१७	७	४	२०	सिंह	Aवर्षाऋतु प्रा. सं. स्त्री. चं. सू. वाहन मूषक वर्षासम
३१	६	[illegible]	[illegible]	५	१७	५३	म.	५	४५	७	४५	[illegible]	८	२०	तै.	३१	५	३४	३८	५	२७	१९	१७	८	५	२१	सिंह	आर्द्रामें सूर्य २१।५३ सायन कर्कमें सूर्य १६।२६ दक्षिणायनA
आ	७	[illegible]	३३	३७	१८	२५	पू.	१०	३५	९	४२	सि.	८	३०	ग.	[illegible]	२१	३४	३८	५	२८	१९	१५	९	६	२२	क. १६।५	भ. १८।५७ से, राष्ट्रीय आषाढ़ प्रा.
२	८	[illegible]	३८	३२	१९	[illegible]	उ.	१३	४५	१०	५८	व्य.	९	२२	वि	४	५	३४	३७	५	२८	१९	१५	१०	७	२३	कन्या	भ. ७।७ तक दुर्गा ८
३	९	[illegible]	३३	२२	१८	४८	ह.	१५	५	११	२०	व.	४	२२	बा	३	५७	३४	३७	५	२८	१९	१७	११	८	२४	तु. २३।२६	
४	१०	[illegible]	३०	५	१६	२०	चि.	१६	१७	११	११	[illegible]	५४	३५	तै.	१	४४	३४	३६	५	२८	१९	१७	१२	९	२५	तुला	भ. २८।२६ से
५	११	[illegible]	२६	[illegible]	१५	२[illegible]	स्वा	१६	२०	१०	[illegible]	[illegible]	४९	५०	वि.	२४	४७	३४	३६	५	२८	१९	१८	१३	१०	२६	वृ. २६।४४	भ. १५।२३ तक कमला ११ व्रत सबका वैधृति २६।५३ से
६	१२	[illegible]	२७	३५	१२	२[illegible]	वि.	१४	४७	८	१२	[illegible]	३७	५५	गर	१७	४५	३४	३५	५	२९	१९	१८	१४	११	२७	वृश्चिक	कृत्तिका में शुक्र १३।५९ प्रदोष व्रत
७	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९	१४	अ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८	२	तै.	६	२	३४	३४	५	२९	१९	१८	१५	१२	२८	ध. २६।५५	
८	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ज्ये.	४५	५०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८	१९	व.	०	३	३४	३३	५	२९	१९	१८	१६	१३	२९	धनु	भ. ५।३० से १५।३१ तक मृग में बुध २५।४ सत्य व्रत
९	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०	०	०	[illegible]	०	०	[illegible]	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	पूर्णिमा का क्षय

प्र. आषाढ़ शु. ८ चन्द्रे स्टें. टा. ५।३० कलयो अहर्गण ५५५८ | प्र. आषाढ़ शु. १४ रवौ प्रातः स्टें. टा. ५-३० कलयो अहर्गण ५५६४

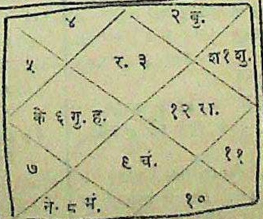

इस पक्षमें नीचराशि के शनिसे शुक्रकी युति होरही है और शुक्र शनिका मंगल गुरुसे षडष्टक योग बना है। अतः संसारमें उत्पात कहीं अवर्षण, वायुवेग रोगोत्पादनसे हानि होगी। मेषके शनिका अशुभफल भारतमें भी घोर संकट पैदा करेगा। [illegible] आदि से प्रजा पीड़ित होगी। पाकिस्तान और चीनकी गतिविधि चिन्ता- [illegible] मंत्रिमंडलमें परिवर्तन होगा। चीन और पाकिस्तान [illegible] विनाश होगा। रुई सन पाट बारदाना अनाज गल्ला जौ गेहूं [illegible] कम तेजी का बने। पक्षके उत्तरार्धमें सुगंधित पदार्थ [illegible] चांदी सोना में घटा बढ़ी से कम तेजी [illegible] से मिश्रितफल होगा। [illegible] असम हिमाचल प्रदेश दक्षिण भारत में वर्षा अच्छी होगी।

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	७	१	५	०	०	११	५
१३	१	८	२२	४	२८	१३	१	१
३८	३८	५१	१५	३५	२०	१०	४२	४२
४१	४	४०	२७	४८	२६	१	१२	१२
५७	२१९	७	७४	६	६१	४	३	३
११	३	१६	११	७	२४	५७	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	वि	वि
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण — [illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ द्वि०(अधिक)आषाढ़ कृष्ण पक्ष८

तारीख ३० जून से १४ जुलाई सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति९ से २३ आषाढ़ तक । दक्षिणायन उत्तर गोल, वर्षा ऋतु ।

रा.मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीख हि.	तारीख मु.	तारीख अ.	चंद्र संचार रा.घं.मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टें. टा. घंटा मिनटों में है ।
९	१	बु.	४०	१५	२१	३६	पू.	३८	०	२०	४२	प्र.	६/५५	३३/४५	बा	१५	१८	३४	३१	५	३०	१९	१८	१७	१४	३०	म. २४।५७	वृष मे शुक्र २०।२२
१०	२	मं.	३०	४२	१७	४७	उ.	३०	३७	१७	४५	वृं.	४५	३०	तै.	५	२८	३४	३०	५	३०	१९	१८	१८	१५	जू १	मकर	भ. २८।५ से भरणी १ में शनि ६।२५ जुलाई मा.S
११	३	बु.	२२	१०	१४	२३	श्र.	२४	७	१५	१०	वि	३६	०	वि.	२८	१०	३४	२९	५	३१	१९	१८	१९	१६	२	कुं २६।१३	भ. १४।२३ तक श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २१।५५ पंचक [प्रा. २६।१३ से
१२	४	गु.	१४	५२	११	२४	ध.	१८	५७	१३	६	प्री	२७	४२	बा.	१४	५०	३४	२८	५	३१	१९	१९	२०	१७	३	कुंभ	S ७ ता. ३१
१३	५	शु.	६	१०	६	१४	श.	१५	२२	११	४०	आ	२०	५०	तै.	६	१८	३४	२७	५	३१	१९	१९	२१	१८	४	मी. २६।५५	मिथुन में बुध १३।३०
१४	६	श.	५	१५	७	३८	पू.	१३	३७	१०	२६	सौ	१५	२८	ग.	५	१५	३४	२६	५	३२	१९	१९	२२	१९	५	मीन	म. ७।३८ से १९।१५ तक पुनवसु में सूर्य २१।३३ सं.
१५	७	र.	३	२०	६	४२	उ.	१३	५०	११	४	शो	११	३८	ग.	३	२०	३४	२४	५	३२	१९	१८	२३	२०	६	मीन	[स्त्री पु. चं. वाहन जम्बुक वर्षासम
१६	८	चं.	३	१५	६	५१	रे.	१५	५२	११	५२	अ.	६	१०	कौ	३	१५	३४	२३	५	३३	१९	१८	२४	२१	७	मे. ११।५४	पंचक सं. ११।५४
१७	९	मं.	४	५७	७	३२	अ	१६	३५	१२	२३	सु.	८	१२	ग.	४	५७	३४	२१	५	३३	१९	१८	२५	२२	८	मेष	भ. २०।१० से मार्गी मंगल १७।५९ आर्द्रा में बुध १५।१४
१८	१०	बु.	८	५	८	४८	भ.	२४	३५	१५	२४	धृ.	८	२०	वि	८	५	३४	२०	५	३४	१९	१८	२६	२३	९	वृ. २१।५९	म. ८।३८ तक व्यतिपात १५।३६ से २१।५४ तक
१९	११	गु.	१२	२५	१०	३२	कृ.	३०	४२	१७	३१	शू.	९	२२	बा.	१२	२५	३४	१८	५	३४	१९	१८	२७	२४	१०	वृष	रोहिणी में शुक्र ९।७ कमला ११ व्रत सबका
२०	१२	शु.	१७	३०	१२	३५	रो.	३७	३०	२०	३५	गं.	११	२	तै.	१७	३०	३४	१६	५	३५	१९	१७	२८	२५	११	वृष	बुध का अस्त पूर्व में ९।३६ प्रदोष व्रत
२१	१३	श.	२३	१२	१४	५२	मृ.	४४	४५	२३	२९	वृ.	१३	१०	व.	२३	१२	३४	१४	५	३५	१९	१७	२९	२६	१२	मि. १०।१	म. १४।५२ से २८।७ तक
२२	१४	र.	२९	७	१७	१५	आ	५२	७	२६	२७	ध्रु.	१५	३०	श.	२९	७	३४	१२	५	३६	१९	१७	३०	२७	१३	मिथुन	
२३	३०	चं.	३५	१०	१९	४०	पु.	५९	३५	२६	२६	व्या	१७	५९	न.	२	८	३४	१०	५	३७	१९	१७	३१	२८	१४	क. २२।४८	पुनर्वसु में बुध २९।२९ पुरुषोत्तम (मल) मास समाप्त. [सोमवती अमावस्या

द्वि. आषाढ कृ. ८ चन्द्रे प्रातः स्ट. टा. ५।३० कतकी अहर्गण ५५७२

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	७	२	५	१	०	११	५
२१	२६	८	४	५	६	१३	१	१
१६	३५	१६	२९	२८	३९	४०	१६	१६
९	२६	४०	६	३१	१२	३०	४६	४६
५७	७५८	०	१०५	७	६३	४	३	३
१२	४०	३८	२९	११	२९	२०	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पुन. १	रोहि. ३	पुन. ३	पुष्य ४	उ.फा. ३	पुन. ३	भरणी १	पू.भा. २	उ.फा. ३

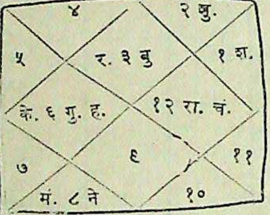

इस मास में पांच सोमवार श्रेष्ठ और पांच मंगलवार नेष्ठ हैं और स्वगृही मंगल का शुक्र से प्रतियोग तथा शनि मंगलगुरु का षडष्टक योग है। यह अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को विस्फोटक बनायेगा । कहीं युद्ध से हानि होगी और कहीं अनावृष्टि से प्रजा पीड़ित होगी । यवन राष्ट्र एवं कम्यूनिष्ट आपसी फूट से हानि ऊठायेंगे । भारत में मतभेद बढ़ेगे जिससे आन्तरिक स्थिति कमजोर होगी । इस पक्ष में मंगल मार्गी हो रहा है और सोमवती अमावस्या है, यह उत्तम फलकारक है । यथा—"आषाढस्याप्यमावस्या यदि सोमवती भवेत् सुभिक्षं कुरुतेऽत्यर्थ नक्षत्र मृग सप्तके ॥" यहां अशांति के मध्य विश्वशांति की मिश्र प्रक्रिया होगी । जनता में सुखशांति का वातावरण होगा और धार्मिक भावना जाग्रत होगी । भारतीय राजतंत्र में सुधार सुव्यवस्था बनेगी । रुई वस्त्र सूत पाट बारदाना हैसियन दालवाना अनाज गुड़ आदि में मंदी होगी । अलसी मूंगफली तिल सरसों सराफा में तेजी होकर मंदी होगी । आकाश लक्षण—३० जून से ५ जुलाई तक मध्यभारत राजस्थान दिल्ली पंजाब हरियाना, काश्मीर हि० प्र० उ० प्र० में दूर दूर तक वर्षा होगी । आगे खंड वृष्टि होगी ।

द्वि. आषाढ कृ. ३० चन्द्रे प्रातः स्टें. टा. ५।३० कतकी अहर्गण ५५७९

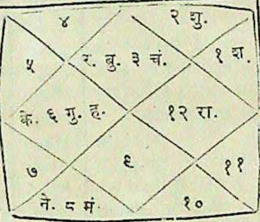

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	७	२	५	१	०	११	५
२७	२१	८	१७	६	१४	१४	०	०
५६	२९	२९	५५	२१	८	१६	५४	५४
४४	४२	४०	५३	२८	१०	७	३०	३०
५७	७११	५	१२४	८	६४	३	३	३
१५	३७	७	१२	२	५७	४४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
पुन. ३	मृग. १	[illegible]	आर्द्रा ४	उ.फा. ३	रोहि. ३	भरणी १	पू.भा. ४	उ.फा. ३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ द्वि० (शुद्ध) आषाढ़ शुक्ल पक्ष ६ | दिनमान | स्टेण्डर्ड टाइम सूर्योदय,सूर्यास्त | तारीख हिं. मु. अं. | चंद्र संचार स्टें. टा. | ता. १५ से २९ जु. सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति २४ आ. से ७ श्रावण तक । दक्षिणायन उत्तर गोल, वर्षा ऋतु ।

ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	हिं.	मु.	अं.	रा. चं. मि.
२४	[illegible]	[illegible]	४१	२	२२	[illegible]	पु.	६०	०	—	—	[illegible]	२०	१५	कि	८	६	३४	९	५	३६	१६	१६	[illegible]	२६	१५	कर्क
२५	२	[illegible]	४६	४०	२४	१५	पु.	६	५०	८	२१	ध्रु.	२	३०	ग	१३	११	३४	७	५	३७	१६	१६	[illegible]	३०	१६	कर्क
२६	३	[illegible]	५१	४०	२६	१८	पु.	१३	४०	११	६	सि	२४	२०	वं.	१६	१०	३४	५	५	३८	१९	१६	२	[illegible]	१७	सि. ११।६
२७	४	[illegible]	१५	५	२८	०	म.	१६	५५	१३	३६	व्य	२५	३	[illegible]	२३	४९	३४	३	५	३८	१६	१६	३	[illegible]	१८	सिंह
२८	५	[illegible]	६	०	२६	१७	पू.	२५	१८	१५	४४	[illegible]	२६	९	[illegible]	२७	२७	३४	१	५	३९	१६	१५	४	३	१९	क. २२।११
२९	६	[illegible]	६०	०	—	—	उ.	२६	१७	१७	२२	[illegible]	२५	४८	तै	२९	४८	३३	.६	५	३९	१६	१५	५	४	२०	कन्या
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	५	५१	ह.	३१	५०	१८	२४	शि	२	२	[illegible]	०	३१	३३	५६	५	४०	१६	१५	६	५	२१	कन्या
३१	७	[illegible]	०	३५	५	४४	चि	३२	४०	१८	४४	सि	११	१	[illegible]	०	३	३३	१	५	४०	१६	१५	७	६	२२	तु. ९।३६
[illegible]	८	[illegible]	.८	[illegible]	६	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
[illegible]	९	[illegible]	५५	[illegible]	५	२७	स्वा	३१	३७	१८	२०	सा	१६	२	ग	२६	१६	३३	५१	५	४१	१६	१४	८	७	२३	तुला
[illegible]	१०	[illegible]	[illegible]	३	२५	३	वि	२९	१२	१७	२३	शु	१०	२	वं	२२	२०	३३	५८	५	४२	१९	१३	९	८	२४	वृ. ११।३४
[illegible]	११	[illegible]	[illegible]	३	२२	[illegible]	अ.	२४	२०	१५	२६	[illegible]	३	[illegible]	[illegible]	१६	६	३३	४६	५	४२	१९	१३	१०	९	२५	वृश्चिक
[illegible]	१२	[illegible]	३४	[illegible]	२१	[illegible]	ज्ये	१८	२०	१३	७	[illegible]	४४	४५	[illegible]	८	३०	३३	४१	५	४३	१६	१२	११	१०	२६	ध. १३।१७
[illegible]	१३	[illegible]	२४	१७	१५	४०	मू.	११	४२	१०	२४	ऐं.	३४	३	तै.	२५	१७	३३	४०	५	४३	१९	१२	१२	११	२७	धनु
[illegible]	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२	पू.	४	३०	७	५८	वि	२३	५२	[illegible]	१५	४५	३३	३९	५	४४	१६	११	१३	१२	२८	म. १२।५३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६	[illegible]	४८	उ.	४५	१०	२५	४०	गी	१३	२५	[illegible]	६	१५	३३	३५	५	४४	१६	११	१४	१३	२९	मकर

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टें.टा. घंटा मिनटों में है।

A गुरु १२।१६ चन्द्रदर्शन मु. १५ श्रीजगदीश रथयात्रा जगन्नाथपुरी
स.कर्क में सूर्य ६।१० मु. १५ पुण्यकाल १५।३४ तक उ.फा.४ में A
जमादिउलअव्वल मु. ५
म. १५।१६ से २८।० तक
पुष्य में सूर्य २०।५६ सं.स्त्री.स्त्री.चं.सू. वाहन चातक वर्षा श्रेष्ठ
[कर्क में बुध २२।४३
पुष्य में बुध १२।११
म. ५।५४ से १७।३२ तक मृगशिर में शुक्र १५।२३ दुर्गा ८
अष्टमी का क्षय B का चातुर्मास्य व्रत नियम प्रा.
सायन सिंह में सूर्य ६।१८ राष्ट्रीय श्रावण प्रारम्भ
D व्रत मधु परीक्षा जैन चातुर्मास प्रा.
म. १२।८ से २२।४५ तक देवशयनी ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों B
देवशयनी ११ व्रत निम्बार्कों का शनि प्रदोष व्रत
अश्लेषा में बुध २१।२७
म. १२।२ से २२।८ तक मिथुन में शुक्र १५।१० सत्य D
आषाढ़ी १५ व्यास पूजा गुरु पूर्णिमा संन्यासियों का चातुर्मास्यारम्भ

द्वि. आषा. शु. १५ भौमे प्रातः स्टें. टा. ५।३० कलकी अहर्गण ५५९४

द्वि. आषा. शु. ७ भौमे प्रातः स्टें. टा. ५।३० कलकी अहर्गण ५५८७

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस मासमें पांच मंगलवार और मंगल वृश्चिक राशि में है, यह संसारमें रोग शोक विग्रहादि तथा कहीं अति वृष्टि अनावृष्टि से हानिकारक है। १६ जुलाई को कर्क संक्रांति प्रवेश के समय चन्द्रमा कर्क राशि (जलचर राशि) में होने से यहां से आगे वर्षा काल में

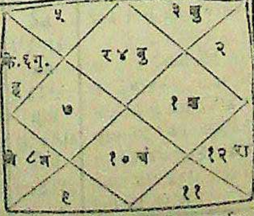

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	७	३	५	२	०	११	५
१२	१०	११	१६	८	०	१५	०	०
१६	३७	५	२१	३	४०	२	६	६
०	५१	४८	१७	४५	९	४२	४८	४८
५७	[illegible]	१५	[illegible]	९	६७	२	३	३
२१	३४	५८	५६	३७	२२	२०	११	११
मा	मा	[illegible]	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

... जन धन का भारी विनाश होगा। वृश्चिक राशि ... वर्षा बहुत अधिक होगी। जिससे बाढ़ आदि भय से जन धन का ... "[illegible] ... भौमवारैः [illegible]" ... [illegible] ... में वर्षा [illegible] नेपाल आसाम भूटान ... राष्ट्रों में पारस्परिक [illegible] बढ़ेगा। पूर्व [illegible] के क्षेत्रों में वर्षा ... [illegible] ... यह अनिश्चित है और अनाज गल्ला रुई पाट बारदाना ... [illegible] ... मांगी [illegible] रहा है। ... [illegible] ... आकाश लक्षण—१६ से २३ जुलाई तक उत्तर प्रदेश ... [illegible] ... तिलहन दालदाना किराना आदि में तेजी होकर [illegible] होगी। [illegible] बाजार में [illegible] निकलेगी। ... [illegible] ... पश्चिम दक्षिण क्षेत्रों में वर्षा की खेंच रहेगी। ... [illegible] ... महाराष्ट्र गुजरात मध्यप्रदेश राजस्थान दिल्ली हिमाचल प्रदेश में अच्छी वर्षा होगी कहीं ...

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री सवत् २०२६ शकः १८९१ श्रावण कृष्ण पक्ष १०

ता. ३० जुला. से १३ अगस्त सन् १९६९ ई. राष्ट्रीय मिति ८ से २२ श्रावण तक। दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मि.	तारीखें श्राव.	अ.	जुलाई	चंद्र संचार स्टें. टा. रा. घ.मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टें.टा. घंटा मिनटों में है।
०	१	मं.	१७	१२	२८	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	० ०	प्रातपदा का क्षय S सिंह म कनु ८।४६ गृहारम मु.
८	२	बु.	४[illegible]	०	२५	२१	अ	४३	३२	२३	१०	आ	३	१७	तै.	२३	६	३३	३[illegible]	५	४५	१०	१०	५	१४	३०	क १२।२८	पंचक प्रा. १२।२२ से गृहारम्भ मु.
९	३	गु.	४[illegible]	७	२२	३	ग	३८	३०	२१	९	गो	४५	१२	व.	१५	३	३३	२९	५	४५	१९	१०	२०	१५	३१	कुंभ	म. ११।५८ से २२।३६ तक पू.भा. ३ कुंभ में राहु उ.फा. १ S
१०	४	शु.	[illegible]	४७	२०	२९	पू	३५	५	१९	४८	ध.	३८	३२	ब.	८	५७	३३	२[illegible]	५	४६	१९		१७	१६	४	ती. १४।१५	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २१।३४ श्री लोकमान्य तिलक A
११	५	श.	४३	२२	१९	७	उ.	३३	३२	१९	११	पु.	३३	४०	कौ	५	५	३३	२३	५	४[illegible]	९	८	८	१	२	मीन	अश्लेषा में सूर्य १९।५७ सं.स्त्री. पु.चं.चं. वाहन अश्व वर्षासम
१२	६	[illegible]	३१	१२	८	२२	रे.	३३	५२	१९	२०	वृ	२९	५२	ग.	२	३७	३३	२[illegible]	५	४[illegible]	९		१९	१८	३	१९।२	म. १८।३२ से मघा सिंह में बुध १८।२४ आर्द्रा में शुक्र E
१३	७	चं.	३२	२२	१८	[illegible]	अ.	३६	१२	२०	१६	ध्रु.	२७	४२	वि.	२	९	३३	१७	५	४	१९		२०	१९	४	मेष	म. ६।३८ तक बुध का उदय पश्चिम में ९।३८
१४	८	मं.	[illegible]	४[illegible]	९	४१	भ	४०	१५	२१	५४	व्या.	२६	३२	बा.	३	३२	३३	१[illegible]	५	४	[illegible]	६	२१	२	[illegible]	वृ.२८।२	A ज. अगस्त मा. ८ ता. ३१
१५	९	बु.	३८	३२	२	[illegible]	कृ.	४५	४७	२४	९	हृ	२७	२७	तै.	६	३७	३३	११	५	४८	१२		२	२१	६	वृष	हस्त १ में गुरु २०।५५ प्लुटो कन्यामें २३।१२
१६	१०	गु.	४३	३२	२३	[illegible]	रो	५२	२०	२६	४५	व्र.	२८	१०	व.	११	[illegible]	३३	८	५	४९	१९		२३	२२	[illegible]	वृष	म. १०।१४ से २३।१४ तक जीर्णगृह प्रवेश मु. नेपच्यून मार्गी
१७	११	शु	४९	१७	२५	३२	मृ	५९	३५	२९	३९	व्या	३०	१२	ब.	१६	२५	३३	४	५	४९	१९	३	४	२३	८	मि १६।११	कामदा ११ व्रत सबका
१८	१२	श.	५५	२०	२७	५८	आ	६०	०	—	—	ह.	३३	१५	कौ	२२	१८	३३	१	५	५०	१९	३	२५	२४	९	मिथुन	E १३।७ पंचक स. १६।२०
१९	१३	र.	६०	०	—	—	आ	७	०	८	३८	व	३५	४०	ग.	२८	२०	३२	५८	५	५०	१९	२	२६	२५	१०	क २८।५३	प्रदोष व्रत
२०	१३	चं.	१	२०	६	२३	पुन	२४	२५	११	३७	सि	३७	५५	व.	१	२०	३२	५४	५	११	१९	१	२[illegible]	२६	११	कर्क	म. ६।२३ से १९।३२ तक पू. फा. में बुध ९।१९
२१	१४	मं	[illegible]	५	८	४१	पु.	२[illegible]	२७	१४	२६	व्य.	३९	२०	श.	७	५	३२	५[illegible]	५	५	१९	०	२८	२७	१२	कर्क	
२२	३०	[illegible]	[illegible]	१२	१०	४५	श्ले	२७	५५	१७	[illegible]	व.	४१	१५	ना	१२	१२	३२	४७	५	५२	१८	५६	२९	२	०३	सिं १७।२[illegible]	हरियाली अमावस्या

श्रावण कृष्ण ८ भौमे प्रातः स्ट. टा. ५।३० केतकी अहगण ५६०१

श्रावण कृ. ३० बुधे प्रातः स्टें. टा. ५।३० केतकी अहगण ५६०९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	७	४	५	२	०	१०	४
१८	१८	१३	२	९	८	१५	२९	२९
५७	१०	१०	४०	४३	३४	१७	५४	४[illegible]
४३	३	४	४६	५	४१	१	३२	३३
५७	७४३	२०	१०७	७०	६८	१	३	३
२९	३	४	५१	१६	२१	३०	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
अश्ले. १	भरणी २	अनु. ३	मघा ३	उ.फा. ४	आर्द्रा ४	भरणी १	पू.भा. ३	उ.फा. १

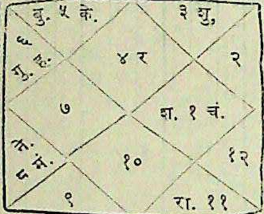

इस मासमें पांच बुधवार उत्तम है। बुधस्य पंचवाराः स्युर्यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजाश्च सुख संपन्ना सुभिक्षं च प्रजायते।।" और ८ अगस्त को शनि मंगलका पूर्णषडष्टकयोग होगा, यह प्रजा को अनेक प्रकार से संत्रस्त करेगा, अतः यहां मिश्रित फल होंगे। शांति-

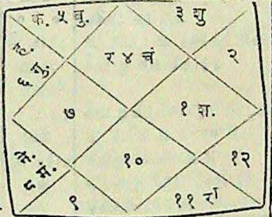

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	७	४	५	२	०	१०	४
२६	२४	१६	१६	११	१७	१५	२९	२९
३८	११	५	१६	७	४४	२७	१६	१६
७	३[illegible]	२९	४६	२९	५५	२०	७	७
५७	७२५	२४	१३८	१०	६१	०	३	३
३८	३६	१२	२७	५४	१२	४८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
अश्ले. ३	अश्ले. ३	अनु. ४	पू.फा. १	हस्त. १	आर्द्रा ४	भरणी १	पू.भा. ३	उ.फा. १

स्थापना के प्रयत्न होंगे। बड़े राष्ट्र भी शांति स्थापना के कार्य में संलग्न दिखाई देंगे। किंतु पूर्ण सफलता नहीं मिलेगी। इस पक्षमें तिथिक्षय श्रेष्ठ और तिथिवृद्धि होना नेष्ट है। जनता में धार्मिक भावना जाग्रत होगी। शासकवर्ग और नेताओं को देशकी आन्तरिक और बाह्यस्थिति पर आगे काबू पाना कठिन होगा। कहीं अतिवृष्टि तो कहीं साधारण वर्षा आवश्यकतानुसार ही होगी। रूई चांदी सोना साबूदाना ब्याज आलू अदरख तिलहन वनस्पति के भाव तेज होंगे। अन्नादि वस्तुओं में घटावड़ी के साथ मंदी होकर तेजी होगी पक्षारम्भ के समय में सुधार होता दिखाई देगा।

आकाश लक्षण—इस पक्षमें कहीं खण्डवृष्टि तो कहीं अतिवृष्टि से हानि होगी। कुछ प्रान्तोंमें अनुकूल वर्षा होगी। पूर्व दक्षिण में अति वृष्टि से हानि अधिक होगी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री संवत् २०२६ शक: १८९१ श्रावण शुक्ल पक्ष ११	दिन मान	स्टैण्डर्ड टाइम सूर्योदय	सूर्यास्त	तारीख हि.मु.	अं.	चंद्र संचार स्टं. टा.	तारीख १४ से २७ अगस्त सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीयमात २३ श्रावण से ५ भाद्र तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनिटों में है।

र. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	श्रावण	ज.अ.	अगस्त	रा. घं. मि.
२३	१	गु.	१६	४०	१२	३३	म.	३[illegible]	४०	१९	२१	प.	४२	५	ब.	१६	४०	३२	४३	५	५३	१८	५८	३०	२९	१४	सिंह
२४	२	शु.	२०	१७	१४	०	पू.	२८	३५	२१	१९	शि	४[illegible]	३२	कौ	२०	१७	३२	३६	५	५३	१८	५७	३१	ज.१	१५	सिं.२७।४५
२५	३	श.	२२	५५	१५	४	उ.	४[illegible]	२७	२२	५३	सि.	४१	३०	ग.	२२	५५	३२	३५	५	५४	१८	५६	भा१	२	१६	कन्या
२६	४	र.	२४	२२	१५	३९	ह.	४५	१०	२३	५८	सा.	३६	५५	वि.	२४	२[illegible]	३२	३१	५	५४	१८	५६	२	३	१७	कन्या
२७	५	चं.	२४	३५	१५	४५	चि.	४६	३७	२४	३४	शु.	२७	१५	बा.	२४	३५	३२	२७	५	५५	१८	५५	३	४	१८	तु.१२।२१
२८	६	मं.	२३	२२	१५	१७	स्वा	४६	४२	२४	३७	शु.	३३	३०	तै.	२३	२[illegible]	३२	२४	५	५६	१८	५४	४	५	१९	तुला
२९	७	बु.	२०	५०	१४	१६	वि.	४[illegible]	२२	२४	५	ब्र.	२८	३७	व.	२०	५[illegible]	३२	२०	५	५६	१८	५३	५	६	२०	वृ.१८।१६
३०	८	गु.	१६	४७	१२	४०	अ.	४[illegible]	३७	२३	०	ऐं.	२२	३२	ब.	१६	४७	३२	१६	५	५७	१८	५२	६	७	२१	वृश्चिक
३१	९	शु.	११	२७	१०	३२	ज्ये	३८	४०	२१	२५	वै.	१५	२७	कौ	११	२७	३२	१२	५	५८	१८	५१	७	८	२२	ध.२१।२५
[illegible]	१०	श.	४	५७	७	५७	मू.	३३	३७	१९	२५	वि.	[illegible]	[illegible]	ग.	४	५७	३२	८	५	५८	[illegible]	५०	८	९	२३	धनु
०	११	श.	५७	३२	२८	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
२	१२	र.	४९	२७	२५	४६	पू.	२७	४७	१७	६	आ.	४९	१५	व.	२३	३०	३२	४	५	५९	१८	४९	९	१०	२४	म.२३।३०
३	१३	चं.	४१	१०	२२	२७	उ.	२१	३५	१४	३७	सौ	३९	४०	कौ.	१५	१८	३२	०	५	५९	१८	४८	१०	११	२५	मकर
४	१४	मं.	३२	५२	१९	६	श्र.	१५	१५	१२	६	शो	३०	७	ग.	७	३	३१	१६	६	०	१८	४[illegible]	११	१२	२६	कुं २२।५६
५	१५	बु.	२५	[illegible]	१६	१	ध.	९	१७	६	४३	अ.	२०	५७	ब.	२५	२	३१	५२	६	०	१८	४६	१२	१३	२७	कुंभ

[illegible]मंगल१५।३२पुनर्वसुमेंशुक्र२८।१७ चन्द्रदर्शन[illegible]
जमादिउलआखिर मु. ९ स्वतंत्रतादिवस भारतीय
र.२७।२१सिंसं. मघासिंह मेंसूर्य१७।३२मु.४५ पुण्यकाल[illegible].१८से
र.१५।३६तकवैनायकी४वरद४ [नं.स्त्री. स्त्री.चं.गु.बाहुल।
नाग ५ ‡संकृष्णषष्ठिशिवासा३सुवर्णगौरीव्र.मधुश्रवा३
उ. फा. में बुध २५।८ वर्षाषष्ठी *३० नक्षत्रारंभ
र. १४। १६ से २५।२८ तक गोस्वामि तुलसीदास ज.
[illegible]जननि१३।३०मेलाश्रीनयनदेवी व चिन्तपूर्णि (हि.प्र.) दुर्गा ८
कन्या में बुध १०।११ [जीर्णगृह प्रवेश मु.
र.२८ २८ से २८.५९ तक पंचकमेंशुक्र१८।२१ [illegible]मेंसूर्य
[illegible] [१३।१२रा.भाद्रपदा.स्कन्दपुत्रदा.पुत्रदा १
[illegible] गुरु २३।४५ [illegible] वैष्णवों का विष्णु पवित्रारोपण
सोमप्रदोषव्र.गृहारंभमु. जीर्णगृहप्रवेशमु. † ११व्रतसमाप्तौ का
प.१६।२८ से २९।३५तक पुष्यमेंशुक्र१४।२८ पंचकप्रा.२२।५३से
श्रावणी १५ उपाकर्म ऋषितर्पण रक्षाबंधन सत्यव्रत अमरनाथ
[(काश्मीर) यात्रागृहारंभ मु. जीर्णगृह प्रवेश मु.

श्रावण शु. ८ गुरौ प्रातः स्टैं. टा. ५।३० कैलकी अहर्गण ५६१७

श्रावण शु. १५ बुधे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केलकी अहर्गण ५६२३

[illegible]
[illegible]

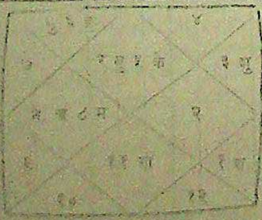

इस पक्षमें गुरु अतिचारी है और २१ अगस्त को शनि वक्री होगा अतः यहा से ४ मास तक रोग युद्ध दुर्भि-क्षादि के मारक प्रभाव भारी [illegible] करना होगा। शनि [illegible] मंडल में उत्कर्ष, पारस्परिक मतभेद अधिक होंगे। इस पक्ष [illegible] कारक है—"श्रावणे शुक्लपक्षे च क्षीणत्वापि तिथिर्भवेत्। [illegible]।" [illegible] असम वर्मा वियतनाम सिक्किम नेपाल [illegible] और काश्मीर पंजाब में स्थिति गंभीर बनेगी। कहीं [illegible] होगा। अनाज गेहूं चावल मूंग बाजरा अलसी सरसों मूंगफली तेल वनस्पति [illegible] महिनों तक शुक्लपक्षको त्रिक्षिप हो रही है यह महंगाई [illegible] कारक है। आकाश लक्षण—[illegible] में अच्छी वर्षा होगी। पूर्वदक्षिण में अतिवृष्टि होगी।

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	७	५	५	३	०	१०	४
१०	४	२२	६	१९	४	१५	२८	२८
६	४	२४	१३	४६	४	२९	३४	३४
५९	७	१	६	१२	१२	७	३५	३५
५७	८०५	२९	७२	११	७०	३०	३	३
५५	४४	५८	३०	४७	४७	३६	१२	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ भाद्रपद कृष्ण पक्ष १२

ता. २८ अग. से ११ सित. सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति ६ से २० भाद्रपद तक। दक्षिणायन उत्तरगोल शरद् ऋतु

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टें. टा. घंटा मिनटों में है।

रा.मि.	तिथि	वार	घटा	पल	घटा	मिनट	नक्षत्र	घटा	पल	घटा	मिनट	योग	घटा	पल	करण	घटा	पल	दिनमान घटा	पल	सूर्योदय घटा	मिनट	सूर्यास्त घटा	मिनट	हि.मु. मार्ग.	ज.व्रा.	अ.	चंद्र संचार रा.घं.मि.	
६	१	गु.	१८	५	१३	१५	श.	४ ५६	० ५०	७ २६	३७ ५६	सु.	१८	२५	कौ	१८	५	३१	४८	६	१	१८	४५	१३	१४	२८	मी २४।१६	गृहारम्भ मु.
७	२	गु.	१२	१५	१०	५६	उ.	५७	५	२८	५२	वृ.	४ ५७	५० ४०	।	१२	१५	३१	४४	६	२	१८	४४	१४	१५	२९	मीन	म. २२।५ से अगस्त उदय १०।७ गृहारंभ मु.
८	३	श.	७	५९	९	१३	रे.	५६	२	२८	२७	ग.	१३	३०	वि	७	५७	३१	४०	६	२	१८	४३	१५	१६	३०	मे.२८।२७	म. ९।१३ तक पू.फा. में सूर्य १३।३० हस्तमें बुध १४।४
९	४	र.	५	२२	८	१२	अ.	५६	४७	२८	४६	वृ.	४९	५२	गा	५	२२	३१	३६	६	३	१८	४२	१६	१७	३१	मेष	[कज्जली ३ श्रीगणेश ४ व्रत चंद्रोदय २०।३३ पंचक स.२८।२७
१०	५	चं.	४	४२	७	५६	भ.	५९	२५	२९	४९	ध्रु.	४८	०	तै	४	४८	३१	३२	६	३	१८	४१	१७	१८	सि १	मेष	चन्द्रषष्ठी सितम्बर मा. ९ ता. ३०
११	६	मं.	५	५५	८	२६	कृ.	६०	०	—	—	व्या	४७	२२	व	५	५५	३१	२७	६	४	१८	४०	१८	१९	२	वृ.१२।१२	म. ८।२६ से २१।२ तक हलधर ६ बलदेव ज.
१२	७	बु.	८	५५	९	३८	कृ.	३	४५	७	३४	ह.	४८	०	व	८	५५	३१	२३	६	४	१८	३८	१९	२०	३	वृष	श्रीकृष्णजन्माष्टमी ज. व्रत स्मार्तों का चन्द्रोदय २३।१ कालीज.
१३	८	गु.	१३	२०	११	२५	रो.	९	३२	९	५४	व.	४९	३२	कौ	१३	२०	३१	१९	६	५	१८	३७	२०	२१	४	मि २३।१४	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णवों का चन्द्रोदय २३।५०
१४	९	शु.	१८	५०	१३	३७	मृ.	१६	२५	१२	३९	सि.	५१	४०	ग	१८	५०	३१	१५	६	५	१८	३६	२१	२२	५	मिथुन	म. २६।५० से, गुग्गा ९ नन्द महोत्सव [गोकुलाष्टमी
१५	१०	श.	२४	५०	१६	२	आ.	२३	४५	१५	३६	व्य.	४	०	वि	२४	५०	३१	११	६	६	१८	३५	२२	२३	६	मिथुन	म. १६।२ तक अश्लेषा में शुक्र २०।२७
१६	११	र.	३०	५५	१८	२८	पुन	३१	१०	१८	३४	व.	५६	१५	बा	३०	५५	३१	७	६	६	१८	३४	२३	२४	७	क.११।५०	अजा ११ व्रत सबका
१७	१२	चं.	३६	३५	२०	४५	पु.	३८	१०	२१	२३	प.	५८	०	कौ	३	४५	३१	३	६	७	१८	३३	२४	२५	८	कर्क	वत्स १२ जैन पर्यूषणारम्भ
१८	१३	मं.	४१	३०	२२	४३	श्ले.	४४	३०	२३	५५	शि.	५९	१०	ग	९	२	३०	५८	६	७	१८	३१	२५	२६	९	सिं २३।५५	म. २२।४३ से भौम प्रदोष व्रत
१९	१४	बु.	४५	२५	२४	१८	म.	४९	४७	२६	३	सि.	५९	३०	वि	१३	२७	३०	५४	६	८	१८	३०	२६	२७	१०	सिंह	म.११।३० तक मूल धनु में मंगल १०।३२ हस्त ३ में गुरु १३।३८
२०	३०	गु.	४८	१३	२५	२५	पू.	५४	०	२७	४४	सा.	५८	५७	च	१६	४९	३०	५०	६	८	१८	२९	२७	२८	११	सिंह	पिठोरी कुशोत्पाटिनी ३० (ॐ हुं फट् मंत्र से) सती पूजन

भाद्र कृ. ८ गुरौ प्रातः स्टें. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५६३१

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	७	५	५	३	०	१०	४
१७	२१	२६	१४	१५	१३	१५	२८	२८
५०	६	३३	५२	२१	३२	२०	९	९
५७	३७	३	२९	५७	३५	५४	१०	१०
५८	७१९	३२	५३	१२	७१	१	३	३
१०	५९	३४	४३	१२	१७	३०	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पू.फा. ४	रोहिणी ४	ज्येष्ठा ३	[illegible] २	[illegible] २	[illegible] ४	भरणी १	पू.भा. ३	उ.फा. १

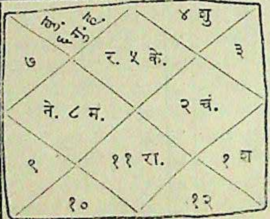

इस मास में पांच गुरुवार और उच्चस्थ बुध के साथ गुरु होने से शान्ति प्रयत्न भी जारी होंगे किंतु पश्चिम देशों में उत्पात बने रहेंगे। "यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धश्च जायते। बड़े राष्ट्रनायकों का विचार विमर्श होगा। भारत में अनुकूल वर्षा एवं विकास कार्योंकी सफलता से साम्पत्तिक स्थिति व उद्योग धंधों में सुधार होगा और कृषि कार्यों में उत्पादन बढ़ेगा। चीन पाकसे संधि चर्चा संभव होगा। रूस अमेरिका फ्रांस अफ्रीका अरबराष्ट्र पूर्वी दक्षिणी भारत पूर्वोत्तर एशिया चीन जापान नेफा बंगाल पंजाब काश्मीरके लिये आगेका समय प्रतिकूल है। प्रायः सभी वस्तुओंके भाव गिरेंगे। अनाज तिल रुई चांदी पाट बारदानामें मंदी होगी। इस पक्षमें जो वस्तु मंदी हो उसका स्टाक करने वाले व्यापारी आगे अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। आकाश लक्षण—पक्षारम्भमें पंजाब हि० प्र० दिल्ली राजस्थान काश्मीर उत्तरप्रदेश में वर्षा अच्छी होगी। कहीं कहीं पक्षान्तमें खंडवृष्टि होगी।

भाद्र कृ. ३० गुरौ प्रातः स्टें. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५६३८

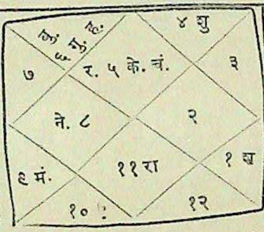

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	८	५	५	३	०	१०	[illegible]
२४	१५	०	१९	१६	२१	१५	२७	२[illegible]
३८	६	२७	५७	४८	५४	८	४६	४[illegible]
४८	१६	५	४०	१३	२१	२२	५४	५[illegible]
५८	७४५	३४	२७	१२	७२	२	३	[illegible]
२४	३४	३३	४५	२९	१	१२	११	१[illegible]
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	[illegible]
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पू.फा. ४	पू.फा. १	[illegible] १	[illegible] ३	[illegible] ३	[illegible] २	भरणी १	पू.भा. ३	[illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ भाद्रपद शुक्ल पक्ष १३

तारीख १२ से २५ सितम्बर १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति २१ भाद्र.से ३ आश्विन तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरदृतु

	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	तारीख हि.	मु.	अं.	चंद्र संचार स्टे. टा. रा.घं.मि.
	१	शु.	५६	४७	२६	४	उ.	५७	२	२८	५८	सु.	५७	२७	कि	१६	०	३०	४६	६	९	१८	२८	२८	२९	१२	क.१०।५
	२	श.	५०	१५	२६	१५	ह.	५९	०	२६	४५	धृ.	५५	५	बा.	२०	१	३०	४२	६	९	१८	२७	२९	३०	१३	कन्या
२३	३	र.	४९	३२	२५	२६	चि.	५६	४७	३०	५	शू.	५१	४७	तै.	१९	५४	३०	३८	६	१०	१८	२५	३०	र. १	१४	तु.१७।५८
२४	४	सो.	४७	४०	२५	१७	स्वा	५६	३९	३०	१	गं.	४७	४०	व.	१८	४०	३०	३४	६	१०	१८	२४	३१	२	१५	तुला
२५	५	मं.	४५	०	२४	११	वि	५८	२५	२९	३३	वृ.	४२	२२	व.	१६	२३	३०	३०	६	११	१८	२३	आ१	३	१६	वृ.२३।४२
२६	६	बु.	४१	२०	२२	४३	अ	५६	२०	२८	४३	वि.	३७	२	तै	१३	१०	३०	२५	६	११	१८	२२	२	४	१७	वृश्चिक
२७	७	गु.	३६	४७	२०	५९	ज्ये.	५३	२५	२७	३४	गौ.	३०	४०	ग.	९	३	३०	२१	६	१२	१८	२१	३	५	१८	ध.२७।३४
२८	८	शु.	३१	३२	१८	४६	मू.	४९	५२	२६	६	प्रा.	२३	४५	वि	४	१०	३०	१७	६	१२	१८	१९	४	६	१९	धनु
२९	९	श.	२५	४२	१६	२९	पू.	४५	४७	२४	३१	सौ.	१६	१७	तै	२५	४२	३०	१३	६	१२	१८	१८	५	७	२०	म.३०।४
३०	१०	र.	२४	२२	१३	५८	उ.	४१	१५	२२	४३	शो.	८	१७	ग.	१९	२२	३०	८	६	१३	१८	१७	६	८	२१	मकर
३१	११	सो.	१२	५२	११	२२	श्र.	३६	३७	२०	५२	अ.	[illegible]	[illegible]	वि.	१२	५२	३०	४	६	१३	१८	१६	७	४	२२	मकर
आ१	१२	मं.	६	१७	८	४५	ध.	३२	०	१४	२	सु.	४४	५	बा.	६	१७	३०	०	६	१४	१८	१४	८	१०	२३	कु.७।५६
०	१३	मं.	६	५७	३०	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
२	१४	बु.	१४	५	२७	५२	श.	२७	४५	१७	२०	शू.	३६	२०	ग.	२७	१	२९	५६	६	१४	१८	१३	९	११	२४	कुम्भ
३	१५	गु.	४८	४७	२५	२०	पू.	२४	७	१५	५४	[illegible]	१६	१०	वि.	२१	३१	२९	५२	६	१५	१८	१२	१०	१२	२५	मी१०।१४

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्ट.टा. घंटा मिनटों में है।
B त्सव चन्द्रास्त२०।२१ जन्मोत्सव श्री१०५ बघाटसोलन नरेश

नक्त व्रत समाप्त A वाहन जम्बुक वर्षा नष्ट साम श्रावणी
उ. फा. में सूर्य ७।१८ चन्द्रदर्शन मु. ३० सं. स्त्री स्त्री सू.सू. A
रज्जब मु.७ हरितालि.३ वराह ज. P गढबोर (मेवाड़)वामन◇
म.१३।२८से२५।१७ तक कलंक ४ पत्थर ४ श्रीगणेश जन्मो B
नं. कन्या में सूर्य १७।२३मु.४५ पुण्यकाल १०।५९ से वक्री बुध
मघा सिंहमें शुक्र २२।५१ [८।३५ ऋषिपंचमी जैन संवत्सरी
म.२०।५५से मुक्ताभरण७ S जलझूलनी मेला श्रीचारभुजा P
म. ७।५२ तक श्रीराधाष्टमी दुर्गा ८ श्री भागवत सप्ताह प्रा.
श्रीचन्द्र ९ (उदासीन संप्रदाय महोत्सव)
न. २४।४० से ◇ १२ ज. श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती
म.११।२२ तक बुधका अस्त पश्चिममें २५।१४ पद्मा ११ व्रत S
सायन तुला में सूर्य १०।३७ दक्षिणगोल में सूर्य प्र. राष्ट्रीय
[आश्विन प्रा. भौम प्रदोष व्र. पंचक प्रा. ७।५६ से
म. २७।५२ से अनन्त १४ व्रत मेला छपार
म. १४।५१ तक गुरु का अस्त पश्चिम में १८।५८ प्रोष्ठपदी
[१५ सत्यव्रत भागवत सप्ताह स.संन्यासियों का चातुर्मास स.

भाद्र. शु. ८ शुक्र प्रातः स्ट. टा. ५।२० कलका अहर्गण ५४६९

[illegible]

इस पक्ष में शनिवार को चंद्रदर्शन और मंगलवार को कन्या संक्रान्ति नेष्ट है। शनि वक्री और गुरु अतिचारी होने से वर्षविरोधक योग बन रहा है—"अतिचार गते जीवे शनौ वक्रत्वमागते। न तत्सर्वानि लोके मनुष्यां धारयिष्यति।" राजनैतिक सामाजिक तनाव

भाद्र. शु. १५ गुरौ प्रातः स्ट. टा. ५।३० कलका अहर्गण ५४७६

र.	च	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
५	१०	८	५	५	४	०	१०	४
८	२७	८	१७	१९	८	१४	२७	२७
१८	१२	५२	२०	४५	४९	२९	२	२
५२	२	४५	३१	४३	१८	२४	२३	२३
५८	८४३	३७	५९	१२	७३	३	३	३
४८	४६	४४	१०	५२	१	२५	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
उ. फा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मघा	[illegible]	[illegible]	उ. फा.

[illegible] कहीं गृह-युद्ध ... तिब्बत, काश्मीर, अरब राष्ट्र, अफ्रिका, वियतनाम, अमेरिका, मलाया और यूरोप में कहीं गृह-[illegible] सैनिक क्रान्ति और प्रकृति-प्रकोप से प्रजा त्रस्त होगी। पूर्वोत्तरीय भारत, नेपाल, [illegible] से शान्ति प्रयत्न भी चालू रहेंगे। किंतु [illegible] का भय होगा। [illegible] पदार्थ जौ, गेहूं, चना, मूंग, बाजरा, ज्वार, चावल, रुई, पाट, बारदाना [illegible] तेल, घृत, वनस्पति, तिलहन, [illegible] सोना, चांदी, शेयर, रस आदि तेज होंगे।

[illegible] वर्षा के [illegible] पूर्व वर्षा होगा।

आकाश लक्षण — इस पक्ष में [illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ आश्विन कृष्ण पक्ष १४

ता. २६ सित. से ११ अक्टू. सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति ४ से १९ आश्विन तक दक्षिणायन गोल, शरदृऋतु।

रा. नि.	तिथि	वार	घटा	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घंटा	पल	दिन मान घंटा	दिन मान पल	स्टैण्डर्ड टाइम सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि आश्विन	मु. रजब	अं. सित.	चन्द्रसंचार स्टें. टा. रा. घं. मि	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्ट. टा. घंटा मिनटों में है। A शस्त्राग्नि विषजलादि से मृतकों और चतुर्दशी का श्राद्ध
४	१	शु	४०	५७	२४	१४	उ.	२१	२७	१४	५०	वृ.	२२	४५	ग्रा.	१६	५७	२९	४७	६	१५	१८	११	११	१३	२६	मीन	हस्त में सूर्य २२।४७ वाहनमूषक वर्षाश्रेष्ठ पितृपक्ष महालय ‡
५	२	श.	४२	१२	२३	६	रे.	१९	५५	१४	१४	ध्रु.	१७	१७	तै.	१३	३५	२९	४३	६	१६	१८	१०	१२	१४	२७	मे.१४।१५	द्वितीयाका श्राद्ध पंचक स. १४।१४
६	३	र.	४१	२	२२	४२	अ.	१९	५०	१४	१३	व्या	१३	२	व.	११	३७	२९	३९	६	१७	१८	८	१३	१५	२८	मेष	म.१०।५५से २२।४२ तकपू.फा.में शुक्र २२।२२ तृतीया श्राद्ध
७	४	चं.	४१	३५	२२	५५	भ.	२१	२७	१४	५२	ह.	१०	५	व.	११	१८	२९	३४	६	१७	१८	७	१४	१६	२९	वृ.२१।८	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २०।१३ चतुर्थीका श्राद्ध
८	५	मं.	४३	५२	२३	५०	कृ.	२४	४०	१६	१०	व.	८	२५	कौ.	१२	४४	२९	३०	६	१८	१८	६	१५	१७	३०	वृष	पंचमीका श्राद्ध ‡ प्रारंभ पड़वाका श्राद्ध हस्त ४ में गुरु ८।९
९	६	बु	४७	४०	२५	२२	रो.	२९	३०	१८	६	सि.	८	५	त.	१५	४६	२९	२६	६	१८	१८	५	१६	१८	अ.१	वृष	म.२५।२२सेपूर्वाषाढ़ामेंमंगल२९।३वक्रीउ.फा.मेंबुध२५।५५पू.†
१०	७	गु.	५२	४७	२७	२५	मृ.	३५	३७	२०	३४	व्य.	८	५७	वि	२०	१४	२९	२२	६	१९	१८	४	१७	१९	२	मि.७।१६	म. १४।२४ तक सप्तमीका श्राद्ध श्री महात्मा गांधी ज.
११	८	शु.	५८	४२	२९	४८	आ.	४२	४०	२३	२३	व.	१०	३७	बा	२५	४५	२९	१७	६	१९	१८	३	१८	२०	३	मिथुन	अष्टमीका श्राद्ध †मा. २ राहु पू.फा. ४ केतु२९।३१ षष्ठीका
१२	९	श.	६०	०	—	—	पुन	५०	५	२६	२२	प.	१२	४२	तै.	३१	४७	२९	१३	६	२०	१८	१	१९	२१	४	क.१६।३७	नवमीका श्राद्ध सौभाग्यवती मातृ९ [श्राद्ध अक्टूबरमा.१०ता.३१
१३	९	र.	४	५२	८	१७	पु.	५७	२२	२९	१७	शि	१४	५५	ग.	४	५२	२९	९	६	२०	१८	०	२०	२२	५	कर्क	म.२१।२७से दशमीका श्राद्ध ()१०।३८उपरांत
१४	१०	चं.	१०	४२	१०	३८	श्ले.	६०	०	—	—	सि	१६	५०	वि	१०	४२	२९	५	६	२१	१७	५९	२१	२३	६	कर्क	म. १०।३८ तक बुधका उदयपूर्व में १६।५२ एकादशीका श्राद्ध()
१५	११	मं.	१५	४७	१२	४०	श्ले.	३	५२	७	५४	सा	१७	५७	बा	१५	४७	२९	१	६	२१	१७	५८	२२	२४	७	सिं.७।५४	इन्दिरा ११ व्रत सबका एकादशीका श्राद्ध १२।४० तक
१६	१२	बु.	१९	३२	१४	११	म.	९	१५	१०	४	शु.	१८	२२	तै.	१९	३२	२८	५६	६	२२	१७	५७	२३	२५	८	सिंह.	मार्गी बुध २५।२० प्रदोषव्रत संन्यासियों और द्वादशीका श्राद्ध
१७	१३	गु.	२१	५०	१५	७	पू.	१३	१५	११	४०	शु.	१७	३७	व.	२१	५०	२८	५२	६	२२	१७	५६	२४	२६	९	कं.१७।५९	म.१५।७से२७।१६ तकउ.फा.में शुक्र २१।३७ त्रयोदशीका श्राद्ध
१८	१४	शु.	२२	३७	१५	२६	उ.	१५	४५	१२	४१	ब्र.	१५	३५	श.	२२	३७	२८	४७	६	२३	१७	५५	२५	२७	१०	कन्या	चित्रामें सूर्य ११।४७ सं. स्त्री.स्त्री. सू. सू. वाहनखरवर्षानिष्ट A
१९	३०	श.	२१	२२	१५	९	ह.	१६	४५	१३	६	ऐं.	१२	१५	ना.	२१	५२	२८	४३	६	२४	१७	५४	२६	२८	११	तु.२५।६	चित्रा१मेंगुरु १८।१६ सर्वपितृ ३० महालयश्राद्ध पितृपक्षसमाप्त

आश्विन कृ. ८ शुक्रे प्रातः स्टे. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५६६०

र.	चं.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	८	५	५	४	०	१०	४
१६	११	१३	८	२१	१८	१३	२६	२६
१०	६	५९	५५	२९	३५	५९	३६	३६
१०	५५	४४	१६	२	१४	५६	५८	५८
५९	७१३	३१	४६	१२	७३	३	३	३
६	५४	१०	३१	५९	३३	५६	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
[illegible]	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	२ आर्द्रा	१ पू.फा.	४ उ.फा.	४ हस्त	३ पू.फा.	१ भर.	३ पू.भा.	४ पू.फा.

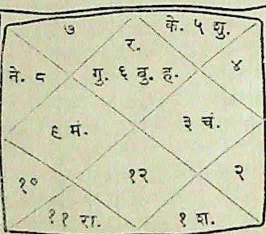

इस मासम कृष्णपक्षकी तिथिवृद्धि और शुक्लपक्ष की तिथिक्षय तथा अमावस्या पूर्णिमा शनिवार की नेष्टफल कारक हैं। अमावस्याको पंचग्रही योग भी बना है। फल— एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥"

आश्विन कृ. ३० शनौ प्रातः स्टे. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५६६८

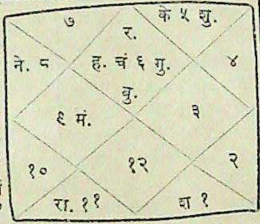

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के
५	५	८	५	५	४	०	१०	४
२४	१९	१९	७	२३	२८	१३	२६	२६
३	८	१७	०	१३	५५	२६	११	११
५७	२५	३१	१८	४	७	२७	३१	३१
५९	७९५	४०	३१	१३	७३	४	३	३
२३	३२	२५	४३	१	५८	२५	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	अ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
१ चित्रा	३ पुष्य	३ पू.षा.	४ उ.फा.	४ चित्रा	१ उ.फा.	१ भर.	३ पू.भा.	४ पू.फा.

राष्ट्रोंमें परस्पर संघर्ष सीमाविवाद उग्र बनेगा। सुरक्षा व्यय एवं आर्थिक संकट बढ़ेगा। मंगल शुक्र शनि का त्रिकोण योग सहायता करता रहेगा। बिगड़ते हुये कामों में रोक-थाम करेगा। शांति वार्ता संधिचर्चा पर जोर दिया जायगा। सभी राष्ट्र परस्पर सशंक रहते हुए परस्पर शांति समझौतोंमें संलग्न दिखाई देंगे, किन्तु मानसिक विचार शुद्ध नहीं हो पायेंगे, अतः कुचक्र वृद्धि संभव है। अन्न रस तिलहन धातु रुई आदि सभी पदार्थ तेजी पर चलेंगे। मंदी में संग्रह किया माल आगे चलकर अच्छा लाभ देगा। आकाश लक्षण—२६-२७ सितम्बर और ४ अक्टूबरके आस-पास बादल वर्षाके योग हैं। वायुकी अधिकताके साथ छखंवृष्टि होगी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

तारीख १२ से २५ अक्टूबर सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ आश्विन शुक्ल पक्ष १५	दिन मान	स्टैंडर्ड टाइम सूर्योदय / सुर्यास्त	तारीख हि. मु. / अ.	चंद्र संचार स्टें. टा.	१२ से २५ अक्टूबर सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति २० आश्विन से ३ कार्तिक तक। दक्षिणायनगोल, शरद् ऋतु

दिनांक	तिथि	वार	घटा	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटा	पल	घंटा	मिनट	योग	घटा	पल	करण	घंटा	पल	घंटा	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	आश्वि.	रजब	अक्टू.	रा.घं.मि.
[illegible]	१	[illegible]	१६	४७	१४	१९	च	१६	२५	१२	५८	वै.	८	७	व.	१६	४७	२८	४०	६	२४	१७	५३	२७	२९	१२	तुला
[illegible]	२	चं.	१६	३२	१३	२	स्वा	१४	५७	१२	२४	वि.	२६	४७	तै.	१६	३२	२८	३६	६	२५	१७	५२	२८	३०	१३	वृ.२९।४५
२२	३	मं.	१२	२९	११	२	वि	१२	४०	११	२९	आ.	५०	१५	ग.	१२	२७	२८	३१	६	२५	१७	५०	२९	सा१	१४	वृश्चिक
२३	४	बु.	७	४०	९	३०	अ.	९	४२	१०	१९	सौ.	४३	१२	वि.	७	४०	२८	२७	६	२६	१७	४९	३०	२	१५	वृश्चिक
२४	५	गु.	२	३०	७	२६	ज्ये.	६	२०	८	१८	शो.	३६	०	श.	२	३०	२८	२३	६	२६	१७	४८	का१	३	१६	ध.८।५८
०	६	[illegible]	१७	५	२९	१७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
२५	७	शु.	५१	३७	२७	६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अ.	२८	४०	ग.	२४	२१	२८	१९	६	२७	१७	४७	२	४	१७	धनुः
२६	८	श.	४६	१५	२४	१७	उ.	५५	३०	२८	४०	सु.	२१	२०	वि	१८	५६	२८	१५	६	२८	१७	४६	३	५	१८	म.११।४३
२७	९	र.	४१	०	२२	[illegible]	श्र.	५२	७	२७	१६	धृ.	१४	७	गा.	१३	३७	२८	१०	६	२८	१७	४५	४	६	१९	म र
२८	१०	सो.	३६	२	२०	[illegible]	ध.	४९	२	२६	६	शू.	७	५	तै.	८	३१	२८	६	६	२९	१७	४४	५	७	२०	कुं १४।४२
२९	११	मं.	३१	२९	१९	४	श.	४६	२०	२५	१	गं.	५३	५०	ग.	३	४५	२८	२	६	२९	१७	४३	६	८	२१	कुंभ
३०	१२	बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पू.	४४	५	२४	८	वृ.	४७	४५	वा.	२७	२०	२७	५८	६	३०	१७	४२	७	९	२२	मी.१८।२०
का१	१३	गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ.	४२	३०	२३	११	ध्रु.	४२	१५	तै.	२३	४७	२७	५४	६	३१	१७	४१	८	१०	२३	मीन
२	१४	शु.	२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रे.	४१	४५	२३	१३	हृ.	३७	२२	व.	२१	२	२७	५०	६	३१	१७	४०	९	११	२४	मे.२३।१३
३	१५	श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अ.	[illegible]	०	२३	२०	व.	३३	२०	ब.	१९	१५	२७	४६	६	३२	१७	३९	१०	१२	२५	मेष

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टें. टा. घंटा मिनटों में है।

कन्या में शुक्र १२।१७ व. अश्वि. ४ में शनि १६।२३ शारदीय चंद्रदर्शन मु. ४५ [नवरात्रारंभ घटस्थापन मातामह श्राद्ध म. २२।२७ से हस्त में बुध २९।४३ सावान मु. ८ म. ९।३० तक ललिता ५ *आवाहन
सं. तुला में सूर्य२९।१३मु.३०पुण्यकाल अगलेदिन श्रीसरस्वती* षष्ठी क्षय भद्रकाली ज. जैन आयंबिलओली प्रा. श्रीसरस्वती म. २७।६ से श्रीसरस्वती पूजन [बलिदान म. १४।१ तक दुर्गा ८ महाष्टमी मेला ज्वालामुखी तारादेवी† श्रीसरस्वती विसर्जन, महानवमी, नवरात्र स. ‡प्रा. १४।४२ हस्तमें शुक्र १४।२३ विजयादशमी दशहरा रावणदाह पंचक‡ म. ७।५९ से १९।४ तक उत्तराषाढा में मंगल २४।७ गुरु का प्रदोष व्रत [उदय पूर्व में२४।५८पापांकुशा११व्रत भरतमिलाप स्वाती में सूर्य २०।१० सा. वृश्चि. में सूर्य १९।४२ रा. कार्तिक म.१४।५६से२६।३५तक चित्रामें बुध२१।१५सत्यव्र.शरद्१५A कार्ति.स्ना.प्रा आकाशदीपदा.श्रीवाल्मिकीज. जैनआयं.ओलीस.
A कोजागरी १५ गुरुवाल्य स. २४।५८ पंचक स. २३।१३

आश्विन शु. ८ शनी प्रातः स्टे. टा. ५।२० कलकी अहर्गण ५६७५

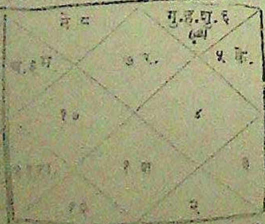

पक्षारम्भ में नीच और वक्री शनि का सू. बु. गु. शु. हृ. से षडष्टक योग है, १७ अक्टूबर से सूर्य नीच का नीचस्थ शनि से प्रतियोग करेगा। अतः यहाँ कम्युनिष्ट देशों की हरकतें विश्व को संत्रस्त करेंगी। और कम्युनिष्ट दलों को भारी खतरे का [illegible] विकट समस्याएं खड़ी होंगी। समय से पहले ही सामना करना पड़ेगा। राज्य और प्रजा के सामने [illegible] राजनेताओं के लिये यह समय अग्निपरीक्षा का है। [illegible] बुद्धिमानी होगी। [illegible] के घर में परस्पर पूर्ण दृष्टि से होगा। यहाँ चीन- [illegible] धनजन की भारी क्षति होगा। इस समय विश्व [illegible] सीमाओं पर सैन्य सम्बंध बढ़कर [illegible] घटाबढ़ी चले, कुछ सौदों पर प्रतिबंध लगें [illegible] खाद्य पदार्थ एवं व्यापारिक वस्तुओं से [illegible] वायुवेग के साथ वर्षा होगी, जिससे खेतियों में हानि होगी और प्रजा में रोग [illegible] होंगे। [illegible] व्यापारी वर्ग में घबराहट होगी। [illegible] शीत बढ़ने लगेगी।

आश्विन शु. १५ शनी प्रातः स्टे. टा. ५।२० कलकी अहर्गण ५६८२

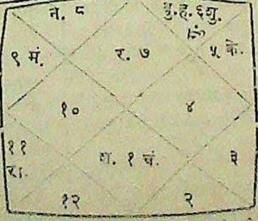

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	८	५	५	५	०	१०	४
७	३	२८	२२	२६	१५	१२	२५	२५
५८	२९	५५	५२	१४	४४	२१	२६	२६
२	१३	०	५५	३६	४०	[illegible]	[illegible]	५६
५९	७९२	४२	९६	१२	७४	४	३	३
४८	४४	६	५९	५२	३३	४८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	घ	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	ज	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्री संवत् २०२६ शक: १८९१ कातिक कृष्ण पक्ष १६

चंद्र संचार तारीख २६ अक्टूबर से ९नवम्बर सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीय-मिति ४ से १८ कातिक तक। दक्षिणायन गोल, हेमन्तऋतु

ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीख हि. कार्ति.	तारीख मु. शाबान	तारीख अं. अक्टू.	रा.घं.मि. (स्टैं. टा.)	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों मेंहै।
४	१	र.	१८	३५	१३	५८	भ.	४३	२५	२३	५४	स.	३०	१२	कौ	१८	३५	२७	४२	६	३२	१७	३८	११	१३	२६	वृ.३०।१८	मकर म मगल १८।३१ चित्रा २ म गुरु २८।४७ बुधकाअस्त
५	२	च.	१९	१७	१४	१६	कृ.	४६	१०	२५	१	व्य	२८	७	ग.	१९	१७	२७	३८	६	३३	१७	३८	१२	१४	२७	वृष	म.२६।४२ से सबरात महोत्सव यवनोंका [पूर्वमें २३।२०
६	३	मं.	२१	२२	१५	७	रो.	५०	२०	२६	४२	व.	२६	७	वि.	२१	२२	२७	३५	६	३४	१७	३७	१३	१५	२८	वृष	म. १५।७ तक तुला में बुध २३।२१ श्री गणेश ४ व्रत (करक
७	४	बु.	२५	०	१६	३४	मृ.	५५	५०	२८	५४	प.	२७	१५	बा.	२५	०	२७	३१	६	३[illegible]	१७	३६	१४	१६	२९	नि १५।४४	[करवा चौथ) चन्द्रोदय १९।३३
८	५	गु.	२१	५०	१८	३१	आ.	६०	०	—	—	शि	२८	२०	तै.	२९	५०	२७	२७	६	३५	१७	३५	१५	१७	३०	मिथुन	
९	६	शु.	३५	४२	२०	५३	आ.	२	२५	७	३४	सि	३०	७	ग.	२	४६	२७	२४	६	३६	१७	३४	१६	१८	३१	क.२७।४६	म. २०।५३ से चित्रा में शुक्र ७।५३
१०	७	श.	४२	५	२३	२६	पुन	९	४७	१०	३१	सा	३२	२२	वि.	८	५४	२७	२०	६	३६	१७	३३	१७	१९	न.१	कर्क	म. १०।१० तक स्वाती में बुध २३।५४ नवम्बर मा. ११ ता.३०
११	८	र.	४८	२२	२५	५८	पु.	१७	२०	१३	२३	शु.	३४	३५	बा	१५	१३	२७	१६	६	३७	१७	३[illegible]	१८	२०	२	कर्क	अहोई ८
१२	९	चं.	५३	५२	२८	११	श्ले	२४	२५	१६	२४	शु.	३६	२२	तै.	२१	९	२७	१२	६	३८	१७	३२	१९	२१	३	सिं१६।२४	वैधृति १७।३९ से २२।३० तक
१३	१०	मं.	५८	७	२९	५४	म.	३०	३२	१८	५२	ब्र.	३७	१५	ग.	२६	०	२७	९	६	३९	१७	३१	२०	२२	४	सिंह	म. १७।२ से २९।५४ तक
१४	११	बु.	६०	०	—	—	पू.	३५	१२	२०	४५	ऐं.	३६	५७	व.	२९	२३	२७	५	६	३९	१७	३०	२१	२३	५	क.२७।५	विशाखा में सूर्य ३०।१८ तुला में शुक्र १६।७
१५	११	गु.	०	४०	६	१६	उ.	३८	२	२१	५३	वै	३५	१५	बा.	०	४०	२७	१	६	४०	१७	२९	२२	२४	६	कन्या	रमा ११ व्रत गोवत्स १२ प्रदोषकाल में
१६	१२	शु.	१	१७	७	१२	ह.	३९	०	२२	१७	वि.	३२	०	तै.	१	१७	२६	५७	६	४१	१७	२८	२३	२५	७	कन्या	म. ३०।४१ से प्रदोषव्रत धनतेरस यमदीपदान श्रीधन्वन्तरी ज.
०	१३	शु.	५९	५८	३०	४१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	त्रयोदशीका क्षय A श्रीमहालक्ष्मी पूजन कालरात्रि
१७	१४	श.	५६	५७	२९	२९	चि	३८	१०	२१	५८	प्री.	२७	१७	वि.	२८	२८	२६	५३	६	४२	१७	२८	२४	२६	८	तु.१०।१३	म. १८।५ तक नरकहरा रूप १४ श्री हनुमान् जयन्ती
१८	३०	र.	५२	२५	२७	४१	स्वा	३५	४५	२१	१	आ	२१	१५	च.	२४	४१	२६	५०	६	४३	१७	२७	२५	२७	९	तुला	श्रवण में मंगल १८।४० विशाखा में बुध २६।३८ दीपमाला A

कातिक कृ. ८ रवो प्रातः स्ट. टा. ५।३० कतकी अहर्गण ५६६०

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	९	६	५	५	०	१०	४
२५	१२	४	७	२७	२५	११	२५	२५
५७	४१	३८	३	५७	४२	४२	१	१
२८	९	२०	१५	१	७	४४	३३	३३
६०	७१२	४२	९९	१२	७४	४	३	३
५	२५	४९	३४	४२	५१	४८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
[illegible]	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	पुष्य	उ.षा.	स्वाती	चित्रा	चित्रा	अश्वि.	पू.भा.	पू.फा.

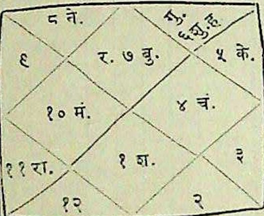

इस पक्षमें नाच राशि के शनिका नीच राशिके सूर्य से प्रतियोग है और अमावस्याको चतुर्ग्रही योग बनकर शनि मंगलसे केन्द्रयोग होगा। यह ससारके लिये अनिष्ट सूचक है। पूर्वोत्तर भारतमें उत्पात अराजकता हिंसा व हड़ताल आदिसे अशांति फैलेगी। किसी नेताकी मृत्यु होगी। पंजाब बगाल काश्मीर पूर्वी पाकिस्तान बर्मा नेपालमें अशांति अधिक होगी। मध्य यूरोप अरब राष्ट्रों की शांति भंग होगी। गुरु मंगल का त्रिकोणयोग होनेसे यहां शांति स्थापना के प्रयत्न भी होंगे। यहां दीपावली और अमावस्या रविवारी विश्वमें उत्पात रोग युद्धादि से हानि-[illegible]रक है। 'कार्तिकस्य त्वमावस्या रविवारेण संयुता। शनि भौमयुतावापि सर्वलोक भयावहा॥" रवियुंद्धाय भूभृताम्। गुरु शुक्रका युद्ध (अंशसाम्ययोग) नेष्ट है, गृहयुद्ध तथा [illegible]ी से खेतीमें हानि होगी। व्यापारिक वस्तुओंमें घटा बढ़ी अधिक होगी। अन्न, धान्य, तेल, तिलहन, रसकस किराना, गर्ममसाला, मिर्च, हलदी सुवर्ण और शेयर बाजारमें [illegible]टा बढ़ी चलेगी। आकाश लक्षण—पक्षके मध्यमें पंजाब, दिल्ली, उ०प्र० राजस्थान हिमाचल काश्मीर, नेपाल में यत्रतत्र बादल वर्षा होगी। कहीं ओले भी पड़ेंगे।

कातिक कृ. ३० रवो प्रातः स्ट. टा. ५।३० कतकी अहर्गण ५६६७

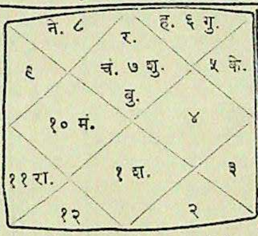

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	९	६	५	६	०	१०	४
२२	१०	९	१८	२९	४	११	२४	२४
५८	५८	३५	३४	२५	२६	९	३९	३९
४२	३१	४६	५	९	३८	२७	१८	१८
६०	८३९	४३	९७	१२	७५	४	३	३
१९	३७	२२	३१	२७	२	४०	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
विशा.	स्वाती	उ.षा.	स्वाती	चित्रा	चित्रा	अश्वि.	पू.भा.	पू.फा.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

श्री संवत् २०२६ शक: १८९१ कातिक शुक्ल पक्ष १७ ... से २ नवम्बर सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीयमिति

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ कार्तिक [illegible] दिन मान | स्टण्डर्ड टाइम सूर्योदय सूर्यास्त | तारीख | चन्द्र संचार | तारीख १० से २ नवम्बर सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीयमान १९ कार्ति. से २ मार्ग. तक। दक्षिणायन गोल, हेमन्तऋतु।

	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	कार्ति.	माह	नव.	रा.घं.मि.
१९	१	च.	४६	३२	२५	२५	वि.	३२	७	१९	३५	प्री	१४	१०	किं	१९	३२	२९	४६	६	४४	१७	२६	२६	२८	१०	वृ.१३।५९
२०	२	मं.	४०	१७	२२	५१	अ.	२७	४०	१७	४८	सौ	५७	५४	बा	१३	३०	२६	४३	६	४५	१७	२६	२७	२९	११	वृश्चिक
२१	३	बु.	३३	२५	२०	५	ज्ये	२२	४०	१५	४६	सु.	४६	१९	तै.	६	५१	२६	४०	६	४५	१७	२५	२८	१	१२	ध.१५।४६
२२	४	गु.	२६	३२	१७	२३	मू.	१९	३५	१३	४८	धृ.	४०	४०	वि	२६	३२	२६	३६	६	४६	१७	२४	२९	२	१३	धनु.
२३	५	शु.	१९	१५	१४	४५	पू.	१२	४२	११	५२	शू.	३२	२२	बा	१६	५५	२६	३३	६	४७	१७	२४	३०	३	१४	म.१७।२५
२४	६	श.	१३	५२	१२	२०	.	८	२२	१०	८	गं.	२४	३५	तै.	१३	५२	२६	३०	६	४८	१७	२३	मा१	४	१५	मकर
२५	७	र.	८	२७	१०	११	श्र.	४	४२	८	४१	वृ.	१७	२०	व.	८	२७	२६	२७	६	४८	१७	२३	२	५	१६	कुं २०।४
२६	८	चं.	३	१५	८	२३	ध.	५९	४७	३०	३४	ध्रु.	१०	४२	ब.	३	५०	२६	२४	६	४९	१७	२२	३	६	१७	कुंभ
२७	९	मं.	०	१२	६	५४	ध.	५८	३५	३०	१६	व्या	५९	५५	गी	०	१२	२६	२१	६	५०	१७	२२	४	७	१८	मी.२४।२१
०	१०	मं.	५९	२२	२९	४७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
२८	११	बु.	५५	२२	२९	१	उ.	५८	१२	३०	८	व.	५५	५	भ.	२६	२२	२६	१९	६	५१	१७	२२	५	८	१९	मीन
२९	१२	गु.	५४	१५	२८	३	रे.	५८	४२	३०	२०	सि	५१	१२	ब.	२४	४८	२६	१६	६	५१	१७	२१	६	९	२०	मे. ३०।२०
३०	१३	शु.	५३	१७	२८	२९	अ.	५६	५७	३०	५१	व्य	४७	४७	कौ	२४	६	२६	१३	६	५२	१७	२१	७	१०	२१	मेष
मा.	१४	श.	५४	३५	२८	४३	भ.	६०	०			व	४५	२५	ग.	२४	१६	२६	११	६	५३	१७	२०	८	११	२२	मेष
२	१५	र.	५६	१२	२९	२३	भ.	२	७	७	४५	[illegible]	४३	३५	वि	२५	२४	२६	८	६	५४	१७	२०	९	१२	२३	वृ.१४।२

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टें. टा. घंटा मिनटों में है।

स्वातीमें शुक्र२४।६ अक्टूबर मा.१०ता.३१गोवर्द्धन पू बलि पू.
चित्रा३तुलामें गुरु२४।५२चन्द्रदर्शनमु.३०यम२भैयादूज टिक्का२
म. ३०।४५ से रमजान मु. ६ रोजा प्रा. [विश्वकर्मा ज.
म. १७।२३ तक *स.विवाहमु.ल.९गृहारंभमु जीर्णगृहप्र.मु.
गण्डव ५ ज्ञानपंचमी जन्मदिन श्रीजवाहरलाल नेहरू(बालदिवस)
सं. वृश्चिकमें सूर्य२८।५५मु.३०पुण्यकाल अगलेदिन जीर्णगृहप्र.मु.
म. १०।११ से२१।१७ तक वृश्चिकमें बुध ८।०पंचकप्रा. २०।४से
गोपाष्टमी ला.लाजपतराय निधन दिवस Sसत्यव्र तत्रिपुरोत्सव
अनुराधा में बुध १०।२५ आमला ९ कुष्मांड ९ ‡ प्रा.
दशमीका क्षय †स्मा.तुलसी विवाहमी मपंचक चालुर्मासव्र.*
म. १७।२३ से२९।० तक अनुराधामें सूर्य१२।१५ प्रबोधनी११व्र.†
प्रबोधनी११व्र.वैष्णवोंकापंचकस.३०।२०विवा.मु.दि.ल.९गोधू९
विशाखामें शुक्र१५।३७प्रदोषव्रत [गृहारंभमु.जीर्णगृहप्र.मु.
म.२८।४३से सा.धनु. में सूर्य१७।२राष्ट्रीय अग्रहायण (मार्गशीर्ष)
म.१७।३तक कार्तिक१५मेलापुष्करराजरेणुकातीर्थगढगंगामीष्म
[पंचककार्तिकस्ना.स. जगद्गुरुनिम्बार्काचार्यज.श्रीगुरुनानकज.S

कार्तिक शु. १५ रवौ प्रातः स्टें. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७११

कार्तिक शु. ८ चन्द्रे प्रातः स्टें. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७०४

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	९	७	६	६	०	१०	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

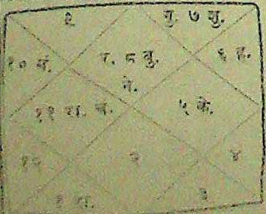

इस पक्ष में मंगलवार को चन्द्रदर्शन तथा शनिवार की संक्रांति एवं पूर्णिमा रविवारी नेष्ट हैं और गुरु शुक्र की युति होकर शनिसे प्रतियोग तथा मंगलसे केन्द्रयोग बना है और शनि मंगलकी चाल भी खराब है। अतः अन्तर्राष्ट्रीय स्थितिमें तनाव रहेगा। साम्राज्यवादी व [illegible] उत्पात होंगे। कहीं गृहयुद्धसीमा संघर्षसे भारी [illegible] यह मास चिन्ताकारक है। दुर्भिक्ष भूकंप महामारी आदि रोग, गृहयुद्ध [illegible] होगा। [illegible] पंजाब, काश्मीर, पश्चिमोत्तर राजस्थान, पश्चिमी गुजरात, बंगाल [illegible] होगा। [illegible] तथा राजनैतिक स्थिति अशांत बनेगी। मंत्रिमंडलों में उलटफेर होगा। रूस, अमेरिका, [illegible] शांति [illegible] असम की सीमा पर [illegible] होंगे। [illegible] गेहूं, चावल, जौ, चना, गुड़, खांड, अलसी, सरसों, मूंगफली, तिल, तेल, वनस्पति, घृत, मूंग बाजरा, ज्वार, जीरा, हल्दी, लकड़ी, सीसा, इमारती सामान, [illegible] बिजली के पंखे, [illegible] आदिमें भारी तेजी होगी किंतु अन्नमें मंदी बनी रहेगी। [illegible] दक्षिण भारत एवं पहाड़ोंमें साधारण वर्षा होगी।

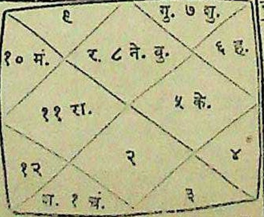

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	०	६	७	६	६	०	१०	४
७	२५	१६	१०	२	२१	१०	२३	२३
५	२७	४८	५२	१५	५८	८	५४	५४
१७	४३	३०	४८	१०	४६	४	४७	४७
६०	७६०	४४	९३	११	७५	३	३	३
३८	५५	६	५३	४५	१६	५८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—उत्तर-प्रदेश हिमाचल, बंगाल, असममें [illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १८	दिन मान	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय	सूर्यास्त	तारीखें हि.	मु.	अं.	चन्द्रदर्शन स्टें. टा.	तारीख २४ नव. से ९ दिस. सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति ३ से १८ मार्गशीर्ष तक। दक्षिणायन गोल, हेमन्त ऋतु

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	मा.	मुस्ल. मा.	नव.	रा. चं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टें टा. घंटा मिनटों में है।
३	१	न.	५६	०	३०	३०	कृ.	५	२०	६	२	शि.	४२	४२	वा	२७	३६	२६	५	६	५४	१७	२०	१०	१३	२४	वृष	वक्री अश्वि. ३ में शनि २८।२३ विवाह मु.ल.६ गृहारंभ मु.
४	२	नं.	६०	०	—	—	रो	[illegible]	३२	१०	४४	सि.	४२	३९	तै.	३०	५२	२६	२	६	५५	१७	१६	११	१४	२५	मि,२३।४५	विवाह मु. ल. ६ स्टें. टा. २६।३७ तक
५	२	भु.	२	४७	८	३	मृ.	१४	५०	१२	५२	सा.	४३	२२	ग.	२	४०	२६	०	६	५६	१७	१६	१२	१५	२६	मिथुन	म. २२।४ से ज्येष्ठा में बुध २२।२६ गृहारंभ मु.
६	३	गु.	९	४[illegible]	१८	४	आ	२१	१०	१५	२५	शु.	४४	५२	वि	९	४७	२५	५८	६	५७	१७	१६	१३	१६	२७	मिथुन	म. १०।४ तक धनिष्ठा में मंगल २४।१८ श्रीगणेश ४ व्रत
७	४	शु.	१३	४[illegible]	[illegible]	२७	पु.	२८	२२	१८	१६	शु.	४६	५७	वा	१३	४[illegible]	२५	५५	६	५८	१७	१६	१४	१७	२८	क. ११।३४	चित्रा ४ में गुरु १६।३७ [चन्द्रोदय २०।२
८	५	श.	२०	[illegible]	[illegible]	५	पु.	३६	५	२१	२४	ब्र.	४६	२०	तै.	२०	१९	२५	५३	६	५८	१७	१८	१५	१८	२९	कर्क	वृश्चिक में शुक्र १४।५०
९	६	र.	२६	५५	१७	४५	श्ले	४३	४२	२४	२८	ऐं.	५१	३७	व.	२६	५५	२५	५१	६	५९	१७	१६	१६	१६	३०	सिं,२४।२८	म. १७।४५ से ३०।५९ तक
१०	७	चं.	३३	५	२०	१४	म.	५०	४५	२७	१८	वै.	५३	२०	व.	३३	५	२५	४६	७	०	१७	१९	१७	२०	दि.१	सिंह	अनुराधा में शुक्र ३०।३२ दिसम्बर मा. १२ ता. ३१
११	८	मं.	३८	१०	२२	१७	पू.	५६	३५	२९	३६	वि.	५४	५	बा	५	३७	२५	४७	७	१	१७	१६	१८	२१	२	सिंह	ज्येष्ठा में सूर्य १६।३७ श्रीमहाकाल भैरव जयन्ती
१२	९	बु.	४१	३२	२३	३८	उ.	६०	०	—	—	प्री.	५३	३२	तै.	९	५१	२५	४५	७	१	१७	१९	१९	२२	३	कं. १२।१८	पुभा १ में राहु पू. फा. ३ में केतु २८।०
१३	१०	गु.	४२	५७	२४	१३	उ.	०	४२	७	१९	आ	५१	२२	व.	१२	१५	२५	४४	७	२	१७	१९	२०	२३	४	कन्या	म. ११।५५से२४।१३ तक विवाह मु.दि.ल.६ जीर्णगृह प्र. मु.
१४	११	शु.	४२	१०	२३	५५	ह.	२	५०	८	११	सौ.	४७	३२	व.	१२	३३	२८	४२	७	३	१७	२०	२१	२४	५	तु.२०।१७	मूला धनु में बुध १२।४६ उत्पन्ना ११ व्रत सबका
१५	१२	श.	३६	१०	२२	४४	चि	२	४५	८	१०	शो	४२	०	कौ.	१०	४०	२५	४०	७	४	१७	२०	२२	२५	६	तुला	कुंभ में मंगल २४।२१ मल्ल १२ विवाह मु.दि.ल.६रात्रौ ६
१६	१३	र.	३४	२०	२९	४८	स्वा	०/५६	४५/५७	७/२६	२/२६	अ.	३४	५७	ग.	६	४७	२५	३६	७	४	१७	२०	२३	२६	७	वृ.२४।१७	म. २०।४८ से, प्रदोष व्रत
१७	१४	चं.	२७	५२	१८	१४	अ.	५१	४२	२७	४६	धु.	२६	३९	वि.	१	६	२५	३७	७	५	१७	२०	२४	२७	८	वृश्चिक	म. ७।३१ तक, मेला पुरमंडल देविका स्नान(जम्बू काश्मीर)
१८	३०	मं.	२०	१२	१५	११	ज्ये.	४५	३२	२५	१६	वृ.	१९	२०	ना.	२०	१२	२५	३६	७	६	१७	२०	२५	२८	९	ध. २५।१६	अमापुण्य

मार्ग. कृ. ८ भौमे प्रातः स्टें. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७२०

र.	च.	म.	बु.	गु	शु.	श.	रा.	क.
७	४	९	७	६	७	०	१०	४
१६	१४	२६	२४	३	३	९	२३	२३
११	२५	५३	२७	५८	१६	३४	२६	२६
५०	३६	२५	२	३३	४६	४७	९	९
६०	७२१	४४	९२	११	७५	३	३	३
५१	१६	२७	५८	९	२४	१६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
४	१	१	३	४	४	३	१	४
अनु.	पू.फा.	कृत्ति	ज्येष्ठा	चित्रा	विशाखा	अश्वि	पू.भा.	पू.फा.

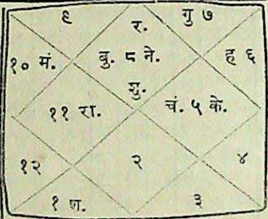

इस मास में पांच सोमवार पांच मंगलवार मध्यम हैं "यत्र मासे महीसूनो जयिन्ते पंच वासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत् ॥ ६ दिसम्बर से मंगल राहु का एक राशि में योग चालू होगा। और यहाँ से आगे तीन मास तक शुक्ल पक्ष की तिथि का

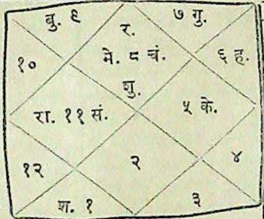

मार्ग. कृ. ३० भौमे प्रातः स्टें. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७२७

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	कि.
७	७	१०	८	६	७	०	१०	[illegible]
२३	१७	१	५	५	१२	९	२३	२३
१८	४३	३८	४२	१४	४	१३	३	[illegible]
१५	११	४७	२२	५६	४६	२५	५३	५३
१	८९२	४४	९२	१०	७५	२	३	[illegible]
६०	५०	३९	१३	३५	२८	४१	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
२	१	३	२	४	३	३	१	३
ज्येष्ठा	ज्येष्ठा	कृत्ति	मूल.	चित्रा	अनु.	अश्वि	पू.भा.	पू.फा.

क्षय होना संसार में युद्ध भय उत्पात दुर्भिक्ष आदि पीड़ा कारक है। भारत की पूर्वोत्तरीय सीमा पर संघर्ष और प्रकृति-प्रकोप से हानि होगी। पश्चिमी राष्ट्र, अफ्रीका, यूरोप के देशों में कहीं उत्पात विग्रह सैन्य संघर्ष होगा। हाजिर मार्केट में घटाबढ़ी अधिक होगी। सोना, चांदी, रुई एवं वायदा बाजार में तेजी होगी। अनाज गेहूँ, चावल, चना, उड़द, गुड़, घृत, तेल, मूंगफली, तेल के बीजों में पहिले मंदी होकर बाद में तेजी होगी। यहां व्यापार की स्थिति अव्यवस्थित रहेगी, अतः सावधानी से कार्य करें। आकाश लक्षण—काश्मीर हिमाचल-प्रदेश और पूर्वोत्तर के पर्वतीय प्रदेशों में हिमपात व ओला वृष्टि होगी। संक्रांति में पंजाब राजस्थान उत्तर प्रदेश में खंड वृष्टि का योग है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दिन | स्टेण्डर्ड टाईम | तारीखें | चन्द्र संचार | ता० १०से २३ दिसम्बर सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

संवत् २०२६ शकः १८९१ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १६ | ता. १० से २३ दिसम्बर सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति १९ मार्ग से २ पौष तक दक्षिणायन गोल हेमन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है

रा. मि.	ति.	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	हि. मार्ग	मु. रमजान	अं. दिस	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.
		बु.	११	५७	११	५३	मू.	३८	५५	२२	४०	गं.	७ / ५७	३० / २५	व.	११	५७	२५	३४	७	६	१७	२०	२६	२९	१०	धनु
		गु.	३	२२	८	२८	पू.	३२	१५	२०	१	वृ.	४७	२७	कौ	३	२२	२५	३३	७	७	१७	२१	२७	३०	११	म. २५।२२
			५५	०	२९	७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	● ●
		शु.	४७	१५	२६	२	उ.	२५	५७	१७	३१	ध्रु.	३७	५२	ब.	२१	७	२५	३२	७	८	१७	२१	२८	श१	१२	मकर
		श.	४०	२५	२३	१८	श्र.	२०	३३	१५	२१	व्या	२९	५	ब.	१३	५०	२५	३०	७	८	१७	२१	२९	२	१३	कु. २९।२५
		र.	३४	४२	२१	२	ध.	१६	७	१३	३६	ह.	२१	७	कौ.	७	३४	२५	२९	७	९	१७	२१	३०	३	१४	कुंभ
	७	चं.	३०	२०	१९	१८	श.	१३	२	१२	२३	व.	१४	१५	ग.	२	३१	२५	२८	७	१०	१७	२२	पौ१	४	१५	मी. २१।४६
२५	८	मं.	२७	२५	१८	८	पू.	११	२०	११	४२	सि	८	३०	व.	२७	२५	२५	२७	७	१०	१७	२२	२	५	१६	मीन
२६	९	बु.	२५	४७	१७	३०	उ.	१०	५५	११	३३	व्य.	३	४७	कौ	२५	४७	२५	२६	७	११	१७	२२	३	६	१७	मीन
२७	१०	गु.	२५	३०	१७	२४	रे.	११	४७	११	५५	व.	० / ५७	७ / २५	ग	२५	३०	२५	२५	७	१२	१७	२३	४	७	१८	मे. ११।५५
२८	११	शु.	२६	२२	१७	४५	अ.	१३	५०	१२	४४	शि.	५५	३५	वि	२६	२२	२५	२४	७	१२	१७	२३	५	८	१९	मेष
२९	१२	श.	२८	१७	१८	३२	भ.	१६	५५	१३	५९	सि.	५४	१८	बा	२८	१७	२५	२४	७	१३	१७	२३	६	९	२०	वृ. २०।११
३०	१३	र.	३१	१०	१९	४१	कृ.	२०	५७	१५	३६	सा.	५४	५	तै	३१	१०	२५	२३	७	१३	१७	२४	७	१०	२१	वृष
पौ१	१४	सो.	३४	५५	२१	१२	रो.	२५	४७	१७	३३	शु.	५४	२०	ग	३	२	२५	२२	७	१४	१७	२४	८	११	२२	मि. ३०।४०
२	१५	मं.	३८	३०	[illegible]	[illegible]	मृ.	३१	२२	१९	५१	शु.	५५	१५	वि	७	१६	२५	२२	७	१४	१७	२५	९	१२	२३	मिथुन

गुरु का उदय पश्चिम में ८।१३ जमातुलविदा
चन्द्रदर्शन मु ३० विवाह मु. न. ६
तृतिया का क्षय
म. १५।३५ से २६।२ तक ज्येष्ठा में शुक्र २१।१ सव्वाल मु.१०X
पू. षा. में बुध २६।१६ पंचक प्रा. २६।२५ से श्रीगुरुतेजबहादुर [बलिदान दिवस
चम्पा ६ स्कन्द ६
म. १६।१८ से ३०।४६ तक सं.मूल धनुमें सूर्य १६।३१ पुण्यकाल
दुर्गा ८ [१३।७ से शतभिषामें मंगल २३।१५ जीर्णगृह प्र.मु.
स्वाती १ में गुरु १२।४४
म. २६।३५ से पंचक स. ११।५५
म.१७।४५ तक मोक्षदा ११ व्रत सबका गीता ज०
X ईदुलफितर (ईद) विवाह मु. दि. ल. ६
प्रदोषव्रत सायन मकरमेंसूर्य ३०।१४ उत्तरायण शिशरऋतु प्रा.
म.२१।१२ से श्रीत्रिपुर भैरवी ज. राष्ट्रीयपौष प्रा.
न.१०।६ तक उ.षा.में बुध ११।८ मूलधनु में शुक्र ११।२४
सत्यव्रत श्रीदत्त ज.

मार्ग शु. ८ भौमे प्रात: स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७३४

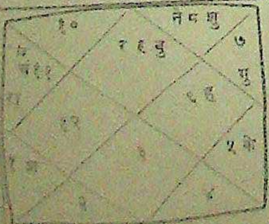

मार्ग शु. १५ भौमे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७४१

मंगल राहु का योग बनकर गुरु से त्रिकोण योग बना है अतः यहां मिश्रित फल होंगे। बुधवारका चन्द्रदर्शन एवं वृश्चिक राशि का शुक्र भी सुख शांति कारक है। "वृश्चिके च गते शुक्रे सर्वधान्य समर्घता। लोकस्तु निरस्तिम सुखं स्वस्थं प्रवर्तते।" इस पक्ष में वर्षाफल कम

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१	१०	८	६	७	०	१०	४
७	२९	१२	२६	७	२९	८	२२	२२
३२	२४	४	२१	३४	४१	४४	१९	१९
५६	१३	५९	३५	२९	२५	४९	२३	२३
६१	७२६	४४	७८	६५	७५	१	३	३
६	४५	४६	३१	१३	३०	१५	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

[illegible] प्रयत्न होंगे। बड़े राष्ट्र नायकों का विचार विमर्श व शिखर सम्मेलन [illegible] शक्ति एवं पद से उन्मत्त राष्ट्र शांति स्थापना में सहयोग [illegible] विचारधारा की वृद्धि होगी। किसी महापुरुष के [illegible] उत्पन्न करेंगे। मंत्रि मंडल में परिवर्तन होगा। [illegible] आने की आशा नहीं। चांदी मंदी और सोना तेज होगा। [illegible] कहीं वायु के साथ वर्षा होगी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १८	दिन मान	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय / सूर्यास्त	तारीखें हि. / मु. / अं.	चन्द्रदर्शन स्टें. टा.	तारीख २४ नव. से ९ दिस. सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति ३ से १८ मार्गशीर्ष तक। दक्षिणायन गोल, हेमन्त ऋतु

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	हि.मा.	मुसल.	अं.	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टें टा. घंटा मिनटों में है।
३	१	चं.	५९	०	३०	३०	कृ.	५	२०	९	२	शि.	४२	४२	बा	२९	३६	२६	५	६	५४	१७	२०	१०	१३	२४	वृष	वक्री अश्वि. ३ में शनि २८।२३ विवाह मु.ल.६ गृहारंभ मु,
४	२	मं.	६०	०	—		रो	८	३२	१०	४४	सि.	४२	३९	तै.	३०	५१	२६	३	६	५५	१७	१९	११	१४	२५	मि,२३।४५	विवाह मु. ल. ६ स्टें. टा. २६।३७ तक
५	२	बु.	२	४९	८	३	मृ.	१४	५०	१२	५२	सा.	४३	२२	ग.	२	४१	२६	०	६	५६	१७	१९	१२	१५	२६	मिथुन	म. २१।४ से ज्येष्ठा में बुध २२।२६ गृहारंभ मु.
६	३	गु.	९	[illegible]	[illegible]	४	आ	२१	१०	१५	२५	शु.	४४	५२	वि	७	४७	२५	५८	६	५७	१७	१९	१३	१६	२७	मिथुन	म. १०।४ तक धनिष्ठा में मंगल २४।१८ श्रीगणेश ४ व्रत
७	४	शु.	१३	[illegible]	[illegible]	२७	पु.	२८	२२	१८	१९	शु.	४६	५९	बा	१३	[illegible]	२५	५५	६	५८	१७	१९	१४	१७	२८	क. ११।३४	चित्रा ४ में गुरु १६।३७ [चन्द्रोदय २०।२
८	५	श.	२०	[illegible]	[illegible]	५	पु.	३६	५	२१	२४	ब्र.	४९	२०	तै.	२०	१९	२५	५३	६	५८	१७	१८	१५	१८	२९	कर्क	वृश्चिक में शुक्र १४।५०
९	६	र.	२६	५५	१७	४५	श्ले	४३	४२	२४	२८	ऐं.	५१	३७	ब.	२६	५५	२५	५१	६	५९	१७	१९	१६	१९	३०	सि,२४।२८	म. १७।४५ से ३०।५६ तक
१०	७	चं.	३३	५	२०	१४	म.	५०	४५	२७	१८	वै.	५३	२०	ब.	३३	५	२५	४६	७	०	१७	१९	१७	२०	दि.१	सिंह	अनुराधा में शुक्र ३०।३२ दिसम्बर मा. १२ ता. ३१
११	८	मं.	३८	१०	२२	१७	पू.	५६	३५	२९	३६	वि.	५४	५	बा	५	३७	२५	४९	७	१	१७	१९	१८	२१	२	सिंह	ज्येष्ठा में सूर्य १६।३७ श्रीमहाकाल भैरव जयन्ती
१२	९	बु.	४१	३२	२३	३८	उ.	६०	०	—	—	प्री.	५३	३२	तै.	९	५१	२५	४५	७	१	१७	१९	१९	२२	३	क. १२।८	पूभा १ में राहु पू. फा. ३ में केतु २८।०
१३	१०	गु.	४२	५७	२४	१३	उ.	०	४२	७	१९	आ	५१	२२	ब.	१२	१५	२५	४४	७	२	१७	१९	२०	२३	४	कन्या	म. ११।५५से२४।१३ तक विवाह मु दि.ल.९ जीर्णगृह प्र. मु.
१४	११	शु.	४२	१०	२३	५५	ह.	२	५०	८	११	सौ.	४७	३२	ब.	१२	३३	२५	४२	७	३	१७	२०	२१	२४	५	तु.२०।१७	मूला धनु में बुध १२।४६ उत्पन्ना ११ व्रत सबका
१५	१२	श.	३६	१०	२२	४४	चि	२	४५	८	१०	शो	४२	०	कौ.	१०	४०	२५	४०	७	४	१७	२०	२२	२५	६	तुला	कुंभ में मंगल २४।२१ मल्ल १२ विवाह मु.दि.ल.९रात्रों ६
१६	१३	र.	३४	२०	२९	४८	स्वा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अ.	३४	५७	ग.	६	४५	२५	३६	७	४	१७	२०	२३	२६	७	वृ.२४।१७	म. २०।४८ से, प्रदोष व्रत
१७	१४	चं.	२७	५२	१८	१४	अ.	५१	४२	२७	४६	धृ.	२६	३९	वि.	१	६	२५	३७	७	५	१७	२०	२४	२७	८	वृश्चिक	म. ७।३१ तक, मेला पुरमंडल देविका स्नान(जम्मू काश्मीर)
१८	३०	मं.	२०	१२	१५	११	ज्ये.	४५	३२	२५	१६	वृ.	१९	२०	ना.	२०	१२	२५	३६	७	६	१७	२०	२५	२८	९	ध. २५।१६	अमापुण्य

मार्ग. कृ. ८ भौमे प्रातः स्टें. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७२०

र.	चं.	मं.	बु.	गु	शु.	श.	रा.	के.
७	४	९	७	६	७	०	१०	४
१६	१४	२६	२४	३	३	९	२३	२३
११	२५	५३	२७	५८	१६	३४	२६	२६
५०	३६	२५	२	३३	४६	४७	९	९
६०	[illegible]	४४	९२	११	७५	२	३	३
५१	१६	२७	५८	९	२४	१६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
२ अनु.	१ पू. फा.	१ धनि	३ ज्येष्ठा	४ चित्रा	४ विशा.	३ अश्वि	१ पू. भा.	४ पू. फा.

इस मास में पांच सोमवार पांच मंगलवार मध्यम हैं "यत्र मासे महीसूनो जयन्ते पंच वासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥ ६ दिसम्बर से मंगल राहु का एक राशि में योग चालू होगा। और यहां से आगे तीन मास तक शुक्ल पक्ष की तिथि का क्षय होना संसार में युद्ध भय उत्पात दुर्भिक्ष आदि पीड़ा कारक है। भारत की पूर्वोत्तरीय सीमा पर सैन्य संघर्ष होगा। पश्चिमी राष्ट्र, अफ्रीका, यूरोप के देशों में कहीं उत्पात विग्रह संघर्ष और प्रकृति-प्रकोप से हानि होगी। हाजिर मार्केट में घटाबढ़ी अधिक होगी। सोना, चांदी, रुई एवं वायदा बाजार में तेजी होगी। यहां व्यापार की स्थिति अव्यवस्थित रहेगी, अनाज गेहूँ, चावल, चना, उड़द, गुड़, घृत, तेल, मूंगफली, तेल के बीजों में पहिले मंदी होकर बाद में तेजी होगी। ...त सावधानी से कार्य करें।

आकाश लक्षण—काश्मीर हिमाचल-प्रदेश और पूर्वोत्तर के पर्वतीय प्रदेशों में हिमपात व ओला वृष्टि होगी। ...क्षांत में पंजाब राजस्थान उत्तर प्रदेश में खंड वृष्टि का योग है।

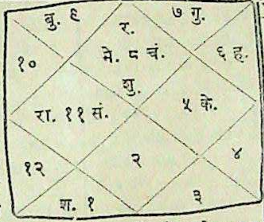

मार्ग. कृ. ३० भौमे प्रातः स्टें. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७२७

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	१०	८	६	७	०	१०	४
२३	१७	१	५	५	१२	९	२३	२३
१८	४३	३८	४२	१४	४	१३	३	३
१५	११	४७	२२	५६	४६	२५	५३	५३
१	[illegible]	४४	९२	१०	७५	२	३	३
६०	५०	३९	१३	३५	२८	४१	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
२ ज्येष्ठा	१ ज्येष्ठा	३ धनि	३ मूल.	४ चित्रा	३ अनु.	३ अश्वि	१ पू. भा.	३ पू. फा.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दिन | स्टेण्डर्ड टाईम | तारीखें | चन्द्र संचार | ता० १०से २३ दिसम्बर सन् १९६९ ई. और राष्ट्रीय मिति

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

संवत् २०२६ शकः १८९१ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १६

सू. १०से २३ दिसम्बर सन् १९६९ ई.और राष्ट्रीय मिति १९ मार्ग से २पौष तक दक्षिणायन गोल हेमन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं.टा.घंटा मिनटों में है

		वार	तिथि घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	हि. मास	मु. तारीख	अं. दिस	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	५७	११	५३	मू.	३८	५५	२२	४०	शू.	७ / ५३	३० / २५	ब.	११	५७	२५	३४	७	६	१७	२०	२६	२९	१०	धनु
[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	२२	८	२८	पू.	३२	१५	२०	१	धृ.	४७	२७	कौ	३	२२	२५	३३	७	७	१७	२१	२७	३०	११	म.२५।२२
[illegible]	[illegible]	गु.	५५	०	२६	७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	• •
[illegible]	[illegible]	शु.	४७	१५	२६	२	उ.	२५	५७	१७	३१	ध्रु.	३७	५२	ग.	२१	७	२५	३२	७	८	१७	२१	२८	१	१२	मकर
[illegible]	[illegible]	श.	४०	२५	२३	१८	श्र.	२०	३३	१५	२१	व्या	२६	५	व.	१३	५०	२५	३०	७	८	१७	२१	२९	२	१३	कुं.२६।२५
[illegible]	[illegible]	र	३४	४२	२१	२	ध.	१६	७	१३	३६	हृ.	२१	७	कौ.	७	३४	२५	२९	७	९	१७	२१	३०	३	१४	कुंभ
	७	चं.	३०	२०	१९	१८	श.	१३	२	१२	२३	व	१४	१५	ग.	२	३१	२५	२८	७	१०	१७	२२	[illegible]	४	१५	मी.२९।४६
२५	८	मं.	२७	२५	१८	८	पू.	११	२०	११	४२	सि.	८	३०	व.	२७	२५	२५	२७	७	१०	१७	२२	२	५	१६	मीन
२६	९	बु.	२५	४०	१७	३०	उ.	१०	५५	११	३३	व्य.	३	४७	कौ	२५	४७	२५	२६	७	११	१७	२२	३	६	१७	मीन
२७	१०	गु.	२५	३०	१७	२४	रे.	११	४७	११	५५	व.	[illegible]	[illegible]	ग	२५	३०	२५	२५	७	१२	१७	२३	४	७	१८	मे.११।५५
२८	११	शु.	२६	३०	१७	४५	अ.	१३	५०	१२	४४	शि.	५५	३५	वि	२६	२	२५	२४	७	१२	१७	२३	५	८	१९	मेष
२९	१२	श.	२८	१७	१८	२२	भ.	१६	५५	१३	५६	सि.	५४	१८	बा	२८	७	२५	२४	७	१३	१७	२३	६	९	२०	वृ.२०।११
३०	१३	र	३१	१०	१९	३२	कृ.	२०	५७	१५	३६	सा.	५४	५	तै	३१	१०	२५	२३	७	१३	१७	२४	७	१०	२१	वृष
पौ१	१४	चं.	३४	५५	२१	१२	रो.	२५	४०	१७	३३	शु.	५४	२०	ग	३	२	२५	२२	७	१४	१७	२४	८	११	२२	मि.३०।४०
२	१५	मं.	३८	३०	२२	५	मृ.	३१	३०	१९	५१	शु.	५५	१५	वि	७	१६	२५	२२	७	१४	१७	२५	९	१२	२३	मिथुन

बुध का उदय पश्चिम में ८।१३ जमातुलविदा
चन्द्रदर्शन मु ३० विवाह मु. न.६
तृतिया का क्षय
न. १५।३५ से २६।२तक ज्येष्ठा में शुक्र २१।१ सव्वाल मु.१०X
[illegible]. पा. में बुध २६।१६ पंचक प्रा.२६।२५ से श्रीगुरुतेजबहादुर
[बलिदान दिवस
चम्पा ६ स्कन्द ६
न. १६।१८ से ३०।४६ तक सं.मूल धनुमें सूर्य१६।३१पुण्यकाल
दुर्गा ८ [१३।७से शतभिषामें मंगल२३।१५जीर्णगृह प्र.मु.
स्वाती १ में गुरु १२।४४
न. २६।३५ से पंचक स. ११।५५
न.१७।४५ तक मोक्षदा ११ व्रत सबका गीता ज०
Xईदुलफितर (ईद) विवाह मु. दि. ल. ९
प्रदोषव्रत सायन मकरमेंसूर्य३०।१४उत्तरायण शिशरऋतु प्रा.
न.२१।१२ से श्रीत्रिपुर भैरवी ज.राष्ट्रीयपौष प्रा.
न.१०।१६ तक उ.षा.में बुध ११।८ मूलधनु में शुक्र ११।२४
सत्यव्रत श्रीदत्त ज.

मार्ग शु. ८ भौमे प्रातः स्टैं.टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७३४

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मा	मा	मा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मार्ग शु. १५ भौमे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७४१

मंगल राहु का योग बनकर गुरु से त्रिकोण योग बना है अतः यहां मिश्रित फल होंगे। शुक्रवारका चन्द्रदर्शन एवं वृश्चिक राशि का शुक्र भी सुख शांति कारक है। " वृश्चिके च गते भृगौ सर्वधान्य समर्घता। लोकस्तु निरंतरम् सुख स्वस्थं प्रवर्तते।" इस पक्ष में बहुफल कम

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१	१०	८	६	७	०	१०	४
७	२९	१२	२६	७	२९	८	२२	२२
३२	२४	४	२१	३४	४१	४४	१९	१९
५६	१३	५६	३५	२९	२५	४९	२३	२३
६१	८२५	४४	७८	६५	७५	१	३	३
६	४५	४६	३१	१३	३०	१५	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	म
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

होकर [illegible] प्रयत्न होंगे। बड़े राष्ट्र नायकों का विचार विमर्श व शिखर सम्मेलन [illegible] शक्ति एवं मद से उन्मत्त राष्ट्र शांति स्थापना में सहयोग [illegible] की वृद्धि होगी। किसी महापुरुष के [illegible] नहीं देंगे। भारतीय [illegible] विचारधारा [illegible] स्थापना में जो बाधा उत्पन्न करेंगे। मंत्रि मंडल में परिवर्तन होगा। [illegible] आने की आशा नहीं। चांदी मंदी और सोना तेज होगा। [illegible] कहीं वायु के साथ वर्षा होगी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ पौष कृष्ण पक्ष २० | दिन मान | स्टैंडर्ड टाइम सूर्योदय सूर्यास्त | स्टै. टा | ... ७ जन. सन् १९६९-७०. और राष्ट्रीय मास ३ से १७ पौष तक । उत्तरायण दक्षिणगोल शिशिर ऋतु.

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं.टा. घंटा मिनटों में है।

	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	[illegible]	[illegible]	ता.	रा. घं. मि.	
३	१	बु.	४५	८	२५	१६	श्रा.	३७	५०	२२	२६	व	५६	४०	गर	१२	२०	२५	२३	७	१५	१७	२५	१०	१३	२४	मिथुन	
४	२	गु.	५१	१८	२७	४४	पू.	४५	७	२५	१५	हे.	५८	४२	वै.	१८	७	२५	२४	७	१५	१७	२६	११	१४	२५	क. १८ ३४	मकर में बुध २६।४९ क्रिसमसडे
५	३	शु.	५६	४५	३०	२२	पू.	५२	४५	२८	२२	[illegible]	६०	०	व.	२४	२८	२५	२४	७	१६	१७	२६	१२	१५	२६	कर्क	म. १७ ३ से ३० २२ तक शुक्रवृद्धत्वारम्भ २१।२७
६	४	श.	६०	०	—	—	श्ले	६०	०	—	—	वै.	१	०	क.	३१	१०	२५	२५	७	१६	१७	२७	१३	१६	२७	कर्क	श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २०।४३
७	४	र.	४	३५	९	७	श्ले	०	३२	७	३०	व	३	२२	गा	४	३५	२५	२६	७	१७	१७	२७	१४	१७	२८	सिंह ७।३०	[पू.] पा. में सूर्य २१।४८
८	५	चं.	११	७	११	४४	म.	८	७	१०	३२	प्री	५	३९	ब.	११	०	२५	२७	७	१७	१७	२८	१५	१८	२९	सिंह	शुक्र का अस्त पूर्व में २१।२७
९	६	मं	१६	४५	१४	०	पू.	१४	५५	१३	१६	आ	७	१५	ब.	१६	४५	२५	२८	७	१८	१७	२९	१६	१९	३०	क. १९।५३	न. १४।० से २६।५२ तक प्लुटोवक्री
०	७	बु	२१	७	१५	४५	उ.	२०	३	१५	३०	पी	७	७	ग.	२१	७	२५	२९	७	१८	१७	३०	१७	२०	३१	कन्या	
१	८	गु.	२३	४०	१६	४६	ह.	२४	२०	१७	२	शो	७	२०	डी	२३	४०	२५	३१	७	१८	१७	३०	१८	२१	ज१	तु. २९।२४	जनवरी मा. १ ता. ३१ सन् १९७० ई. प्रा.
२	९	शु.	२४	५	१६	५७	च	२६	५	१७	४५	अ	५	७	[illegible]	२४	५	२५	३२	७	१९	१७	३१	१९	२२	२	तुला	न. २८।३५ से पू मा. में मंगल २०।१३ पू पा. में शुक्र २५।४५
१३	१०	श	२२	१२	१६	१२	स्वा	२५	४०	१७	३५	मु	५५	३५	व.	२२	१२	२५	३४	७	१९	१७	३२	२०	२३	३	तुला	म १६।१२ तक मार्गी शनि २६।० पार्श्वनाथ जयन्ती
१४	११	र.	१८	१०	१४	३५	वि.	२२	१०	१६	३५	शु.	४८	२५	ग	१८	१०	२५	३६	७	१९	१७	३३	२१	२४	४	वृ. १०।५५	वक्री बुध २१।३५ सफला ११व्रत सवका व्यतिपात ११।५३ [तक
१५	१२	च	१२	१७	१२	१४	अ.	१८	५०	१४	५१	गं.	३६	४५	[illegible]	१२	१७	२५	३७	७	१९	१७	३४	२२	२५	५	वृश्चिक	सोम प्रदोष व्रत
१६	१३	म	४	४५	९	१४	ज्ये.	१२	५९	१२	२१	ब्रू	३०	०	[illegible]	४	४५	२५	३९	७	२०	१७	३४	२३	२६	६	ध. १२।३१	न. ९।१४ से १९।३१ तक बुधका अस्त पश्चिम में २०।७
०	१४	मं.	५६	१०	२६	४८	०	०	०	०	०					०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	चतुर्दशीका क्षय
१७	३०	बु	४६	५०	२६	५	मू.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४५	घ्र	१६	१०	[illegible]	२१	३१	२५	४१	७	२०	१७	३५	२४	२७	७	धनु	अमावस्यापुण्य

पौष कृ. ८ गुरौ प्रातः स्टैं. टा ५।३० केतकी अहर्गण ५७५०

र.	च	म	बु	गु	शु	श	रा.	के.
८	५	१०	९	६	८	०	१०	४
१६	१७	१८	५	८	११	८	२१	२१
४३	१५	४७	३४	५३	०	३७	५०	५०
९	१२	४९	५९	९	४६	[illegible]	४७	४७
[illegible]	७८	८४	२६	८	७५	०	३	३
[illegible]	२७	४४	१५	९	३०	१९	११	११
[illegible]	[illegible]	मा	मा	मा	व	व	व	व
[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ	अ	उ	[illegible]	[illegible]	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पू.भा.	पू.फा.

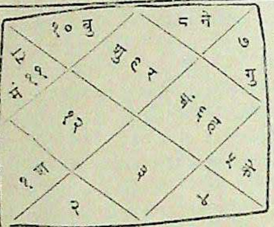

इस पक्ष म [illegible] अनिष्टकारी तो निक्षिक्षय शुभ-फल कारक है । बुध शुक्र का अस्त और मंगल राहु की पूर्ण युति नेष्ट है । "राहु रंगारकश्चैक राशिऋक्ष गतौ तथा । महाभयंच सस्थानां नच वृष्टिः प्रजायते" नीच राशि के शनि का गुरु से प्रतियोग चल रहा

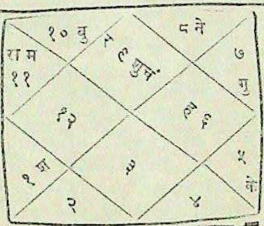

पौष कृ. ३० बुधे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७५६

सू.	च	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
८	८	१०	९	६	८	०	१०	४
२२	१०	२३	५	९	१८	८	२१	२१
५०	३८	१६	५२	४०	३३	३७	३१	३१
१	५३	१२	३१	५	५०	२८	४२	४२
६१	९०८	४४	३६	७	७५	०	३	३
११	२३	४२	३	२१	३०	२५	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
उ	[illegible]	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
पू.षा. ३	मूल. ४	पू.भा. ४	उ.षा. ३	स्वाती ४	पू.षा. २	अश्विनी ३	पू.भा. ४	पू.फा. ३

है, यह भी प्रजा के लिये भयप्रद है । पश्चिमी देशों में और पूर्वी एशिया चीन आदि प्रदेशों में अशान्ति कारक है । भारत की सीमा पर भी उत्पात तथा सैन्य संघर्ष होगा । नेताओं में पारस्परिक मतभेद एवं फूट बढ़ेगी । प्रकृति प्रकोप ओला पाला से फसल को हानि पहुँचेगी । व्यापारिक वस्तुओं में घटा बढ़ी अधिक होगी । रुई में नजराना लगावें । चांदी सोना पोते करो अवश्य लाभ होगा । कुछ क्षेत्रों में अन्न [illegible] तेजी होकर पक्षांत मे फिर मंदी

[illegible]का सामना करना पड़ेगा । शीत प्रकोप खांसी जुखाम इन्फ्लुएन्जा रोग बढ़ेगा । रस पदार्थ तथा वायदा बाजार में अकस्मात् तेजी होकर पक्षांत मे फिर मंदी होगा । असम बंगाल उड़ीसा बिहार उ० प्र० [illegible], ४ जनवरी को शनि मार्गी बाजार की लाइन बदलेगा । आकाश लक्षण—इस पक्ष में बादल वर्षा ओला हिमपात के योग हैं । [illegible] नेपाल में वर्षा व शीत प्रकोप से हानि होगी । पंजाब राजस्थान में कहीं कहीं वर्षा हो ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[सं]वत् २०२६ शकः १८९१ पौष शुक्ल पक्ष २१

तारीख ८से२२ जनवरी सन् १९७०ई ओरराष्ट्रिय मिति १८ पौष से २ माघ तक । उत्तरायण, दक्षिणगोल शिशरऋतु

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टॅ. टा. घंटा मिनटों में है ।

तिथि/वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीख हि. (पौष)	मु. (शव्वाल)	अं.	चन्द्र संचार स्टॅ. टा. रा. घं. मि.
[illegible]	३७	२५	२२	१८	उ.	५०	५५	२७	४२	व्या.	[illegible]	[illegible]	क.	१२	२८	२५	४३	७	२०	१७	३६	२५	२८	८	म. ११।५६
[illegible]	२८	१२	१८	२३	श्र.	४३	४२	२४	४६	व.	४७	२२	वा.	२	४८	२५	४४	७	२०	१७	३७	२६	२९	९	मकर
[illegible]	१६	४०	१५	१२	ध.	३७	२२	२२	१७	सि.	३७	३५	त.	१९	४०	२५	४६	७	२०	१७	३८	२७	जि?	१०	कुं. ११।३०
[illegible]	१२	१७	१२	१५	श.	३२	१२	२०	१२	व्य.	२८	५०	वि.	१२	१७	२५	४८	७	२०	१७	३८	२८	२	११	कुंभ
[illegible]	६	१७	९	५५	पू.	२८	३०	१८	४४	व	२१	१५	बा.	६	१७	२५	५०	७	२०	१७	३९	२९	३	१२	मी. १३ ३
[illegible]	१	५७	८	६	उ.	२६	३२	१७	५६	प.	१५	२	तै	१	५७	२५	५३	७	१९	१७	४०	मा?	४	१३	मीन
[illegible]	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
[illegible]	५६	२०	३१	२	[illegible]	२६	१७	१७	५०	शि.	२०	१२	वि	२८	५५	२५	५५	७	१९	१७	४१	२	५	१४	मे. १७।५०
[illegible]	५८	३०	३०	४२	[illegible]	२७	४२	१८	२४	सि.	६	४२	वा	२८	५५	२५	५७	७	१९	१७	४२	३	६	१५	मेष
[illegible]	५६	२०	३१	[illegible]	[illegible]	३०	३७	१९	३४	सा	४	३२	तै	३०	३	२५	५९	७	१९	१७	४२	४	७	१६	वृ. २५।५७
[illegible]	६०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३०	३७	१९	३४	सा	४	३२	तै	३०	३	२५	५९	७	१९	१७	४२	४	७	१६	वृष
[illegible]	१	४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३४	५७	२१	१७	शु.	३	३०	[illegible]	१	४०	२६	२	७	१८	१७	४३	५	८	१७	वृष
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४०	२०	२३	२६	शु	३	२५	वि.	५	१७	२६	४	७	१८	१७	४४	६	९	१८	मि. १२।३६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४६	३५	२५	५६	ब्र	४	५	गा.	६	५२	२६	७	७	१८	१७	४५	७	१०	१९	मिथुन
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ऐं	५	२२	तै	१५	२०	२६	९	७	१८	१७	४६	८	११	२०	क. २४।५२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वै.	७	७	व.	२१	२२	२६	१२	७	१८	१७	४७	९	१२	२१	कर्क
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३०	[illegible]	[illegible]	वि	८	२५	ब.	२७	४३	२६	१५	७	१७	१७	४८	१०	१३	२२	

स्वाती २ में गुरु २३।४० चन्द्रदर्शन मु. ३०
म. २५।४४ से उ. पा. में सूर्य २३।४४ जिल्काद मु. ११
म. १२।१५ तक [पंचक प्रा.११।३० से.
वक्री धनु में बुध २६।४५ लोहड़ी महोत्सव पंजाब प्रान्त में.
म.३१।३ से सं. मकर में सूर्य ३०।१४मु.३० पुण्य काल अगले
सप्तमी कालय [दिन उ.पा. में शुक्र १५।४५ गुरु गोविन्दसिंह ज.
म.१८।५३ तक पंचक स. १७।५० दुर्गा ८ गंगा सागर यात्रा
मीन में मंगल ३०।३४ वक्री पु. पा. में बुध १६।१ मकर
मकर में शुक्र७।४२ [संक्रांति पुण्यकाल दिन भर
म.२०।४२ से
म. ९।२५ तक पुत्रदा ११ व्रत सबका
बुध का उदय पूर्वमें १५।२८ सोम प्रदोष व्रत
अभि. प्रवृत्ति सूर्य १९।२० सायन कुंभ में सूर्य १६।५४
म. १५।५१ से २६।७ तक राष्ट्रीय माघ प्रा.
पौषी १५ सत्य व्रत माघस्नानारंभ शाकंभरी ज.

पौष शु० १५ गुरौ प्रातः स्टॅ. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७७१

पौष शु. ८ गुरौ प्रातः स्टॅ. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७६३

इस पक्ष में गुरु मंगल का षडष्टक योग बनेगा और गुरु शनि का प्रतियोग (समसप्तम) पहिले से चालु है, फल "यदा जीवगुरू मंदो जीवा ह्य समये स्थितः तदा प्रजा विनश्यन्ति युद्धज्वाल परिक्षयः" सर्वत्र जनसाधिक शक्तियों की प्रबल विरोधता [illegible] करना पड़ेगा

र.	चं.	मं	बु	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	११	८	६	६	०	१०	४
८	२	४	२०	११	७	८	२०	२०
६	१६	२५	६	१४	२५	५५	४४	४४
१०	१३	३	२१	५७	३७	२०	०	०
६१	७२०	४४	१८	५	७५	२	३	३
१	३४	२५	५०	६	२४	४	११	११
मा	मा	मा	ब	मा	मा	मा	व	व
३	उ	३	उ	उ	अ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वातावरण बनेगा । विरोधपक्ष के शोर्य से कांग्रेस के लिये [illegible] वातावरण बनेगा । [illegible] शांतिस्थापना के सुदृढ़ कार्यों के बना [illegible] होगी । [illegible] होकर सुसंगठित व्यवस्था बनेगी कम्युनिस्ट [illegible] व्यापारिक वस्तुओं में तेजीकारक है । हीरे [illegible] पक्षांश में मंदी होगी ।

आकाश लक्षण—यहां यत्रतत्र [illegible] ता. ९-१० से २० जनवरी तक जोरदार हिमपात व वर्षा होगी ।

[illegible] गुड़, सरसों बादाम, [illegible] काश्मीर में [illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

संवत् २०२६ शक: १८९१ माघकृष्ण पक्ष २२

ता. २३ जन.से ६ फरवरी सन् १९७० ई. राष्ट्रीय मिति ३ से १७ माघ तक। उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टॆं टा. घंटा मिनटों में है।

तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीख हि. माघ	तारीख मु. जिल्का	तारीख अं. जन.	चन्द्र संचार स्टॆं. टा. रा घं मि.	
१	शु.	३४	२७	२१	४	पु.	८	२७	१०	४०	प्री	११	३०	वा	१	७	२६	१७	७	१७	१७	४८	११	१४	२३	कर्क	श्रवणमेंसूर्य२६।५श्रवणमेंशुक्र३०।३८श्रीसुभाषचन्द्र नेताजी ज.
२	श.	४१	५	२३	४३	श्ले	१६	७	१३	४४	आ.	१२	५०	तै.	७	४६	२६	२०	७	१७	१७	४९	१२	१५	२४	सिं.१३।४४	मार्गीबुध १५।११ अमि. नि. सूर्य २३।०
३	र.	४७	२०	२६	१३	म.	२३	३७	१६	४४	सौ	१६	०	व.	१४	१२	२६	२३	७	१७	१७	५०	१३	१६	२५	सिंह	भ १२।५८ से २६।१३ तक
४	चं.	५३	०	२८	२८	पू.	३०	४०	१९	३२	शो	१७	५२	व.	२०	१०	२६	२६	७	१६	१७	५१	१४	१७	२६	कं.२६।११	श्रीगणेश ४संकट हारिणी व्रत चन्द्रोदय२१।१८मा. गणराज्य
५	मं	५७	३५	३०	१८	उ.	३६	४५	२१	५८	अ.	१९	५	की	२५	१७	२६	२९	७	१६	१७	५२	१५	१८	२७	कन्या	[दिवस महोत्सव
६	बु.	६०	०	—	—	ह.	४१	४०	२३	५६	सु.	१९	२२	ग.	२९	१०	२६	३२	७	१६	१७	५२	१६	१९	२८	कन्या	लाला लाजपतराय ज.
६	गु.	०	४५	७	३३	चि	४५	२	२५	१६	धृ.	१८	५	व.	०	४५	२६	३५	७	१५	१७	५३	१७	२०	२९	तु.१२।४१	म. ७।३३ से १९।५० तक
७	शु.	२	१२	८	८	स्वा	४६	३०	२५	५१	शू.	१६	२०	व.	२	१२	२६	३९	७	१५	१७	५४	१८	२१	३०	तुला	म. गांधी निधन दिवस, स्वामी विवेकानन्द ज.
८	श.	१	४०	७	५५	वि.	४५	५	२५	४१	ग.	१२	३७	की	१	४०	२६	४२	७	१५	१७	५५	१९	२२	३१	वृ.१९।४८	*फा.२में केतु२५।।३५ प्रदीपव्रत मेरुत्रयोदशी जैनियों की
९	श.	५९	१०	३०	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	नवमी का क्षय
१०	र.	५४	४७	२९	९	अ.	४३	४५	२४	४४	वृ.	७	२०	व.	२६	५८	२६	४५	७	१४	१७	५६	२०	२३	फ१	वृश्चिक	म. १७।३२से२९।६ तक फरवरी मा.२ ता.२८
११	चं.	४८	३७	२६	४१	ज्ये.	३९	३७	२३	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	२१	४२	२६	४९	७	१४	१७	५७	२१	२४	२	ध.२३।५	षट्तिला ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का
१२	मं.	४१	५	२३	३९	मू.	३४	५	२०	५१	ह.	४३	२	की	१४	५१	२६	५२	७	१३	१७	५८	२२	२५	३	धनु	धनिष्ठा में शुक्र२१।२८षट्तिला ११व्रत निम्बार्कों का
१३	बु.	३२	२७	२०	११	पू.	२७	२५	१८	१०	व.	३२	५७	ग.	६	४६	२६	५६	७	१२	१७	५९	२३	२६	४	म.२३।२७	म.२०।११से३०।२०तक उ.पा.में बुध२५।११ श४में राहु पू.*
१४	गु.	२३	१२	१६	२६	उ.	२०	५	१५	१४	सि.	२२	१७	श.	३३	१२	२६	५९	७	१२	१७	५९	२४	२७	५	मकर	धनिष्ठा में सूर्य२६।१५श्रीआदिनाथज.जैन पर्व
३०	शु.	१३	४७	१२	४२	श्र.	१२	३५	१२	१३	व्य	११	३०	ना.	१३	४७	२७	३	७	११	१८	०	२५	२८	६	कुं.२२।४३	मौनी अमावस्या,प्रयागमाघमेला पंचक प्रा.२२।४३ से.

माघ कृ. ८ शनौ प्रातः स्टॆं. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७८०

[illegible]	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	६	११	८	६	९	०	१०	४
[illegible]	२२	११	२२	११	१८	९	२०	२०
[illegible]	०	३	४१	५४	४३	१७	१५	१५
[illegible]	९	२३	५३	५९	५६	३८	२२	२२
[illegible]	४४	४१	३	७५	२	३	३	
[illegible]	९	५१	२४	१९	५८	११	११	
[illegible]	T	मा	मा	मा	मा	व	व	
[illegible]	[illegible]	उ	उ	अ	उ	अ	अ	
[illegible]	[illegible]	पू.षा.	स्वाती	धनिष्ठा	अश्विनी	शत.	पू.फा.	

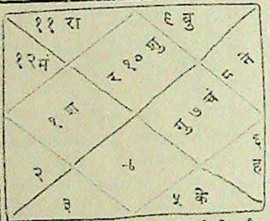

इस मास में पांच शुक्रवार तथा पांच शनिवार और दोनों पक्षोंमें तिथि क्षयवृद्धि होना मिश्रितफल कारक है। गुरु शनि एवं मंगल हर्शल की प्रतियुति नेष्ट फलों में वृद्धिकारक है अतः यहां संधि वार्ता शांतिचर्चा के प्रयत्न होंगे किंतु स्थायी शांति स्थापित नहीं हो सकेगी। बड़े राष्ट्रों की मानसिक भावना शुद्ध नहीं होगी और पारस्परिक भेदभाव बने रहेंगे।भारतमें उद्योगधन्धा व विकासकार्यों में उन्नति होकर स्वावलम्बी होने की शक्ति बढ़ेगी। सैन्यशक्ति के साहसमें वृद्धि और धार्मिक यज्ञानुष्ठानादि से ही भारत इस समय में अपनी प्रतिष्ठा रखने में समर्थ होगा। पश्चिम दिशाके देशोंमें भारी उत्पात होंगे। कई देशोंके मानचित्र भी बदल जायेंगे। भारत में कहीं भयंकर अग्निकांड और जापान [illegible]वनराष्ट्रोंमें भयंकर भूकंपका योग है।यहां खाद्यपदार्थ अन्न घृत आदि तथा रसकस तिलहन,वस्त्र,पाट,रुई,सोना,चांदी पीतल, तांबा, लोह मशीनरी कलपुर्जोंमें भारी घटाबढ़ी [illegible] प्रारम्भ में तेजी होकर पश्चात में मंदी होगी। आकाश लक्षण—कहीं कहीं बादलचाल बूंदाबांदी होगी शीतलहर व पर्वतीय प्रदेशों में वर्फ पड़ेगी फसलको हानि होगी

माघ कृ. ३० शुक्रे प्रातः स्टॆं. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७८६

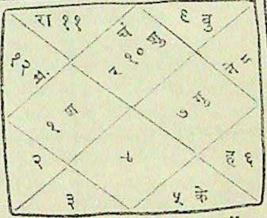

र.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	११	८	६	९	०	१०	४
२३	१९	१५	२७	१२	२६	९	१९	१९
२०	३	२८	४९	१३	१५	३७	५६	५६
२७	३०	३४	५०	३७	४८	६	१६	१६
६०	९१२	४४	६२	२	७५	३	३	३
४९	५०	१	२१	३०	१७	३६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
धनिष्ठा १	श्रवण ३	उ.भा. ४	उ.षा. २	स्वाती २	धनिष्ठा २	अश्वि. ३	शत. ४	पू.फा. २

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्री संवत् २०२६ शक: १८९१ माघ शुक्ल पक्ष २३

ता. [illegible] सन् १९७० ई. और राष्ट्रीय मिति १८ माघ से २ फाल्गुन तक उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

वार	तिथि घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घंटा	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	तारीख माघ	जिल्हेज	फर.	चन्द्र संचार रा. घं. मि.
	४	४०	६	२	ध.	५८	१७	३०	१३	व.	४०	४३	व.	४	४०	२७	६	७	१०	१८	१	२६	२६	७	कुंभ
	५६	७	२६	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
	४८	४२	२६	३६	पू.	५३	७	२८	२५	शि	४१	३२	तै.	२२	२५	२७	१०	७	१०	१८	२	२७	जि१	८	मी. २५।५६
स.	४२	४३	२४	१३	उ.	४६	७	२६	४८	सि.	३३	३०	व.	१५	४५	२७	१४	७	९	१८	३	२८	२	९	मीन
मं	३८	३२	२२	३३	रे.	४६	४७	२५	५१	सा.	२६	४७	व.	१०	४०	२७	१८	७	८	१८	४	२९	३	१०	मे. २५।५१
६ बु.	३६	१२	२१	३६	अ.	४६	२२	२५	४०	शु	२१	३५	कौ.	७	२२	२७	२२	७	७	१८	४	३०	४	११	मेष
७ गु.	३५	५२	२१	३०	भ.	४७	५५	२६	१६	शु	१३	५५	ग.	६	२	२७	२६	७	६	१८	५	फा१	५	१२	मेष
८ शु.	३७	२७	२२	०	कृ.	५१	१२	२७	३४	ब्र.	१५	४५	व.	६	४०	२७	३०	७	५	१८	६	२	६	१३	वृ. ८।३१
९ श.	४०	४२	२३	२२	रो.	५६	७	२९	३२	ऐं.	१४	५५	बा.	६	५	२७	३४	७	५	१८	७	३	७	१४	वृष
१० र.	४५	२५	२५	१९	मृ.	६०	०	—	—	वै.	१५	२०	तै.	१३	३	२७	३८	७	४	१८	८	४	८	१५	मि. १८।४२
११ च.	५१	२०	२७	३१	मृ.	२	२०	६	५६	वि.	१६	४०	व.	१८	१८	२७	४२	७	३	१८	९	५	९	१६	मिथुन
१२ मं.	५७	३२	३०	[illegible]	आ.	६	२५	१०	४८	प्री	१८	३०	व.	२४	२१	२७	४६	७	२	१८	१०	६	१०	१७	मिथुन
१३ बु.	६०	[illegible]	—	—	पु.	१३	२	१३	५०	आ.	२०	५५	कौ.	३०	५४	२७	५०	७	१	१८	१०	७	११	१८	क. ७।४
१४ गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२४	४७	१६	२५	सौ	२२	२२	तै.	४	१५	२७	५४	७	०	१८	११	८	१२	१९	कर्क
१४ शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२५	[illegible]	५७	शो	२५	४२	व.	१०	५०	२७	५८	६	५९	१८	१२	९	१३	२०	सि. १९।५७
१५ श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अ.	२३	४७	व.	१७	५	२८	२	६	५८	१८	१२	१०	१४	२१	सिंह

रेवती में मंगल २०।२७ मकर में बुध २०।३४ चंद्रदर्शन मु. १५
द्वितिया का क्षय
कुंभ में शुक्र २८।५९ जिल्हेज मु. १२
म. १३।२७ से २४।१६ तक तिल ४ *११ व्रत स्मा. वै.
वसन्त ५ श्री पंचमी पंचक स. २५।५१
अश्विनी ४ में शनि २६।६ B का इदुलजुहा (बकरीद)
म. २१।२७ से सं. कुंभ में सूर्य १९।१७ मु१५ पुण्यकाल १२।५३
म. ९।४५ तक भीष्माष्टमी दुर्गा ८ [से रथ ७
शतभिषा में शुक्र १२।३८ S. ७।१२ वसन्त ऋतु प्रा.
A म. २९।५० विवाह मु. ल. ६ राष्ट्रीय फाल्गुन प्रा.
म. १४।२२ से २७।३१ तक श्रावण में बुध ९।५७ जया*
शुक्र का उदय पश्चिम में २९।५० जया ११ व्रत निम्बार्को B
प्रदोष व्रत R ललिताज. मेला जयन्ती देवी शुक्रबाल्यत्व A
शतभिषा में सूर्य ९।४७ वक्रीगुरु २५।३० सायन मीन में सूर्य S
म. ११।१९ से २४।३३ तक सत्य व्रत रथयात्रा जैनपर्व श्री R
माघी पूर्णिमा माघस्नान स. श्री रविदासज विवाह मु. दि. ल. २

माघ शु. १५ शनी प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५८०१

माघ शु. ५ शुके प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७९३

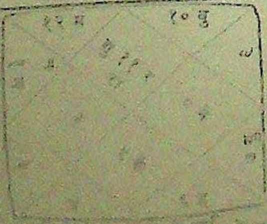

इस पक्ष में शनिवार को चन्द्र दर्शन और द्वितीया का क्षय पक्षारम्भ में अनेक प्रकार के उत्पात विग्रह दुर्भिक्ष रोगादि से हानिकारक है। पश्चिमी यवन देश पूर्वी [illegible] भारी विग्रह [illegible] उत्पात होंगे पूर्वोत्तर भारतीय सीमा पर भी संघर्ष बढ़ेगा। कहीं भूकम्प [illegible] तो कहीं

र.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	११	९	६	१०	०	१०	४
८	४	२६	१६	१२	१५	१०	१९	१९
३०	४२	२५	४०	३१	३	४०	८	८
९	२०	२१	२८	३७	२२	३१	३४	३४
६०	०१५	४३	८६	०	७५	४	३	३
२५	१६	३०	२७	१८	२	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	पू	उ	उ	उ	उ	व	अ

[illegible] होगा। पश्चात में निविवृष्टि और [illegible] गुरु से सूर्य शुक्र [illegible] होंगी। शनिवार को चन्द्र दर्शन से [illegible] कुंभ [illegible] से घटाबढ़ी होगी। [illegible] साधारणतेजी का [illegible] कहीं कहीं खण्डवृष्टि होगी। ऋतु विपर्यय होगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संवत् २०२६ शकः १८९१ माघकृष्ण पक्ष २२

ता. २३ जन.से ६ फरवरी सन् १९७० ई. राष्ट्रीय मिति ३ से १७ माघ तक। उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं टा. घंटा मिनटों में है।

मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. माघ	मु. ज़िल्का	अं. जन.	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा घं मि.	
३	१	शु.	३४	२७	२१	४	पु.	८	२७	१०	४०	प्रा	११	३०	बा	१	७	२६	१७	७	१७	१७	४८	११	१४	२३	कर्क	श्रवणमसूर्य२६।५श्रवणमशुक्र३०।३८श्रीसुभाषचन्द्र नेताजा ज.
४	२	श.	४१	५	२३	४३	श्ले	१६	७	१३	४४	आ.	१३	५०	तै.	७	४६	२६	२०	७	१७	१७	४९	१२	१५	२४	सि. १३।४४	मार्गीबुध १५।११ अभि. नि. सूर्य २३।०
५	३	र.	४७	२०	२६	१३	म.	२३	३७	१६	४४	सौ	१६	०	व.	१४	१२	२६	२३	७	१७	१७	५०	१३	१६	२५	सिंह	म. १२।५८ से २६।१३ तक
६	४	चं.	५३	०	२८	२८	पू.	३०	४०	१९	३२	शो	१७	५२	ब.	२०	१०	२६	२६	७	१६	१७	५१	१४	१७	२६	कं. २६।११	श्रीगणेश ४संकट हारिणी व्रत चन्द्रोदय२१।१८भा. गणराज्य
७	५	मं.	५७	३५	३०	१८	उ.	३६	४५	२१	५८	अ.	१९	५	कौ	२५	१७	२६	२९	७	१६	१७	५२	१५	१८	२७	कन्या	[दिवस महोत्सव
८	६	बु.	६०	०	—	—	ह.	४१	४०	२३	५६	सु	१९	२२	ग.	२९	१०	२६	३२	७	१६	१७	५२	१६	१९	२८	कन्या	लाला लाजपतराय ज.
९	६	गु.	०	४५	७	३३	चि	४५	२	२५	१६	धृ	१८	५	व.	०	४५	२६	३५	७	१५	१७	५३	१७	२०	२९	तु. १२।४१	म. ७।३३ से १९।५० तक
१०	७	शु.	२	१२	८	८	स्वा	४६	३०	२५	५१	शू.	१६	२०	ब.	२	१२	२६	३९	७	१५	१७	५४	१८	२१	३०	तुला	म. गांधी निधन दिवस, स्वामी विवेकानन्द ज.
११	८	श.	१	४०	७	५५	वि.	४५	५	२५	४१	गं.	१२	३७	कौ	१	४०	२६	४२	७	१५	१७	५५	१९	२२	३१	वृ. १९।४८	*फा.२में केतु२५।।३५ प्रदोषव्रत मेरुत्रयोदशी जैनियों की
•	९	श.	५९	१०	३०	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	नवमी का क्षय
१२	१०	र.	५४	४७	२९	६	अ.	४३	४५	२४	४४	वृ	७	२०	व.	२६	५८	२६	४५	७	१४	१७	५६	२०	२३	फ१	वृश्चिक	म. १७।३२से२९।६ तक फरवरी मा.२ ता.२८
१३	११	चं.	४८	३७	२६	४१	ज्ये.	३९	३७	२३	५	ध्रु.	[illegible]	[illegible]	व	२१	४२	२६	४९	७	१४	१७	५७	२१	२४	२	ध. २३।५	षट्तिला ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का
१४	१२	मं.	४१	५	२३	३९	मू.	३४	५	२०	५१	ह.	४३	२	कौ	१४	५१	२६	५२	७	१३	१७	५८	२२	२५	३	धनु	धनिष्ठा में शुक्र२१।२८षट्तिला ११व्रत निम्बार्कों का
१५	१३	बु.	३२	२७	२०	११	पू.	२७	२५	१८	१०	व.	३२	५७	ग.	६	४६	२६	५६	७	१२	१७	५९	२३	२६	४	म. २३।२७	म.२०।११से३०।२०तक उ.षा.में बुध२५।११ श.४में राहु पू.*
१६	१४	गु.	२३	१८	१६	२९	उ.	२०	५	१५	१४	सि.	२२	१७	श.	२३	१२	२६	५९	७	१२	१७	५९	२४	२७	५	मकर	धनिष्ठा में सूर्य२९।१५श्रीआदिनाथज.जैन पर्व
१७	३०	शु.	१३	४७	१२	४२	श्र.	१२	३५	१२	१३	व्य	११	३०	ना.	१३	४७	२७	३	७	११	१८	०	२५	२८	६	कुं. २२।४३	मौनी अमावस्या,प्रयागमाघमेला पंचक प्रा.२२।४३ से.

माघ कृ. ८ शनौ प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७८०

माघ कृ. ३० शुक्रे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७८६

र.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	११	८	६	९	०	१०	४
१०	२२	११	२२	११	१८	९	२०	२०
[illegible]	०	३	४१	५४	४३	१७	१५	१५
	९	२३	५३	५९	५६	३८	२२	२२
		४४	४१	२	७५	२	३	३
		[illegible]	५१	२४	१९	५८	११	११
		[illegible]	मा	मा	मा	मा	व	व
			उ	उ	अ	उ	अ	अ
		[illegible]	पू.षा. ३	स्वाती २	श्रवण ३	अश्विनी ३	पू.भा. ४	पू.फा. ३

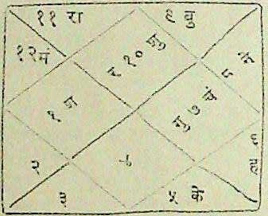

इस मास में पांच शुक्रवार तथा पांच शनिवार और दोनों पक्षोंमें तिथि क्षयवृद्धि होना मिश्रितफल कारक है। गुरु शनि एवं मंगल हर्शल की प्रतियुति नेष्ट फलों में वृद्धिकारक है अतः यहां संधि वार्ता शांतिचर्चा के प्रयत्न होंगे किंतु स्थायी शांति स्थापित नहीं हो सकेगी। बड़े राष्ट्रों की मानसिक भावना शुद्ध नहीं होगी और पारस्परिक भेदभाव बने रहेंगे।भारतमें उद्योगधन्धा व विकासकार्यों में उन्नति होकर स्वावलम्बी होने की शक्ति बढ़ेगी। सैन्यशक्ति के साहसमें वृद्धि और धार्मिक यज्ञानुष्ठानादि से ही भारत इस समय में अपनी प्रतिष्ठा रखने में समर्थ होगा। पश्चिम दिशाके देशोंमें भारी उत्पात होंगे। कई देशोंके मानचित्र भी बदल जायेंगे। भारत में कहीं भयंकर अग्निकांड और जापान चीनराष्ट्रोंमें भयंकर भूकंपका योग है।यहां खाद्यपदार्थ अन्न घृत आदि तथा रसकस तिलहन,वस्त्र,पाट,रुई,सोना,चांदी पीतल, तांबा, लोह मशीनरी कलपुर्जोंमें भारी घटाबढ़ी। पक्षारंभ में तेजी होकर पक्षांत में मंदी होगी। आकाश लक्षण—कहीं कहीं बादलचाल बूंदाबांदी होगी शीतलहर व पर्वतीय प्रदेशों में बर्फ पड़ेगी फसलको हानि होगी

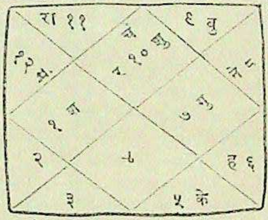

र.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	११	८	६	९	०	१०	४
२२	१९	१५	२७	१२	२६	९	१९	१९
२०	३	२८	४९	१३	१५	३७	५६	५६
३७	३०	३४	५०	३७	४८	६	१६	१६
६०	११२	४४	६२	२	७५	३	३	३
४९	५०	१	२१	३०	१७	३६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
धनिष्ठा २	श्रवण ३	उ.भा. ४	उ.षा. ४	स्वाती ३	धनिष्ठा १	अश्वि. ३	पू.भा. २	पू.फा. ४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री संवत् २०२६ शक: १८९१ माघ शुक्ल पक्ष २३ | दिनमान | स्टैंडर्ड टाइम सूर्योदय सूर्यास्त | तारीखें हि. मु. अं. | चंद्र संचार स्टैं. टा.

ता. ७ से २१ फर. सन् १९७० ई. और राष्ट्रीय मिति १८ माघ से २फाल्गुन तक उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

तिथि	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटा	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	माघ	ज़िल्का	फर.	रा. घं. मि.	
[illegible]	४	४०	६	२	ध.	५/८	१३/१०	१/३०	१६/३८	व.	५०	४३	व.	४	४०	२७	६	७	१०	१८	१	२६	२९	७	कुंभ	रेवती में मंगल २०।२७ मकर में बुध ३०।३४ चंद्रदर्शन मु. १५
[illegible]	५६	७	२९	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	द्वितिया का क्षय
[illegible]	४८	४२	२६	३९	पू.	५३	७	२८	२५	शि	४१	३२	तै.	२२	२५	२७	१०	७	१०	१८	२	२७	जि१	८	मी २५।५६	कुंभ में शुक्र २८।५६ जिल्हेज मु. १२
चं.	४२	४७	२४	१६	उ	४९	७	२६	४८	सि.	३३	३०	व.	१५	४५	२७	१४	७	९	१८	३	२८	२	९	मीन	म. १३।२७ से २४।१६ तक तिल ४ "११ व्रत स्मा. वै.
मं	३८	३२	२२	३३	रे.	४६	४७	२५	५१	सा	२६	४७	ग.	१०	४०	२७	१८	७	८	१८	४	२९	३	१०	मे. २५।५१	वसन्त ५ श्री पंचमी पंचक स. २५।५१
बु.	३६	१२	२१	३६	अ.	४६	२२	२५	४०	शु	२१	३५	की.	७	२२	२७	२२	७	७	१८	४	३०	४	११	मेष	अश्विनी ४ में शनि २९।६ B का इदुलजुहा (बकरीद)
७ गु.	३५	५२	२१	२७	भ.	४७	५५	२६	१६	शु	१७	५५	ग.	६	२	२७	२६	७	६	१८	५	का१	५	१२	मेष	न. २१।२७ से म. कुंभ में सूर्य १९।१७ मु१५ पुण्यकाल १२।५३
८ शु	३७	२७	२२	४	कृ.	५१	१२	२७	३४	ब्र.	१५	४५	व.	६	४०	२७	३०	७	५	१८	६	२	६	१३	वृ. ८।३१	स. ९।४५ तक भीष्माष्टमी दुर्गा ८ [से रथ ७
२५ ९ श.	६०	४२	२३	२२	रो	५६	७	२९	३२	ऐं.	१४	५५	गा.	९	५	२७	३४	७	५	१८	७	३	७	१४	वृष	शतभिषा में शुक्र १२।३८ S ७।१२ वसन्त ऋतु प्रा.
२६ १० र.	४५	२५	२५	१४	मृ.	६०	०	—	—	वै.	१५	२०	तै.	१३	३	२७	३८	७	४	१८	८	४	८	१५	मि. १८।४२	A स. २९।५० विवाह मु. ल. ९ राष्ट्रीय फाल्गुन प्रा.
२७ ११ चं	५१	४०	२९	३१	मृ	२	२०	७	५६	वि.	१६	४०	व.	१८	१८	२७	४२	७	३	१८	९	५	९	१६	मिथुन	म. १४।२२ से २७।३१ तक श्रावण में बुध ९।५७ जया*
२८ १२ मं	५७	३२	३०	[illegible]	आ.	९	२५	१०	४८	प्री.	१८	२७	व.	२४	२१	२७	४६	७	२	१८	१०	६	१०	१७	मिथुन	शुक्र का उदय पश्चिम में २९।५० जया ११ व्रत निम्बार्क B
२९ १३ बु.	६०	०	—	—	पु.	१९	२	१३	५०	आ	२०	५५	कौ.	३०	५४	२७	५०	७	१	१८	१०	७	११	१८	क. ७।४	प्रदोष व्रत R ललिताज. मेला जयन्ती देवी शुक्लाल्यत्व A
३० १३ गु.	४	१०	०	४१	[illegible]	२४	४७	१६	५५	सौ	२३	२२	तै.	४	१५	२७	५४	७	०	१८	११	८	१२	१९	कर्क	शतभिषा में सूर्य ९।४७ वक्रीगुरु २५।३० सायन मीन में सूर्य S
फा१ १४ शु	१०	५०	११	११	[illegible]	२२	४५	९	५७	शो	२५	४२	व.	१०	५०	२७	५८	६	५९	१८	१२	९	१३	२०	सि. १९।५७	म. ११।१६ से २४।३३ तक सत्य व्रत रथयात्रा जैनपर्व श्री R
२ १५ श.	[illegible]	५	११	[illegible]	म.	[illegible]	३७	२	[illegible]	अ.	२०	४५	व	१७	५	२८	२	६	५८	१८	१२	१०	१४	२१	सिंह	माघी पुर्णिमा माघस्नान स. श्री रविदासज विवाह मु. दि. ल. २

माघ शु. ८ शुक्रे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५७९३

माघ शु. १५ शनौ प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५८०१

र.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

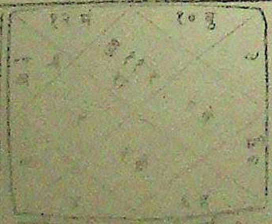

इस पक्ष में शनिवार को चन्द्र दर्शन और द्वितीया का क्षय पक्षारम्भ में अनेक प्रकार के उत्पात विग्रह दुर्भिक्ष रोगादि से हानि-कारक है। पश्चिमी यवन देश पूर्वी [illegible] भारी विग्रह [illegible] उत्पात होवे पूर्वोत्तर भारतीय सीमा पर भी संघर्ष बढ़ेगा। कहीं भूकम्प [illegible] तो कहीं [illegible] होगा। पक्षान्त में [illegible] और गुरु व सूर्य शुक्र [illegible] होगी। [illegible] कहीं [illegible] बढ़ेगी। [illegible]

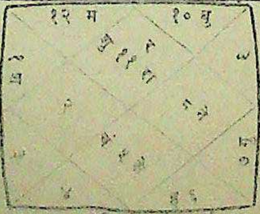

र.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	११	९	६	१०	०	१०	४
८	४	२६	१६	१२	१५	१०	१९	१९
२०	४२	२५	४०	३१	३	४०	८	८
९	२०	२१	२८	३७	२३	३१	३४	३४
६०	[illegible]	४३	[illegible]	०	७५	४	३	३
२५	१५	२०	२७	१८	२	५४	११	११
मा	मा.	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	व	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]। आकाश लक्षण— [illegible] प्रदेश दिल्ली पंजाब हिमाचल राजस्थान उत्तर प्रदेश में [illegible] और कहीं कहीं वर्षा वृष्टि होगी। ऋतु विपर्यय होगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[illegible] २०२६ शकः १८९१ फाल्गुन कृष्णपक्ष २४

ता.२२ फर. से ७ मार्च सन् १९७० ई०और राष्ट्रीय मिति ३ से १६ फाल्गुन तक । दक्षिण गोल बसन्त ऋतु ।

ग.ता.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. फाल्गु.	मु. ज़िल्हि.	अं. फर.	चंद्र संचार स्टैं. टा. रा. घं.मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं.टा. घंटा मिनटों में है।
३	१	र.	२२	४५	१६	३	पू.	४६	१२	२५	२६	सु.	२६	२०	कौ	२२	४५	२८	६	६	५७	१८	१२	११	१५	२२	सिंह	
४	२	चं.	२७	४०	१८	०	उ.	५२	०	२७	४४	घृ.	३०	२०	ग.	२७	४०	२८	१०	६	५६	१८	१३	१२	१६	२३	क. ८।३	म.३०।४६ से ‡चन्द्रोदय २१।५
५	३	मं.	३१	३५	१९	३३	ह.	५६	५०	२९	३९	शू.	३०	३५	वि	३१	३५	२८	१५	६	५५	१८	१३	१३	१७	२४	कन्या	म १९।३३ तक पू.भा. में शुक्र २८।५५ श्रीगणेश ४ व्रत‡
६	४	बु.	३४	२२	२०	३९	चि.	६०	०	—	—	गं.	३०	०	व.	२	५९	२८	१९	६	५४	१८	१४	१४	१८	२५	तु.१८।२६	अश्वि. मेष में मंगल २८।९ धनिष्ठा में बुध १७।५३
७	५	गु.	३५	५०	२१	१३	चि.	०	३०	७	५	वृ.	२८	२२	कौ	५	६	२८	२३	६	५३	१८	१४	१५	१९	२६	तुला	
८	६	शु.	३५	२५	२१	१२	स्वा	२	५०	८	०	ध्रु.	२५	४२	ग.	५	३७	२८	२७	६	५२	१८	१५	१६	२०	२७	वृ २६।१८	म. २१।१९ से
९	७	श.	३४	२०	२०	३५	वि.	३	४२	८	२०	व्या	२१	५०	वि	४	५२	२८	३१	६	५१	१८	१६	१७	२१	२८	वृश्चिक	म. ८।५४ तक विवाह मु.दि.ल.२ धूलिमुख ९।१०
१०	८	र.	३१	१५	१९	२१	अ.	३	५	८	४	ह	१६	४५	बा.	२	४७	२८	३५	६	५०	१८	१६	१८	२२	मा१	वृश्चिक	कुम्भ में बुध २४।५५ मार्च मा. ३ ता. ३१
११	९	चं.	२६	४७	१७	३२	ज्ये	१/५७	०/२७	७/२१	१३/४८	व.	१०	३०	ग	२६	४७	२८	४०	६	४९	१८	१७	१९	२३	२	ध.७।१३	म. २८।२१ से श्रीरामदास ९ विवाह मु.ल. धूलिमुख
१२	१०	मं.	२०	५७	१५	११	पू.	५२	४७	२७	५५	सि.	३/५४	७/४५	वि.	२०	५७	२८	४४	६	४८	१८	१८	२०	२४	३	धनु	म. १५।११ तक नैपच्यून वक्री
१३	११	बु.	१४	०	१२	२३	उ.	४७	१०	२५	३९	व.	४५	४०	बा.	१४	०	२८	४८	६	४७	१८	१८	२१	२५	४	म.९।२३	पू.भा.में सूर्य १६।१० मीन में शुक्र २८।२९विजय११व्रतसबका
१४	१२	गु.	६	१५	९	१६	श्र.	४०	५२	२३	७	प	३६	०	तै.	६	१५	२८	५३	६	४६	१८	१९	२२	२६	५	मकर	म. २९।५५ से शत में बुध २७।१४ प्रदोष व्रत
०	१३	गु	५७	५२	२९	५५	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	त्रयोदशी का क्षय
१५	१४	शु.	४९	२५	२६	३१	ध.	३४	२०	२०	२९	शि	२६	७	वि.	२३	३८	२८	५७	६	४५	१८	२०	२३	२७	६	कुं.९।४८	म.१६।१३ तक श्रीमहाशिवरात्रि १४ व्रत पंचक प्रा.९।४८ से
१६	३०	श.	४१	१०	२३	१२	श.	२७	५२	१७	५३	सि	१६	१५	च	१५	१७	२९	१	६	४४	१८	२०	२४	२८	७	कुम्भ	उ.भा. में शुक्र २०।४७ शनैश्चरी अमावस्या पुण्य

फाल्गुन कृ. ८ रवौ प्रातः स्टैं.टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५८०९

र	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	०	९	६	१०	०	१०	४
०६	१५	२	२८	१२	२५	११	१८	१८
[illegible]	११	१२	४३	२३	३	२१	४३	४३
[illegible]	[illegible]	१३	३	५५	१०	५६	८	८
[illegible]	[illegible]	३	६५	१	७४	५	३	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	९	४८	५४	३१	११	११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	मा	व	मा	मा	व	व
[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

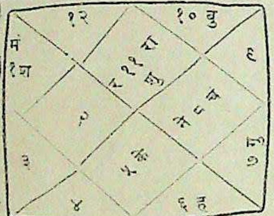

इस मास में कृष्ण पक्ष की तिथि क्षय और शुक्ल पक्ष की तिथि वृद्धि तथा मीन राशि में शुक्र सुभिक्ष एवं सुख शांतिकारक है। २६ फरवरी से मेषराशि मे शनि मंगल योग बनकर गुरु से प्रतियोग चालू होगा यह संसार के लिए नेष्ट फलप्रद है। "युद्धदौ शनि माहेयो" अतः यहां से वर्षान्त तक अच्छेबुरे दोनों प्रकार के फल होंगे। अशांति उत्पन्न होगी उसमें शांति का वातावरण भी बनेगा। संधि चर्चाएँ होंगी। बड़े राष्ट्रों में उन्मत्त भावना बढ़ेगी, जिससे संसारकी शांति भंग होगी। भारत अपनी नीति पर दृढ़ रहेगा। भारत में भी विरोधी तत्व खतरा उत्पन्न करेंगे। अमेरिका इंगलैंड आदि [illegible] खतरेमें रहेंगे। रूस चीन की शक्ति बढ़ेगी। अमावस्या शनिवारी और शनि मंगलका योग साम्राज्यवादी एवं तटस्थ राष्ट्रों को कमजोर करके साम्य- [illegible] की प्रबल शक्ति का उदय कारक है। अन्नादि खाद्य वस्तुएँ घृत तेल साबूदाना जीरा हलदी मिर्च साबुन चाय तिल अलसी मूंगफली एरंडा तेजी होकर [illegible] चांदी कागज और शेयर बाजार में घटाबढ़ी अधिक होगी। आकाश लक्षण—कभी अकस्मात गरमी और कभी शीत पड़ने लगेगी। ऋतु परिवर्तन होगा

फाल्गुन कृ. ३० शनी प्रातः स्टैं.टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५८१५

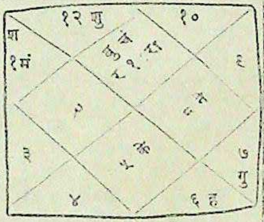

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	०	१०	६	११	०	१०	४
२२	१२	६	८	१२	२	११	१८	१८
३३	१७	३०	२९	१०	३२	५६	२४	२४
३७	७	५१	५०	२०	१९	४	४	४
६०	८२३	४३	२०२	२	७४	५	३	३
३	४८	५८	३५	५४	४७	५६	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
२ पू.भा.	२ [illegible]	२ [illegible]	२ शत.	२ स्वाती	४ पू.भा.	४ कृत्ति.	४ शत.	१ पू.फा.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

संवत् २०२६ शकः १८९१ फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५

तारीख ८ से २३ मार्च सन् १९७० ई० और राष्ट्रीय मिति १७ फाल्गुन से २ चैत्र तक । उत्तरायण, दक्षिणगोल वसन्त ऋतु ।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं.टा.घंटा मिनटों में है ।

राष्ट्रीय	तिथि वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	हि.	मु.	अं.	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा.घं.मि.
	र.	३३	२२	२०	८	पू.	-	५	१५	२६	सा.	५/५७	४५/५२	कि	७	२१	२९	६	६	४३	१८	२१	२५	२९	८	मी.१०।३
	२ चं.	२६	५२	१७	२७	उ.	१६	२	१३	२७	शु	४९	५२	बा	०	१२	२९	१०	६	४२	१८	२२	२[illegible]	३०	९	मीन.
	३ मं.	२१	३५	१५	१८	रे.	१	१०	११	५६	ब्र.	४३	१७	ग	२१	३५	२९	१४	६	४०	१८	२२	२७	१	१०	मे.११।५६
	४ बु.	१७	५७	१३	५०	अ.	११	०	११	३	ऐं.	३८	०	वि.	१७	५७	२९	१९	६	३९	१८	२३	२८	२	११	मेष
	५ गु.	१६	१०	१३	६	भ.	१०	४०	०	५४	वै.	३४	१५	बा	१६	१०	२९	२३	६	३८	१८	२४	२९	३	१२	वृ.१६।५९
	६ शु.	१६	२५	१३	११	कृ.	१२	१९	१	३२	वि	३२	५	तै.	१६	२५	२९	२७	६	३७	१८	२४	३०	४	१३	वृष.
	७ श.	१८	३७	१४	३	रो.	१५	५०		२ ५६	प्री.	३१	२५	व	१८	३७	२९	३१	६	३६	१८	२५	चै१	५	१४	मि.२५।५४
२४	८ र.	२[illegible]	३५	१५	३[illegible]	मृ.	२[illegible]		५	१	आ.	३२	०	ब	२२	३५	२९	३५	६	३५	१८	२५	२	६	१५	मिथुन.
२५	९ चं.	२८	०	१७	४[illegible]	आ.	२७	४	७	३८	सौ.	३३	४०	कौ.	२८	०	२९	४०	६	३३	१८	२६	३	७	१६	मिथुन
२६	१० मं.	३[illegible]	[illegible]	२०	१[illegible]	पु.	३५	१०	२०	३६	शो.	३५	५७	तै.	१	७	२९	४४	६	३२	१८	२६	४	८	१७	क.१३।५०
२७	११ बु.	४०	५५	२२	५३	पु.	४३	०	२३	४३	अ.	३८	३०	व.	७	३५	२९	४८	६	३१	१८	२७	५	९	१८	कर्क
२८	१२ गु.	४७	२५	२५	२८	श्ले.	५०	३७	२६	४५	सु.	४०	५७	ब	१४	१०	२९	५३	६	३०	१८	२७	६	१०	१९	सिं.२६।४५
२९	१३ शु.	५[illegible]	२०	२७	४९	म.	५७	४५	२९	३५	धृ.	४३	०	कौ	२०	२२	२९	५७	६	२९	१८	२८	७	११	२०	सिंह
३०	१४ श.	५८	२०	२९	४८	पू.	६०	०	—	—	शू.	४४	२५	ग.	२५	५०	३०	१	६	२८	१८	२८	८	१२	२१	सिंह.
चै१	१५ र.	६०	०	—	—	पू.	४	५	८	४	गं.	४५	५	वि	३०	२१	३०	६	६	२६	१८	२८	९	१३	२२	क.१४।३५
२	१ चं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ.	६	[illegible]	१०	८	वृ.	४४	५२	ब.	२	२२	३०	१०	६	२५	१८	२९	१०	१४	२३	कन्या.

बुध का अस्त पूर्व में १८।१ † ९।१० उपनयन मु.
चन्द्रदर्शन मु. ३० श्री रामकृष्णपरमहंस ज. विवाह मु. ल. †
म. २६।२४ से मुहर्रम मु. १ हिजरी सन् १३९० प्रा. उपनयन मु.
म. १३।५० तक *गुड फायडे
ललिता ५ Kमु. गृह प्र.मु.
पु. भा. में बुध १९।३८ विवाह मु.ल. धूलि मु. १० गृहारंभK
म. १४।३ से २६।५० तक सं. मीन में सूर्य १६।१४ मु. ३० C
दुर्गा ८ होलाष्टकारंभ अष्टाह्निक व्रत जैन
भरणी में मंगल १८।५५ C पुण्यकाल ९।५० से गृहप्रवेश
उ. भा. में सूर्य २४।३५ [गृहारंभमु. स्टे. टा, ९।५० तक.
म.९।३३से२२।५३ तक मीन में बुध २८।३४ रेवती में शुक्र
ताजिया (मुहर्रम) [१४।१ आमला ११ व्रत सबका
उ.भा. में बुध २२।५ भरणी १ में शनि १३।४७ प्रदोष व्रत.*
म.२९।४८ से सायन मेष में सूर्य ६।२८ उत्तरगोल में सूर्य प्रवेश
म.१८ ३५तक होलिका दहन स्टे.टा. १८।३५ उ. सत्यव्रत
धूलिवंदन [दारुण रात्री हुताशनी१५ राष्ट्रीय चैत्रप्रा.शक१८९२

फा. शु. ८ रवी प्रातः स्टैं टा.५।३०केतकी अहर्गण ५८२३

फा. शु. १५ रवी स्टैं. टा. ५।३०केतकी अहर्गण ५८३०

र.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मा	मा	मा	[illegible]	[illegible]	मा	मा	[illegible]	व
उ	उ	[illegible]	अ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

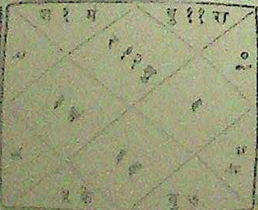

इस पक्ष में मेष राशि में शनि मंगल का युद्ध १५ मार्च को होगा और मंगल शनि का गुरु से पूर्ण प्रतियोग (समसप्तम योग) बनेगा, यह संसार के लिए अनिष्ट फल कारक सिद्ध होगा । भारत में भारी उत्पात होंगे । यथा—"मदार [illegible] मुरराज मंत्री यदे कराणी [illegible] । [illegible] लंकापुर [illegible]" विश्व के अनेक भागों में युद्धाग्नि भड़केगी । जनविद्रोह [illegible] एवं [illegible] से विकासशील राष्ट्रों की भारी क्षति होगी । भारत के लिए [illegible] होने से भारत की प्रतिष्ठा बनाये रखेगा । उसकी [illegible] होगा । पश्चिमी देशों में भारी खतरा उत्पन्न होकर विश्व में चिन्ता [illegible] । १८ मार्च तक [illegible] की [illegible] तम्बाकू सिगरेट आदि में तेजी चमकेगी । २३ मार्च के आसपास अन्नादि [illegible] होंगे । [illegible] आकाश लक्षण— [illegible] वर्षा व बूंदाबांदी होगी । कहीं फसल को हानि पहुँचेगी । वायु का प्रकोप होगा ।

र.	चं.	मं.	बु	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	४	०	११	६	११	०	१०	४
७	२५	१७	५	११	२१	१३	१७	१७
३०	२१	११	५४	८	११	३१	३६	३३
३९	३४	१२	०	५८	२५	४	२३	२६
५९	७३५	४२	११८	५	७४	६	७	३
३१	४	२१	४१	२१	२४	४५	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	र	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्री संवत् २०२६ शकः १८९१ चैत्र कृष्ण पक्ष २६

ता. २४ मार्च से ६ अप्रेल सन् १९७०ई. और राष्ट्रीय मिति ९ से १६ चैत्र तक। उत्तरायण गोल, वसन्त ऋतु.

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टें. टा. घंटा मिनटों में है।

मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	हि.	मु.	अं.	रा. चं. थि.	
३	१	म.	५	१२	८	२८	ह.	१३	२२	११	४४	ध्रु.	४३	४५	कौ.	५	१२	३०	१५	६	२३	१८	२९	११	१५	२४	तु. २४।१८	होला १ वसन्तोत्सव आम्रकलिका प्राशन मेला श्री आनंदपुर
४	२	बु.	६	४५	९	४	वि.	१६	१५	१२	५२	व्या.	४१	४०	ग.	६	४५	३०	१९	६	२२	१८	२९	१२	१६	२५	तुला	म. २१।८ से श्री संत तुकाराम ज. [साहिब (पंजाब)
५	३	गु.	७	७	९	१२	स्वा.	१८	०	१३	३३	ह.	३८	४८	वि.	७	७	३०	२४	६	२१	१८	३०	१३	१७	२६	तुला	म. ९।१२ तक श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २१।५४
६	४	शु.	६	२२	८	५३	वि.	१८	४०	१३	४८	व.	३४	५०	बा.	६	२२	३०	२८	६	२०	१८	३०	१४	१८	२७	वृ. ७।४५	रेवती में बुध १४।८
७	५	श.	४	३२	८	८	अ.	१८	२०	१३	३९	सि.	३०	१२	तै.	४	३२	३०	३२	६	१९	१८	३१	१५	१९	२८	वृश्चिक	रंग पंचमी
८	६	र.	१	४२	६	५९	ज्ये.	१७	०	१३	६	व्य.	२४	४५	व.	१	४२	३०	३६	६	१८	१८	३२	१६	२०	२९	ध. १६।६	म. ६।५९ से १८।१३ तक अश्वि. मेष में शुक्र ८।१३
०	७	र.	५७	५५	२९	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	सप्तमी का क्षय
९	८	चं.	५३	१७	२७	३६	मू.	१४	४७	१२	१२	व.	१८	३७	बा.	२५	३६	३०	४०	६	१७	१८	३२	१७	२१	३०	धनु	शीतलाष्टमी पुजन
१०	९	मं.	४७	५२	२५	२५	पू.	११	४२	१०	५७	प.	११	४७	तै.	२०	३५	३०	४४	६	१६	१८	३३	१८	२२	३१	म. १६।१४	रेवतीमें सूर्य ११।३१
११	१०	बु.	४१	५०	२२	५९	उ.	७	५५	९	२५	शि.	४/५६	३३/२५	व.	१४	५१	३०	४९	६	१५	१८	३३	१९	२३	अ१	मकर	म. १२।१२ से २२।५९ तक अप्रेल मा. ४ ता. ३०
१२	११	गु.	३५	१५	२०	२०	श्र.	३/५८	३०/३७	७/२९	३८/३६	सा.	४८	७	व.	८	३२	३०	५२	६	१४	१८	३४	२०	२४	२	कुं. १८।४०	अश्वि. मेष में बुध २७।४६ व स्वाती १में गुरु १६।२५ पाप-
१३	१२	शु.	२८	२५	१७	३५	ध.	५३	३७	२७	४०	शु.	३९	४०	कौ.	१	५०	३०	५७	६	१३	१८	३४	२१	२५	३	कुंभ	प्रदोष व्रत [मोचनी ११ व्रत सबका पंचक प्रा. १८।४० से
१४	१३	श.	२१	३२	१४	४८	पू.	४८	४५	२५	४१	शु.	३१	१२	व.	२१	३२	३१	१	६	११	१८	३५	२२	२६	४	मी. २०।११	म. १४।४८ से २५।२७ तक कृतिका में मंगल १७।४५
१५	१४	र.	१४	२२	१२	७	उ.	४४	४५	२३	५२	ब्र.	२३	०	श.	१४	५२	३१	५	६	१०	१८	३६	२३	२७	५	मीन	बुध का उदय पश्चिम में १३।१२ मेला पृथूदक (पिहोवा)
१६	३०	चं.	८	४५	९	३९	रे.	४०	२७	२२	२०	ऐं.	१५	१७	ना.	८	४५	३१	९	६	९	१८	३६	२४	२८	६	मे. २२।२०	पंचक स. २२।२० सोमवती अमा.पुण्य चांद्र सम्वत्सर समाप्त.

चैत्र. कृ. ८ चन्द्रे प्रातः स्टें.टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५८३८

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	०	११	६	०	०	१०	४
२५	९	२२	२२	१०	१	१४	१७	१७
५	२६	४८	३	२२	५	२६	१०	१०
[illegible]	३३	५४	३२	२९	४७	१८	५७	५७
[illegible]	[illegible]	४२	१२२	६	७४	७	३	३
[illegible]	[illegible]	१	२२	२२	६	५	११	११
[illegible]	[illegible]	मा	मा	व	मा	मा	व	व
[illegible]	[illegible]	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	रेवती	स्वाती	अश्वि.	भरणी	शत.	पू. फा.

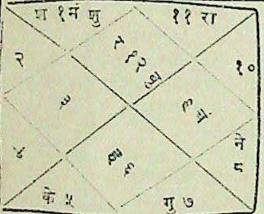

इस मास में पांच मंगलवार और अमावस्या की रात्रि को मेष राशि में पंचग्रही योग बनकर गुरु से प्रतियोग एवं हर्शल से षडष्टक योग बनेगा। यह विश्व में विप्लव कारक है "एकराशी यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।"

चैत्र कृ. ३० चन्द्रे प्रातः स्टें.टा. ५।३० केतकी अहर्गण ५८४५

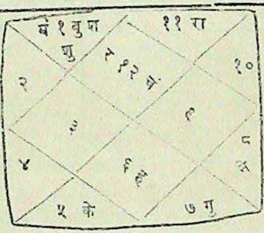

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	०	०	६	०	०	१०	४
२२	२०	२७	५	९	९	१५	१६	१६
२०	१	४२	५७	३५	४४	१६	३८	३८
६	३७	१७	२९	४२	२३	३८	४२	४२
५९	८५०	४१	१११	७	७३	७	३	३
३	१९	४६	२७	३	५९	२०	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	[illegible]
रेवती	रेवती	कृत्तिका	अश्विनी	स्वाती	अश्विनी	भरणी	शत	[illegible]

पाश्चात्य राष्ट्रों पर दुष्परिणाम विशेष रूप से प्रकट होंगे। अमेरिका तथा उसके गुट के राष्ट्र इस योग से विशेष प्रभावित होकर हानि उठायेंगे। यवन राष्ट्र अरब अफ्रिका और इंगलैंड को भी युद्ध की लपेट में आने का खतरा है। भारत के लिए मंगल स्वराशिस्थ गुरुदृष्टि होने से उत्तम फल प्रद ही सिद्ध होगा। सोमवती अमावस्या सुख शांतिकारक है। धार्मिक भावना में वृद्धि होकर शक्ति बढ़ेगी। खाद्य वस्तु अन्न रसकस कालीमिर्च दालचीनी सौंफ सोना चांदी रुई तिल तेल पाट बारदाना में तेजी होकर मंदी होगी। वायदा बाजारमें भी तेजी

प्राकाश लक्षण—पश्चांन में दिल्ली पंजाब म०प्र० राजस्थान हि०प्र० उत्तरप्रदेश में आंधी गर्ज के साथ कहीं वर्षा होगी फसल को हानि पहुँचेगी। गरमी बढ़ेगी।

जाय तो भी कोई हानि नहीं, परन्तु दूरस्थ नगरों के लिये ऊपर दिये उदाहरण में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दैनिक-लग्नसारिणी देखने की विधि

इस पंचांगमें दी हुई यह दैनिक लग्नसारिणी दिल्लीके अक्षांश रेखांश पर इसका समय ऊपर दिये हुये लग्नका समाप्तिकाल रेलवे-स्टेण्डर्ड-टाइम से घण्टा-मिनिट के रूपमें लिखा गया है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्नका प्रारम्भ काल समझें। जैसे ता० ३ अप्रैल १६६६ ई० को सारिणी में मीनलग्न के नीचे घण्टे ६ मिनट ४२ लिखे हैं, अतः मीन लग्न प्रातः ६ बजकर ४२ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे हुये घण्टा-मिनट अर्धरात्र्यंतर क्रमशः अर्धरात्रि-पर्यन्त २४ घण्टे में लिखे हैं। जैसे रात्रि के १२ बजकर १५ मिनट की जगह घण्टे० मि० १५ लिखे हुए मिलेंगे, ऐसे ही मध्याह्न के पश्चात् एक बजे की जगह १३, दो की जगह १४ आदि क्रमशः समझें।

लग्नसारिणी-परिवर्तन-उदाहरण

किसी को इस लग्न सारिणी से अन्य स्थान का लग्न-समाप्ति-काल लाना हो तो जिस तारीख को जो भी लग्न लाना हो उस तारीख का वह लग्न-समाप्ति-कालका घण्टा-मिनिट लिखें, पश्चात्-पंचांग-परिवर्तन में जिस नगर का लग्न परिवर्तन करना हो उस नगरके आगे या उस नगर के समीप के नगर के आगे लिखे हुये देशान्तर मिनट लेवें वह देशान्तर मिनिट ऋण (—) हो तो ऊपर के (इस पंचांग के) लग्न-समाप्ति-काल में घटावें, देशान्तर मिनिट धन (+) हो तो जोड़ करें तो वह देशान्तर संस्कृत स्थानीय रेलवे टाइम का लग्न-समाप्ति-काल होगा। फिर जिस स्थान का लग्न समाप्ति-काल लाना है—उसके अक्षांश और क्रान्ति से चरान्तर कोष्ठक से चरान्तर साधन करें, वह चरान्तर धन [illegible] हो तो उपर्युक्त देशान्तर संस्कृत लग्न समाप्तिकाल में मिला दे, ऋण आवे हो तो घटा देवें, तो वह स्थानीय रेलवे टाइम से स्पष्ट लग्न का समाप्ति काल होगा। उदाहरणार्थ ता० ३ अप्रैल १६६६ को मीन लग्न समाप्ति काल ६ घण्टा ४२ मिनिट है, [illegible] मथुरा में समाप्तिकाल लाना है। पंचांग परिवर्तन में [illegible] दिल्ली से मथुरा का देशान्तर मिनिट २ है, यहां यह मिनिट धन होने से ६ घण्टा ४२ मिनिट में [illegible] ६ घण्टा ४० मिनिट, यह मथुरा का देशान्तर संस्कृत मीन-लग्न का समाप्ति काल हुआ। [illegible] ३ अप्रैल को [illegible] सूर्य की क्रान्ति + उत्तर ५ [illegible] है और मथुरा के अक्षांश २७।२८ हैं, [illegible] अक्षांश और क्रान्ति से चरान्तर लिया [illegible] शून्य आया, अतः उपयुक्त देशान्तर संस्कृत समय [illegible] समाप्तिकाल घण्टा ६ मिनिट ४० यही मथुरा का मीन लग्न समाप्तिकाल हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र समझें। दिल्लीके समीपवर्ती नगर या ग्राम के लिये संस्कार नहीं किया जाय तो भी कोई हानि नहीं। परन्तु दूरस्थ नगरों के लिये ऊपर दिये उदाहरण में बताई प्रक्रिया के अनुसार लग्न-समाप्तिकाल ला करके उपयोग करने से वह सूक्ष्म लग्न होगा।

नवांश का प्रारम्भ और अन्त लाने का उदाहरण

ऊपर कहे अनुसार जिस लग्न में नवांश-समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें, शेष घं० मि० रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनिट मिला देवें, यह कुल लग्नमान के मिनिट होंगे. उन मिनिटों को ६ का भाग देवें, लब्धि १ नवांश के मिनिट प्राप्त होंगे, शेष को ६० से गुणाकर फिर ६ का भाग देने पर सैकण्ड आयेंगे, यह मिनिट और सैकेण्ड एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्यासे एक नवांशके मान को गुणाकर जो मिनिट हों वह मिनिट लग्न प्रारम्भकालमें मिलानेसे नवांश प्रारम्भ समय आयेगा और इस नवांश प्रारम्भ समयमें एक नवांशका मान मिला देने पर नवांश-समाप्ति-काल आयेगा। मेष, सिंह, धनुः लग्नमें नवांशका प्रारम्भ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांशका प्रारम्भ मकरसे, मिथुन, तुला, कुम्भ लग्नमें नवांशका प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक- मीन लग्नमें नवांशका प्रारम्भ कर्क से होगा। उदाहरणार्थ उपर्युक्त मथुरा का आया हुआ मेषारम्भ समय घण्टा ६ मिनिट ४० तथा अन्त घण्टा ८ मि० १७, अन्तमें प्रारम्भ घटाया तो घण्टा १ मि० ३७, इसके मिनिट किये तो मिनिट ६७ हुए, इनमें ६ का भाग देने पर मिनिट १० से० ४७ यह एक नवांशका मान प्राप्त हुआ। हमको मेष लग्नमें वृश्चिक नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त समय लेना है तो मेषादि से ७ नवांश भुक्त हुए, अतः १ नवांशके मान को (मि. १० से. ४७ को) ७ से गुणा किया तो घण्टा १ मि० १५ से २६ आये, यह घण्टादि मेष लग्नके प्रारम्भ समय घण्टा ६ मि० ४० में जोड़ दिये तो वृश्चिक नवांश का प्रारम्भ समय घं० ७ मि० ५५ से० २६ हुआ, इसी में एक नवांशका मान मि० १० से० ४७ जोड़े तो घण्टा ८ मि० ६ से० १६ हुआ वह वृश्चिक नवांश का समाप्ति काल हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह-प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय में होता है और फल भी जो मिलना चाहिये वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिये कि नवांश सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें। किसी को आवश्यकता हो तो स्थानीय उदयमान से मुहूर्तादि का समय सूक्ष्म से सूक्ष्म [illegible] टाइम से हमारे यहां से मंगवाने पर भेजा जा सकता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अप्रैल की दैनिक लग्न सारणी स्टैण्डर्ड रेल्वे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ
१	६।५०	८।२४	१०।२२	१२।३४	१४।५४	१७।१२	१९।२९	२१।४९	०। ७	२।१०	३।५४	५।२२
२	६।४६	८।२०	१०।१८	१२।३०	१४।५०	१७। ८	१९।२५	२१।४५	०। ३	२। ७	३।५०	५।१८
३	६।४२	८।१७	१०।१४	१२।२७	१४।४६	१७। ४	१९।२१	२१।४१	२३।५८	२। ३	३।४६	५।१४
४	६।३९	८।१३	१०।१०	१२।२३	१४।४२	१७। ०	१९।१७	२१।३७	२३।५५	१।५९	३।४२	५।१०
५	६।३५	८।१०	१०। ६	१२।१९	१४।३८	१६।५६	१९।१३	२१।३३	२३।५१	१।५५	३।३७	५। ६
६	६।३१	८। ६	१०। २	१२।१५	१४।३४	१६।५२	१९। ९	२१।२९	२३।४७	१।५१	३।३४	५। २
७	६।२७	८। २	९।५७	१२।११	१४।३०	१६।४७	१९। ५	२१।२५	२३।४३	१।४७	३।३०	४।५७
८	६।२२	७।५७	९।५३	१२। ६	१४।२५	१६।४३	१९। ०	२१।२०	२३।३८	१।४२	३।२५	४।५३
९	६।१७	७।५४	९।४९	१२। २	१४।२१	१६।३९	१८।५६	२१।१५	२३।३४	१।३८	३।२१	४।४९
१०	६।१४	७।५०	९।४५	११।५७	१४।१७	१६।३५	१८।५२	२१।१२	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४५
११	६।१०	७।४६	९।४१	११।५४	१४।१३	१६।३१	१८।४८	२१। ८	२३।२६	१।३०	३।१३	४।४
१२	६। ६	७।४३	९।३७	११।५१	१४।१०	१६।२७	१८।४५	२१। ५	२३।२३	१।२७	३।१०	४।३
१३	६। ३	७।३९	९।३४	११।४७	१४। ६	१६।२४	१८।४१	२१। ०	२३।१९	१।२३	३। ६	४।३४
१४	५।५९	७।३५	९।३०	११।४३	१४। २	१६।२०	१८।३७	२०।५६	२३।१५	१।१९	३। २	४।३०
१५	५।५६	७।३२	९।२७	११।४०	१३।५९	१६।१७	१८।३४	२०।५३	२३।१२	१।१६	२।५९	४।२७
१६	५।५२	७।२७	९।२३	११।३६	१३।५५	१६।१३	१८।३०	२०।४९	२३। ८	१।१२	२।५५	४।२३
१७	५।४८	७।२४	९।१९	११।३२	१३।५१	१६। ९	१८।२६	२०।४५	२३। ४	१। ८	२।५१	४।१९
१८	५।४४	७।२०	९।१५	११।२७	१३।४७	१६। ५	१८।२२	२०।४१	२३। ०	१। ४	२।४७	४।१५
१९	५।४०	७।१६	९।११	११।२४	१३।४३	१६। १	१८।१८	२०।३७	२२।५६	१। ०	२।४३	४।११
२०	५।३६	७।१२	९। ७	११।२०	१३।३९	१५।५७	१८।१४	२०।३३	२२।५२	०।५६	२।३९	४।
२१	५।३२	७। ७	९। ३	११।१६	१३।३५	१५।५३	१८।१०	२०।२९	२२।४८	०।५२	२।३५	४। ३
[illegible]	[illegible]।२७	७। ३	८।५८	११।११	१३।३०	१५।४८	१८। ५	२०।२४	२२।४३	०।४७	२।३०	३।५८
[illegible]	[illegible]	६।५९	८।५४	११। ७	१३।२६	१५।४५	१८। १	२०।२०	२२।३९	०।४३	२।२६	३।५४
[illegible]	[illegible]	६।५५	८।५०	११। ३	१३।२२	१५।४०	१७।५७	२०।१६	२२।३५	०।३९	२।२२	३।५०
[illegible]	[illegible]	६।५१	८।४६	१०।५९	१३।१८	१५।३६	१७।५३	२०।१२	२२।३१	०।३५	२।१८	३।४६
[illegible]	[illegible]	६।४७	८।४२	१०।५५	१३।१४	१५।३२	१७।४९	२०। ८	२२।२७	०।३१	२।१४	३।४२
[illegible]	[illegible]	६।४२	८।३७	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४५	२०। ४	२२।२२	०।२६	२ ।१९	३।३७
[illegible]	[illegible]	[illegible]३८	८।३३	१०।४६	१३। ६	१५।२४	१७।४१	२०। ०	२२।१८	०।२२	२। ५	३।३३
[illegible]	[illegible]	[illegible]३४	८।२९	१०।४२	१३। २	१५।२०	१७।३७	१९।५६	२२।१४	०।१८	२। १	३।२९
[illegible]	[illegible]	[illegible]३१	८।२६	१०।३९	१२।५९	१५।१७	१७।३४	१९।५३	२२।११	०।१५	१।५८	३।२६

मई की दैनिक लग्न सारणी स्टैण्डर्ड रल्वे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	
१	६।२६	८।२१	१०।३३	१२।५३	१५।११	१७।२८	१९।४८	२२। ६	०। ९	१।५३	३।२२	४
२	६।२२	८।१७	१०।२९	१२।४९	१५। ७	१७।२४	१९।४४	२२। २	०। ५	१।४९	३।१८	४
३	६।१८	८।१३	१०।२५	१२।४५	१५। ३	१७।२०	१९।४०	२१।५८	०। १	१।४५	३।१४	४
४	६।१५	८।१०	१०।२२	१२।४१	१५। ०	१७।१७	१९।३७	२१।५५	२३।५८	१।४२	३।११	४
५	६।११	८। ६	१०।१८	१२।३७	१४।५६	१७।१३	१९।३३	२१।५१	२३।५४	१।३७	३। ७	४
६	६। ७	८। २	१०।१४	१२।३३	१४।५२	१७। ९	१९।२९	२१।४७	२३।५०	१।३४	३। ३	४
७	६। ३	७।५८	१०।१०	१२।२९	१४।४८	१७। ५	१९।२५	२१।४३	२३।४५	१।३०	२।५९	४
८	५।५८	७।५४	१०। ६	१२।२५	१४।४४	१७। १	१९।२१	२१।३९	२३।४१	१।२६	२।५५	४
९	५।५४	७।५०	१०। २	१२।२१	१४।४०	१६।५७	१९।१७	२१।३५	२३।३७	१।२२	२।५१	४
१०	५।५०	७।४६	९।५७	१२।१७	१४।३६	१६।५३	१९।१३	२१।३१	२३।३३	१।१८	२।४७	४
११	५।४५	७।४१	९।५३	१२।१३	१४।३१	१६।४८	१९। ८	२१।२६	२३।२९	१।१३	२।४२	४
१२	५।४१	७।३७	९।४९	१२। ९	१४।२७	१६।४४	१९। ४	२१।२२	२३।२५	१। ९	२।३८	४
१३	५।३८	७।३४	९।४६	१२। ५	१४।२४	१६।४१	१९। १	२१।१९	२३।२२	१। ६	२।३५	३
१४	५।३४	७।३०	९।४२	१२। १	१४।२०	१६।३७	१८।५७	२१।१५	२३।१८	१। २	२।३१	३
१५	५।३१	७।२६	९।३७	११।५७	१४।१६	१६।३३	१८।५३	२१।११	२३।१४	०।५८	२।२७	३
१६	५।२७	७।२३	९।३५	११।५४	१४।१३	१६।३०	१८।५०	२१। ८	२३।११	०।५५	२।२४	३
१७	५।२४	७।२०	९।३२	११।५०	१४।१०	१६।२७	१८।४७	२१। ५	२३। ८	०।५२	२।२१	३
१८	५।२१	७।१६	९।२८	११।४६	१४। ६	१६।२३	१८।४३	२१। १	२३। ४	०।४८	२।१७	३
१९	५।१७	७।१३	९।२५	११।४३	१४। ३	१६।२०	१८।४०	२०।५८	२३। १	०।४५	२।१४	३
२०	५।१४	७। ९	९।२९	११।४०	१३।५९	१६।१६	१८।३६	२०।५४	२२।५७	०।४१	२।१०	३
२१	५।१०	७। ५	९।१७	११।३६	१३।५५	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२२।५३	०।३७	२। ६	३
२२	५। ६	७। १	९।१३	११।३३	१३।५१	१६। ८	१८।२८	२०।४६	२२।४९	०।३३	२। २	३
२३	५। २	६।५७	९। ९	११।२९	१३।४७	१६। ४	१८।२४	२०।४२	२२।४५	०।२९	१।५८	३
२४	४।५८	६।५३	९। ५	११।२५	१३।४३	१६। ०	१८।२०	२०।३८	२२।४१	०।२५	१।५४	३
२५	४।५४	६।४९	९। १	११।२१	१३।३९	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।३७	०।२१	१।५०	३
२६	४।५०	६।४५	८।५७	११।१७	१३।३५	१५।५२	१८।१२	२०।३०	२२।३३	०।१७	१।४६	३
२७	४।४६	६।४१	८।५३	११।१२	१३।३१	१५।४८	१८। ८	२०।२६	२२।२९	०।१३	१।४२	३
२८	४।४२	६।३७	८।४९	११। ८	१३।२७	१५।४४	१८। ४	२०।२२	२२।२५	०। ९	१।३८	३
२९	४।३८	६।३३	८।४५	११। ३	१३।२३	१५।४०	१८। ०	२०।१८	२२।२१	०। ५	१।३४	२
३०	४।३४	६।२९	८।४१	१०।५९	१३।१९	१५।३६	१७।५६	२०।१४	२२।१७	०। १	१।३०	२
३१	४।२९	६।२४	८।३६	१०।५६	१३।१४	१५।३१	१७।५१	२०। ९	२२।१२	२३।५६	१।२५	२

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दैनिक लग्नसारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

		न	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		[illegible]	१०।५१	१३। ९	१५।२६	१७।४६	२०। ४	२२। ८	२३।५२	१।२०	२।४५	४।२१
		[illegible]	१०।४७	१३। ५	१५।२२	१७।४२	२०। ०	२२। ३	२३।४७	१।१५	२।४०	४।१६
		[illegible]	१०।४३	१३। १	१५।१८	१७।३८	१९।५६	२१।५९	२३।४३	१।११	२।३६	४।१२
		[illegible]	१०।३९	१२।५७	१५।१४	१७।३४	१९।५२	२१।५५	२३।३९	१। ७	२।३२	४। ८
		[illegible]	१०।३५	१२।५३	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२१।५१	२३।३५	१। ३	२।२८	४। ४
	५।५५	८।१२	१०।३१	१२।४९	१५। ६	१७।२६	१९।४४	२१।४७	२३।३१	०।५९	२।२४	४। ०
	५।५२	८। ८	१०।२७	१२।४५	१५। २	१७।२२	१९।४०	२१।४३	२३।२७	०।५५	२।२०	३।५६
	५।४८	८। ५	१०।२४	१२।४२	१४।५९	१७।१९	१९।३७	२१।४०	२३।२४	०।५२	२।१७	३।५३
	५।४४	८। १	१०।२०	१२।३८	१४।५५	१७।१५	१९।३३	२१।३६	२३।२०	०।४८	२।१३	३।४९
	५।४०	७।५७	१०।१६	१२।३४	१४।५१	१७।११	१९।२९	२१।३२	२३।१६	०।४४	२। ९	३।४५
	५।३६	७।५३	१०।१२	१२।३०	१४।४७	१७। ७	१९।२५	२१।२८	२३।१२	०।४०	२। ५	३।४१
	५।३२	७।४९	१०। ८	१२।२६	१४।४३	१७। ३	१९।२१	२१।२४	२३। ८	०।३६	२। १	३।३७
	५।२९	७।४५	१०। ४	१२।२२	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।२०	२३। ४	०।३२	१।५७	३।३३
	५।२५	७।४२	१०। १	१२।१८	१४।३६	१६।५६	१९।१४	२१।१७	२३। १	०।२९	१।५४	३।३०
	५।२१	७।३८	९।५७	१२।१५	१४।३२	१६।५२	१९।१०	२१।१३	२२।५७	०।२५	१।५०	३।२६
	५।१७	७।३४	९।५३	१२।११	१४।२८	१६।४८	१९। ६	२१। ९	२२।५३	०।२१	१।४६	३।२२
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६।४४	१९। २	२१। ५	२२।४९	०।१७	१।४२	३।१८
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६।४०	१८।५८	२१। १	२२।४५	०।१३	१।३८	३।१४
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६।३६	१८।५५	२०।५७	२२।४२	०।१०	१।३५	३।११
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।५४	२२।३८	०। ६	१।३१	३। ७
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।५०	२२।३४	०। २	१।२७	३। ३
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।४६	२२।३०	२३।५८	१।२३	२।५९
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२।२६	२३।५४	१।१९	२।५५
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२।२२	२३।५०	१।१५	२।५१
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२।१८	२३।४६	१।१२	२।४८
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

जुलाई की दैनिक लग्नसारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ
१	६।३६	८।५६	११।१३	१३।३१	१५।५१	१८। ८	२०।१२	२१।५५	२३।२४	०।४९	२।२४	४।१९
२	६।३२	८।५२	११। ९	१३।२७	१५।४७	१८। ४	२०। ८	२१।५१	२३।२०	०।४५	२।२०	४।१५
३	६।२८	८।४८	११। ५	१३।२३	१५।४३	१८। ०	२०। ४	२१।४७	२३।१६	०।४१	२।१६	४।११
४	६।२४	८।४४	११। १	१३।१९	१५।३९	१७।५६	२०। १	२१।४३	२३।१२	०।३७	२।१२	४। ७
५	६।२०	८।४०	१०।५७	१३।१५	१५।३५	१७।५२	१९।५७	२१।३९	२३। ८	०।३३	२। ८	४। ३
६	६।१६	८।३६	१०।५३	१३।११	१५।३१	१७।४८	१९।५३	२१।३५	२३। ४	०।२९	२। ४	३।५९
७	६।१२	८।३२	१०।४९	१३। ७	१५।२७	१७।४४	१९।४९	२१।३१	२३। ०	०।२५	२। ०	३।५५
८	६। ८	८।२८	१०।४५	१३। ३	१५।२३	१७।४०	१९।४५	२१।२७	२२।५६	०।२१	१।५६	३।५१
९	६। ४	८।२४	१०।४१	१२।५९	१५।१९	१७।३६	१९।४१	२१।२३	२२।५२	०।१७	१।५२	३।४७
१०	६। ०	८।२०	१०।३७	१२।५५	१५।१५	१७।३२	१९।३७	२१।१९	२२।४८	०।१३	१।४८	३।४३
११	५।५७	८।१७	१०।३४	१२।५२	१५।१२	१७।२९	१९।३४	२१।१६	२२।४५	०।१०	१।४५	३।४०
१२	५।५३	८।१३	१०।३०	१२।४८	१५। ८	१७।२५	१९।३०	२१।११	२२।४१	०। ६	१।४१	३।३६
१३	५।४९	८। ९	१०।२६	१२।४४	१५। ४	१७।२१	१९।२६	२१। ८	२२।३७	०। २	१।३७	३।३२
१४	५।४५	८। ५	१०।२२	१२।४०	१५। ०	१७।१७	१९।२२	२१। ४	२२।३३	२३।५८	१।३३	३।२८
१५	५।४१	८। १	१०।१८	१२।३६	१४।५६	१७।१३	१९।१८	२१। ०	२२।२९	२३।५४	१।२९	३।२४
१६	५।३७	७।५७	१०।१४	१२।३२	१४।५२	१७। ९	१९।१४	२०।५६	२२।२५	२३।५०	१।२५	३।२०
१७	५।३३	७।५३	१०।१०	१२।२८	१४।४८	१७। ५	१९।१०	२०।५२	२२।२१	२३।४६	१।२१	३।१६
१८	५।२९	७।४९	१०। ६	१२।२४	१४।४५	१७। १	१९। ६	२०।४८	२२।१७	२३।४२	१।१७	३।१२
१९	५।२५	७।४५	१०। २	१२।२०	१४।४०	१६।५७	१९। २	२०।४४	२२।१३	२३।३८	१।१३	३। ८
२०	५।२१	७।४१	९।५८	१२।१६	१४।३६	१६।५३	१८।५८	२०।४०	२२। ९	२३।३४	१। ९	३। ४
२१	५।१७	७।३७	९।५४	१२।१२	१४।३२	१६।४९	१८।५४	२०।३६	२२। ५	२३।३०	१। ५	३। ०
२२	५।१३	७।३३	९।५०	१२। ८	१४।२८	१६।४५	१८।५०	२०।३२	२२। १	२३।२६	१। १	२।५४
२३	५।१०	७।३०	९।४७	१२। ५	१४।२५	१६।४२	१८।४७	२०।२९	२१।५८	२३।२३	०।५८	२।५१
२४	५। ६	७।२६	९।४४	१२। १	१४।२१	१६।३८	१८।४३	२०।२५	२१।५४	२३।१९	०।५४	२।४७
२५	५। २	७।२२	९।४०	११।५७	१४।१७	१६।३४	१८।३९	२०।२१	२१।५०	२३।१५	०।५०	२।४३
२६	४।५८	७।१८	९।३६	११।५३	१४।१३	१६।३०	१८।३५	२०।१७	२१।४६	२३।११	०।४६	२।३९
२७	४।५४	७।१४	९।३२	११।४९	१४। ९	१६।२६	१८।३१	२०।१३	२१।४२	२३। ७	०।४२	२।३५
२८	४।५०	७।१०	९।२८	११।४५	१४। ५	१६।२२	१८।२७	२०। ९	२१।३८	२३। ३	०।३८	२।३१
२९	४।४६	७। ६	९।२४	११।४१	१४। १	१६।१८	१८।२३	२०। ५	२१।३४	२२।५९	०।३४	२।२७
३०	४।४२	७। २	९।२०	११।३७	१३।५७	१६।१४	१८।१९	२०। १	२१।३०	२२।५५	०।३०	२।२३
३१	४।३८	६।५८	९।१७	११।३४	१३।५४	१६।११	१८।१६	१९।५४	२१।२७	२२।५२	०।२७	२।२०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अगस्त की दैनिक लग्नसारणी स्टैण्डर्ड रेल्वे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन
१	६|५५	९|१३	११|३१	१३|५०	१६| ८	१८|११	१९|५५	२१|२३	२२|४८	०|२४	२|१८	४|३१
२	६|५१	९| ९	११|२७	१३|४६	१६| ४	१८| ७	१९|५१	२१|१९	२२|४४	०|२०	२|१४	४|२७
३	६|४७	९| ५	११|२३	१३|४२	१६| ०	१८| ३	१९|४७	२१|१५	२२|४०	०|१६	२|१०	४|२३
४	६|४३	९| १	११|१९	१३|३७	१५|५६	१७|५९	१९|४३	२१|११	२२|३६	०|१२	२| ६	४|१९
५	६|३९	८|५७	११|१५	१३|३४	१५|५२	१७|५५	१९|३९	२१| ७	२२|३२	०| ८	२| २	४|१५
६	६|३५	८|५३	११|११	१३|३०	१५|४८	१७|५१	१९|३५	२१| ३	२२|२८	०| ४	१|५८	४|११
७	६|३१	८|४९	११| ७	१३|२६	१५|४४	१७|४७	१९|३१	२०|५९	२२|२४	०| ०	१|५४	४| ७
८	६|२८	८|४६	११| ४	१३|२३	१५|४१	१७|४४	१९|२८	२०|५६	२२|२१	२३|५७	१|५१	४| ४
९	६|२४	८|४२	११| ०	१३|१९	१५|३७	१७|४०	१९|२४	२०|५२	२२|१७	२३|५३	१|४७	४| ०
[illegible]	६|२०	८|३८	१०|५६	१३|१५	१५|३३	१७|३६	१९|२०	२०|४८	२२|१३	२३|४९	१|४३	३|५६
[illegible]	६|१६	८|३४	१०|५२	१३|११	१५|२९	१७|३२	१९|१६	२०|४४	२२| ९	२३|४५	१|३९	३|५२
[illegible]	६|१२	८|३०	१०|४८	१३| ७	१५|२५	१७|२८	१९|१२	२०|४०	२२| ५	२३|४१	१|३५	३|४८
[illegible]	६| ८	८|२६	१०|४४	१३| ३	१५|२१	१७|२४	१९| ८	२०|३६	२२| १	२३|३७	१|३१	३|४४
[illegible]	६| ४	८|२२	१०|४०	१२|५९	१५|१७	१७|२०	१९| ४	२०|३२	२१|५७	२३|३३	१|२७	३|४०
[illegible]	६| ०	८|१८	१०|३६	१२|५५	१५|१३	१७|१६	१९| ०	२०|२८	२१|५३	२३|२९	१|२३	३|३६
[illegible]	५|५५	८|१३	१०|३१	१२|५०	१५| ८	१७|११	१८|५५	२०|२३	२१|४८	२३|२४	१|१८	३|३२
[illegible]	५|५१	८| ९	१०|२७	१२|४६	१५| ४	१७| ७	१८|५१	२०|१९	२१|४४	२३|२०	१|१४	३|२७
[illegible]	५|४७	८| ५	१०|२३	१२|४२	१५| ०	१७| ३	१८|४७	२०|१५	२१|४०	२३|१६	१|१०	३|२३
[illegible]	५|४३	८| १	१०|१९	१२|३८	१४|५६	१६|५९	१८|४३	२०|११	२१|३६	२३|१२	१| ६	३|१९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०|१५	१२|३४	१४|५२	१६|५५	१८|३९	२०| ७	२१|३२	२३| ८	१| २	३|१५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०|११	१२|३०	१४|४८	१६|५१	१८|३५	२०| ३	२१|२८	२३| ४	०|५८	३|११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०| ७	१२|२६	१४|४४	१६|४७	१८|३१	१९|५९	२१|२४	२३| ०	०|५४	३| ७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०| ३	१२|२२	१४|४०	१६|४३	१८|२७	१९|५५	२१|२०	२२|५६	०|५०	३| ३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	९|५९	१२|१८	१४|३६	१६|३९	१८|२३	१९|५१	२१|१६	२२|५२	०|४६	२|५९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	९|५५	१२|१४	१४|३२	१६|३५	१८|१९	१९|४७	२१|१२	२२|४८	०|४२	२|५५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	९|५२	१२|११	१४|२९	१६|३२	१८|१६	१९|४४	२१| ९	२२|४५	०|३९	२|५२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	९|४८	१२| ७	१४|२५	१६|२८	१८|१२	१९|४०	२१| ५	२२|४१	०|३५	२|४८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	९|४४	१२| ३	१४|२१	१६|२४	१८| ८	१९|३६	२१| १	२२|३७	०|३१	२|४४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	९|४०	११|५९	१४|१७	१६|२०	१८| ४	१९|३२	२०|५७	२२|३३	०|२७	२|४०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	९|३७	११|५६	१४|१४	१६|१७	१८| १	१९|२९	२०|५४	२२|३०	०|२४	२|३७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	९|३४	११|५३	१४|११	१६|१४	१७|५८	१९|२६	२०|५१	२२|२७	०|२१	२|३४

सितम्बर की दैनिक लग्नसारणी स्टैण्डर्ड रेल्वे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क
१	७|१२	९|३०	११|५०	१४| ७	१६|११	१७|५४	१९|२३	२०|४८	२२|२३	०|१८	२|३०	४|५०
२	७| ८	९|२६	११|४६	१४| ३	१६| ७	१७|५०	१९|१९	२०|४४	२२|१९	०|१४	२|२६	४|४[illegible]
३	७| ४	९|२२	११|४२	१३|५९	१६| ३	१७|४६	१९|१५	२०|४०	२२|१५	०|१०	२|२२	४|४[illegible]
४	७| ०	९|१८	११|३८	१३|५५	१५|५९	१७|४२	१९|११	२०|३६	२२|११	०| ६	२|१८	४|३[illegible]
५	६|५६	९|१४	११|३४	१३|५१	१५|५५	१७|३८	१९| ७	२०|३२	२२| ७	०| २	२|१४	४|३[illegible]
६	६|५२	९|१०	११|३०	१३|४७	१५|५१	१७|३४	१९| ३	२०|२८	२२| ३	२३|५८	२|१०	४|३[illegible]
७	६|४८	९| ६	११|२६	१३|४३	१५|४७	१७|३०	१८|५९	२०|२४	२१|५९	२३|५४	२| ६	४|२[illegible]
८	६|४४	९| २	११|२२	१३|३९	१५|४३	१७|२६	१८|५५	२०|२०	२१|५५	२३|५०	२| २	४|२[illegible]
९	६|४०	८|५८	११|१८	१३|३५	१५|३९	१७|२२	१८|५१	२०|१६	२१|५१	२३|४६	१|५८	४|१[illegible]
१०	६|३६	८|५४	११|१४	१३|३१	१५|३५	१७|१८	१८|४७	२०|१२	२१|४७	२३|४२	१|५४	४|१[illegible]
११	६|३२	८|५०	११|१०	१३|२७	१५|३१	१७|१४	१८|४३	२०| ८	२१|४३	२३|३८	१|५०	४|१[illegible]
१२	६|२८	८|४६	११| ६	१३|२३	१५|२७	१७|१०	१८|३९	२०| ४	२१|३९	२३|३४	१|४६	४|[illegible]
१३	६|२४	८|४२	११| २	१३|१९	१५|२३	१७| ६	१८|३५	२०| ०	२१|३५	२३|३०	१|४२	४|[illegible]
१४	६|२०	८|३८	१०|५८	१३|१५	१५|१९	१७| २	१८|३१	१९|५६	२१|३१	२३|२६	१|३८	३|५[illegible]
१५	६|१६	८|३४	१०|५४	१३|११	१५|१५	१६|५८	१८|२७	१९|५२	२१|२७	२३|२२	१|३४	३|५[illegible]
१६	६|११	८|२९	१०|४९	१३| ६	१५|१०	१६|५३	१८|२२	१९|४७	२१|२२	२३|१७	१|२९	३|५[illegible]
१७	६| ७	८|२५	१०|४५	१३| २	१५| ६	१६|४९	१८|१८	१९|४३	२१|१८	२३|१३	१|२५	३|४[illegible]
१८	६| ३	८|२१	१०|४१	१२|५८	१५| २	१६|४५	१८|१४	१९|३९	२१|१४	२३| ९	१|२१	३|४[illegible]
१९	५|५९	८|१७	१०|३७	१२|५४	१४|५८	१६|४१	१८|१०	१९|३५	२१|१०	२३| ५	१|१७	३|३[illegible]
२०	५|५५	८|१३	१०|३३	१२|५०	१४|५४	१६|३७	१८| ५	१९|३१	२१| ६	२३| १	१|१३	३|३[illegible]
२१	५|५१	८| ९	१०|२९	१२|४६	१४|५०	१६|३३	१८| १	१९|२७	२१| २	२२|५७	१| ९	३|२[illegible]
२२	५|४७	८| ५	१०|२५	१२|४२	१४|४६	१६|२९	१७|५६	१९|२३	२०|५८	२२|५३	१| ५	३|२[illegible]
२३	५|४३	८| १	१०|२१	१२|३८	१४|४२	१६|२५	१७|५२	१९|१९	२०|५४	२२|४९	१| १	७|२[illegible]
२४	५|३९	७|५७	१०|१७	१२|३४	१४|३८	१६|२१	१७|४८	१९|१५	२०|५०	२२|४५	०|५७	३|१[illegible]
२५	५|३५	७|५३	१०|१३	१२|३०	१४|३४	१६|१७	१७|४४	१९|११	२०|४६	२२|४१	०|५३	३|१[illegible]
२६	५|३१	७|४९	१०| ९	१२|२६	१४|३०	१६|१३	१७|४०	१९| ७	२०|४२	२२|३७	०|४९	३|[illegible]
२७	५|२७	७|४५	१०| ५	१२|२२	१४|२६	१६| ९	१७|३६	१९| ३	२०|३८	२२|३३	०|४५	३|[illegible]
२८	५|२३	७|४१	१०| १	१२|१८	१४|२२	१६| ५	१७|३२	१८|५९	२०|३४	२२|२९	०|४१	३|[illegible]
२९	५|१९	७|३७	९|५७	१२|१४	१४|१८	१६| १	१७|२८	१८|५५	२०|३०	२२|२५	०|३७	२|५[illegible]
३०	५|१४	७|३४	९|५४	१२|११	१४|१५	१५|५८	१७|२५	१८|५२	२०|२७	२२|२२	०|३३	२|५४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

…की दैनिक लग्नसारणी स्टैण्डर्ड रेल्वे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

[illegible]	[illegible]	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह
[illegible]	…०	१२। ७	१४।११	१५।५४	१७।२१	१८।४८	२०।२३	२२।१८	०।३०	२।५०	५।
[illegible]	…६	१२। ३	१४। ७	१५।५०	१७।१७	१८।४४	२०।१९	२२।१४	०।२६	२।४६	५।
[illegible]	…२	११।५९	१४। ३	१५।१३	१८।४०	२०।१५	२२।१०	०।२२	७।१	२।४२	५।
[illegible]	…३८	११।५५	१३।५९	१५।४२	१७। ९	१८।३६	२०।११	२२। ६	४ ०।१८	२।३८	४।५
[illegible]	…३४	११।५१	१३।५५	१५।३८	१७। ५	१८।३२	२०। ७	२२। २	०।१४	२।३४	४।५२
[illegible]	…३०	११।४७	१३।५१	१५।३४	१७। १	१८।२८	२०। ३	२१।५८	०।१०	२।३०	४।४८
[illegible]	…२६	११।४३	१३।४७	१५।३०	१६।५७	१८।२४	१९।५९	२१।५४	०। ६	२।२६	४।४४
[illegible]	९।२२	११।३९	१३।४३	१५।२६	१६।५३	१८।२०	१९।५५	२१।५०	०। २	२।२२	४।४०
६।५८	९।१८	११।३५	१३।३९	१५।२२	१६।४९	१८।१६	१९।५१	२१।४६	२३।५८	२।१८	४।३६
६।५४	९।१३	११।३०	१३।३४	१५।१७	१६।४४	१८।११	१९।४६	२१।४१	२३।५३	२।१३	४।३१
६।४९	९। ९	११।२६	१३।३०	१५।१३	१६।४०	१८। ७	१९।४२	२१।३७	२३।४९	२। ९	४।२७
६।४५	९। ५	११।२२	१३।२६	१५। ९	१६।३६	१८। ३	१९।३८	२१।३३	२३।४५	२। ५	४।२३
६।४१	९। १	११।१८	१३।२२	१५। ५	१६।३२	१७।५९	१९।३४	२१।२९	२३।४१	२। १	४।१९
६।३८	८।५८	११।१५	१३।१९	१५। २	१६।२९	१७।५६	१९।३१	२१।२६	२३।३८	१।५८	४।१६
६।३४	८।५४	११।११	१३।१५	१४।५८	१६।२५	१७।५२	१९।२७	२१।२२	२३।३४	१।५४	४।१२
६।३०	८।५०	११। ७	१३।११	१४।५४	१६।२१	१७।४८	१९।२३	२१।१८	२३।३०	१।५०	४। ८
६।२५	८।४५	११। २	१३। ६	१४।४९	१६।१६	१७।४३	१९।१८	२१।१३	२३।२५	१।४५	४। ३
६।२१	८।४१	१०।५८	१३। २	१४।४५	१६।१२	१७।३९	१९।१४	२१। ९	२३।२१	१।४१	३।५९
६।१७	८।३७	१०।५४	१२।५८	१४।४१	१६। ८	१७।३५	१९।१०	२१। ५	२३।१७	१।३७	३।५५
६।१३	८।३३	१०।५०	१२।५४	१४।३७	१६। ४	१७।३१	१९। ६	२१। १	२३।१३	१।३३	३।५१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९। २	२०।५७	२३। ९	१।२९	३।४७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८।५८	२०।५३	२३। ५	१।२५	३।४३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।४९	२३। १	१।२१	३।३९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।४५	२२।५७	१।१७	३।३५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२।५३	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।३७	२२।५०	१।१०	३।२८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।३३	२२।४६	१। ६	३।२४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।२९	२२।४२	१। २	३।२०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।२५	२२।३८	०।५८	३।१६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।२१	२२।३४	०।५४	३।१२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२।३०	०।५०	३। ७

नवम्बर की दैनिक लग्नसारणी स्टैण्डर्ड रेल्वे टाइम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७।४५	१०। ३	१२। ७	१३।५०	१५।१९	१६।४३	१८।१९	२०।१४	२२।२६	०।४६	३। ३	५।२१
२	७।४१	९।५९	१२। ३	१३।४६	१५।१५	१६।३९	१८।१५	२०।१०	२२।२२	०।४२	२।५९	५।१७
३	७।३७	९।५५	११।५९	१३।४२	१५।११	१६।३५	१८।११	२०। ६	२२।१८	०।३८	२।५५	५।१३
४	७।३३	९।५१	११।५५	१३।३८	१५। ७	१६।३१	१८। ७	२०। २	२२।१४	०।३४	२।५१	५। ८
५	७।२९	९।४७	११।५१	१३।३४	१५। ३	१६।२७	१८। ३	१९।५८	२२।१०	०।३०	२।४७	५। ५
६	७।२५	९।४३	११।४७	१३।३०	१४।५९	१६।२३	१७।५९	१९।५४	२२। ६	०।२६	२।४३	५। १
७	७।२१	९।३९	११।४३	१३।२६	१४।५५	१६।१९	१७।५५	१९।५०	२२। २	०।२२	२।३९	४।५७
८	७।१८	९।३६	११।४०	१३।२३	१४।५२	१६।१६	१७।५२	१९।४७	२१।५९	०।१९	२।३६	४।५४
९	७।१४	९।३२	११।३६	१३।१९	१४।४८	१६।१२	१७।४८	१९।४३	२१।५५	०।१५	२।३२	४।५०
१०	७।१०	९।२८	११।३२	१३।१५	१४।४४	१६। ८	१७।४४	१९।३९	२१।५१	०।११	२।२८	४।४६
११	७। ६	९।२४	११।२८	१३।११	१४।४०	१६। ४	१७।४०	१९।३५	२१।४७	०। ७	२।२४	४।४२
१२	७। २	९।२०	११।२४	१३। ७	१४।३६	१६। ०	१७।३६	१९।३१	२१।४३	०। ३	२।२०	४।३८
१३	६।५८	९।१७	११।२०	१३। ३	१४।३२	१५।५६	१७।३२	१९।२७	२१।३९	२३।५९	२।१६	४।३४
१४	६।५४	९।१३	११।१६	१२।५९	१४।२८	१५।५२	१७।२८	१९।२३	२१।३५	२३।५५	२।१२	४।३०
१५	६।५०	९। ९	११।१२	१२।५५	१४।२४	१५।४८	१७।२४	१९।१९	२१।३१	२३।५१	२। ८	४।२६
१६	६।४७	९। ६	११। ९	१२।५२	१४।२१	१५।४५	१७।२१	१९।१६	२१।२८	२३।४८	२। ५	४।२३
१७	६।४३	९। २	११। ५	१२।४८	१४।१७	१५।४१	१७।१७	१९।१२	२१।२४	२३।४४	२। १	४।१९
१८	६।३९	८।५८	११। १	१२।४४	१४।१३	१५।३७	१७।१३	१९। ८	२१।२१	२३।४१	१।५७	४।१५
१९	६।३५	८।५४	१०।५७	१२।४०	१४। ९	१५।३३	१७। ९	१९। ४	२१।१७	२३।३७	१।५३	४।११
२०	६।३१	८।५०	१०।५३	१२।३६	१४। ५	१५।२९	१७। ५	१९। ०	२१।१३	२३।३३	१।४९	४। ७
२१	६।२७	८।४६	१०।४९	१२।३२	१४। १	१५।२५	१७। १	१८।५६	२१। ९	२३।२९	१।४५	४। ३
२२	६।२३	८।४२	१०।४५	१२।२८	१३।५७	१५।२१	१६।५७	१८।५२	२१। ५	२३।२५	१।४१	३।५९
२३	६।१९	८।३८	१०।४१	१२।२४	१३।५३	१५।१७	१६।५३	१८।४८	२१। १	२३।२१	१।३७	३।५५
२४	६।१५	८।३४	१०।३७	१२।२०	१३।४९	१५।१३	१६।४९	१८।४४	२०।५७	२३।१७	१।३३	३।५१
२५	६।११	८।३०	१०।३३	१२।१६	१३।४५	१५। ९	१६।४५	१८।४०	२०।५३	२३।१३	१।२९	३।४७
२६	६। ७	८।२६	१०।२९	१२।१२	१३।४१	१५। ५	१६।४१	१८।३६	२०।४९	२३। ९	१।२५	३।४३
२७	६। ३	८।२२	१०।२५	१२। ८	१३।३७	१५। १	१६।३७	१८।३२	२०।४५	२३। ५	१।२१	३।३९
२८	५।५९	८।१८	१०।२१	१२। ४	१३।३३	१४।५७	१६।३३	१८।२८	२०।४१	२३। १	१।१७	३।३५
२९	५।५५	८।१४	१०।१७	१२। ०	१३।२९	१४।५३	१६।२९	१८।२४	२०।३७	२२।५७	१।१३	३।३१
३०	५।५१	८।१०	१०।१३	११।५७	१३।२६	१४।५०	१६।२६	१८।२१	२०।३४	२२।५४	१।१०	३।२८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिसम्बर की दैनिक लग्नसारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं०मि०

तारीख	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८।५	१०।९	११।५३	१३।२१	१४।४६	१६।२१	१८।१६	२०।२९	२२।४८	१।६	३।२३	५।४३
२	८।१	१०।५	११।४९	१३।१७	१४।४२	१६।१७	१८।१२	२०।२५	२२।४४	१।२	३।१९	५।३९
३	७।५७	१०।१	११।४५	१३।१३	१४।३८	१६।१३	१८।८	२०।२१	२२।४०	०।५८	३।१५	५।३५
४	७।५३	९।५७	११।४१	१३।९	१४।३४	१६।९	१८।४	२०।१७	२२।३६	०।५४	३।११	५।३१
५	७।४९	९।५३	११।३७	१३।५	१४।३०	१६।५	१८।०	२०।१३	२२।३२	०।५०	३।७	५।२७
६	७।४६	९।४९	११।३३	१३।१	१४।२६	१६।१	१७।५६	२०।९	२२।२८	०।४६	३।३	५।२३
७	७।४३	९।४६	११।३०	१२।५८	१४।२३	१५।५८	१७।५३	२०।६	२२।२५	०।४३	३।०	५।२०
८	७।३९	९।४३	११।२७	१२।५५	१४।२०	१५।५५	१७।५०	२०।३	२२।२२	०।४०	२।५७	५।१७
९	७।३५	९।३९	११।२३	१२।५१	१४।१६	१५।५१	१७।४६	१९।५९	२२।१८	०।३६	२।५३	५।१३
१०	७।३१	९।३५	११।१९	१२।४७	१४।१२	१५।४७	१७।४२	१९।५५	२२।१४	०।३२	२।४९	५।९
११	७।२७	९।३१	११।१५	१२।४३	१४।८	१५।४३	१७।३८	१९।५१	२२।१०	०।२८	२।४५	५।५
१२	७।२३	९।२७	११।११	१२।३९	१४।४	१५।३९	१७।३४	१९।४७	२२।६	०।२४	२।४१	५।१
१३	७।१९	९।२३	११।७	१२।३५	१४।०	१५।३५	१७।३०	१९।४३	२२।२	०।२०	२।३७	४।५७
१४	७।१५	९।१९	११।३	१२।३१	१३।५६	१५।३१	१७।२६	१९।३९	२१।५८	०।१६	२।३३	४।५३
१५	७।१०	९।१४	१०।५८	१२।२६	१३।५१	१५।२६	१७।२१	१९।३४	२१।५३	०।११	२।२८	४।४८
१६	७।६	९।१०	१०।५४	१२।२२	१३।४७	१५।२२	१७।१७	१९।३०	२१।४९	०।७	२।२४	४।४४
१७	७।२	९।६	१०।५०	१२।१८	१३।४३	१५।१८	१७।१३	१९।२६	२१।४५	०।३	२।२०	४।४०
[illegible]	[illegible]	९।२	१०।४६	१२।१४	१३।३९	१५।१४	१७।९	१९।२२	२१।४१	२३।५९	२।१६	४।३६
[illegible]	[illegible]	८।५८	१०।४२	१२।१०	१३।३५	१५।१०	१७।५	१९।१८	२१।३७	२३।५५	२।१२	४।३२
[illegible]	[illegible]	[illegible]५४	१०।३८	१२।६	१३।३१	१५।६	१७।१	१९।१४	२१।३३	२३।५१	२।८	४।२८
[illegible]	[illegible]	[illegible]५०	१०।३४	१२।२	१३।२७	१५।२	१६।५७	१९।१०	२१।२९	२३।४७	२।४	४।२४
[illegible]	[illegible]	[illegible]४६	१०।३०	११।५८	१३।२३	१४।५८	१६।५३	१९।६	२१।२५	२३।४३	२।०	४।२०
[illegible]	[illegible]	[illegible]४२	१०।२६	११।५४	१३।१९	१४।५४	१६।४९	१९।२	२१।२१	२३।३९	१।५६	४।१६
[illegible]	[illegible]	[illegible]३८	१०।२३	११।५१	१३।१६	१४।५१	१६।४६	१८।५९	२१।१८	२३।३६	१।५३	४।१३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।१९	११।४७	१३।१२	१४।४७	१६।४२	१८।५५	२१।१४	२३।३२	१।४९	४।९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।१६	११।४४	१३।९	१४।४४	१६।३९	१८।५२	२१।११	२३।२९	१।४६	४।६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।१२	११।४०	१३।५	१४।४०	१६।३५	१८।४८	२१।७	२३।२५	१।४२	४।२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।८	११।३६	१३।१	१४।३६	१६।३१	१८।४४	२१।३	२३।२१	१।३८	३।५८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।४	११।३२	१२।५७	१४।३२	१६।२७	१८।४०	२०।५९	२३।१७	१।३४	३।५४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।१	११।२९	१२।५४	१४।२९	१६।२४	१८।३७	२०।५६	२३।१४	१।३१	३।[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	९।५७	११।२५	१२।५०	१४।२५	१६।२०	१८।३३	२०।५२	२३।१०	१।२७	३।४७

जनवरी की दैनिक लग्नसारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८।९	९।५३	११।२१	१२।४६	१४।२२	१६।१६	१८।२९	२०।४९	२३।६	१।२४	३।४३	६।[illegible]
२	८।५	९।४९	११।१७	१२।४२	१४।१८	१६।१२	१८।२५	२०।४५	२३।२	१।२०	३।३९	५।[illegible]
३	८।१	९।४५	११।१३	१२।३८	१४।१४	१६।८	१८।२१	२०।४१	२२।५८	१।१६	३।३५	५।[illegible]
४	७।५७	९।४१	११।९	१२।३४	१४।१०	१६।४	१८।१७	२०।३७	२२।५४	१।१२	३।३१	५।[illegible]
५	७।५३	९।३७	११।५	१२।३०	१४।६	१६।०	१८।१३	२०।३३	२२।५०	१।८	३।२७	५।[illegible]
६	७।४९	९।३३	११।१	१२।२६	१४।२	१५।५६	१८।९	२०।२९	२२।४६	१।४	३।२३	५।[illegible]
७	७।४५	९।२९	१०।५७	१२।२२	१३।५८	१५।५२	१८।५	२०।२५	२२।४२	१।०	३।१९	५।[illegible]
८	७।४२	९।२६	१०।५४	१२।१९	१३।५५	१५।४९	१८।२	२०।२२	२२।३९	०।५७	३।१६	५।[illegible]
९	७।३८	९।२२	१०।५०	१२।१५	१३।५१	१५।४५	१७।५८	२०।१८	२२।३५	०।५३	३।१२	५।[illegible]
१०	७।३४	९।१८	१०।४६	१२।११	१३।४७	१५।४१	१७।५४	२०।१४	२२।३१	०।४९	३।८	५।[illegible]
११	७।३१	९।१५	१०।४३	१२।८	१३।४४	१५।३८	१७।५१	२०।११	२२।२८	०।४६	३।५	५।[illegible]
१२	७।२७	९।११	१०।३९	१२।४	१३।४०	१५।३४	१७।४७	२०।७	२२।२४	०।४२	३।१	५।[illegible]
१३	७।२४	९।८	१०।३६	१२।१	१३।३७	१५।३१	१७।४४	२०।४	२२।२१	०।३९	२।५८	५।[illegible]
१४	७।२०	९।४	१०।३२	११।५७	१३।३३	१५।२७	१७।४०	२०।०	२२।१७	०।३५	२।५४	५।[illegible]
१५	७।१७	९।१	१०।२९	११।५४	१३।३०	१५।२४	१७।३७	१९।५७	२२।१४	०।३२	२।५१	५।[illegible]
१६	७।१३	८।५७	१०।२५	११।५०	१३।२६	१५।२०	१७।३३	१९।५३	२२।१०	०।२८	२।४७	५।[illegible]
१७	७।९	८।५३	१०।२१	११।४६	१३।२२	१५।१६	१७।२९	१९।४९	२२।६	०।२४	२।४३	५।[illegible]
१८	७।४	८।४८	१०।१६	११।४१	१३।१७	१५।११	१७।२४	१९।४४	२२।१	०।१९	२।३८	४।[illegible]
१९	७।०	८।४४	१०।१२	११।३७	१३।१३	१५।७	१७।२०	१९।४०	२१।५७	०।१५	२।३४	४।[illegible]
२०	६।५६	८।४०	१०।८	११।३३	१३।९	१५।३	१७।१६	१९।३६	२१।५३	०।११	२।३०	४।[illegible]
२१	६।५२	८।३६	१०।४	११।२९	१३।५	१४।५९	१७।१२	१९।३२	२१।४९	०।७	२।२६	४।[illegible]
२२	६।४८	८।३२	१०।०	११।२५	१३।१	१४।५५	१७।८	१९।२८	२१।४४	०।३	२।२२	४।[illegible]
२३	६।४३	८।२७	९।५५	११।२०	१२।५६	१४।५०	१७।३	१९।२३	२१।४०	२३।५८	२।१७	४।[illegible]
२४	६।३९	८।२३	९।५१	११।१६	१२।५२	१४।४६	१६।५९	१९।१९	२१।३६	२३।५४	२।१३	४।[illegible]
२५	६।३५	८।१९	९।४७	११।१२	१२।४८	१४।४२	१६।५५	१९।१५	२१।३२	२३।५०	२।९	४।[illegible]
२६	६।३१	८।१५	९।४३	११।८	१२।४४	१४।३८	१६।५१	१९।११	२१।२८	२३।४६	२।५	४।[illegible]
२७	६।२७	८।११	९।३९	११।४	१२।४०	१४।३४	१६।४७	१९।७	२१।२४	२३।४२	२।१	४।[illegible]
२८	६।२३	८।७	९।३५	११।०	१२।३६	१४।३०	१६।४३	१९।३	२१।२०	२३।३८	१।५७	४।[illegible]
२९	६।१९	८।३	९।३१	१०।५६	१२।३२	१४।२६	१६।३९	१८।५९	२१।१६	२३।३४	१।५३	४।[illegible]
३०	६।१५	७।५९	९।२७	१०।५२	१२।२८	१४।२२	१६।३५	१८।५५	२१।११	२३।३०	१।४९	४।[illegible]
३१	६।११	७।५५	९।२३	१०।४८	१२।२४	१४।१८	१६।३१	१८।५१	२१।७	२३।२६	१।४५	४।[illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

…की दैनिक लग्न सारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

			मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।४३	१२।१९	१४।१४	१६।२६	१८।४६	२१। ४	२३।२१	१।४१	३।५८	६। २
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।३९	१२।१५	१४।१०	१६।२२	१८।४२	२१। ०	२३।१७	१।३७	३।५४	५।५८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।३६	१२।१२	१४। ७	१६।१९	१८।३९	२०।५७	२३।१४	१।३४	३।५१	५।५५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।३२	१२। ८	१४। ३	१६।१५	१८।३५	२०।५३	२३।१०	१।३०	३।४७	५।५१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।२९	१२। ५	१४। ०	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२३। ७	१।२७	३।४४	५।४८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।२५	१२। १	१३।५६	१६। ८	१८।२८	२०।४६	२३। ३	१।२३	३।४१	५।४४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।२१	११।५७	१३।५२	१६। ४	१८।२४	२०।४२	२२।५९	१।१९	३।३७	५।४०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०।१७	११।५३	१३।४८	१६। ०	१८।२०	२०।३८	२२।५५	१।१५	३।३३	५।३६
[illegible]	[illegible]	८।४९	१०।१३	११।४९	१३।४४	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।५१	१।११	३।२९	५।३२
[illegible]	[illegible]	८।४४	१०। ८	११।४४	१३।३९	१५।५१	१८।११	२०।२९	२२।४६	१। ६	३।२४	५।२७
११	७। ४	८।४०	१०। ४	११।४०	१३।३५	१५।४७	१८। ७	२०।२५	२२।४२	१। २	३।२०	५।२३
१२	७। ०	८।३६	१०। ०	११।३६	१३।३१	१५।४३	१८। ३	२०।२१	२२।३८	०।५८	३।१६	५।१९
१३	[illegible]	८।३२	९।५६	११।३२	१३।२७	१५।३९	१७।५९	२०।१७	२२।३४	०।५४	३।१२	५।१५
१४	[illegible]	८।२८	९।५२	११।२८	१३।२३	१५।३५	१७।५५	२०।१३	२२।३०	०।५०	३। ८	५।११
१५	[illegible]	८।२४	९।४८	११।२४	१३।१९	१५।३१	१७।५१	२०। ९	२२।२६	०।४६	३। ४	५। ७
१६	[illegible]	८।२०	९।४४	११।२०	१३।१५	१५।२७	१७।४७	२०। ५	२२।२२	०।४२	३। ०	५। ३
१७	६।४७	८।१६	९।४०	११।१६	१३।११	१५।२३	१७।४३	२०। १	२२।१८	०।३८	२।५६	४।५९
१८	६।४३	८।१२	९।३६	११।१२	१३। ७	१५।१२	१७।३६	१९।५७	२२।१४	०।३४	२।५२	४।५५
१९	६।३९	८। ८	९।३२	११। ८	१३। ३	१५।१५	१७।३५	१९।५३	२२।१०	०।३०	२।४८	४।५१
२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१७।३०	१९।४८	२२। ५	०।२५	२।४३	४।४६
२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१७।२६	१९।४४	२२। १	०।२१	२।३९	४।४२
२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१७।२२	१९।४०	२१।५७	०।१७	२।३५	४।३८
२३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९।३६	२१।५३	०।१३	२।३१	४।३४
२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९।३२	२१।४९	०। ९	२।२७	४।३०
२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१।४५	०। ५	२।२३	४।२६
२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१।४१	०। १	२।२०	४।२३
२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३।५८	२।१६	४।१९
२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३।५४	२।१२	४।१५

यह लग्न का समाप्तिकाल है। प्रत्येक मास में दिये हुए स्टैण्डर्ड टाईम को उस [illegible] राशि का समाप्तिकाल ही समझें।

मार्च की दैनिक लग्नसारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर
१	७।२८	८।५३	१०।२८	१२।२३	१४।३६	१६।५५	१९।१३	२१।३०	२३।५०	२। ८	४।११	५।५५
२	७।२४	८।४९	१०।२४	१२।१९	१४।३२	१६।५१	१९। ९	२१।२६	२३।४६	२। ४	४। ७	५।५१
३	७।२०	८।४५	१०।२०	१२।१५	१४।२८	१६।४७	१९। ५	२१।२२	२३।४२	२। ०	४। ३	५।४७
४	७।१६	८।४१	१०।१६	१२।११	१४।२४	१६।४३	१९। १	२१।१८	२३।३८	१।५६	३।५९	५।४३
५	७।१३	८।३८	१०।१३	१२। ८	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१।१५	२३।३५	१।५३	३।५६	५।४०
६	७। ९	८।३४	१०। ९	१२। ४	१४।१७	१६।३६	१८।५४	२१।११	२३।३१	१।४९	३।५२	५।३६
७	७। ५	८।३०	१०। ५	१२। ०	१४।१३	१६।३२	१८।५०	२१। ७	२३।२७	१।४५	३।४८	५।३२
८	७। १	८।२६	१०। १	११।५६	१४। ९	१६।२८	१८।४६	२१। ३	२३।२३	१।४१	३।४४	५।२८
९	६।५७	८।२२	९।५७	११।५२	१४। ५	१६।२४	१८।४२	२०।५९	२३।१९	१।३७	३।४०	५।२४
१०	६।५३	८।१७	९।५३	११।४७	१४। ०	१६।१९	१८।३७	२०।५४	२३।१४	१।३२	३।३५	५।१९
११	६।४८	८।१३	९।४८	११।४३	१३।५६	१६।१५	१८।३३	२०।५०	२३।१०	१।२८	३।३१	५।१५
१२	६।४४	८। ९	९।४४	११।३९	१३।५२	१६।११	१८।२९	२०।४६	२३। ६	१।२४	३।२७	५।११
१३	६।४०	८। ५	९।४०	११।३५	१३।४८	१६। ७	१८।२५	२०।४२	२३। २	१।२०	३।२३	५। ७
१४	६।३६	८। १	९।३६	११।३१	१३।४४	१६। ३	१८।२१	२०।३८	२२।५८	१।१६	३।१९	५। ३
१५	६।३२	७।५७	९।३२	११।२७	१३।४०	१५।५९	१८।१७	२०।३४	२२।५४	१।१२	३।१५	४।५९
१६	६।२८	७।५३	९।२८	११।२३	१३।३६	१५।५५	१८।१३	१०।३०	२२।५०	१। ८	३।११	४।५५
१७	६।२४	७।४९	९।२४	११।१९	१३।३२	१५।५१	१८। ९	२०।२६	२२।४६	१। ४	३। ७	४।५१
१८	६।२०	७।४५	९।२०	११।१५	१३।२८	१५।४७	१८। ५	२०।२२	२२।४२	१। ०	३। ३	४।४७
१९	६।१६	७।४१	९।१६	११।११	१३।२४	१५।४३	१८। १	२०।१८	२२।३८	०।५६	२।५९	४।४३
२०	६।१२	७।३७	९।१२	११। ७	१३।२०	१५।३९	१७।५७	२०।१४	२२।३४	०।५२	२।५५	४।३९
२१	६। ८	७।३३	९। ८	११। ३	१३।१६	१५।३५	१७।५३	२०।१०	२२।३०	०।४८	२।५१	४।३५
२२	६। ४	७।२९	९। ४	१०।५९	१३।१२	१५।३१	१७।४९	२०। ६	२२।२६	०।४४	२।४७	४।३१
२३	६। ०	७।२५	९। ०	१०।५५	१३। ८	१५।२७	१७।४५	२०। २	२२।२२	०।४०	२।४३	४।२७
२४	५।५६	७।२१	८।५६	१०।५१	१३। ४	१५।२३	१७।४१	१९।५८	२२।१८	०।३६	२।३९	४।२३
२५	५।५२	७।१७	८।५२	१०।४७	१३। ०	१५।१९	१७।३७	१९।५४	२२।१४	०।३२	२।३५	४।१९
२६	५।४८	७।१३	८।४८	१०।४३	१२।५६	१५।१५	१७।३३	१९।५०	२२।१०	०।२८	२।३१	४।१५
२७	५।४४	७। ९	८।४४	१०।३९	१२।५२	१५।११	१७।२९	१९।४६	२२। ६	०।२४	२।२७	४।११
२८	५।४०	७। ५	८।४०	१०।३५	१२।४८	१५। ७	१७।२५	१९।४२	२२। २	०।२०	२।२३	४। ७
२९	५।३६	७। १	८।३६	१०।३१	१२।४४	१५। ३	१७।२१	१९।३८	२१।५८	०।१६	२।१९	४। ३
३०	५।३२	६।५७	८।३२	१०।२७	१२।४०	१४।५९	१७।१७	१९।३४	२१।५४	०।१२	२।१५	३।५९
३१	५।२८	६।५३	८।२८	१०।२३	१२।३६	१४।५५	१७।१३	१९।३०	२१।५०	०। ८	२।११	३।५५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

अथ जन्म-समयादि-विचार

सर्वशास्त्र-शिरोमणि ज्योतिःशास्त्रकी महत्ताको सारा संसार जानता है, क्योंकि यह प्रत्यक्ष फलदायक है, अतः प्राचीनकालसे लेकर आज तक इसका प्रभाव चलता आ रहा है। इसके बिना और कोई शास्त्र नहीं, जोकि तीनों काल (भूत, भविष्य, वर्तमान)की वार्ता को बतला सके, और वेदके छः अंगोंमें से यह नेत्र स्थानीय है, जिस प्रकार संपूर्ण अंगोंके सुन्दर तथा पुष्ट होने पर भी नेत्रविहीन मनुष्यका जन्म व्यर्थ होता है, इसी प्रकार सम्पूर्ण शास्त्रोंके पढ़ लेने पर भी ज्योतिःशास्त्र विहीन भूत-भविष्य को बतलानेमें मूकसा रह जाता है. परन्तु खेद इस बातका है, कि ऐसा होने परभी आजकल फलादेशके पूरा न मिलनेसे लोगोंकी श्रद्धा बहुत घट गई है, इसमें कारण तो बहुत हैं, परन्तु दो चार नीचे बतलाये जाते हैं—जब बालकका जन्म होता है, उस समय गांव वालोंके पास कोई घड़ी आदिका सुप्रबन्ध न होनेसे लोग समयको निश्चित रूपसे बतला नहीं सकते, नागरिक लोगों के पास घड़ी-आदिका सुप्रबंध होने पर भी असावधानताके कारण ठीक समय नहीं कह सकते, यदि किसीने सब प्रकारसे अपना प्रबन्ध करके समयको निश्चितरूपसे नोट किया भी होतो वह घरमें आने वाले पुरोहित या किसी ज्योतिःशास्त्रके अनभिज्ञ पण्डितसे कुण्डली बनवाकर रख लेते हैं और पण्डितजी भी रुपयेके लालचमें फंसकर मनमाना लग्न बनाकर यजमानको देदेते हैं, जिनका परिणाम यह होता है कि भविष्य में उसका फल ठीक नहीं मिलता, परन्तु कलंकका टीका ज्योतिःशास्त्र पर मढ़ा जाता है, क्योंकि लग्नके ठीक होने परही फलादेश ठीक मिल सकता है। वह फलादेश इष्ट पर, निर्भर है और उस इष्टका निर्भर नोट किये हुए समय पर है, अतः समयके नोट करनेमें सावधानता रखनी चाहिए और वह लग्न ठीक है कि नहीं इसके निश्चयके लिए निम्नलिखित योगों पर विचार कर लेना चाहिये—

तत्रादौ पितृपरोक्षज्ञान—बालकके जन्मके समय पिता घरमें था कि नहीं? इसका विचार इस प्रकारसे करना चाहिये कि जन्मकुण्डलीमें लग्नको यदि चंद्रमा नहीं देखता हो, तो बालकके जन्म समय उसका पिता घरमें नहीं था, ऐसा कहना। इसमें इतना विशेष है कि यदि सूर्य जन्मलग्नसे अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थानमें चरराशिका होकर पड़ा हो तो पिता बालकके जन्मसमय दूसरे देशमें था। इन्हीं स्थानोंमें सूर्य स्थिर राशिका हो और चन्द्रमा लग्नको न देखे तो पिता अपने ही देशमें था, परन्तु घरमें नहीं था। इसी प्रकार सूर्यके द्विस्वभाव राशि में होने पर मार्गमें कहे, परन्तु इन तीन योगोंमें लग्न को चन्द्रमा न देखताहो तो ऐसा कहना। यदि चन्द्रमा देखता हो तो पिता घरमें ही था, ऐसा जानना चाहिये। जन्मसमय शनि लग्नमें हो, अथवा मंगल सातवें स्थानमें पड़ा हो, अथवा इसी प्रकार बुध और शुक्रमें से एकतो चन्द्रमासे द्वादश स्थान में और दूसरा द्वितीय स्थानमें पड़ा हो तो भी परोक्षा में बालकका जन्म जानना, परन्तु यहां चन्द्रमा का बुध शुक्रके बीचमें होना अंशोंके योगसे भी जान लेना, जैसे बुध पुष्ट पांच अंश हों चन्द्रमाके दश अंश हों शुक्र के पन्द्रह अंश हों, और तीनों एक राशि में बैठे हों तोभी पूर्वोक्तयोग जानना।

चिह्नज्ञान—जिसके जन्म समय १।५।६।६ इन स्थानों में सूर्य हो उसकी भुजामें चिह्न होगा, यदि लग्नमें सूर्य तथा शनि हो, दूसरे मंगल हो और केन्द्र में चन्द्रमा हो तो उस बालकको छः अंगुलियां होती हैं। गुरु नाभिमें, शुक्र पीठ या आँखमें, शनि राहु तथा केतु इनके योगसे पेट, होंठ या दांतों, पर चिह्न जानना। विशेष विचार-सातवें घर में गुरु, या लग्न में राहुके साथ गुरु हो आठवें घर पापग्रह हो या लग्नमें शुक्र और आठवें पापग्रहके होनेसे बांई भुजा पर चिह्न होता है। लग्नमें शुक्रऔर सातवें राहु होवे तो माथे में या बांये कानमें चिह्न होवे। लग्नसे ३।६।११ इन स्थानोंमें मंगल या बारहवें घरमें मंगल शुक्र एक साथ हों तो बाएँ बगलकी ओर व्रणका चिह्न होवे, लग्नमें मंगल हो, ५।६ स्थानमें शनि हो इसको शुक्र देखे तो गुदा (मलद्वार) या लिंगके समीप तिल का चिह्न होगा। लग्नसे ५।६ शुक्र, ८वें बुध, गुरु लग्न में, या चौथे शनि होनेसे पेट पर चिह्न होता है। दूसरे घर शुक्र व तीसरे मंगल शनि हो, लग्नमें आठवें सूर्य हो तो कमरमें चिह्न होगा। चौथे घर शुक्र राहु हो लग्नमें मंगल या शनि हो तो पदमूल या बाएँ पैर पर चिह्न होगा। बारहवां बृहस्पति दूसरे चन्द्रमा ३।६।११वें स्थानमें बुधके होनेसे गुदाके समीप गोलाकार चिह्न या व्रणादि होते हैं, छठे घरका स्वामी पापग्रहके साथ लग्न वा सातवें घरमें हो तो शरीर में व्रणादि चिह्न होते हैं। लग्नमें मंगल सातवें बृहस्पति या शुक्र हो तो उसके शिर में चोट वा व्रणादिके चिन्हहों। लग्नमें मंगल, शुक्र चन्द्रमाके साथ होने से दूसरे व छठे शिर में चिह्न होता है। मंगल से व्रणादि, चन्द्र शुक्र से तिल जाना।

अन्तरिक्ष जन्मज्ञान—यहां पर समभूमिसे जो कोई ऊंचा स्थान हो उसकी अन्तरिक्ष संज्ञा जाननी। जिसके जन्म समय मिथुन, कन्या, धनुः और मीन ये लग्न हो उसका जन्म अन्तरिक्षमें जानना, शेष लग्न हों तो समभूमिमें जानना।

बालक का रोदन ज्ञान - जन्म समय यदि मेष, मिथुन, सिंह और धनुः लग्न होंतो बालक जन्म समयके बाद जल्दी ही बहुत रुदन किया था ऐसा कहना। कन्या तुला और कुम्भ ये लग्न हों तो थोड़ा शब्द किया था, शेष लग्नोंमें बालक ने देरीसे शब्द किया था, ऐसा जानना। परन्तु इसमें इतना विशेष है कि लग्न और चन्द्रमा में जिसकी राशि बलवान् हो उससे फल कहना।

उपसूतिका का ज्ञान - लग्न अथवा लग्नेश के साथ और इसके दूसरे बारहवें स्थानमें जितने ग्रह हों, उतनी उपसूतिका कहना।

दूसरा प्रकार—लग्न और चन्द्रमाके बीच जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका जानना। लग्नसे सप्तम स्थान पर्यन्त अदृश्यार्ध और सप्तमसे लग्नपर्यन्त दृश्यार्ध होता है, लग्नसे लेकर यदि ग्रह अदृश्यार्धमें हों तो उपसूतिका घरके अन्दर और दृश्यार्धमें हों तो बाहर जानना। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, अवस्था, आदिका विचार उन ग्रहोंसे ही करना, परन्तु उन ग्रहोंमें जितने ग्रह उच्चके तथा वक्री हों उनकी संख्या को तीन गुणा, अपने नवांश वर्गोत्तमके नवांश, अपनी राशि अथवा अपने द्रेष्काणमें स्थित की संख्या को दुगुना और नीच राशिमें स्थित वीर अस्त ग्रहोंकी संख्याको आधा करके सूतिका के पास उपसूतिकाएं कहनी।

शिरः पादजातज्ञान—शिर्षोदय राशि ३।५।६।७।८।११ जन्मसमय इन राशियों [illegible]

[illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

[illegible] नवम हो तो परास और मीनका नवांश हो तो हाथसे जन्म जानना ।

सूतिकागृह द्वारज्ञान—केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशामें सूतिकागृह का द्वार [illegible]ा, यदि केन्द्र में कई ग्रह पड़े हों तो उनमें जो अधिक बली हो उसकी दिशा [illegible]। यदि केन्द्र में कोई ग्रह न हों तो लग्नकी दिशा में कहना ।

खट्वाविचार—जन्मलग्न से तृतीय स्थान को दक्षिण का पाया और छठे स्थान [illegible] दक्षिण भाग का दूसरा पाया, नवम स्थान में वाम भाग का तीसरा पाया, बारहवें [स्था]न में वाम भाग का चौथा पाया जानना । जिस स्थान में कोई पाप ग्रह हो, उस [पा]ये को टूटा जानना, दो ग्रहों के होने से उस पाये झुका जानना ।

दीपादिज्ञान—चन्द्रमासे तैल का ज्ञान, लग्न से बत्ती और सूर्य से दीपक का ज्ञान करना चाहिये। जैसे—चन्द्रमाका स्पष्ट दश अंश से भीतर हो तो दीपक तैलसे पूर्ण जानना, [द]श से बीस अंश तक हो तो आधा, बीस से तीस के भीतर हो तो तेल बहुत थोड़ा जानना । लग्न के अंश थोड़े गये हों तो बत्ती थोड़ी जली हुई जाननी, यदि बहुत अंश बीत चुके हों तो बत्ती ज्यादा जली हुई जाननी । यदि सूर्य चर-राशि में हो तो दीपक इधर उधर ले जाया गया था, स्थिर में होने से एक ही स्थान स्थित था, यदि द्विस्वभाव में हो तो दीपक को देहली में जानना । यदि पहले द्वादशांश में सूर्य हो तो पूर्व दिशा में दीपक जानना। दूसरे तीसरे द्वादशांशमें होने से ईशान कोणमें, चौथेमें उत्तर, पांचवें और छठे में होने से वायुकोण, सातवें में पश्चिम, आठवें और नवम में नैऋत्य कोण, दशममें दक्षिण, ग्यारहवें और बारहवें द्वादशांश में सूर्य के होने से अग्निकोणमें दीपक जानना ।

पुरुष के शरीर में सूर्यादि-ग्रहों का अधिकार

पुरुष के शिर और मुखप्रदेशमें सूर्य का अधिकार है, वक्षःस्थल और गलेमें चन्द्रमा का अधिकार है, पृष्ठस्थल और उदर में मंगल का अधिकार है, हस्त और पादों में बुध का अधिकार है, कटिप्रदेश और अवस्थान में गुरु का अधिकार है, गुप्तेंद्रिय और वृषणों [में शुक्र का] अधिकार है, जानु और ऊरुप्रदेश में शनि का अधिकार है । जन्मसमय [illegible] और [illegible] सूर्यादि-ग्रह अनिष्ट-स्थान में आते हैं तब पुरुषों के [illegible] अङ्गों को पीड़ित करते हैं ।

मेषादि-राशियों का अंग-विभाग

[illegible] के शिर में मेषराशि का स्थान है, मुख में वृष का, दोनों भुजाओं में मिथुनराशि का, हृदय में कर्कराशि का, उदर में सिंहराशि का [illegible], कन्याराशिका, [illegible] (दोनों जंघाओं) में [illegible] (गुदा[illegible]) में [illegible] का, [illegible] वृश्चिकराशि का [illegible] और धनुराशि का [illegible] में मकरराशि का [illegible] दोनों [illegible] मीनराशि का स्थान है । [illegible] की कल्पना करते हैं । [illegible] भाव में हृदय, पञ्चमभावमें उदर, छठेभाव में कमर, [illegible] प्रिय, नवमभावमें उरु, दशमभाव में जानु, एकादशभाव में [illegible] और द्वादश में [illegible] जानना । उपर्युक्त मेषादि १२ राशि अथवा [illegible] तो वह अङ्ग पुष्ट और सुन्दर होता है और पाप ग्रहों से [illegible] युक्त होता है, अतीव विचार कर[illegible] होता है ।

अथ प्रसूतिलग्न विचार

मेष—सूतिकागृह पुराना, द्वार पूर्व में, माता का शिर पूर्व में, वस्त्र लालरंग के, गहना सोने का, पहले मीठा भोजन किया हो, प्रसव में कष्ट अधिक, भूमि में जन्म, प्रसव बाद बालक अधिक रोया । उपसूतिका २ या ३, दीपक हाथ में उठाया । बालक के मुख का रंग कुछ श्यामता पर हो, नेत्र भूरे, प्रकृति वात-श्लेष्म, कद छोटा, शरीर दृढ़, वाणी चंचल, कष्ट वर्ष ४ । ११ । १६ । ४४ । ५८, उपाय गोदान, तुलादान, मृत्युञ्जय-जप इत्यादि । उपरान्त आयु १०० वर्ष ।

वृष—माता का शिर दक्षिण में, सूतिका का घर नया, द्वार दक्षिण में, माता के सफेद वस्त्र, गहने चांदी के, माता ने शुष्क शाकादि खाया हो, अधोमुख होकर पाद से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्त पित्त, कष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१, उपाय अन्नदान, ब्राह्मण-भोजन, मृत्युञ्जय-जप । उपरान्त आयु ९० वर्ष ।

मिथुन—माता का शिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के वस्त्र पीले रङ्ग के पुराने, गहना सोने का, भोजन नमकीन विचित्र किया हो, माता के दाहिने अङ्ग में कोई चिन्ह हो, जन्म अन्तरिक्ष में (छत पर) प्रसव शिर से, रोदन शब्द दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम उतरे, दीपक कई बार उठाया जावे, बालक के नेत्र रोग युक्त, प्रकृति बलगमी, स्वभाव चंचल, अग्निमन्द, बुद्धि विलक्षण, माता को पहले कुछ ज्वर आदि भी हुआ हो । कष्ट वर्ष ४ । १० । १४ । ३८ । ५८ । उपाय—शिवार्चन, मृत्युञ्जय जप होम । उपरान्त आयु वर्ष ८६ ।

कर्क—माता का शिर उत्तर में, मकान नया, द्वार उत्तरमें, वस्त्र पुराने सफेद या लाल, गहना चांदी का, पिता क्लेश में, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर शीतल भोजन किया हो, भूमि में जन्म, पाद से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिन्ह, दीपक उठाया गया, बालक का शिर मोटा, आँखें चंचल, प्रकृति वात-श्लेष्म, रङ्ग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल, ५।२५।४०।४८।६२ वर्षों में कष्ट हो। उपाय—[illegible], तुलादान, अमृतसंजीवनी-मंत्र का जप । उपरान्त आयु वर्ष १०० ।

सिंह—माता का शिर पूर्वमें, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र विचित्र, गहना सोने का, भोजन के साथ शाक और खट्टा खाया हो, भूमि पर जन्म, रोदनस्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, दीपक स्थिर, बालक की पीठ पर चिन्ह, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रङ्ग गोरा, हठीला, चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति-[illegible] पित्त, कष्टकारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८ उपाय—सूर्य पूजन, आदित्य-हृदय का पाठ, [illegible]-दान, यदि कष्टकारक वर्षों से जिये तो ६३ वर्ष की आयु हो ।

कन्या—माता का शिर उत्तरमें, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भागमें, पिता घर से बाहर हो, माता के वस्त्र कुछ जीर्ण लाल रङ्ग के, मिष्ठान्न भोजन किया, छत पर या ऊँची जगह जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, दीपक कई बार उठाया गया । बालक का रङ्ग गोरा, गले और आंखमें चिन्ह कष्ट वर्ष ४।१६।२३। [illegible] उपाय—[illegible] दान, गोदान, मृत्युञ्जय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष ।

तुला—माता का शिर पश्चिम में, मकान कुछ नूतन, प्रसूतिका गृह पश्चिम [illegible] में, माता के वस्त्र साधारण श्वेत, प्रसवकष्ट अधिक, पिता क्लेश में, गहना

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

मामूली, माताने कुछ खाकर ठंडा पानी पिया हो। घर में कुछ लड़ाई झगड़ा हुआ हो। भूमि में जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहाँ एक कन्या भी हो, दीपक हाथमें उठाया गया हो, बालक का रङ्ग जर्दी पर, बदन में फोड़े, शरीर दुबला, ८।१५।२१।२५।६२।६४ इन वर्षों में कष्ट हो। गोदान, तण्डुल दान, नवग्रह पूजन और होम से शान्ति होगी, यदि इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष आयु भोगे।

वृश्चिक—माता का शिर दक्षिण या उत्तर में, मकान जीर्ण, द्वार उत्तर में वस्त्र लाल व दाग, कष्ट अधिक, साधारण भोजन कुछ क्रोधयुक्त, माता के भूषण साधारण सोने के, भूमि पर जन्म, रोदन की आधी आवाज, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश में, बालक के केश लम्बे और कपिल, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रङ्ग गौर श्याम, प्रकृति रक्त पित्त, कष्टकारक वर्ष ११।२८।३८।५२।६२। उपाय—तुलादान, मृत्युञ्जय जप और मिष्टान्न भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनु—माता का शिर पूर्वमें, स्थान घरके दक्षिण भागमें, द्वार पूर्वमें, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या बसन्ती, गहना सोना या चांदी, पक्वान्न भोजन कर जल पिया हो। जन्म ऊँचे स्थानवा छत पर, रोदनस्वर अतिदीर्घ, उपसूतिका १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक का रङ्ग गोरा, आकृति सुन्दर नेत्र विशाल, शिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, २।१०।१८।३१।३७।४२ वर्षों में महाकष्ट भोग कर बचे तो ८१ वर्ष जिये।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, मकान पुराना, द्वार उत्तर या दक्षिण, प्रसूतिस्थान पश्चिमभाग में, वस्त्र मैले पुराने, भूषण साधारण, शाकादि के साथ भोजन करके ठंडा पानी पिया दीपक हाथमें उठाया गया, भूमि पर जन्म, कुछ देरके बाद बालक अर्धस्वर से रोया, उपसूतिका २ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रङ्ग श्याम, कष्टकारक वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७। उपाय—रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, माषान्न-दान, छायापात्र, उपरान्त आयु ६५ वर्ष।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिममें, मकान का बहुत सा भाग जीर्ण हो, सूतिका घर दक्षिण पश्चिममें, द्वार पूर्वोत्तर, माताके वस्त्र कुछ काले या मैले पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, गहने साधारण, कसैला और चटपटा भोजन किया हो, पिता घरमें न हो, दीपक पश्चिम भागमें रखा हो भूमि पर जन्म होनेके चिर पीछे बालक थोड़ासा रोया, उपसूतिका ३ या ४ बालक के होंठ मोटे, मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्रमें रोग, कष्ट वर्ष २।२८। ३३।४८।६४। उपाय—तुलादान, महिषीदान, मृत्युञ्जय जप, उपरान्त आयु ६० वर्ष।

मीन—माता का शिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसूतिगृह उत्तर में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मलिन या बसन्ती, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान में बालक जन्म के उपरान्त देर से कुछ रोया, माता ने ठंडा जल पिया, दीपक हाथ से उठाया गया, उपसूतिका पहिले २ पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रङ्ग गोरा, नाक चिपटी हुई, आँखें भूरी, शिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति ...मी, कष्टकारक वर्ष १।८।१३।३६।४८ इनसे बच जाये तो ८३ वर्ष की आयु भोगे। उपाय—मोदकान्न दान, गोदान, ग्रहशान्ति, मृत्युञ्जय जप कराने से कल्याण हो।

सूचना—जिस लग्न के लक्षण अधिकतर मिलें वही लग्न ठीक मानना चाहिये। ऊपर लिखे लक्षण साधारण लग्न के आधार पर लिखे गये हैं, अतः सम्भव है कि ... २ स्थान पर इनसे भी लग्न का निश्चय न हो सके। क्योंकि बलाबल विचार से ही लग्न का पूर्ण निश्चय हो सकता है। उसके लिए कुण्डली पर से विशेष प्रसूति लग्न का विचार पहले लिखा जा चुका है।

बालारिष्ट के योग—जन्म लग्न से ६।८।१२ स्थान में स्थित चन्द्रमा का यदि क्रूर ग्रह देखते हों तो वह बालक अल्पायु जानना। यदि पूर्वोक्त चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखते हो तो बालक की आयु ८ वर्ष की जाननी। शनि अथवा शुभ ग्रह ६।८।१२ इन स्थानों में हों, वह वक्री तथा क्रूर ग्रहों से भी देखे जाते हों, लग्न में कोई ग्रह शुभ नहीं हो तो बालक की आयु एक मास की जाननी। जिसके लग्न में पांचवें स्थान में सूर्य मंगल और शनि यह तीनों पड़े हों, उस बालक की माता सहित मृत्यु जाननी, तथा भाई की भी हानि हो। जिसके दशम स्थान में शनि, छठे चन्द्रमा और सातवें स्थानमें मंगल हो उस बालक की माता सहित मृत्यु जानना। जिसके लग्न में शनि हो, चन्द्रमा आठवें हो, बृहस्पति तीसरे हो उस बालक की शीघ्र ही मृत्यु जाननी। जन्म लग्नसे बारहवें स्थानमें कोई भी शुभ ग्रह फल करने वाला नहीं होता, परन्तु सूर्य चन्द्रमा, शुक्र और राहु ये विशेष करके कष्टकारक जानने, तथा इनकी दृष्टि भी शुभ नहीं है। जिसके जन्म लग्न से बारहवें तथा छठे आठवें तथा दूसरे ग्रह पड़े हों तथा लग्न क्रूर ग्रहों के बीच में पड़ा हो उस बालक को शीघ्र मृत्यु जाननी।

अरिष्टभंगयोग—बुध, बृहस्पति, शुक्र इनमें से एक भी यदि केन्द्र (१।४।७।१०) में हो। बलवान् होकर यदि बृहस्पति ही लग्न में हो। बली होकर लग्न का स्वामी यदि केन्द्र में हो। शुक्लपक्ष में रात्रि का जन्म हो तथा लग्न शुभ ग्रहों से देखा जाता हो, इसी प्रकार कृष्णपक्ष में दिन का जन्म हो और पूर्ववत् लग्न शुभ ग्रहों से दृष्ट हो। इन पांचों योगों में से एक भी योग पड़ जाये तो ऊपर कहे हुए अरिष्टों को भंग करने वाला योग जानना।

मातापिता को अरिष्ट योग

हर एक पुरुषके लिये सूर्यसे पिता का विचार और चन्द्रमासे माता का विचार करना चाहिए। अतएव जिस बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों, अथवा देखते हो या सूर्य पापी ग्रहों के बीच पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए। इसी प्रकार सूर्यसे ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो पिता को कष्ट जानना। इसी प्रकार यदि चन्द्रमा के साथ २, १२ स्थान में, ४। ६। ८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ न हो तो माता को कष्ट जानना।

प्रसवदोष अरिष्ट का फल

चैत में कुतिया, वैशाख में ऊँटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, श्रावण में गधी व घोड़ी, भाद्रपद में गौ, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस ये प्रसूत हो तो पिता और घरधनी की ६ मास में मृत्यु होती है। श्रावण में दिन को घोड़ी और माघ में बुधवार को भैंस प्रसूत हो तो घरधनी को महाभय अरिष्ट हो। इसके शान्त्यर्थ प्रसूता गौ, आदि का शीघ्र दान कर, घर में हवन शान्तिपाठ पुण्याहवाचन, श्वेतसर्षपहवन, व्याहृति मन्त्रों से आहुति दें जिससे शान्ति हो।

त्रिखलजन्मफल—तीन पुत्रों के बाद कन्या हो, वा तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्र हो, तो त्रिखल नामक दोष होता है, इससे माता पिता को अरिष्ट, महाभय धन-हानि आदि होती है, शान्त्यर्थ त्रिखल शान्ति करें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दन्तोत्पत्तिफलम्—बालक के जन्मते ही दांत निकले हुए हों तो माता-पिता को [illegible] ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में [illegible] १ मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, [illegible] निकलें तो मातुल पक्ष को भय हो। [illegible] में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु [illegible] छठे में बहुभोग, ७वें में पितृसुख, ८ वें में पुष्टि, ९ वें में धनी. १० वे में सुख, ११ वें [illegible], १२ वें में धनी।

एकनक्षत्रजातफलम्—पिता पुत्र, माता पुत्र वा कन्या, दो भ्राता इनका एक [illegible] में जन्म हो तो दोनों में से एक की मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होता है। स्वर्ण दान [illegible] शान्ति हवन आदि करने से अरिष्ट निवारण होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूला	रेवती

यह ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में जन्मा हुआ बालक, माता पिता, कुल वा अपने शरीर को नष्ट करता है। [illegible] का शरीर नष्ट न हो तो धन वैभव ऐश्वर्य [illegible], कोठी का स्वामी होता है। गण्डमूल में जन्मे हुए बालक का २७ दिन तक पिता मुख न देखे, प्रसूति स्नान के पश्चात् शुभ मुहूर्त में भी, मूलशान्ति आदि शान्ति कर पश्चात् शुभ वेला में बालक का मुख देखें।

अथ मूलनिवासचक्रम्

[illegible] [illegible] [illegible] फलम्	[illegible] २। ५। [illegible]। ११ [illegible] शुभम्	[illegible] ३। ६। ९। १२ भूमौ कुलनाशः	आषा. श्रा. माघ. भा. १। ४। ७। १० स्वर्गे शुभम्

अथ [illegible]

[illegible]		[illegible]		अथ [illegible]	
चरण	फलम्	चरण	फलम्	[illegible]	फलम्
१	[illegible]	१	शान्ति से शुभ	[illegible]	पिता को भय
२	मातृ-नाश	२	धन नाश	[illegible]	[illegible]
३	धन-नाश	३	[illegible]	[illegible]	माता को भय
४	शान्ति से शुभ	४	पितृ नाश		

मूलजनने वृक्षविभागः

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटय
मूलनाशः	वंश-नाशः	मातृ-क्लेशः	मातुल-नाशः	मन्त्री पदम्	मन्त्री-पदम्	विपुल-लाभः	अल्पजीवी	फलम्

अथ मूलपुरुषचक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घटय.
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.	फलम्

अथ कन्याजन्मनिमूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटयः
पशुना.	धनला.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयाव.	कामिनी	मातुला.	भ्रातृना.	वैधव्यं	फलम्

अथ आश्लेषाचक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कन्धे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थानं
५	७	२	३	४	८	११	६	७	७	घटयः
पुत्रादि	पितृना.	मातृना.	[illegible]	गुरुभ.	बली	आत्महा	भ्रम	तपस्वी	धनहा.	फलम्

अथ आश्लेषापुरुषवृक्षचक्रम्

मूले	पुष्पे	फले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजपदम्	[illegible]	मातृहानिः	पितृहानिः	अल्पायुः

अथ [illegible]—ज्येष्ठा नक्षत्र को अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घड़ियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, [illegible] हो तो ६ मास त्याग करे। शान्ति हवन अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शान्ति [illegible] [illegible] विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख को अवलोकन करें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अश्विनीपादफलम्		मघापादफलम्		ज्येष्ठापादफलम्		रेवतीपादफलम्	
१	पिता को भय	१	माता को नेष्ट	१	बड़ेभ्राताकोन	१	राज्य संमान
२	सुख ऐश्वर्य	२	पितृ भय	२	छो.भ्रा.को.ने.	२	मन्त्रित्वप्राप्ति
३	मन्त्री पद	३	सुख	३	मातृ नाश	३	धनसुखकी प्राप्ति
४	राज्य सम्मान	४	धन विद्या प्रा.	४	खुद का नाश	४	अनेक कष्ट

अथ कृष्णचतुर्दशीविभागफलम्

१	२	३	४	५	६	विभागः
शुभम्	पितृनाशः	मातृनाशः	मातुलनाशः	कुलहानिः	धनहानिः	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियां युक्त कर ६ का भाग दें जो प्रथम भाग में होगा, उससे द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जाने। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली-कुहूजननफलम्

सिनीवालीजननफलम्—सिनीवाली उसे कहते हैं कि अमावस्या जन्म के अनन्तर कुछ घटी बाकी हो अर्थात् चन्द्र की कुछ कला दृश्यमान हो ऐसी अमावस्या में बालक का जन्म हो तथा घर में गौ, भैंस, घोड़ी आदि पशु प्रसूत हुई हो तो धन हानि, अपयश आदि भय होते हैं।

कुहूजननफलम्—कुहू कहते हैं चन्द्र की कला बिल्कुल नष्ट हो जाये अर्थात् अमावस्या का अन्त समय हो, (यह सूक्ष्म केतकी गणना से ही ठीक २ समय आयेगा प्राचीन गणित से नहीं) उस समय में बालक का जन्म वा पशु जन्म हो तो अधिक अरिष्ट फल होता है, इसका शास्त्र में कहे अनुसार शान्ति विधान अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट दोषों में जन्मफल

व्यतिपात में जन्म हो तो अङ्गहानि, वैधृति में पितृ हानि, परिघ योग में मृत्यु होती है, तथा मृत्यु योग, दग्ध योग, भद्रा, संक्रान्ति दिन सूर्य चन्द्र ग्रहण, शूल योग, व्याघात, गण्ड, वज्र, क्षयतिथिः, महापात (क्रान्ति-साम्य) विश्वघस्त्रपक्ष, क्षय मास आदि कुयोगों में बालक जन्मे तो अरिष्ट शान्त्यर्थ शान्ति विधान करना चाहिए ताकि आयु और आरोग्य प्राप्त हों।

स्त्री-दासी गौ आदि पशु-यमल जन्मफलम्

...षा यमलोऽथास्तिर्जायते योषितामिह। सुतौ च सुतकन्ये वा कन्या एव तथा पुनः।
...लिंगौ पितामाय द्विलिंगौ मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयौ तत्र शान्तिर्विधीयते॥

जन्म स्थान विचार

जन्म लग्न और चन्द्रमा जलचर राशि में हो, अथवा पूर्ण चन्द्र लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखे, अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के दशवें, चौथे और लग्न में हो तो बालक का जन्म जलके ऊपर वा जल के समीप स्थान में हुआ ऐसा कहना। पूर्ण चन्द्रमा अपनी राशि कर्क में हो, बुध लग्न में हो, बृहस्पति चतुर्थ स्थान में हो अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सातवें हो तो बालक का जन्म नौका में, जहाज में अथवा पुल के ऊपर या नदी के सान्निध्य में हुआ ऐसा कहना। और चन्द्रमा से बारहवें स्थान में शनि हो, पापग्रह देखते हों तो बालक का जन्म कारागार में वा एकांत में हुआ ऐसा कहना। शनि कर्क, वृश्चिक के लग्न में हो और चन्द्रमा देखता हो तो खाई वा खात में जन्म हुआ कहना। नर राशि में शनैश्चर लग्न में हो और मङ्गल देखता हो तो श्मशान के समीप जन्म हुआ कहना और नर राशि के लग्नगत शनि को शुक्र चन्द्र देखते हों तो सुन्दर दर्शन योग्य रमणीक घर में बालक का जन्म कहना, बृहस्पति हो तो राजमन्दिर वा देवालय, गौशाला में वा उसके समीप का जन्म कहना। बुद्धिमान् ज्योतिषी ग्रहों के बलाबल को देखकर फलादेश कहे।

अन्य शुभाशुभ योग—मङ्गल शनि दोनों त्रिकोण में हों, और चन्द्रमा सातवें घर में हो तो जन्मा बालक माता से जुदा हो जाये तथा ऐसे योग में चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो माता का त्यागा हुआ बालक दीर्घायुषी और सुखी होता है। दशम स्थान में बुध गुरु हो, केन्द्र में सूर्य, तीसरे मङ्गल हो, ग्यारहवें पापग्रह हों तो बालक को छः अंगुली है ऐसा कहना। बारहवें स्थान में चन्द्रमा मङ्गल हो तो बांया नेत्र और सूर्य राहु हो तो दाहिना नेत्र बालक का दुःखित हो वा नष्ट हो ऐसा कहें। मङ्गल, शनि राहु, पांचवें स्थान में हो तो बायें कोख में लहसुन कहना। तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष वा सिंह का बृहस्पति हो दशवें घर में सूर्य मङ्गल हो तो बालक मूक (गूंगा) होता है। कृष्णपक्ष में दिन का जन्म हो और शुक्लपक्ष में रात्रि का जन्म हो तो छठे आठवें में बैठा हुआ चन्द्र अरिष्ट निवारक और मातृवत् पालन करने वाला होता है। चन्द्र ८ वें में, मङ्गल सातवें में राहु नवम स्थान में, शनि लग्न में हो, बृहस्पति तीसरे स्थान में, सूर्य पाचवें, शुक्र छठे, बुध चौथे हो तो बालक अल्पायुषी होता है। जिस बालक के जन्म कुण्डली में लग्न में बुध शुक्र न हो, केन्द्र में बृहस्पति न हो दशम स्थान में मङ्गल न हो तो वह बालक जन्म लेकर क्या कर सकता है अर्थात उसका जन्म व्यर्थ है। यही योग जैसे केन्द्र त्रिकोण में बुध शुक्र बृहस्पति हों, दशवें स्थान में मङ्गल हो तो वह बालक अपने कुल में दीपक, ज्ञानवान दीर्घायुषी, बुद्धिमान्, (किसी से ठगा नहीं जाये) ऐसा कर्तव्यवान्, सर्वमानी, राज में तथा जनसमाज में बहुमानी, अधिकारी महान् पुरुष होता है। लग्न में शनि हो, छठे चन्द्रमा और सातवें मंगल हो तो उसका पिता अधिक नहीं जीये। छठे बारहवें स्थान में पापग्रह हो वा चन्द्र पापग्रह युक्त हो तो माता को अरिष्ट जनना। दशम स्थान में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

...ो पिताको अरिष्ट जानें। दशम स्थान में पापग्रह हों और दशम में मंगल ...र हो तो बालक का पिता शीघ्र ही मर जाये। लग्न में गुरु, दूसरे शनि, ...तथा बुध हो तो बालक के विवाह समय में उसका पिता मरे। जन्म कुण्डली ...राहु, छठे आठवें में चन्द्रमा हो शेषग्रहों की पापदृष्टि हो तो बालक ...बहुत अल्प होती है ऐसा आचार्यों का मत है। शनि के घर में सूर्य हो, सूर्य ...में शनि हो वा लग्न में मंगल आठवें गुरु हो तो बालककी केवल १२ वर्ष की ...ती है। जन्म समय लग्न में छठे आठवें में बुध हो और उनका लग्नेश अष्टमेश ...युक्त वा परस्पर सम्बन्धित हो तो बालक की ४थे वर्ष में मृत्यु होती है। ...के घर में बृहस्पति हो और ६।८ वें में चन्द्रमा हो तो बालक आठवें वर्ष में मृत्यु को प्राप्त होता है। लग्न से दशम में राहु हो वा अष्टमेश क्षीणचन्द्रमा राहु से युक्त हो तो वह बालक माता पिता तथा स्वयं का नाश करने वाला होता है। चन्द्र राहुके साथ न हो तो वह बालक १६ वर्ष पर्यन्त जीवित रहता है। बालककी कुण्डली में तीसरे सूर्य हो तो बड़े भाई को, शनि हो तो पीठ पर छोटे भाई को और मंगल हो तो पीठ पर के भाई को हानि करता है। यह फलित विचार करते समय ज्योतिषी को चाहिए कि ठीक समय लेकर जहाँ का जन्म हो वहाँ के सूर्योदय से तथा उसी नगर की लग्न सारिणी से लग्न साधन करें। जन्माटाइम स्टेण्डर्ड हो तो सूर्योदय स्टेण्डर्ड टाइम का लेकर इष्ट बनायें। सूर्योदय जन्म टाइम समानजाति के लेकर इष्टसाधन करना चाहिये।

घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च।
यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्॥

अथ घातचक्र

यह घातचक्रद्यूत, प्रवास, राजदर्शन और यात्रा में वर्ज्य करें।
विवाह व उपनयनादि में यह घातचक्र वर्ज्य नहीं है।

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घाततिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
घातवार	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घातनक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शततारका	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घातयोग	विष्कम्भ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शुक्ल	शुक्ल	व्यतिपात	वज्र	वैधृति	गंड	वज्र
घातकरण	बव	शकुनी	कौलव	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पु. घातचन्द्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनुः	वृषभ	मीन	सिंह	धनुः	कुम्भ
स्त्री. घातचन्द्र	मेष	धनुः	[illegible]	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनुः	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

नामाक्षरों से वैरवर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय-वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बाल कष्टावली चक्रम्

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बेर शिर पर फिराकर उचित स्थान पर मौन से रख आये।

[illegible]य कौन पूतना करती है	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान वं समय	स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
[illegible]दिन मास वर्ष [illegible] योगिनी	ज्वर, स्वेद, मन्दस्वर, कम्पन अरुचि, अंगशोष।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली, (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्॥	राई, खस, ब फ के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र गोघृत
दिन मास वर्ष सुनन्दना	ज्वर, हाथ पैर अकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्ररोग भय, कृशता।	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०	भात एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमश्चानुस्वाये विचै हां हां ही ही हूं हूं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानाद्दु-द्राशया स्वाहा।	
दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचंदन रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा दीपक १०, गेहूँ के आटे के सतिये १०।	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसन, गोश्रृंग, साप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
दिन मास वर्ष मुखमंडिका	गात्रभंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	तिल चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुनवृक्ष के पुष्प।	भात, सेर आटे के पूड़े, आध सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	
दिन मास वर्ष बिडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी, तेज।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचंदन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५, गेहूँ के आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं हूं हूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृह्ण गृह्ण अस्त ठः ठः चामुण्डे सर्वरि चण्डिके ठः ठः स्वाहा	
दिन मास वर्ष षट्कारिका	ज्वर, हड़फुटन, हँसना, कभी २ रोना, मोह, मूर्च्छा।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचंदन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	योगिनीविधानोक्त	कूठ, गुग्गल, राई, हाथीदांत, घृत।
[illegible]न मास वर्ष र[illegible] लिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचंदन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५।	भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना।	बिडालिकाविधानोक्त	
[illegible]न मास वर्ष [illegible]ामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	बिडालिकाविधानोक्त	
[illegible] मास वर्ष [illegible]	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा।	एक सेर गेहूँ का आटा	चंदन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झंडी ५।	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलवलिमादाय हन हन हुं फट स्वाहा	
[illegible]स वर्ष	ज्वर, हड़फुटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	एक सेर गेहूँ का आटा	रक्तपुष्प, २५ झंडी, २५ दीपक, २५ सतिये।	गुड़ के घीभूने चावल, गोघृत, सायं-काल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।	गोश्रृंग, लसुन साप की कांचली निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल राई, गोघृत
[illegible]ास वर्ष	ज्वर, हड़फुटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झंडी, २५ आटे के सतिये।	श्वेतभात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्र हास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्ट महादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
[illegible]	ज्वर, दांत चबाना, रोमाञ्च, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा संताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झंण्डी १३ सतिये आटे के।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य-मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हु २ हन २ दुष्टानां हां हूं फट् स्वाहा।	

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ नक्षत्र कष्टावली

	कष्टलक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन १	२	३	४	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु	बलिद्रव्य	होम द्रव्य	करे धारणम्	जप सं०	जपनीय वेदोक्त मंत्र
[illegible]	वातज्वर, गात्रपीडा निद्राभंग, बुद्धिभ्रम	९	९	११	१०	२०	श्वेतचन्दन कमलपुष्प घृत गुग्गुलधूप, घृतदीप, क्षीर मोदक गुडनैवेद्य	सुवर्ण घृतकुम्भ	गुडौदन तिल	खण्ड यव घृत	अपामार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचे… बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः
[illegible]	उदररोग, तीव्रज्वर अनेकरोग, आलस्य	११	०	८०	४०	११	अगरगंध, करवीरपुष्प, घृतदीप, घृत गुग्गुलधूप, गुडौदन नैवेद्य	गोमहिषीघृत शर्करा, छायापात्र	कृषरान्न (खिचड़ी)	घृत मधु तिलाक्षत	अगस्त मूलम्	१० सहस्र	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा स्वाहा घर्माय स्वा… घर्मः पित्रे॥ ॐ यमायनमः॥
[illegible]	शिरःपीडा, अनिद्रा अतिदाह, उरुशूल	९	९	११	१६	२८	श्वेतचन्दनगंध, जुहीपुष्प, घृतदीप, घृत गुग्गुलधूप, तिलमाषान्न, बड़ाघीकानैवेद्य	स्वर्ण, गोदान	पायसघृत मोदक	तिलयव घृत	कार्पास मूलम्	१० सहस्र	ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति। ॐ अग्नयेनमः॥
[illegible]	शिरपीडा, ज्वर कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७	९	१८	२०	श्वेतचन्दनगंध, कमलपुष्प, दशाङ्ग धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य	सप्तधान्य, कृष्णगौ दान ५ कन्याभोजन	मध्वाज्यक्षौद्र शाल्यन्नक्षीर	तिलाज्य घृतयव	अपामार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। …स्याउपमा अस्य विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्च विवः। ॐ ब्रह्मणे…
मृगशिर (चन्द्रः)	[illegible], महाकष्ट [illegible] पीडा	१०	९	५	७	१०	श्वेतचन्दनगंध, कमलपुष्प, दशाङ्गधूप घृतदीप, पायस अपूपमध्वोदननैवेद्य	दधि, तण्डुल सवत्सा गोदान	दधि, शर्करा शाल्यन्न	दधि पायसं	जयन्ति मूलम्	१० सहस्र	ॐ इमन्देवा असपत्नं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै… एषवोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा ॐ चन्द्रमसे…
आर्द्रा (शिव)	[illegible], ज्वर [illegible], अनिद्रा	मृ.मु.	०	१८	०	०	श्वेतचन्दनगंध, [illegible]पुष्प, दशाङ्गधूप, घृतदीप पायसौदननैवेद्य	श्यामकृष्णप्रदान श्यामवस्त्र	दध्योदन मध्वाज्य	घृत मधु	सचंदनाश्वत्थमूलम्	१० सहस्र	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते न… ॐ रुद्राय नमः॥
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर शिरःपीडा कटिपीडा	७	७	१४	२	२१	हरिद्राकुंकुमगंध, सेवन्तिकापुष्प, अष्टगंध धूप, घृतदीप, [illegible] नैवेद्य	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५, ५ कन्याभोजन	साज्य पीततण्डुल	घृत तण्डुल	अर्कमूलम्	१० सहस्र	ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। … देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॐ अ…
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महाकष्ट	७	७	७	१०	२४	कुंकुमगंध, कमलपुष्प, घृतगुग्गुलधूप, घृतदीप, घृतपायस शर्करा नैवेद्य	सुवर्ण, गौ, पीत वस्त्र	समण्डक मोदक	घृत पायस	तुषार मूलम्	१० सहस्र	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। ॐ बृहस्पतये नमः॥
आश्लेषा (सर्पः)	[illegible]	मृ.मु.	०	०	२१	०	कुंकुम अगरगंध, अगस्तपुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतक्षीर नैवेद्य	सवत्स श्याम गौ छायापात्र	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	पटोल मूलम्	१० सहस्र	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे… दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः॥
मघा (पितरः)	[illegible]	२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	श्वेतचन्दनगंध, चम्पकपुष्प, घृत गुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतमिष्ठान्न नैवेद्य	वस्त्र, तिल माष दान	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिल घृततण्डुल	भृंगराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायि… स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधानमः अक्षन्नपितरो मीमद… पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्। ॐ पितृभ्योनम…
पू. फा. (भगः)	[illegible], ज्वर [illegible]	मृ.मु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]गंध, मालतीपुष्प, घृत[illegible] धूप, घृतदीप अपूपौदनमोदक नैवेद्य	[illegible] स्वर्ण गौ दान	घृतौदन पायस	कङ्गनी तिलघृत	कण्टकारि मूलम्	१० सहस्र	ॐ भगप्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमान्धियमुदवाददन्नः। … प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम॥ ॐ भगायनम…
उ. फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर शिरःपीडा अधिक	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible], कमलपुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, [illegible] नैवेद्य	सुवर्ण, स्वर्ण, रजत, अन्न, गोदान	घृत शर्करा शाल्यन्न	तिल घृत	पटोल मूलम्	१० सहस्र	ॐ दैव्यावध्वर्यू आगतं रथेन सूर्यत्वचा। मध्वा यज्ञं समञ्ज… तं प्रत्नथा अयं वेनश्चित्रं देवानाम्॥ ॐ अर्यम्णे नमः॥
हस्त (सविता)	[illegible], [illegible] सर्वाङ्ग पीडा, [illegible]	१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible], [illegible], कमलपुष्प, घृत गुग्गुलधूप, घृतदीप, [illegible]नैवेद्य	सुवर्ण, [illegible] गौ दान	मिष्ठान्न पायस	दधि घृत	जाति मूलम्	५ सहस्र	ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविहुत… वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विरा… ॐ सवित्रे नमः॥
[illegible]	विविध रोग अधिक	११	११	८	९	१४	[illegible], [illegible]पुष्प, [illegible] धूप, घृतदीप, [illegible]नैवेद्य	तिल घृत [illegible], [illegible]	[illegible], घृत	तिलाज्य घृततण्डुल	मलय मूलम्	१० सहस्र	ॐ त्वष्टा तुरीपो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना। द्विपदा… इन्द्रिय… ॐ विश्वकर्मणे नमः॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नक्षत्र कष्टावली

देवता	कष्टलक्षण:	कष्ट दिन	चरणगत कष्टदिन				गन्धादि पदार्थ	दानवस्तु	बलिद्रव्य	होमद्रव्य	करे धारणम्	जप संख्या	जपनीय वेदोक्त मन्त्राः
वायुः	नानाकष्ट ज्वरपीड़ा	मृ.तु.	६०	१७	३०	०	चन्दनगन्ध दमनकपुष्प अगरु गुग्गल धूप, घृतदीपक घृतपायस नैवेद्य ।	स्वर्ण रक्तधेनु पक्वान्न	घृतपायस	तिल यव घृत	जाति मूलम्	१० सहस्र	ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वा म सोम पीतये ॥ॐ वायवेनमः॥
...ाग्नी)	सर्वाङ्गपीड़ा कुक्षिशूल	१५	१५	०	४	१३	चन्दन केसरगन्ध,कमलपुष्प,देवदारु-घृतधूप, घृतदीप घृतपायस नैवेद्य ।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्रदान	सहविचि-त्रान्न	आज्य पायस	गुञ्जा मूलम्	१० सहस्र	ॐ इन्द्राग्नी आगत ँ सुतं गीर्भिर्नभोवरेण्यम् । अस्य पातं धियेषिता ॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः ॥
...राधा ...त्रः)	शिरपीड़ा तीव्रज्वर	स्थिर	६०	१२	३६	३०	केसरगंध, कमलपुष्प, चन्दन धूप घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य ।	स्वर्ण गौ छायापात्रदान	मध्वाज्य गुडमाषान्न	यव घृत	सुपुष्प मूलम्	१० सहस्र	ॐनमोमित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत ँ सपर्यत दूरदृशे देव जातायकेतवे दिवसपुत्राय सूर्यायश ँ सत ॥ॐमित्रायनमः।
...ष्ठा ...न्द्रः)	पित्तरोग, कम्पन व्याकुलता	मृ.तु.	५९	९	६	४	श्वेतचन्दनगंध,चम्पकादिपुष्प, कपूर-धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य।	स्वर्णतिल नील वस्त्रदान	दध्योदन सुपुष्प	तिल, घृत तण्डुल	अपामार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वास्तिनो मघवाधात्विन्द्रः । ॥ॐ शक्राय नमः॥
मूल ...ऋतः)	मुख तथा उदररोग सन्निपात	७	०	९	१५	६	कृष्ण अगरगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृत-दीप,कृष्णागुरुधूप,माषमिश्रान्न नैवेद्य।	गौ, छायापात्र वस्त्र कुमारीपूजा	सहवि माषान्न	कंदमूल घृत	मन्दार मूलम्	५ सहस्र	ॐ मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि ँ स्वेयोनावभारुषा । तां विश्वेदेवर्ऋतुभिः संवदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु ॥ ॐ निर्ऋतयेनमः॥
पू. षा. (...प्)	शिरपीड़ा, कम्पन महाकष्ट	मृ.तु.	०	१५	२४	१०	श्वेतचन्दनगन्ध,कमलपुष्प घृतगुग्गल-धूप, घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य ।	स्वर्णवस्त्र तिल तंडुल जलकुम्भ गौदान	घृतपायस मिष्टान्न हवि	तिल, घृत तण्डुल	कर्पास मूलम्	५ सहस्र	ॐ अपाघमप किल्बिष मपकृत्या मपोरपः । अपाम्मार्गत्वमस्मदप दुःष्वप्न्य ँ सुव ॥ॐ अद्भ्यो नमः॥
उ. षा. (...श्वेदेवा)	कटिपीड़ा उरुशूल प्रलाप	१०	३०	२४	२६	१६	श्वेतचन्दनगन्ध, कमलपुष्प घृतगुग्गल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य ।	आमान्न स्वर्णदान	सहवि पायस तिलाज्य	तिलाज्य यव	कर्पास मूलम्	१० सहस्र	ॐ विश्वेदेवाःशृणुतेम ँ हवं मे ये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठ। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिषिमादयध्वम् ॥ ॥ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः।
...णुः)	सर्वाङ्गपीड़ा,त्रिदोष-भय, अतिसार	११	६०	२४	६	९	श्वेतचन्दनगन्ध, मालतीपुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृत दीप, षड्रस शाल्यन्न नैवेद्य ।	स्वर्ण गौ छायापात्रदान	सहवि पायस	तिलाज्य यव	अपामार्ग मूलम्	१० सहस्र	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ॐ विष्णवे नमः॥
...ष्ठा ...वः)	ज्वर-कम्पन, रक्ता-तिसार मूत्रकृच्छ	१५	१५	२	२०	२१	श्वेतचन्दनगंध कमलपुष्प गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य ।	छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण, गौ	पायस मोदक पूपतिलपिष्ठ	तिलाज्य पायस	भृङ्गराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ वसोः पवित्रमसिशतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्त्वाकामधुक्षः ॥ॐ वसुभ्यो नमः॥
	वातज्वर सन्निपात कष्ट	११	०	४५	३	२२	केसर अगरगंध,कमलपुष्प,कर्पूर चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य ।	स्वर्ण,तिलान्न घट, अश्व, छायापात्र	घृत चित्रान्न	आज्य दध्योदन	कमल मूलम्	१० सहस्र	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्यऋतसदन्यसी वरुणस्यऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद ॥ॐ वरुणाय नमः॥
	वमन, व्याकुलता शरीरपीड़ा,त्रिदोष	मृ.तु.	०	१२	२१	१७	केसरचंदनगंध, श्वेताऽर्क पुष्प शतौषधिमिश्रतधूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य ।	स्वर्णरजत अन्न, श्वेत वस्त्र, छायापात्रदान	दध्योदन पायस	क्षीराज्य शर्करा	भृङ्गराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः । विश्वेदेवाऽऋतावृधोहुवानास्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु ॥ ॥ॐ अजैकपदे नमः॥
	कामला, अतिसार शूल वातज्वर	७	१०	२०	७	१५	चन्दन कर्पूरगन्ध, कमलपुष्प, बिल्व-गुग्गुल धूप,घृतदीप,घृतपायस नैवेद्य ।	स्वर्णरजत, तिल कृष्णवस्त्रदान	तिल घृत मुद्गमाष	तिलाज्य यव	अश्वत्थ मूलम्	१० सहस्र	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपिता नमस्ते अस्तु मामाहि ँ सीः निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ ॐ अहिर्बुध्न्यायनमः ॥
	वातपित्तमय ज्वर उदरशूल चित्तभ्रम	स्थिर	१८	१०	९	२०	रक्तचन्दनगंध, मंदारपुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	रजतवस्त्र,पैत्तलपात्र वृषभ, छायापात्र	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	अश्वत्थ मूलम्	५ सहस्र	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ॐ पूष्णे नमः॥

...बोधक चक्र)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अवकहडाचक्र (नक्षत्र, राशि, स्वामी, वर्ण, वश्य, नाड़ी, योनि, गणबोधक चक्र)

नक्षत्र नाड़ी योनि गण	अश्विनी आद्या नाड़ी अश्व योनि देवगण	भरणी मध्या नाड़ी गज योनि मनुष्य गण	कृत्तिका अन्त्या नाड़ी मेष योनि राक्षस गण	रोहिणी अन्त्या नाड़ी सर्प योनि मनुष्य गण	मृगशीर्ष मध्या नाड़ी सर्प योनि देव गण	आर्द्रा आद्या नाड़ी श्वान योनि मनुष्य गण	पुनर्वसु आद्या नाड़ी मार्जार योनि देव गण	पुष्य मध्या नाड़ी मेष योनि देव गण	अश्लेषा अन्त्या नाड़ी मार्जार योनि राक्षस गण
चरणांक चरणाक्षर	१ चू, २ चे, ३ चो, ४ ला	१ ली, २ लू, ३ ले, ४ लो	१ अ, २ इ, ३ उ, ४ ए	१ ओ, २ वा, ३ वी, ४ वू	१ वे, २ वो, ३ का, ४ की	१ कू, २ घ, ३ ङ, ४ छ	१ के, २ को, ३ हा, ४ ही	१ हु, २ हे, ३ हो, ४ डा	१ डी, २ डू, ३ डे, ४ डो
राशि राश्यधिपति वर्ण वश्य	मेष मंगल क्षत्रिय वर्ण चतुष्पाद			वृष शुक्र वैश्य वर्ण चतुष्पाद		मिथुन बुध शूद्र वर्ण मानव		कर्क चन्द्र विप्र वर्ण जलचर	
नक्षत्र नाड़ी योनि गण	मघा अन्त्या नाड़ी मूषक योनि राक्षस गण	पूर्वाफाल्गुनी मध्या नाड़ी मूषक योनि मनुष्य गण	उत्तराफाल्गुनी आद्या नाड़ी गौ योनि मनुष्य गण	हस्त आद्या नाड़ी महिष योनि देव गण	चित्रा मध्या नाड़ी व्याघ्र योनि राक्षस गण	स्वाति अन्त्या नाड़ी महिष योनि देव गण	विशाखा अन्त्या नाड़ी व्याघ्र योनि राक्षस गण	अनुराधा मध्या नाड़ी मृग योनि देव गण	ज्येष्ठा आद्या नाड़ी मृगयोनि राक्षस गण
चरणांक चरणाक्षर	१ मा, २ मी, ३ मू, ४ मे	१ मो, २ टा, ३ टी, ४ टू	१ टे, २ टो, ३ पा, ४ पी	१ पू, २ ष, ३ ण, ४ ठ	१ पे, २ पो, ३ रा, ४ री	१ रू, २ रे, ३ रो, ४ ता	१ ती, २ तू, ३ ते, ४ तो	१ ना, २ नी, ३ नू, ४ ने	१ नो, २ या, ३ यी, ४ यू
राशि राश्यधिपति वर्ण वश्य	सिंह सूर्य क्षत्रिय वर्ण वनचर		वैश्य वर्ण कन्या बुध वैश्य वर्ण मानव			तुला शुक्र शूद्र वर्ण मानव		वृश्चिक मंगल विप्र वर्ण कीटक	
नक्षत्र नाड़ी योनि गण	मूल आद्या नाड़ी श्वान योनि राक्षस गण	पूर्वाषाढ़ा मध्या नाड़ी वानर योनि मनुष्य गण	उत्तराषाढ़ा अन्त्या नाड़ी नकुल योनि मनुष्य गण	श्रवण अन्त्या नाड़ी वानर योनि देव गण	धनिष्ठा मध्या नाड़ी सिंह योनि राक्षस गण	शततारका आद्या नाड़ी अश्व योनि राक्षस गण	पूर्वाभाद्रपदा आद्या नाड़ी सिंह योनि मनुष्य गण	उत्तराभाद्रपदा मध्या नाड़ी गौ-योनि मनुष्य गण	रेवती अन्त्या नाड़ी गज योनि देव गण
चरणांक चरणाक्षर	१ ये, २ यो, ३ भा, ४ भी	१ भू, २ धा, ३ फा, ४ ढा	१ भे, २ भो, ३ जा, ४ जी	१ खी, २ खू, ३ खे, ४ खो	१ गा, २ गी, ३ गू, ४ गे	१ गो, २ सा, ३ सी, ४ सू	१ से, २ सो, ३ दा, ४ दी	१ दू, २ थ, ३ झ, ४ ञ	१ दे, २ दो, ३ चा, ४ ची
राशि राश्यधिपति वर्ण वश्य	धनु गुरु क्षत्रिय वर्ण मानव		मकर शनि वैश्य वर्ण जलचर			कुम्भ शनि शूद्र वर्ण मानव		मीन गुरु विप्र वर्ण जलचर	

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नक्षत्र कष्टावली

[illegible] देवता	कष्टलक्षणः	कष्ट दिन	चरणगत कष्टदिन				गन्धादि पदार्थ	दानवस्तु	बलिद्रव्य	होमद्रव्य	करे धारणम्	जप संख्या	जपनीय वेदोक्त मन्त्राः
[illegible]ति वायुः	नानाकष्ट ज्वरपीड़ा	मृ.तु.	६०	१७	३०	०	चन्दनगन्ध दमनकपुष्प अगरु गुग्गल धूप, घृतदीपक घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्ण रक्तधेनु पक्वान्न	घृतपायस	तिल यव घृत	जाति मूलम्	१० सहस्र	ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथा सस्ते त्रिरागहि नियु[illegible] सोम पीतये ॥ॐ वायवेनमः॥
विशाखा (इंद्राग्नी)	सर्वाङ्गपीड़ा कुक्षिशूल	१५	१५	०	४	१३	चन्दन केसरगन्ध,कमलपुष्प,देवदारु-घृतधूप, घृतदीप घृतपायस नैवेद्य।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्रदान	सहविचित्रान्न	आज्य पायस	गुञ्जा मूलम्	१० सहस्र	ॐ इन्द्राग्नी आगत सुतं गीर्भिर्नभोवरेण्यम् । अस[illegible] धियेषिता ॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः ॥
अनुराधा (मित्रः)	शिरपीड़ा तीव्रज्वर	स्थिर	६०	१२	३६	३०	केसरगंध, कमलपुष्प, चन्दन धूप घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य।	स्वर्ण गौ छायापात्रदान	मध्वाज्य गुडमाषान्न	यव धृत	सुपुष्प मूलम्	१० सहस्र	ॐनमोमित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृतꣳसपर्यत देव जातायकेतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशꣳसत ॥ॐमित्रा[illegible]
[illegible] (इन्द्रः)	पित्तरोग, कम्पन व्याकुलता	मृ.तु.	५९	९	६	४	श्वेतचन्दनगंध,चम्पकादिपुष्प,कपूर-धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य।	स्वर्णतिल नील वस्त्रदान	दध्योदन सुपुष्प	तिल, घृत तण्डुल	अपामार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमि[illegible] हयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॥ॐ शक्राय[illegible]
मूल (राक्षसः)	मुख तथा उदररोग सन्निपात	७	०	९	१५	६	कृष्ण अगरगन्ध. नीलोत्पलपुष्प, घृत-दीप,कृष्णागुरुधूप,माषमिश्रान्न नैवेद्य।	गौ, छायापात्र वस्त्र कुमारीपूजा	सहवि माषान्न	कंदमूल घृत	मन्दार मूलम्	५ सहस्र	ॐ मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्निꣳस्वेयोनावभारुषा[illegible] विश्वेदेवऋतुभिः संवदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु[illegible] ॐ निऋतये[illegible]
पू. षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कम्पन महाकष्ट	मृ.तु.	०	१५	२४	१०	श्वेतचन्दनगन्ध,कमलपुष्प घृतगुग्गल-धूप, घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य।	स्वर्णवस्त्र तिल तंडुल जलकुम्भ गौदान	घृतपायस मिष्टान्न हवि	तिल, घृत तण्डुल	कर्पास मूलम्	५ सहस्र	ॐ अपाघमप किल्बिष मपकृत्या मपोरपः। अपाम्मार्ग[illegible] दप दुःष्वप्न्यꣳसुव ॥ॐ अद्भ्यो नमः॥
उ. षा. (विश्वेदेवा)	कटिपीड़ा उरुशूल प्रलाप	१०	३०	२४	२६	१६	श्वेतचन्दनगन्ध, कमलपुष्प घृतगुग्गल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य।	आमान्न स्वर्णदान	सहवि पायस तिलाज्य	तिलाज्य यव	कर्पास मूलम्	१० सहस्र	ॐ विश्वेदेवाःशृणुतेमꣳहवं मे ये अन्तरिक्षे य उपद्यवि[illegible] अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिषिमादयध्वम्[illegible] ॥ॐ विश्वेभ्यो देवे[illegible]
[illegible]	सर्वाङ्गपीडा,त्रिदोष-मद, अतिसार	११	६०	२४	६	९	श्वेतचन्दनगन्ध, मालतीपुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृत दीप, षड्रस शाल्यन्न नैवेद्य।	स्वर्ण गौ छायापात्रदान	सहवि पायस	तिलाज्य यव	अपामार्ग मूलम्	१० सहस्र	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूर[illegible] ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ॐ विष्णवे नमः॥
[illegible]	ज्वर-कम्पन, रक्तातिसार मूत्रकृच्छ	१५	१५	२	२०	२१	श्वेतचन्दनगंध कमलपुष्प गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य।	छत्रोपानद् अश्व, स्वर्ण, गौ	पायस मोदक पूपतिलपिष्ठ	तिलाज्य पायस	भृङ्गराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ वसोः पवित्रमसिशतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्र[illegible] देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्त्वा[illegible] धुक्षः ॥ॐ वसुभ्यो[illegible]
[illegible]	वातज्वर सन्निपात कष्ट	११	०	४५	३	२२	केसर अगरगंध,कमलपुष्प,कर्पूर चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य।	स्वर्ण,तिलान्न घट, अश्व, छायापात्र	घृत चित्रान्न	आज्य दध्योदन	कमल मूलम्	१० सहस्र	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरु[illegible] सदन्यसी वरुणस्यऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन[illegible] ॥ॐ वरुणाय[illegible]
[illegible]	वमन, व्याकुलता शरीरपीड़ा,त्रिदोष	मृ.तु.	०	१२	२१	१७	केसरचंदनगंध, श्वेताऽर्क पुष्प शतौषधिमिश्रितधूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत अन्न, श्वेत वस्त्र, छायापात्रदान	दध्योदन पायस	क्षीराज्य शर्करा	भृङ्गराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः[illegible] देवाऽऋतावृधोहुवानास्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु[illegible] ॥ॐ अजैकपदे[illegible]
[illegible]	कामला, अतिसार शूल वातज्वर	७	१०	२०	७	१५	चन्दन कर्पूरगन्ध, कमलपुष्प, बिल्व-गुग्गुल धूप,घृतदीप,घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, तिल कृष्णवस्त्रदान	तिल घृत मुद्गमाष	तिलाज्य यव	अश्वत्थ मूलम्	१० सहस्र	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपिता नमस्ते अस्तु माम[illegible] निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रज[illegible] य सुवीर्याय ॥ ॐ अहिर्बुध्न्यायनमः ॥
[illegible]	[illegible]तपित्तमय ज्वर उरुशूल चित्तभ्रम	स्थिर	१८	१०	९	२०	रक्तचन्दनगंध. मंदारपुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रजतवस्त्र,पैत्तलपात्र वृषभ, छायापात्र	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	अश्वत्थ मूलम्	५ सहस्र	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त[illegible] ॥ॐ पूष्णे[illegible]

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

गणबोधक चक्र)

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

अवकहडाचक्र (नक्षत्र, राशि, स्वामी, वर्ण, वश्य, नाड़ी, योनि, गणबोधक चक्र)

नक्षत्र नाड़ी योनि गण	अश्विनी आद्या नाड़ी अश्व योनि देवगण	भरणी मध्या नाड़ी गज योनि मनुष्य गण	कृत्तिका अन्त्या नाड़ी मेष योनि राक्षस गण	रोहिणी अन्त्या नाड़ी सर्प योनि मनुष्य गण	मृगशीर्ष मध्या नाड़ी सर्प योनि देव गण	आर्द्रा आद्या नाड़ी श्वान योनि मनुष्य गण	पुनर्वसु आद्या नाड़ी मार्जार योनि देव गण	पुष्य मध्या नाड़ी मेष योनि देव गण	अश्लेषा अन्त्या नाड़ी मार्जार योनि राक्षस गण
चरणांक चरणाक्षर	१ चू, २ चे, ३ चो, ४ ला	१ ली, २ लू, ३ ले, ४ लो	१ अ, २ इ, ३ उ, ४ ए	१ ओ, २ वा, ३ वी, ४ वू	१ वे, २ वो, ३ का, ४ की	१ कू, २ घ, ३ ङ, ४ छ	१ के, २ को, ३ हा, ४ ही	१ हू, २ हे, ३ हो, ४ डा	१ डी, २ डू, ३ डे, ४ डो
राशि राश्यधिपति वर्ण वश्य	मेष मंगल क्षत्रिय वर्ण चतुष्पाद		वृष शुक्र वैश्य वर्ण चतुष्पाद		मिथुन बुध शूद्र वर्ण मानव		कर्क चन्द्र विप्र वर्ण जलचर		

नक्षत्र नाड़ी योनि गण	मघा अन्त्या नाड़ी मूषक योनि राक्षस गण	पूर्वाफाल्गुनी मध्या नाड़ी मूषक योनि मनुष्य गण	उत्तराफाल्गुनी आद्या नाड़ी गौ योनि मनुष्य गण	हस्त आद्या नाड़ी महिष योनि देव गण	चित्रा मध्या नाड़ी व्याघ्र योनि राक्षस गण	स्वाति अन्त्या नाड़ी महिष योनि देव गण	विशाखा अन्त्या नाड़ी व्याघ्र योनि राक्षस गण	अनुराधा मध्या नाड़ी मृग योनि देव गण	ज्येष्ठा आद्या नाड़ी मृगयोनि राक्षस गण
चरणांक चरणाक्षर	१ मा, २ मी, ३ मू, ४ मे	१ मो, २ टा, ३ टी, ४ टू	१ टे, २ टो, ३ पा, ४ पी	१ पू, २ ष, ३ ण, ४ ठ	१ पे, २ पो, ३ रा, ४ री	१ रू, २ रे, ३ रो, ४ ता	१ ती, २ तू, ३ ते, ४ तो	१ ना, २ नी, ३ नू, ४ ने	१ नो, २ या, ३ यी, ४ यू
राशि राश्यधिपति वर्ण वश्य	सिंह सूर्य क्षत्रिय वर्ण वनचर		वैश्य वर्ण कन्या बुध वैश्य वर्ण मानव		तुला शुक्र शूद्र वर्ण मानव		वृश्चिक मंगल विप्र वर्ण कीटक		

नक्षत्र नाड़ी योनि गण	मूल आद्या नाड़ी श्वान योनि राक्षस गण	पूर्वाषाढा मध्या नाड़ी वानर योनि मनुष्य गण	उत्तराषाढा अन्त्या नाड़ी नकुल योनि मनुष्य गण	श्रवण अन्त्या नाड़ी वानर योनि देव गण	धनिष्ठा मध्या नाड़ी सिंह योनि राक्षस गण	शततारका आद्या नाड़ी अश्व योनि राक्षस गण	पूर्वाभाद्रपदा आद्या नाड़ी सिंह योनि मनुष्य गण	उत्तराभाद्रपदा मध्या नाड़ी गौ-योनि मनुष्य गण	रेवती अन्त्या नाड़ी गज योनि देव गण
चरणांक चरणाक्षर	१ ये, २ यो, ३ भ, ४ भी	१ भू, २ धा, ३ फा, ४ ढा	१ भे, २ भो, ३ जा, ४ जी	१ खी, २ खू, ३ खे, ४ खो	१ गा, २ गी, ३ गू, ४ गे	१ गो, २ सा, ३ सी, ४ सू	१ से, २ सो, ३ दा, ४ दी	१ दू, २ थ, ३ झ, ४ ञ	१ दे, २ दो, ३ चा, ४ ची
राशि राश्यधिपति वर्ण वश्य	धनु गुरु क्षत्रिय वर्ण मानव		मकर शनि वैश्य वर्ण जलचर		कुम्भ शनि शूद्र वर्ण मानव		मीन गुरु विप्र वर्ण जलचर		

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नक्षत्र कष्टावली

[illegible] देवता	कष्टलक्षणः	कष्ट दिन	चरणगत कष्टदिन				गन्धादि पदार्थ	दानवस्तु	बलिद्रव्य	होमद्रव्य	करे धारणम्	जप संख्या	जपनीय वेदोक्त मन्त्राः
[illegible]ति वायुः	नानाकष्ट ज्वरपीडा	मृ.तु.	६०	१७	३०	०	चन्दनगन्ध दमनकपुष्प अगरु गुग्गल धूप, घृतदीपक घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्ण रक्तधेनु पक्वान्न	घृतपायस	तिल यव घृत	जाति मूलम्	१० सहस्र	ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वा। म सोम पीतये ॥ॐ वायवेनमः॥
विशाखा (इंद्राग्नी)	सर्वाङ्गपीडा कुक्षिशूल	१५	१५	०	४	१३	चन्दन केसरगन्ध,कमलपुष्प,देवदारु-घृतधूप, घृतदीप घृतपायस नैवेद्य।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्रदान	सहविचित्रान्न	आज्य पायस	गुञ्जा मूलम्	१० सहस्र	ॐ इन्द्राग्नी आमत॒ सुतं गीर्भिर्नभोवरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता ॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः ॥
अनुराधा (मित्रः)	शिरपीडा तीव्रज्वर	स्थिर	६०	१२	३६	३०	केसरगंध, कमलपुष्प, चन्दन धूप घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य।	स्वर्ण गौ छायापात्रदान	मध्वाज्य गुडमाषान्न	यव घृत	सुपुष्प मूलम्	१० सहस्र	ॐनमोमित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत॒सपर्यत दूरदृशे देव जातायकेतवे दिवसपुत्राय सूर्यायश॒सत॥ॐमित्रायनमः।
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	पित्तरोग, कम्पन व्याकुलता	मृ.तु.	५९	९	६	४	श्वेतचन्दनगंध,चम्पकादिपुष्प,कपूर-धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य।	स्वर्णतिल नील वस्त्रदान	दध्योदन सुपुष्प	तिल, घृत तण्डुल	अपामार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र॒हवे हवे सुहव॒शूरमिन्द्रम्। ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्र॒स्वास्तिनो मघवाधात्विन्द्रः। ॥ॐ शक्राय नमः॥
मूल (राक्षसः)	मुख तथा उदररोग सन्निपात	७	०	९	१५	६	कृष्ण अगरगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृत-दीप,कृष्णागुरुधूप,माषमिश्रान्न नैवेद्य।	गौ, छायापात्र वस्त्र कुमारीपूजा	सहवि माषान्न	कंदमूल घृत	मन्दार मूलम्	५ सहस्र	ॐ मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि॒स्वेयोनावभारुषा। तां विश्वेदेवऋतुभिः संवदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ ॐ निर्ऋतयेनमः॥
पू. षा. (जलम्)	शिरपीडा, कम्पन महाकष्ट	मृ.तु.	०	१५	२४	१०	श्वेतचन्दनगन्ध,कमलपुष्प घृतगुग्गल-धूप, घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य।	स्वर्णवस्त्र तिल तंडुल जलकुम्भ गौदान	घृतपायस मिष्टान्न हवि	तिल, घृत तण्डुल	कर्पास मूलम्	५ सहस्र	ॐ अपाघमप किल्बिष मपकृत्या मपोरपः। अपाम्मार्गत्वमस्मदप दुःष्वप्न्य॒सुव ॥ॐ अद्भ्यो नमः॥
उ. षा. (वि[illegible]देवा)	कटिपीडा उरुशूल प्रलाप	१०	३०	२४	२६	१६	श्वेतचन्दनगन्ध, कमलपुष्प घृतगुग्गल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य।	आमान्न स्वर्णदान	सहवि पायस तिलाज्य	तिलाज्य यव	कर्पास मूलम्	१० सहस्र	ॐ विश्वेदेवाःशृणुतेम॒हवं मे ये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठाय। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिषिमादयध्वम् ॥ ॥ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः॥
[illegible] [illegible]ष्णुः)	सर्वांङ्गपीडा,त्रिदोष-मय, अतिसार	११	६०	२४	६	९	श्वेतचन्दनगन्ध, मालतीपुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृत दीप, षड्रस शाल्यन्न नैवेद्य।	स्वर्ण गौ छायापात्रदान	सहवि पायस	तिलाज्य यव	अपामार्ग मूलम्	१० सहस्र	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ॐ विष्णवे नमः॥
[illegible]	ज्वर-कम्पन, रक्तातिसार मूत्रकृच्छ	१५	१५	२	२०	२१	श्वेतचन्दनगंध कमलपुष्प गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य।	छत्रोपानद् अश्व, स्वर्ण, गौ	पायस मोदक पूपतिलपिष्ठ	तिलाज्य पायस	भृङ्गराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ वसोः पवित्रमसिशतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः ॥ॐ वसुभ्यो नमः॥
[illegible]	वातज्वर सन्निपात कष्ट	११	०	४५	३	२२	केसर अगरगंध,कमलपुष्प,कर्पूर चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य।	स्वर्ण,तिलान्न घट, अश्व, छायापात्र	घृत चित्रान्न	आज्य दध्योदन	कमल मूलम्	१० सहस्र	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्यऋतसदन्यसी वरुणस्यऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद ॥ॐ वरुणाय नमः॥
[illegible]	वमन, व्याकुलता शरीरपीडा,त्रिदोष	मृ.तु.	०	१२	२१	१७	केसरचंदनगंध, श्वेताऽर्क पुष्प शतौषधिमिश्रतधूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत अन्न, श्वेत वस्त्र, छायापात्रदान	दध्योदन पायस	क्षीराज्य शर्करा	भृङ्गराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवाऽऋतावृधोहुवानास्तुतामन्त्राः कविशस्ता अवन्तु ॥ ॥ॐ अजैकपदे नमः॥
[illegible]	कामला, अतिसार शूल वातज्वर	७	१०	२०	७	१५	चन्दन कर्पूरगन्ध, कमलपुष्प, बिल्व-गुग्गुल धूप,घृतदीप,घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, तिल कृष्णवस्त्रदान	तिल घृत मुद्गमाष	तिलाज्य यव	अश्वत्थ मूलम्	१० सहस्र	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपिता नमस्ते अस्तु मामाहि॒सीः निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ ॐ अहिर्बुध्न्यायनमः ॥
[illegible]	[illegible]तपित्तमय ज्वर उरुशूल चित्तभ्रम	स्थिर	१८	१०	९	२०	रक्तचन्दनगंध, मंदारपुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रजतवस्त्र,पैत्तलपात्र वृषभ, छायापात्र	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	अश्वत्थ मूलम्	५ सहस्र	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ॐ पूष्णे नमः॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अवकहडाचक्र (नक्षत्र, राशि, स्वामी, वर्ण, वश्य, नाड़ी, योनि, गणबोधक चक्र)

नक्षत्र	नाड़ी	योनि	गण	चरणांक चरणाक्षर	राशि राश्यधिपति वर्ण वश्य
अश्विनी	आद्या नाड़ी	अश्व योनि	देवगण	१ चू, २ चे, ३ चो, ४ ला	मेष मंगल क्षत्रिय वर्ण चतुष्पाद
भरणी	मध्या नाड़ी	गज योनि	मनुष्य गण	१ ली, २ लू, ३ ले, ४ लो	
कृत्तिका	अन्त्या नाड़ी	मेष योनि	राक्षस गण	१ अ, २ इ, ३ उ, ४ ए	वृष शुक्र वैश्य वर्ण चतुष्पाद
रोहिणी	अन्त्या नाड़ी	सर्प योनि	मनुष्य गण	१ ओ, २ वा, ३ वी, ४ वू	
मृगशीर्ष	मध्या नाड़ी	सर्प योनि	देव गण	१ वे, २ वो, ३ का, ४ की	मिथुन बुध शूद्र वर्ण मानव
आर्द्रा	आद्या नाड़ी	श्वान योनि	मनुष्य गण	१ कू, २ घ, ३ ङ, ४ छ	
पुनर्वसु	आद्या नाड़ी	मार्जार योनि	देव गण	१ के, २ को, ३ हा, ४ ही	कर्क चन्द्र विप्र वर्ण जलचर
पुष्य	मध्या नाड़ी	मेष योनि	देव गण	१ हू, २ हे, ३ हो, ४ डा	
अश्लेषा	अन्त्या नाड़ी	मार्जार योनि	राक्षस गण	१ डी, २ डू, ३ डे, ४ डो	
मघा	अन्त्या नाड़ी	मूषक योनि	राक्षस गण	१ मा, २ मी, ३ मू, ४ मे	सिंह सूर्य क्षत्रिय वर्ण वनचर
पूर्वाफाल्गुनी	मध्या नाड़ी	मूषक योनि	मनुष्य गण	१ मो, २ टा, ३ टी, ४ टू	
उत्तराफाल्गुनी	आद्या नाड़ी	गौ योनि	मनुष्य गण	१ टे, २ टो, ३ पा, ४ पी	वैश्य वर्ण कन्या बुध वैश्य वर्ण मानव
हस्त	आद्या नाड़ी	महिष योनि	देव गण	१ पू, २ ष, ३ ण, ४ ठ	
चित्रा	मध्या नाड़ी	व्याघ्र योनि	राक्षस गण	१ पे, २ पो, ३ रा, ४ री	तुला शुक्र शूद्र वर्ण मानव
स्वाति	अन्त्या नाड़ी	महिष योनि	देव गण	१ रू, २ रे, ३ रो, ४ ता	
विशाखा	अन्त्या नाड़ी	व्याघ्र योनि	राक्षस गण	१ ती, २ तू, ३ ते, ४ तो	वृश्चिक मंगल विप्र वर्ण कीटक
अनुराधा	मध्या नाड़ी	मृग योनि	देव गण	१ ना, २ नी, ३ नू, ४ ने	
ज्येष्ठा	आद्या नाड़ी	मृगयोनि	राक्षस गण	१ नो, २ या, ३ यी, ४ यू	
मूल	आद्या नाड़ी	श्वान योनि	राक्षस गण	१ ये, २ यो, ३ भा, ४ भी	धनु गुरु क्षत्रिय वर्ण मानव
पूर्वाषाढ़ा	मध्या नाड़ी	वानर योनि	मनुष्य गण	१ भू, २ धा, ३ फा, ४ ढा	
उत्तराषाढ़ा	अन्त्या नाड़ी	नकुल योनि	मनुष्य गण	१ भे, २ भो, ३ जा, ४ जी	मकर शनि वैश्य वर्ण जलचर
श्रवण	अन्त्या नाड़ी	वानर योनि	देव गण	१ खी, २ खू, ३ खे, ४ खो	
धनिष्ठा	मध्या नाड़ी	सिंह योनि	राक्षस गण	१ गा, २ गी, ३ गू, ४ गे	कुम्भ शनि शूद्र वर्ण मानव
शततारका	आद्या नाड़ी	अश्व योनि	राक्षस गण	१ गो, २ सा, ३ सी, ४ सू	
पूर्वाभाद्रपदा	आद्या नाड़ी	सिंह योनि	मनुष्य गण	१ से, २ सो, ३ दा, ४ दी	मीन गुरु विप्र वर्ण जलचर
उत्तराभाद्रपदा	मध्या नाड़ी	गौ-योनि	मनुष्य गण	१ दू, २ थ, ३ झ, ४ ञ	
रेवती	अन्त्या नाड़ी	गज योनि	देव गण	१ दे, २ दो, ३ चा, ४ ची	

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ पुरुषजन्मकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभः ११	व्यय १२
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुःखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित्	अल्पायुः	सुखी	शूरः	धनी	पतितः
चन्द्रः	जड़ः	कुटुम्बी	क्रूरः	सुशीलः	पुत्रवान्	अल्पायुः	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यातः	हीनांग.
भौमः	व्रणी:	कुटिलः	विक्रमी	पीड़ितः	अपुत्रः	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्यः	पतित.
बुधः	विद्वान्	धनी	दुर्जनः	सुखी	मन्त्री	दुशीलः	धर्मज्ञः	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़ः
गुरुः	चिरायुः	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्धः	अल्पायुः	पुत्रवान्	सुकृतिः	धनी	दरिद्रः
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीचः	प्रतापी	सुमतिः	धनाढ्यः	खलः
शनिः	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्रः	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुःखी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्भगः	बली	अशुचिः	गतायुः	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतित.
केतुः	अल्पायुः	धर्महा	शूरः	दुःखी	अपुत्रः	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जनः

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां तन्वादि भावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनः २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	पतिः ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्यय १२
सूर्यः	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्रः	अल्पायुः	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पतिप्रि.	दुःखार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनि	हीनांगी
भौमः	दुःखार्त्ता	बन्ध्या	अभ्रातृ.	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सधर्मा	दुष्टा
बुधः	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धिः	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरुः	सती	सधना	भ्रातृप्र०	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनिः	बन्ध्या	निर्धना	वंशा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतुः	दुःखार्त्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदुःखा	शोकार्त्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

अथ सूर्यादिग्रहाणां गोचरफलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्य.	विजयः	मार्गः	पीड़ाः	सुखना.	सिद्धिः	धनला.	द्रव्यना.
चंद्रः	धनला.	सन्तोष	सुखं	रोगः	शान्तः	धनला.	स्त्रीला०	रोगः	धर्मला.	सौख्यं	धनला.	धनना.
भौमः	शत्रुभीः	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	पुत्रकष्ट	धनला.	स्त्रीकष्टः	शत्रुभीः	शत्रुपी.	शोकः	धनला.	धनना.
बुधः	सुख	धनलाभ	शत्रुभीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला.	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनला.	धनना.
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोकः	राजमा.	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनला.	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभीः	शोकः	धनला.	वस्त्रला.	दुःखं	धनला.	धनला.
शनिः	भयं	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभीः	पुत्रकष्टं	धनला.	दोषः	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनला.	धनला.
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैरं	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्युः	दुःखं	वैरं	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनलाः	कलहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्ति.	शत्रुभीः

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभ	हानिः	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चंद्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुना.	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजयः	धनलाभ	व्ययः
भौमः	प्रणाः	धननाश	जयः	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यला.	धनलाभ	विरोध
बुधः	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यला.	पुत्रला.	कलह.	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानलाभ	सुखला.	रोगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाहन.ला.	पुत्रः प्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा०	धनप्राप्ति	कीर्तिला.	सुखलाभ	धनलाभ.	शत्रुभीः	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	क्षेमला.	व्यय
शनिः	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभः	दुःखम्	पुत्र पीड़ा	जयः	स्त्रीकष्ट	रोगः	भाग्याहा.	बलहानि	धनला.	चिन्ता
राहुः	शिरोर्ति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धर्महानि	विजयः	सुलाभ	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्य	राज	कुबुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्याना.	धनलाभ	लाभः	शोकः
मुन्था	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभः	कष्टम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोचराद् दशाक्रमाद्वा ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः

ग्रह												जप सं०	जपनीय मन्त्राः	समय	समिधाः
[illegible]	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंगा	रक्त गौ	रक्त चन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
[illegible]	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेत चन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
[illegible]	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्त चन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
[illegible]	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरा वस्त्र	सर्व पुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
[illegible]	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	मध्या	अश्वत्थ
…क	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेत चन्दन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
…नि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णगौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्या.	शमी
…हु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लहसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुख्या	मोती	सुवर्ण	चांदी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मिश्री	श्वेत चन्दन	हाथीदांत	मुख्येशवत्	मुख्येश मन्त्र	मुख्येशकाले	

सूर्यादि ग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि—(यथा सिद्धौषधै रोगास्तद्वद्देवैर्मन्त्रतो भयम् । तथा स्नान विधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
[illegible]	[illegible]	[illegible]	गोबर	मालती पुष्प	इलायची	काले तिल	लोबान	लोबान
[illegible]	[illegible]	रक्त चन्दन	अक्षत	श्वेत सरसों	मनशिला	सुरमा	तिल पत्र	तिल पत्र
[illegible]	[illegible]	[illegible]	फल	मुलहठी	सुगन्धबाला	लोबान	मुत्थरा	मुत्थरा
[illegible]	[illegible]	[illegible]	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदन्त	गजदन्त
[illegible]	[illegible]	[illegible]	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
[illegible]	[illegible]	[illegible]	मोती			मुत्थरा		
[illegible]	[illegible]	[illegible]	सुवर्ण			खिल्लां		
[illegible]								

सप्त धान्य—उड़द १, मूंगा २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६, कंगनी ७॥

सर्वग्रहाणां दोषोपशमनार्थं सामान्यौषधिस्नानम्

लाजवन्ती (छुईमुई) कूट, खिल्लां, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हलदी, सर्वौषधी, लौध इन औषधियों के जल से सर्वौषधिक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शांति होती है। गुरु के वचन, देवता-ब्राह्मणों की वन्दना वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यंत्र के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

[illegible] विचार—[illegible] द्वितीये [illegible] विलोमतः। फलं—नेत्रस्थे शत्रुसन्तापो हृदये मानसीव्यथा, वैरतो भ्रमणं देशे देशः सचार [illegible] चाष्टमे, ध्यायि वन्धुविरोध देशगमनं क्लेशंच चित्ताधिकम्॥ मृत्युं चैव करोति चापि [illegible] शरीरचतुर्थाष्टमे, ध्यायि वन्धुविरोध देशगमनं क्लेशंच चित्ताधिकम्॥ [illegible] राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये [illegible] सर्वदा ॥१॥ [illegible] कल्याणी (सादेसाती) फलम्—[illegible] सायारणम्, रामात्कृत्वि विनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाधता ॥२॥ [illegible]

(२) [illegible] शुभाशुभ[illegible]। शनि [illegible]

[illegible] राशि प्रवेश [illegible] में पाद देखना हो तो अपनी राशि से जिस दिन ग्रह बदलता हो उस दिन जिस राशि में [illegible] १।६।११ में सुवर्णपाद, ४।८।१२ में लोहपाद जानना। गुरु सुवर्णपाद में, शनि लोहपाद [illegible] जिस दिन शनि बदले उस दिन के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देवें, शेष क्रमशः शनि का [illegible] इसमें वाहनों के गुणानुसार फल समझें।

[illegible] १ गर्दभ, २ अश्व, ३ हस्ति, ४ महिषी, ५ जम्बुक, ६ सिंह, ७ काक, ८ मयूर, ९ हंस।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अङ्गस्फुरण फलम्

पुरुषों का दायाँ अङ्ग और स्त्रियों का बायाँ अङ्ग फड़कना शुभ है। इन्हीं अङ्गों में तिल, लहसुन, मस्सा हो या खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुआ में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज उठे तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वी लाभ	स्कन्ध	भोग समृद्धि	कपोल	शुभाप्ति	हस्त	द्रव्य लाभ	पादोपरि	स्थान लाभ	हृदय	इष्ट सिद्धि	नाभि	स्त्री लाभ	भग	रतिप्राप्ति	उदर	कोष लाभ
ललाट	स्थान लाभ	भ्रू मध्य	सुख प्राप्ति	नेत्र	धनाप्ति	नेत्रोर्ध्व	विजय	रक्षः स्थल	विजय	कटि	प्रमोद	आंत्रिक	कोपवृद्धि	कुक्षि	सुप्रीति	लिङ्ग	स्त्री लाभ

रवि क्रांति

तारीख	जनवरी द०		फरवरी द०		मार्च द०		अप्रैल उ०		मई उ०		जून उ०		जुलाई उ०		अगस्त उ०		सित० उ०		अक्टू० द०		नवम्बर द०		दिस० द०	
	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१	२३	४	१७	१८	७	५२	४	२१	१४	५६	२१	५९	२३	९	१८	६	८	२८	२	५९	१४	१६	२१	४३
२	२२	५९	१७	१	७	२९	४	४४	१५	१४	२२	७	२३	५	१७	५४	८	६	३	२२	१४	३६	२१	५३
३	२२	५४	१६	४४	७	६	५	७	१५	३२	२२	१५	२३	१	१७	३९	७	४५	३	४६	१४	५५	२२	१
४	२२	४८	१६	२६	६	४३	५	३०	१५	४९	२२	२२	२२	५६	१७	२३	७	२३	४	९	१५	१३	२२	१०
५	२२	४२	१६	९	६	२०	५	५३	१६	७	२२	२९	२२	५१	१७	७	७	१	४	३२	१५	३२	२२	१८
६	२२	३५	१५	५०	५	५७	६	१६	१६	२४	२२	३६	२२	४५	१६	५१	६	३८	४	५५	१५	५०	२२	२६
७	२२	२८	१५	३१	५	३४	६	३८	१६	४१	२२	४२	२२	३९	१६	३४	६	१६	५	१८	१६	८	२२	३३
८	२२	२१	१५	१३	५	११	७	१	१६	५७	२२	४७	२२	३३	१६	१८	५	५४	५	४१	१६	२६	२२	४०
९	२२	१३	१४	५४	४	४७	७	२३	१७	१३	२२	५३	२२	२६	१६	१	५	३१	६	४	१६	४३	२२	४६
१०	२२	५	१४	३५	४	२४	७	४६	१७	३०	२२	५८	२२	१९	१५	४३	५	८	६	२७	१७	१	२२	५२
११	२१	५६	१४	१६	४	०	८	८	१७	४५	२३	३	२२	११	१५	२६	४	४५	६	५०	१७	१७	२२	५८
१२	२१	४६	१३	५६	३	३७	८	३०	१८	०	२३	७	२२	३	१५	८	४	२४	७	१२	१७	३४	२३	३
१३	२१	३५	१३	३६	३	१३	८	५२	१८	१६	२३	११	२१	५५	१४	५०	४	१	७	३५	१७	५०	२३	७
१४	२१	२५	१३	१६	२	५०	९	१४	१८	३०	२३	१४	२१	४६	१४	३२	३	३८	७	५७	१८	५	२३	११
१५	२१	१५	१२	५६	२	२६	९	३५	१८	४४	२३	१७	२१	३७	१४	१३	३	१५	८	२०	१८	२२	२३	१५
१६	२१	५	१२	३५	२	२	९	५६	१८	५८	२३	२०	२१	२८	१३	५५	२	५२	८	४२	१८	३७	२३	१८
१७	२०	५४	१२	१४	१	३८	१०	१८	१९	१२	२३	२२	२१	१९	१३	३६	२	२८	९	४	१८	५२	२३	२०
१८	२०	४२	११	५३	१	१५	१०	३९	१९	२६	२३	२४	२१	७	१३	१६	२	५	९	२५	१९	७	२३	२३
१९	२०	३०	११	३२	०	५१	११	०	१९	३९	२३	२५	२०	५७	१२	५७	१	४१	९	४७	१९	२०	२३	२४
२०	२०	१७	११	११	०	३५	११	२१	१९	५२	२३	२६	२०	४६	१२	३६	१	१८	१०	९	१९	३४	२३	२५
२१	२०	५	१०	४९	०	१०	११	४१	२०	४	२३	२७	२०	३५	१२	१८	०	५६	१०	३०	१९	४८	२३	२६
२२	१९	५१	१०	२७	०	१४	१२	२	२०	१७	२३	२७	२०	२४	११	५८	०	३२	१०	५१	२०	१	२३	२७
२३	१९	३८	१०	६	०	३७	१२	२२	२०	२९	२३	२७	२०	१२	११	३८	०	९	११	१३	२०	१४	२३	२७
२४	१९	२४	९	४४	१	१	१२	४२	२०	४०	२३	२६	२०	०	११	१७	०	१५	११	३४	२०	२७	२३	२६
२५	१९	८	९	२२	१	२५	१३	२	२०	५१	२३	२५	१९	४९	१०	५७	०	३९	११	५६	२०	३९	२३	२५
२६	१८	५४	९	०	१	४८	१३	२१	२१	१	२३	२३	१९	३४	१०	३६	१	२	१२	१६	२०	५१	२३	२३
२७	१८	३९	८	३८	२	१२	१३	४१	२१	१२	२३	२१	१९	२०	१०	१५	१	२६	१२	३६	२१	२	२३	२१
२८	१८	२३	८	१५	२	३५	१४	०	२१	२२	२३	१९	१९	६	९	५४	१	४९	१२	५७	२१	१३	२३	१९
२९	१८	७	८	४	३	९	१४	१९	२१	३२	२३	१६	१८	५३	९	३३	२	१२	१३	१७	२१	२४	२३	१६
३०	१७	५१	०	०	३	३२	१४	३७	२१	४१	२३	१३	१८	३८	९	१२	२	३६	१३	३७	२१	३४	२३	१२
३१	१७	३५	०	०	३	५६	०	०	२१	५०	०	०	१८	२४	८	५०	०	०	१३	५७	०	०	२३	९

पल्लीपतने (छिपकली के गिरने पर) शुभ तिथि वार नक्षत्र—यदि छिपकली १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३। इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ लाभदायक है। चं.गु.बु.शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। अश्वि. रो. मृ. पु. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। इसके अतिरिक्त तिथि नक्षत्र वारादि में छिपकली गिरे तो अशुभ होती है।

पल्लीनारे कर्तव्य कर्म—पल्ली (छिपकली) तथा सरठ (गिरगट) स्पर्श पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म-नक्षत्र, मृत्यु-योग, दग्ध दिन, भद्रा आदि में दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अनिष्ट होता है। उसकी शांति के लिए जप, होम, मृत्युंजय का जप या तिल स्वर्ण दान, पंचगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान करना उत्तम है।

छिक्का फल—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग में अथवा "छींक सूंघनी तम्बाकू लीनी, पीनस सर्दी घोर फल हीनी। छींक पीठ की कुशल उचारे, बाँई कारज सर्व सँवारे ॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भाखै, छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊँची छींक कहे जयकारो, नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महादुखदायी। ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥ कन्या, विधवा, मालिन [illegible] रजस्वला, वेश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है [illegible] दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले। शयन के समय और [illegible] नहीं होती।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरीयमहादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

[सूर्य] दशा वर्ष ६ — [कृ.] फा. उ. षा. तन्मध्येऽन्तरम्				चन्द्र दशा वर्ष १० — रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				भौम दशा वर्ष ७ — मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
[illegible]	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
[illegible]	०	[illegible]	२४	बृ	१	४	०	श	१	०	९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	श	१	७	०	बु	०	११	२७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बु	[illegible]	[illegible]	०	के	०	४	२७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	के	[illegible]	[illegible]	०	शु	१	२	०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शु	[illegible]	८	०	सू	०	४	६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सू	०	६	०	चं	०	७	०

राहु दशा वर्ष १८ — आ. स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम्				गुरु दशा वर्ष १६ — पुन. वि. पूभा. तन्मध्येऽन्तरम्				शनि दशा वर्ष १९ — पु. अनु. उभा. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	सू	०	११	१२
शु	३	०	०	सू	०	९	१८	चं	१	७	०
सू	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९
चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२

बुध दशा वर्ष १७ — अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				केतु दशा वर्ष ७ — म. मू. अश्वि. तन्मध्येऽन्तरम्				शुक्र दशा वर्ष २० — पूफा. पूषा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	सू	१	०	०
शु	२	१०	०	सू	०	४	६	चं	१	८	०
सू	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

त्रिराशिपति चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.
सू. गु.	शु. च.	श. बु.	शु. मं.	गु. सू.	चं. शु.	बु. श.
वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशय:	
न. गु.	श. श.	म. मं.	गु. गु.	चं. चं.	दि. प. रा. प.	

दशा का भुक्त भोग्य—गत नक्षत्रकी घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अङ्कोंमें प्रवेश नक्षत्र की घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियोंको ६० से गुणाकर पलबना लें, भयातकी पलोंको फिर ३० से गुणाकर भभोगके पलों से दशा के वर्षों से गुणा कर भयात की पलों से भाग देवें, लब्ध अङ्कु वर्ष, शेषाङ्क को १२ से गुणें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास, फिर ३० से गुणाकर भभोगके पलों से भाग दें, लब्ध दिन आवेंगे। यह दशा के भुक्त वर्षादि होंगे। इन्हें दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

योगिनी दशाऽन्तर्दशाज्ञानार्थं चक्रमिदम्

मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	संकटा ८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	अश्वि. [illegible]	पुन. मघा. [illegible]	कृ. पूफा.	रो. ह. फा	मृग. हस्त
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] वि. उ. भा.	मू. [illegible]	पू. षा.	उ. षा.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथाङ्गविभागे पल्ली (छिपकली कोढ़किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्य संभवः	वामपादे	नाशः
नासायां	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयं	स्तनयोः	दीर्घमिष्टम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
मुखमध्ये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनं
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धनलाभः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
द० कर्णे	आयुर्वृद्धिः	नेत्रयोः	धनाप्तिः	पादाग्रे	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशाग्रे	मरणम्
स्कन्धयोः	शुभम्	[illegible]	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
दक्षिणबाहौ	[illegible]	[illegible]	धनलाभः	दक्षपादे	धनलाभः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

विविध मुहूर्त्ताः

अथ स्त्रीणामाग्ररजोदर्शने शुभाशुभ विचारः

शुभमासाः—वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष. माघ, फाल्गुनमास और शुक्लपक्ष श्रेष्ठ है।

शुभतिथि—१।२।५।७।१०।११।१३।१५, कृष्णपक्ष में १० दशमीपर्यन्त मध्यम, उपरान्त नेष्ट। चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार श्रेष्ठ। अश्विनी, रो. मृ. पुष्य, उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्र शुभ। पुन. कृ. म. वि. मू. नक्षत्र मध्यम, अन्य अशुभ। वृ. मि. कर्क क. तु. ध. मी. लग्न शुभयुक्त तथा शुभदृष्ट हों तो प्रथम रजोदर्शन शुभ है।

अशुभ समय—अष्टमी, द्वादशी, षष्ठी, रिक्ता, अमावस, संक्रांति, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, ग्रहण, मार्गमें, कुदेश, उत्पातकालसमय इन योगों में प्रथम रजोदर्शन होवे तो अनिष्ट है। इसकी यथाविधि शांतिविधान करने पर शुभ होवे।

स्नान मुहूर्त्त—ह. स्वा. मृ. अश्विनी अनु. ध. रो. उत्तरा ३, पु. शुभ तिथि शुभवार में, कुयोगरहित समयमें लग्नबल देख शुभ नवांश में प्रथम ऋतुमती स्नान करे।

अथ गर्भाधान मुहूर्त विचार—रजोदर्शन की ४ रात्रि छोड़कर समरात्रिमें, रो. मृ. ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श. नक्षत्र तथा मेष कर्क सि. तु. ध. म. इन लग्नों में, लग्न से ३।६।११ वें में पापग्रह और र. मं. गु. लग्नको देखे तथा विषम राशि नवांश में हों, पति पत्नी को चन्द्र शुभ हो, ऐसे समय में गर्भाधान संस्कार करें। पुन. अश्वि. पुष्य. चि. नक्षत्र गर्भाधानमें मध्यम माने हैं। गर्भाधानमें चन्द्रबल स्त्रीको विशेष होना चाहिये।

गर्भाधानानन्तर दश मासों के स्वामी—प्रथम मासका स्वामी शुक्र, द्वितीयका मंगल, तृतीयका गुरु, चतुर्थ का सूर्य, पंचम का चन्द्र, षष्ठ का शनि, सप्तम का बुध अष्टमका गर्भलग्नपति, नवमका चन्द्र और दशम मासका स्वामी सूर्य है। अष्टम मास में श्र. रो. पुष्य. शुभ तिथिवार और अष्टम स्थान शुद्ध लग्न में गर्भरक्षार्थ [illegible]जु पूजन करे।

पुंसवन सीमन्तमुहूर्त्तविचार—गर्भके द्वितीय तृतीय मास में पुंसवन करना [illegible]हिये। छठे और आठवें मास में मासाधिपति बलवान् होने पर सीमन्त कर्म करे। [illegible]सवन सीमन्तमें गुरु शुक्रके अस्तका दोष नहीं है। र.मं.गु. वार. मतांतरसे सो.बु.शु. [illegible] दम्पतिका चन्द्रबल ताराशुद्धि देख, रो. मृ. पुष्य. पुन. हस्त मू. म. उत्तरा ३ [illegible]नक्षत्र बिना इन नक्षत्रों में तथा १।२।३।५।७।१०।११।१३ शुक्ल पक्ष की तिथियोंमें, [illegible]पक्षमें १० पर्यन्त शुभ, पूर्वाह्न श्रेष्ठ है। पुरुष संज्ञक लग्न तथा नवांश में लग्नसे [illegible]।५।८।९।१० में शुभग्रह, ३।६।११ में पापग्रह, चन्द्र १।६।८।१२ वें वर्ज्यकर अन्य [illegible]नों में हो ऐसे मुहूर्त्त में पुंसवन और सीमन्त संस्कार करना श्रेष्ठ है।

[illegible] से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में स्वर्ण लगाकर स्वर्णसहित अंगुलि से शहद में गोघृत मिलाकर ॐ भूस्त्वयि, दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवःस्वःसर्वंत्वयि दधामि इन चारों मन्त्रों से नवजात बालक को थोड़ा थोड़ा मधु घृत चार बार चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान मुहूर्त्त—पंचम दिन अथवा भद्रा व्यतिपात वैधृति रिक्ता तिथि को त्यागकर शुभतिथि वार में पुन. पुष्य. मृ. ह. श्र. रे. नक्षत्र में स्तनपान कराना शुभ है।

प्रसूति स्नानमुहूर्त्त—रिक्तातिथि को छोड़कर शुभतिथि र.मं.गु. वार अश्विनी रो.मृ. तीनों उत्तरा. ह. स्वा. अनु. रेवती इन नक्षत्रों म. कुयोग रहित दिन में प्रसूता स्नान शुभ है।

जलपूजन मुहूर्त्त—मास के समाप्त होने पर बु.गु. चंद्रवार, रिक्ता अमावसरहित तिथियोंमें, मृ.पु.ह. अनु. मू. श्र. नक्षत्रों में जलपूजन श्रेष्ठ है। चैत्र, पौष, अधिकमास, गुरु शुक्र का अस्त, मास पूरा होने पर वर्ज्य करें, अर्थात एक मास तक इनका दोष नहीं।

जातकर्म नामकरण संस्कार—जातकर्म नाल छेदने के पूर्व करना योग्य है। उस समय न हो सके तो सूतक निवृत्त होने पर ब्राह्मण ११ वें, क्षत्रिय १३ वें, वैश्य १६ वें, शूद्र २१ वें दिन नामकर्म पूर्व कुलाचार के अनुसार करें। सूतक समाप्तिपर ११ वें या १२ वें दिन जातकर्म नामकर्म संस्कार न हुआ तो भद्रा व्यतिपात वैधृति संक्रांतिरहित १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, शुभवार अश्वि.रो.मृ.पुन. पु.ह.चि.स्वा. अनु. तीनों उत्तरा अभि श्र. ध. श. रे. इन नक्षत्रों में लग्न नवांश बल देखकर उत्तम नामकी योजना कर विधि के अनुसार बालकके दक्षिण कर्ण में तीन बार नाम कहे।

दोलारोहण (बालकको झूलेमें झुलाना)—जन्म दिवस से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन रिक्ता अमावसरहित तिथि, शुभवार. अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. अभि. तीनों उत्तरा रे. नक्षत्रों में शुभ होता है। सूर्य नक्षत्र से आगे ५ और पीछे ७ नक्षत्र शुभ होते है।

अथ निष्क्रमण मुहूर्त्त—बारहवें दिन बालक का निष्क्रमण करें। सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य और नक्षत्रों के दर्शन करावें। यह न हो तो तृतीय चतुर्थ मास में मं. श. वर्जित वारों में रिक्ता भद्रा अमावस आदि कुयोग रहित शुभ दिन में अश्वि. रो. पुन. पुष्य. ह. अनु. स्वा. मू. श्र. ध. नक्षत्रों में शुभ है।

भूम्युपवेशन—पांचवें मास में पृथ्वी और वराह का पूजन कर रिक्ता अमा, रहित तिथि, शुभवार अश्वि. रो. मृ. पुष्य. हस्त. अनु. ज्ये. अभि. तीनों उत्तरा नक्षत्रों में बालक को पृथ्वी पर बिठाने के समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, दवात सुवर्ण, चांदी, वस्त्र, शस्त्र, वेद की पुस्तकें, धान्य, मशीनें, छोटी मोटरें, इंजिन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[illegible] वस्तुये रख, इनमें से जिस वस्तु को बालक पहिले ग्रहण करे [illegible]
[illegible] होती है, इसलिए आगे वही विद्या उसको पढ़ाई जावे। स्थिर लग्न में
[illegible] के कमर में सूत्र बांधकर पृथ्वी पर बिठावें। मंत्र यह है—"ॐ रक्षैनं
[illegible] देवि ! सदा सर्वगते शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।"

अन्नप्राशन—जन्म से ६।८।१०।१२ वें मास में पुत्र को, और ५।७।६।११ वें [illegible] में कन्या को, भद्रा व्यतिपातादि दोषरहित १।३।५।७।१०,१३,१५ इन तिथियों [illegible] शुभ वार, अश्वि. रो. पु. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. अभि. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, [illegible] इन नक्षत्रोंमें, जन्मलग्न या जन्मराशि से आठवां लग्न या नवांश तथा मीन, मेष, [illegible] वृश्चिक लग्नको त्याग कर दशमें स्थान में पापग्रह न हो तो अन्नप्राशन कराना श्रेष्ठ है।

कर्णवेध—चतुर्मास (आषाढ़ शु. ११ से कार्तिक शु. ११ तक) चैत्र पौष, जन्म मास, तिथि नक्षत्र, क्षयतिथि, ४।६।१४ और [illegible] वर्षों को त्याग कर जन्म से १२ वें या १६ वें दिन अथवा ६।७।८ वें मास में या विषम वर्षों में शुभवार, अश्वि. मृ. पुन. ह. चि. अनु. अभि. श्र. ध. रे. नक्षत्रों में लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो, वृ. ध. मीन लग्न और लग्न में गुरु हों तो कर्णछेदन श्रेष्ठ होता है।

मुण्डन चौल (चूड़ाकर्म) संस्कार—बालक की माता को ५ मास का गर्भ हो तो ५ वर्ष से न्यून अवस्था के बालक का चौल कर्म नहीं करना। ज्येष्ठ मास में नहीं करना, तथा चैत्र मास को छोड़ विषम वर्षमें, उत्तरायण में २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में, अश्वि मृ. पुन. पुष्य ह. चि. स्वा. ज्ये. अभिजित् श्र. ध. श. रे. नक्षत्रों में। अष्टम स्थान शुद्ध होने पर चौल कर्म श्रेष्ठ है। तथा कुलाचारानुसार इष्टदेवता के [illegible] आदि भी मुण्डन संस्कार और कर्णवेध कर दिया जाता है। यह 'यथाकुलधर्मं वा' इस स्मृति के अनुसार ठीक ही है।

क्षौर कराने का नियम तथा मुहूर्त—चौलकर्म की तिथि और नक्षत्र क्षौर के लिये श्रेष्ठ है। [illegible] शनिवार, पूर्व क्षौर से ९ वां दिन, ४।८।६।१४।१५। [illegible] तिथि, संक्रान्ति, रात्रि, [illegible] बिना आसन, संग्राम में, यात्रा के दिन, स्नान [illegible] भोजन के बाद क्षौर बनाना अशुभ है, परन्तु [illegible] ब्राह्मणाज्ञा, राजाज्ञा से किसी समय [illegible] मृतक कार्य, [illegible] भट, भाट, बहुरूपिये, [illegible] और बनवा सकते हैं। [illegible] बनवा सकते हैं, [illegible] मंगल को, [illegible] आवश्यकता नहीं। [illegible] रविवार को, [illegible] के वार में [illegible] भी क्षौर बनवा सकते हैं, तथा ब्राह्मण को [illegible] भी क्षौर बनवाने में हानि नहीं।

कन्या का नाक छिदन मुहूर्त—[illegible]

विद्या को सीना पिरोना सिखाने का मुहूर्त—रिक्ता अमावस रहित तिथि रवि, सोम, बुध गुरु, शुक्रवार। अश्वि. पुन. चि. अनु. ध. इन नक्षत्रों में कुयोगादि रहित शुद्ध दिन में कन्या को चन्द्रबल देख सीना पिरोना कसीदा आदि का कार्य सिखाना आरम्भ करें।

विद्यारम्भ मुहूर्त—उत्तरायण में फाल्गुन मास छोड़कर २।३।५।६।१०।११।१२ तिथि तथा रवि, गुरु, शुक्रवार और अश्वि. रो. मृ. आर्द्रा. पुन. पु. आश्ले ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. उत्तरा तीनों और रेवती नक्षत्रों में विद्यारम्भ शुभ है। र. मं. श. वार, रिक्ता तिथि, ज्ये. अश्ले. म. तीनों पूर्वा. म. कृ. वि. आर्द्रा उषा. श. नक्षत्र अंग्रेजी फारसी विद्यारम्भ के लिये शुभ है।

अक्षरारम्भ—उत्तरायण में जन्म से ५, ७ वें वर्ष, २।३।५।६।१०।१२ तिथि, शुभवार, अश्वि आर्द्रा. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. अभि. श्र. रे. इनमें तथा चररहित लग्नों में गणेश विष्णु सरस्वती लक्ष्मी तथा अपने कुल देवताओं का पूजन कर अक्षरारम्भ करें।

उपनयन संस्कार—बालक के जन्म से वा गर्भ से ब्राह्मण ८ वें, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें वर्ष यज्ञोपवीत धारण करें। किसी कारणवश यह काल लोप हो तो ब्राह्मण १६ वें, क्षत्रिय २२ वें और वैश्य २४ वें वर्ष तक संस्कार करा सकते हैं। उत्तरायण, देवशयन के पूर्व र. चं. बु. गु. शु. वार सामवेदियों को मंगलवार भी विहित हैं, शुक्लपक्ष की २।३।५।१०।११।१२ तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथि, अश्वि. रो. मृ. आर्द्रा पुष्य आश्ले. तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. शत. रे. क्रूरयुक्त तथा वेधरहित इन नक्षत्रों में उपनयन संस्कार शुभ है। बालक को गुरुबल तथा चन्द्रबल देखें। सामवेदी को भौमबल भी आवश्यक है। ज्येष्ठ शु. २. आषाढ़ शु. १०, पौष शु. ११, माघ शु. १२, संक्रांति दिवस, रोगबाण, (८।१७। २६ रवि के गतांश.) गुरु शुक्र के बालवृद्धास्त को छोड़कर पूर्वाह्णमें अथवा अभिजित् मुहूर्त में यज्ञोपवीत धारण करावें। लग्नेश और चं. शु. गु. ६, ८ में और चं. शु. १२ वें, पापग्रह १।५।८ में अशुभ हैं। वृष तथा कर्क राशि का पूर्णचन्द्र लग्न में शुभ होता है। चैत्र में मीन के सूर्य में यज्ञोपवीत संस्कार श्रेष्ठ है।

अभिजिन्मुहूर्त—नित्य मध्याह्न संधिकालकी एकघटी अर्थात् स्थानीय(लोकल) ११ बजकर ४८ मिनट से १२ बजकर १२ मिनट दुपहर तक अभिजित् मुहूर्त रहता है। इस मुहूर्त में अनेक दोष निवारण की शक्ति है, अतः कोई शुभलग्न न बनता हो तो उपनयनादि इस अभिजिन्मुहूर्त में करना शुभ है। यथा—"अभिजित्सर्व-[illegible] मुख्यदोष विनाशकृत्। मध्ये दिने गते भानौ मुहूर्तोऽभिजिदाह्वयः॥ नाशयत्य-[illegible] पिनाकी त्रिपुरं यथा।"

अथ विवाह संस्कार

विवाह संस्कार सर्वश्रेष्ठ संस्कार है, इससे मनुष्य धर्म अर्थ काम और मोक्षकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

...द्धि कर सकता है। विवाह के पश्चात् ही पुरुष पुरुषत्व को प्राप्त होता है। विवाह होने पर पूर्ण पुरुष होता है और सदाचारी सन्तान उत्पन्न करके देश, धर्म, जाति सेवा के साथ देव, ऋषि, पितृ-ऋण से भी उन्मुक्त हो सकता है। इसलिए इस संस्कार को मुनियों ने श्रेष्ठ बताया है, यह संस्कार योग्य समय में होने पर ही दाम्पत्य सुख, ऐश्वर्य भोग और उत्तम प्रजोत्पादन करके मनुष्य अपने पितृऋण से मुक्त होता है। अतः विवाह संस्कार का समय निर्णय हमारे ऋषि मुनियों ने अति सूक्ष्मता से किया है। आजकल नास्तिक लोक सर्वकाल विवाह के लिए मान कर चाहे जब रजिस्टर पद्धति से तथा कपोल-कल्पित नियमानुसार विवाह करवा लेते हैं, यह सर्वथा अनुचित है। विवाह के लिए वेदों में भी पर्याप्त निर्णय है। जैसे-जैसे विज्ञान विद्या का विकास होता रहा तैसे-तैसे इस पर सूक्ष्म विचार प्राचीन आर्यों ने किये हैं, जो कि आधुनिक नूतन विज्ञान से भी बहुत श्रेष्ठतम माना जा रहा है। जिसका यहाँ संक्षेप में विचार लिखते हैं—

ब्रह्मचर्य के पश्चात् मनुष्य अपने विषम वर्षों में गृहस्थाश्रम-प्रवेश करें। पुरुष २५ के पूर्व तथा कन्या ८।१६।१६।२२ वां वर्ष विवाह के लिए श्रेष्ठ नहीं है। कन्या के समवर्षों में शुभ मुहूर्त में कन्या का पिता व १४ के पूर्व विवाह न करें। पालक योग्य वर्ष के वर का निश्चय कर पहले वाग्दान करें, कन्या का वाग्दान करने से पूर्व वर-कन्या की कुण्डली का मिलान तथा गुण मिलान अवश्य करें, ताकि नूतन दम्पति अपना जीवन सुखमय व्यतीत कर सकें। कई नास्तिक मतवादी यह कहते हैं कि इतना घटित मिलान करने पर भी वर कन्या को दुःख का सामना करना पड़ता है तथा दाम्पत्य वियोग होता है, यह क्यों? परन्तु घटित मिलान करते समय निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए (१) क्या वर-कन्या का जन्म टाइम ठीक-ठीक है? (२) कई वर्षों से प्राचीन गणित में अन्तर आता है अतः ऐसे गणित से बनाया जन्मपत्र ठीक-ठीक फलदायक नहीं हो सकता, इसलिए वर-कन्या ... जन्मपत्र शुद्ध सूक्ष्म एवं दृक्तुल्य केतकी गणित से ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ...ते हैं या नहीं? इसकी जांच उत्तम गणितज्ञ से करावें। (३) क्या ज्योतिषी जी बालक का जहां का जन्म है वहीं का सूर्योदय आदि लेकर जन्म पत्र बनाया है? (...) क्या लग्न सारिणी एवं सूर्योदय जन्म स्थान से लेकर लग्नसाधन किया है? ...इ बातों का निर्णय कर जन्मपत्र विद्वान् गणितज्ञ से बनवा कर मिलाने पर ही मिलान योग्य होकर फलदायक होता है, अन्यथा नहीं।

जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम् ॥१॥

विवाह से पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या की ... जन्मकुण्डली न हो और दोनों के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हो तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम बदलने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (—) का चिन्ह लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अधिक मिले उसी कोष्ठक के बांई ओर जो नक्षत्र मिले उसी के आद्यक्षरानुसार सुन्दर नाम रख लेना चाहिए।

वर का प्रसिद्ध नाम तथा कन्या का जन्म नाम, वा कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म नाम ऐसा विपरीत कदापि न लें। यह वर कन्या के लिए हानिप्रद है। या तो दोनों का जन्म नाम ही लें, और जन्म नाम न हो तो दोनों के प्रसिद्ध नाम लें। विशेषतः दोनों के जन्मनाम ही लेना शास्त्रोक्त और आवश्यक है। यथा—

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥
कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते॥
मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते ॥

नामराशिविचारः

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥१॥
काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥२॥
विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभात् चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥३॥

इत्यादि विचारों से विवाह मेलन में जन्म समय से प्राप्त हुए नामराशि से ही मिलान करना चाहिये। जन्म नाम प्राप्त न हो तो प्रसिद्ध नाम लेकर विवाह मिलायें।

तारावल विचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु। तारापवादः—पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्यास्तृतीये त्वखिला शुभाः। आद्यांशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरौ चरमोऽशुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयांशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभताराज्ञानाय चक्रम्

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें, गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	सम्पत	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

... के माता पिता को अशौच नहीं लगता
की मृत्यु हो जाये तो वर कन्या ...

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वर-वरण-मुहूर्त्त

पंचांग-शुद्धि देख कुयोग रहित दिन में, शुभ तिथि शुभ वार कृ. रो. पू.द.उ.रे. [illegible]ं, चन्द्र-बल देख शुभ लग्न तथा शुभ नवांश में, अपने कुल का पुरोहित या कन्या [illegible]ता वर के यहाँ आकर पूर्वोत्तर या पूर्वापर दिशा में बैठ कुंकुम या केसर से वर के [illegible] करे, वस्त्र यज्ञोपवीत आदि वर को दें, वर का सत्कार करें। कुलानुसार रुपये (अशरफी) और श्रीफल वर को देकर गुड़, खजूर या बतासा वर के मुँह में देकर [illegible] बहन अमुक नाम की" (भ्राता हो तो) अन्य हो तो यथा उचित संबोधन दें। [illegible]पको दी है" ऐसा कह कर यह मन्त्र पढ़े—

> तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे।
> अव्यङ्गे ऽपतितेऽक्लीबे पिता (दाता) तुभ्यं प्रदास्यति॥

कन्या-वरण मुहूर्त्त

कृ. पूर्वा. रे. स्वा. अनु. उषा. श्र. ध. वा. पंचांग शुद्धि देख कुयोग रहित दिन में [illegible] वैवाहिक नक्षत्रों में शुभ समय में वस्त्रालंकार-सहित फल पुष्पों से कन्या-वरण कर कुलानुसार आचार करें।

विवाह-निश्चय के कुछ नियम—

दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से या एक वर के साथ दो सगी बहनों [illegible] भाइयों का या भाई बहनों का एक [illegible] विवाह न करें। दो सगी बहनों का, दो सगे [illegible] लड़के का विवाह हो [illegible] साथ ही न करें। लड़की के विवाह के पीछे [illegible] संस्कार द्वार भेद, मण्डपभेद और [illegible] एक ही मण्डप में विवाह [illegible] (जोड़े) भाई बहनों का एक [illegible] मुण्डन यज्ञोपवीत ६ मास तक न [illegible] (इसी प्रकार विवाह के पीछे [illegible] लघु संस्कार्य न करें)। [illegible] बाद दूसरा [illegible]

विवाह काल निर्णय

[illegible] तो वर कन्या तथा वर कन्या के माता पिता [illegible] है। निश्चित समय पर विवाह कर देना चाहिए।

प्रथम गर्भ के ज्येष्ठ वर-कन्या का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं होता, इसको त्रिज्येष्ठ कहते हैं। वर कन्या में से एक ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह करना मध्यम लिखा है। फिर भी आवश्यकता में कृत्तिका का सूर्य निकल जाने पर दानादि करके विवाह करने में हानि नहीं। ऐसे ही वृश्चिक के सूर्य में कार्तिक में भी विवाह होते हैं। देशभेद से बहुत विचार-पूर्वक, आगे देश-भेदानुसार सभी विवाह मुहूर्त दिये गये हैं।

त्रिबल-शुद्धि

श्रेष्ठ गुरु—जन्म राशि से २।५।७।९।११ वाँ। पूज्य गुरु—१।३।६।१० वाँ। नेष्ट गुरु—४।८।१२ वाँ उच्च मित्र स्वराशि का हो तो नेष्ट गुरु भी ग्राह्य (श्रेष्ठ) माना गया है।

श्रेष्ठ सूर्य—३।६।११ वाँ। पूज्य सूर्य १।२।५।७।९ वाँ। नेष्ट सूर्य ४।८।१२ वाँ।

श्रेष्ठ चन्द्र—१।२।३।५।६।७।९।१०।११ वाँ। पूज्यचन्द्र १२ वाँ, नेष्टचन्द्र ४।८ वाँ।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषि-भवन-विवाहेज्नाशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारास- [illegible] विहाग॥ कृपादिकृत्ये पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्त इति वदति वराहः [illegible]॥ गर्भाधान जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धे। पाणिग्रहे प्रयाणे च [illegible] शुभः॥

इस प्रकार गुरुबल, चन्द्रबल, रविबल देखकर विवाह निश्चित करें।

विवाह में स्तम्भ-स्थापन दिग्ज्ञान

मण्डप में प्रथम स्तम्भ-स्थापना के लिए सूर्य ५।६।७ राशि का हो तो ईशान कोण में, ८।९।१० राशि के सूर्य में वायव्य कोण में, ११।१२।१ का संक्रान्ति में नैऋत्यकोण में, २।३।४ राशि के सूर्य में आग्नेयकोण में विवाह-कार्य के लिए स्तम्भ-स्थापना करें।

वधू वर तथा वट की राशि पर से तैलादि-लेपन के दिन

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
७	१०	५	१०	४	७	७	२	५	५	४	७

वधू-वर तथा वधू की राशि से दिन तथा भोजी-दिवस के पूर्व दिन लेवें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

...द्धि कर सकता है। विवाह के पश्चात् ही पुरुष पुरुषत्व को प्राप्त होता है। विवाह होने पर पूर्ण पुरुष होता है और सदाचारी सन्तान उत्पन्न करके देश, धर्म, जाति सेवा के साथ देव, ऋषि, पितृ-ऋण से भी उन्मुक्त हो सकता है। इसलिए इस संस्कार को मुनियों ने श्रेष्ठ बताया है, यह संस्कार योग्य समय में होने पर ही दाम्पत्य सुख, ऐश्वर्य भोग और उत्तम प्रजोत्पादन करके मनुष्य अपने पितृऋण से मुक्त होता है। अतः विवाह संस्कार का समय निर्णय हमारे ऋषि मुनियों ने अति सूक्ष्मता से किया है। आजकल नास्तिक लोक सर्वकाल विवाह के लिए मान कर चाहे जब रजिस्टर पद्धति से तथा कपोल-कल्पित नियमानुसार विवाह करवा लेते हैं, यह सर्वथा अनुचित है। विवाह के लिए वेदों में भी पर्याप्त निर्णय है। जैसे-जैसे विज्ञान विद्या का विकास होता रहा तैसे-तैसे इस पर सूक्ष्म विचार प्राचीन आर्यों ने किये हैं, जो कि आधुनिक नूतन विज्ञान से भी बहुत श्रेष्ठतम माना जा रहा है। जिसका यहाँ संक्षेप में विचार लिखते हैं—

ब्रह्मचर्य के पश्चात् मनुष्य अपने विषम वर्षों में गृहस्थाश्रम-प्रवेश करें। ८।१६।१६।२२ वां वर्ष विवाह के लिए श्रेष्ठ नहीं है। पुरुष २५ के पूर्व तथा कन्या १४ के पूर्व विवाह न करें। कन्या के समवर्षों में शुभ मुहूर्त्त में कन्या का पिता व पालक योग्य वर्ष के वर का निश्चय कर पहले वाग्दान करें, कन्या का वाग्दान करने से पूर्व वर-कन्या की कुण्डली का मिलान तथा गुण मिलान अवश्य करें, ताकि नूतन दम्पति अपना जीवन सुखमय व्यतीत कर सकें। कई नास्तिक मतवादी यह कहते हैं कि इतना घटित मिलान करने पर भी वर कन्या को दुःख का सामना करना पड़ता है तथा दाम्पत्य वियोग होता है, यह क्यों? परन्तु घटित मिलान करते समय निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए (१) क्या वर-कन्या का जन्म टाइम ठीक-ठीक है? (२) कई वर्षों से प्राचीन गणित में अन्तर आता है अतः ऐसे गणित से बनाया जन्मपत्र ठीक-ठीक फलदायक नहीं हो सकता, इसलिए वर-कन्या के जन्मपत्र शुद्ध सूक्ष्म एवं दृक्तुल्य केतकी गणित से ज्योतिष शास्त्र के अनुसार बने हैं या नहीं? इसकी जांच उत्तम गणितज्ञ से करायें। (३) क्या ज्योतिषी जी ने बालक का जहां का जन्म है वहीं का सूर्योदय आदि लेकर जन्म पत्र बनाया है? (४) क्या लग्न सारिणी एवं सूर्योदय जन्म स्थान से लेकर लग्नसाधन किया है? इन बातों का निर्णय कर जन्मपत्र विद्वान् गणितज्ञ से बनवा कर मिलाने पर ही मिलान योग्य होकर फलदायक होता है, अन्यथा नहीं।

जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम् ॥१॥

विवाह से पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर की जन्मकुण्डली न हो और दोनों के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हो तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम बदलने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (—) का चिन्ह लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अधिक मिले उसी कोष्ठक के बाईं ओर जो नक्षत्र मिले उसी के आद्यक्षरानुसार सुन्दर नाम रख लेना चाहिए।

वर का प्रसिद्ध नाम तथा कन्या का जन्म नाम, वा कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म नाम ऐसा विपरीत कदापि न लें। यह वर कन्या के लिए हानिप्रद है। या तो दोनों का जन्म नाम ही लें, और जन्म नाम न हो तो दोनों के प्रसिद्ध नाम लें। विशेषतः दोनों के जन्मनाम ही लेना शास्त्रोक्त और आवश्यक है। यथा—

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥
कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते॥
मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते ॥

नामराशिविचारः

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥१॥
काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥२॥
विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभात् चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥३॥

इत्यादि विचारों से विवाह मेलन में जन्म समय से प्राप्त हुए नामराशि से ही मिलान करना चाहिये। जन्म नाम प्राप्त न हो तो प्रसिद्ध नाम लेकर विवाह मिलायें।

ताराबल विचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु। तारापवादः—पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्यास्तृतीये त्वखिला शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरौ चरमोऽशुभः। वधस्त्वाद्यस्तृतीयोंशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभताराज्ञानाय चक्रम्

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें, गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वर-वरण-मुहूर्त

पंचांग-शुद्धि देख कुयोग रहित दिन में, शुभ तिथि शुभ वार कृ. रो. पू.उ.उ.रे. में, चन्द्र-बल देख शुभ लग्न तथा शुभ नवांश में, अपने कुल का पुरोहित या कन्या [illegible] ता वर के यहां आकर पूर्वोत्तर या पूर्वोपर दिशा में बैठ कुंकुम या केसर से वर के [illegible] करे, वस्त्र यज्ञोपवीत आदि वर को दें, वर का सत्कार करें। कुलानुसार रुपये (अशरफी) और श्रीफल वर को देकर गुड़, खजूर या बताशा वर के मुँह में देकर [illegible] बहन अमुक नाम की" (भ्राता हो तो) अन्य हो तो यथा उचित संबोधन दें। [illegible] पको दी है" ऐसा कह कर यह मन्त्र पढ़े—

तांस्मन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे।
अन्नाद्यं स्वपतितञ्जीवे पिता (दाता) तुभ्यं प्रदास्यति॥

कन्या-वरण मुहूर्त

पंचांग शुद्धि देख कुयोग रहित दिन में कृ. पूर्वा. ३. स्वा. अनु. उषा. श्र. ध. शा. [illegible] विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय में वस्त्रालंकार-सहित फल पुष्पों से कन्या-वरण कर कुलानुसार आचार करें।

विवाह-निश्चय के कुछ नियम—

दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से या एक वर के साथ दो सगी बहनों [illegible] का विवाह न करे। दो सगी बहनों का, दो सगे भाइयों का या भाई बहनों का एक [illegible] ६ मास के भीतर ही न करें। लड़की के विवाह के पीछे लड़के का विवाह हो [illegible] का एक संस्कार [illegible] द्वार भेद, मण्डपभेद और [illegible] है। [illegible] भाई बहनों का एक ही मण्डप में विवाह [illegible] मुण्डन यज्ञोपवीत ६ मास तक न [illegible] संस्कारादि न करें)। [illegible] बाद दूसरा [illegible] अन्यत्र तीन [illegible] नहीं। [illegible] के [illegible] यदि वर कन्या के तीन पीढ़ी में किसी की मृत्यु हो जाये तो [illegible] विवाह के पूर्व मातापूजा [illegible] किसी

की मृत्यु हो जाये तो वर कन्या तथा वर कन्या के माता पिता को अशौच नहीं लगता है। निश्चित समय पर विवाह कर देना चाहिए।

विवाह काल निर्णय

प्रथम गर्भ के ज्येष्ठ वर-कन्या का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं होता, इसको त्रिज्येष्ठ कहते हैं। वर कन्या में से एक ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह करना मध्यम लिखा है। फिर भी आवश्यकता में कृत्तिका का सूर्य निकल जाने पर दानादि करके विवाह करने में हानि नहीं। ऐसे ही वृश्चिक के सूर्य में कार्तिक में भी विवाह होते हैं। देशभेद से बहुत विचार-पूर्वक, आगे देश-भेदानुसार सभी विवाह मुहूर्त दिये गये हैं।

त्रिबल-शुद्धि

श्रेष्ठ गुरु—जन्म राशि से २।५।७।९।११ वाँ। पूज्य गुरु—१।३।६।१० वाँ।
नेष्ट गुरु—४।८।१२ वाँ उच्च मित्र स्वराशि का हो तो नेष्ट गुरु भी ग्राह्य (श्रेष्ठ) माना गया है।
श्रेष्ठ सूर्य—३।६।११ वाँ। पूज्य सूर्य १।२।५।७।९ वाँ। नेष्ट सूर्य ४।८।१२ वाँ।
श्रेष्ठ चन्द्र—१।२।३।५।६।७।९।१०।११ वाँ। पूज्यचन्द्र १२ वाँ, नेष्टचन्द्र ४।८ वाँ।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषि-भवन-विवाहेऽन्नाशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादिकृत्ये। पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्त इति वदति वराहः क्षौर-यात्रा विहाय॥ गर्भाधान जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च [illegible] शुभ.॥

इस प्रकार गुरुबल, चन्द्रबल, रविबल देखकर विवाह निश्चित करें।

विवाह में स्तम्भ-स्थापन दिग्ज्ञान

मण्डप में प्रथम स्तम्भ-स्थापना के लिए सूर्य ५।६।७ राशि का हो तो ईशान कोण में, ८।९।१० राशि के सूर्य में वायव्य कोण में, ११।१२।१ की संक्रांति में नैऋत्यकोण में, २।३।४ राशि के सूर्य में आग्नेयकोण में विवाह-कार्य के लिए स्तम्भ-स्थापना करे।

वधू वर तथा वट की राशि पर से तैलादि-लेपन के दिन

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
६	१०	५	१०	५	७	६	२	५	५	५	७

वधू-वर तथा वट की राशि से दिन तथा माँजी-दिवस के पूर्व दिन लेवे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दूरदोष—वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र दूर होने से ...

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

कन्या दूर—कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र बहुत दूर होने से 'कन्या दूर' होता है, वह शुभ है।

कन्या राक्षसगण की हो और वर मनुष्यगण का हो तथा वश्यादि ६ (वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, कूट, नाड़ी) शुभ हो तो विवाह कल्याणप्रद होता है।

वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र द्वितीय (दूसरा) होने से धन और कल्याण का देने वाला होता है।

कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र द्वितीय (दूसरा) हो तो मृत्युदायक विवाह होता है।

वर-कन्या की एक राशि हो और भिन्न नक्षत्र, भिन्न राशि और एक नक्षत्र हों और चरण भिन्न हों तो विवाह शुभ होता है।

अशुभ नवपंचम, अशुभ द्विर्द्वादश, अशुभ षडष्टक (मृत्युषडष्टक) हो और राशि कूटमैत्री हो तथा नवांशपति मित्र हों तो विवाह शुभ होता है।

न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा।
ताराविरुद्धे नवपंचमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥
नाडीदोषश्च विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्।
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषश्च पादजाम्॥
एकनक्षत्रजातानां नाडीदोषो न विद्यते।
अन्यर्क्षपतिवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥
रोहिण्यार्द्रा-मृगेन्द्राग्नी-पुष्य-श्रवण-पौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते॥
मरणे पितृमात्रोश्च संग्राह्यौ नवपंचमौ।
वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमे वरः।
एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम्॥

कुण्डली मिलान—वर कन्या की कुण्डली मिलान उत्तम होना आवश्यक है। द्रव्य, पुत्र, पति, पत्नी-सुख ऐश्वर्य इत्यादि का विचार कर मिलान करने से जीवन में सुख होता है। जैसे मनुष्य भाग्यहीन हो और स्त्री भाग्यवती मिले तो स्त्री के भाग्य से अपना जीवन सुखमय बना सकता है। वर कन्या दोनों भाग्यवान हों तो वह उत्तम होता है। दोनों भाग्यहीन हों तो नेष्ट होता है। ऐसे ही द्विभार्या योग तथा कन्या को वैधव्य योगादि का विचार करें। वर कन्या के ग्रह परस्पर मारक हों तो शुभ होता है, जैसे वर की कुण्डली में द्विभार्या ... योग न्यून हो तो मिलान उत्तम होता है। तथा कन्या को वैधव्य योग हो और वर को विधुर योग हो तो मिलान उत्तम होता है। इसी तत्त्व को ग्राह्य मानकर मङ्गल आदि का दोष लिखा है। विशेषत: मंगल का निर्णय भाव चलित से करना चाहिए।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
कन्या भर्तुर्विनाशाय भर्तुः कन्या विनाशकृत्॥

लग्न चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और व्यय में मंगल होने से कन्या पति को नष्ट करती है और वर कन्या को नष्ट करता है; इसलिए वर कन्या दोनों को मंगल होना आवश्यक है। मंगल लग्न कुण्डली से तथा चन्द्र कुण्डली से देखना चाहिए। एक तो मंगल हो और दूसरे के मंगल न होकर मंगल के स्थान में पाप ग्रह हों तो मंगल का दोष नहीं होता। यथा—

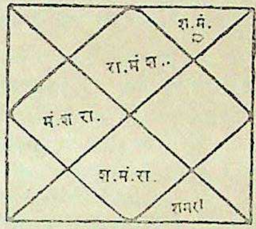

शनिर्भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्॥
अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते॥
जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्॥
सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽपिवाथवा भौमे।
वक्रिणि नीचारिगृहे वार्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।
केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥

विवाहांगकार्यारम्भ: पंचांग शुद्ध देख विवाह दिन से पूर्व ३।६।९ दिन को छोड़ कर कन्या को चन्द्रबल देखकर विवाह के नक्षत्रों में जिस स्त्री को चन्द्रबल हो उसके हाथ से हल्दी हाथ लगाना, दलना, पीसना कूटना कलशादि स्थापन करना, घर लीपना आंगन सफाई, भूषण चढ़ाना, वेदी रचना-चंदोवा बांधना, वस्त्र सिलाना, गणेशादि पूजन, नांदि श्राद्ध आदि करना श्रेष्ठ है।

इत्यादि परिहार से भौम दोष नष्ट होता है। फिर भी वर कन्या के लग्न, लग्नेश, सप्तम, सप्तमेश, अष्टम, अष्टमेश इनके योगों को देखकर सूक्ष्म रीति से परिहार योगों को विचार कर ज्योतिषी कुण्डली का मिलान करे, परन्तु यह स्मरण रहे कि कुण्डली ठीक ठीक बनी होनी चाहिए। कन्या को अनेक कुयोगों द्वारा वैधव्य योग जान पड़े तो शालिग्राम से पिप्पल वृक्ष से, अर्क वृक्ष से वा कुम्भ से यथाविधि विवाह कर गौ, सुवर्ण दान, महामृत्युंजयादि जप करके कन्या का विवाह करने से कन्या सौभाग्य, पुत्र, धन से युक्त होती है। आगे पृष्ठ ८४-८५ की मेलापकसारिणी से गुण मिलान करें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कन्यांघ्रस्थान्यपि भानि पुंसां पश्चैद्युयस्थानि तथा वधूनाम् ॥ संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्थितितोऽधिकं यत् ॥ १ ॥

	वर.	रा.	मे.	मे.	मे.	वृ.	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि.	क.	क.	क.	सि.	सि.	सि.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	म.	कु.	कु.	कु.	मी.	मी.	मी.	राशी
		आ.	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	१	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	चा.
राशि	मा.	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ	कृ	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु.	पु.	आ	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.
मे.	१	अ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अ.
मे.	१	भ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	भ.
मे.	१	कृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कृ.
वृ.	।।।	कृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कृ.
वृ.	१	रो.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रो.
वृ.	।।	मृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मृ.
मि.	।।	मृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मृ.
मि.	१	आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	आ.
मि.	।।।	पु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पु.
क.	१	पु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पु.
क.	१	पु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पु.
क.	१	आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	आ.
सि.	१	म.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	म.
सि.	१	पू.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पू.
सि.	१	उ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ.
क.	।।।	उ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ.
क.	१	ह.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ह.
क.	।।	चि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चि.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	अ.	भ.	कृ	कृ	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु.	पु.	आ	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	

इस [illegible] (वर्ण वश्य आदि) गुण की संख्या है। ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, तिरछी पंक्ति में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं, ऊपरी भाग में गुण, नीचे में महादोषों का [illegible] (१) नाड़ी महादोष (षडष्टक) में (६) नवपंचम [illegible] (२) गणमहादोष (मनुष्यराक्षस) के स्थान में [illegible] चिह्न दिये हैं। [illegible] जहाँ (स्वामी मैत्री आदि से) दोष का पूरा निर्वाह है वहाँ (—) चिह्न है, [illegible] (५) त्रिकोण में (४) [illegible] में (२) लिखे हैं। और जहाँ [illegible] दोष [illegible] वहाँ (शून्य (०) का चिह्न है, और जहाँ कोई भी [illegible] के नक्षत्र [illegible] का नक्षत्र है (उनका भी महादोष है) वहाँ [illegible] ऐसा चिह्न बना दिया है, और जिस जगह [illegible] महादोष नहीं मिलता वहाँ केवल गुण ही लिखे हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तनु		राशि.	मे.	मे.	मे.	वृ.	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि.	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	म.	कुं.	कुं.	कुं.	मी.	मी.	मी.	रा.
		भा.	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	भा.
राशि	भा.	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पु.	पु.	पु.	आ.	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.
तु.	॥	चि.	२२	१४ १३	२८	२३ ६+	१२० १६	१०० ३६	१२ ३१	२० १५	१२० ५+	११	११ ३	४१	२४४	१०० १३	१०० १२	[illegible]	२० ४५+	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३०	११० ४	१८ ३४	२०० ४	२७	११ १३	४१ ३	२३० ०१	२१	३३ ३	१८ ३१	३१ ५+	१८० ११	१३ १६	३ १२१२	१२ ६	चि.
तु.	१	स्वा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	स्वा.
तु.	॥।	वि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि.
वृ.	।	वि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि.
वृ.	१	अ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अ.
वृ.	१	ज्ये.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ज्ये.
ध.	१	मू.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मू.
ध.	१	पू.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पू.
ध.	।	उ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ.
म.	॥।	उ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ.
म.	१	श्र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	श्र.
म.	॥	ध.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध.
कुं.	॥	ध.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध.
कुं.	१	श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	श.
कुं.	॥।	पू.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पू.
मी.	।	पू.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पू.
मी.	१	उ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ.
मी.	१	रे.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रे.
राशि	भा.	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पु.	पु.	पु.	आ.	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[illegible] च विलोक्य बालविधवायोग [illegible] ।
सावित्र्या उत दैप्पलं हि सुतरां दद्यादिमां वा रहः ।।
तल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटम् ।
दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः ।।

विवाह में दश दोषों का विचारः—

विवाह समय निश्चित करने के लिए ग्रन्थकारों ने २१ महादोषों को त्यागने [illegible]ा है, परन्तु कई दोषों का परिहार होने से दश दोषों का विचार करते हैं [illegible] दश में से क्रूरयुति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य और दग्धा ये पाँच महा- [illegible] विवाह में सर्वत्र वर्ज्य हैं।

चैत्र, पौष मास को छोड़कर देशाचारानुसार मासों में, रो. मृ. उत्तरा ३; म. ह. [illegible] अनु. मू. रेवती इन नक्षत्रों में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, बाण, एकार्गल, [illegible]. क्रान्तिसाम्य (महापात) और दग्धा तिथि ये दश दोष हैं। इनका विचार [illegible] मुहूर्त करना चाहिए। हमने यह दश दोष तथा देशाचारानुसार विवाह मुहूर्त [illegible] में दिये हैं। दोषों के क्रम से जहाँ दोष है वहाँ (ऽ) चिह्न दिया है, [illegible] दोष नहीं है वहाँ (।) ऐसी खड़ी लकीर की है। विवाह मुहूर्त में वर कन्या के [illegible], जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, लग्न से तथा राशि से अष्टम लग्न वर्ज्य करें। लग्न [illegible] के शुद्ध राशि का लग्न तथा नवांश में और यह विवाह सूक्ष्म केतकी [illegible] से निश्चित करने से समय शुद्ध और वर कन्या को कल्याण कारक होता है। [illegible] प्राचीन स्थूल गणित से विवाह मुहूर्त देखने से फल में विपरीतता प्राप्त [illegible] और अशुभ होने की सम्भावना रहती है।

[illegible] स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम् ।
[illegible] ।।

लत्तादोष चक्र १

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	८	६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

उदाहरण—सूर्य [illegible] नक्षत्र पर हो और विवाह [illegible] हो तो सूर्य [illegible] १२ वाँ [illegible] यह सूर्य का लत्तादोष वाला विवाह नक्षत्र होगा। इसी प्रकार [illegible] का लत्ता भी जानें।

रा.	मृ.	म.	उफा.	ह	स्वा.	अनु.	मू.	उषा	उभा	रे.	वि.न
आर्द्रा	मृ.	अश्वि	कृ	भ.	कृ	अ	रो	भ	भ	अ	[illegible]
पुन.	आ	मृ.	आ.	मृ	अ	आ	ज्ये	पुन	श	म	
ध.	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	वि	ध	
पूभा	ध.	पुष्य	पूफा	पूभ	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उफा	म	
चि	म.	ह	उभा	स्वा	ह	पूषा	मू	अनु	मू	पूफा	
मू	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	पूफा	स्वा	

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गण्ड और शूलयोगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पातदोष होता है।

३. युतिदोष—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का युतिदोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युतिदोष नहीं होता; अपितु श्रेष्ठ होता है। सू. मं. श. के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

वेधदोषचक्र ४

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि.	उषा.	श्र.	रे.	उभा.	अ.	म.	पुन.	मृ.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह और नीचे के नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो वेधदोष होता है, यह सर्वत्र विशेष रूप से त्याज्य है।

जामित्रदोषचक्र ५

रो	मृ.	म	उ.	ह.	स्वा	अनु	मू.	उ.	उ.	रे.	वि.
अनु	ज्ये	ध.	पू भा	उ भा	[illegible]	कृ	मृ.	पुन.	उ.	ह.	म. न

विवाह लग्न से ७वें ग्रह होने पर जामित्रदोष होता है। ऊपर विवाह नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र है अर्थात् १४वें नक्षत्र में पापग्रह का जामित्रदोष वर्ज्य है।

[illegible] मुहूर्तों में गणितागत सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही लिया गया है।

एकार्गल दोष—७

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगंड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गलदोष होता है।

उपग्रह दोष ८

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ८वें, १४वें, १८वें, १९वें, २२वें २३वें २४वें, नक्षत्र पर चन्द्र हो तो एकार्गलदोष होता है।

क्रान्तिसाम्यदोषचक्र ६

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु:	वृश्चिक	मीन	कुम्भ

उदाहरण—मेष के सूर्य, सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य मेष के चन्द्रमा में स्थूल क्रान्तिसाम्य दोष होता है, यह सर्वत्र वर्ज्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य गणित से सिद्ध होता है। इस पञ्चांग के विवाह के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बाणज्ञानाय सुलभ चक्रम् ६ ।

गतांशा: प्रति राशौ अर्कस्य	५ कर्म वर्ज्या:	वार वर्ज्या	समयपरत्वेन वर्ज्या
८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
२।११।२०।२६	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	मध्ययो: वर्ज्यम्

दग्धा तिथि दोष:

ध०	वृष	कर्क	कं०	सिंह	म०	सूर्य
मी.	कुं	मे	मि	वृश्चि.	तु०	रा०
२	४	६	८	१०	१२	ति०

इन उक्त सक्रान्तियों के सौर मास में ये दग्धा तिथियाँ विवाह में वर्जनीय हैं ।

भुजगं क्रान्तिसाम्यं च बाणवेध तथैव च । लग्नहीनं विवाहं तु कलौ पंच विवर्जयेत् ।। [illegible]दिदोषाणां परिहारवाक्यानि—लत्ता मालवके । (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरु [illegible]त्र बांगर) जांगले : (फिरोजपुर भटिण्डा प्रांन्त) एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र [illegible]त् । उपग्रहर्क्षं कुरुवाल्हीकेषु (आगरा प्रान्त अर्वस्थान) कलिगवंगेषु (जगन्नाथपुरी [illegible]ल अयोध्या) च पातितं भम् ।। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे: (उज्जैन प्रान्त) [illegible]त्तितं जम् । त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे ।।युतदोषो जवेद् गौड़े (बंगाल) जामि-[illegible] च यामुने (मथुरादि प्रान्त) मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिता: ।।

विशेषपरिहार—चित्रां गते पातविचित्रदेशे, मैत्रे मघामालवके निषिद्धा: । पौष्ण-[illegible]तिश्चोत्तरदेशजात: सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपात: ।

युतिपरिहार—स्वक्षेत्रग: स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधु: । युतिदोषाय न [illegible]दम्पत्यो: श्रेयसे तदा ।। अत्यावश्यके वेधपरिहार:—पादभेत्र शुभैर्विद्धमशुभर्नैव [illegible]न्नत: (नारद:) । प्रतोन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम् । तृतीयगो द्वितीयकं चतुर्थ-[illegible]तुचादिमम् । भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वशिष्ठ) अथ पापग्रहेण भुक्त-[illegible]ग्याक्रान्तनक्षत्रस्य शेमषु त्याग:—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च । [illegible]शुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नत: । अस्यापवाद:—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्ता-[illegible]नि च । भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते । जामित्रपरिहार:—(व्यवहार-[illegible]ये)—स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे । हत्वाजामित्रकृद्दोष करोति [illegible] सुखम् । मुहूर्तचिन्तामणावपिएकार्गलोपग्रहपातलत्ता जामित्रकर्त्तर्यु दयास्त दोषा:, [illegible]न्त चन्द्रार्कबलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषा: ।।

विवाहे लग्नशुद्धिचक्रम्

२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु त्याज्या:
[illegible]	शु.	०	०	चं० शु० लग्नेश	सर्वे	च. मं शुभा: लग्नेश	०	मं.	०	श	
कुलिक क्रान्ति सा० चं०					मं०	चं० मं०	श्रेष्ठ	विद्धर्क्ष च गोधूलीत्याज्या			

सर्वथा लग्नभंगयोगा—व्यय शनि: खेऽवनिजस्तृतीय भृगुस्तानो चन्द्रखला न शस्ता लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृत ग्लौ नग्नेट शुभाराश्च मर्दे च सर्व (अस्तेऽज गुरु समे) । वर्गोत्तमं विनात्यांशो विवाहे न शुभप्रद: । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांश: पुत्रपौत्रादिवृध्दि: ।। दम्प स्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमी राशिरेव च । यदि लग्नगत: सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रद ।। वग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्याग: । बादरायण:—मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिराहज गौड़मालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिता: ।

कर्त्तरी दोष—लग्नस्य पृष्ठाग्रयोरसाध्वो: सा कर्त्तरी स्यादृजुवक्रगत्यो: तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्त्तरी चेति पितामहोक्ति: ।"इयं कर्त्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" ।। केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहार: । पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्त्तरी । दोषा नैव सितेऽरिन चगृहगे तत्पष्ठदोषोऽपि न । भौमऽस्ते रिपुनीचगे नहि जवेद् सौमोऽष्टगो दोषकृन्नीचे नीचवांशके शशिन रिफाष्टारि दोषोऽपि न ।।

दोषापवादा ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहव: सन्ति गुणा: स्वल्पा कलौयुगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वादगुणै: सह । अपावादान्तरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्नि-हन्ति बली गुरु: । केन्द्रसंस्थ: सितो वापि पन्नगानरूढो यथा । मुहूर्तलग्नषडवर्गकुनवाश-ग्रहोद्भवा: । ये दोषास्तान्निहन्त्येव यवैकादशग: शशी ।। अब्दायनतु मासात्या: पक्षतिथ्यर्क्षसम्भवा: । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसस्थे शुभग्रह ।। लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालय । सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोऽपि विलयं नयेत् ।। बलवान् केन्द्रग: सौम्या हन्ति दोषशतत्रयम् । चून विहाय देत्येज्यसहस्रं लक्षमङ्गिरा: ।।

स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्योंमें सर्वत्रसप्तमरहित केन्द्र (१ । ४ । १०) ही ग्रहण करना ।

विवाहलग्ने ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र०	चं०	मं०	बुध	गुरु	शुक्र	श०	राहु	केतु	ग्रहा:	मुहुर्त्तगणपती
३ ६ ८ ११	२ ३ ११	३ ६ ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ४ ५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	स्थानानि	लग्नं शुभं विवाह स्याद्विशविशो-पकाधिकम् ।
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	१।।		विशोपकाबलम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

गोधूलिलग्नविचार :— लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । तदा वै लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा [illegible]ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ गोधूलि त्रिविधा वदन्ति [illegible]तिविवाहादिके, हेमन्ते शिशिरे प्रयाति मृदुतां पिण्डीकृते भास्करे, ग्रीष्मेऽर्धास्तमिते [illegible] भानौ गते दृश्यतां, सूर्ये चास्तमुपागते भगवति प्रावृट्शरत्कालयोः ॥

[illegible]लिके त्याज्यदोषाः :—कुलिकंक्रान्तिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तदा [illegible]त्याज्यः पंचदोषैस्तु दूषितः ॥ अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे । लग्ने [illegible] चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशकः ॥ "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्-[illegible] को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले बारवेला होगी) और शनिवार [illegible]स्त से पहले (क्योंकि सूर्यास्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना ।

[illegible] विवाहमुहूर्त :—कृष्णपक्षे भानुभौमार्कजानां, वारे योगे [illegible] निषिद्धं । संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं, प्रोक्तं पायु:प्राप्तये शौनकाद्यैः ॥

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्

१	१	३	३	३	३	३	२	नक्षत्र
धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्री	उन्नति	फलम्

[illegible]—पूर्वभाद्र ४।११।१२।८।२५ संख्यकराभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः । अत्र [illegible] नावलोकनीयः ॥

[illegible] प्रवेश मुहूर्त :—जब विवाह होने पर वधू पति के घर पहले पहल आती है [illegible] कहा जाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर के दिनों में अथवा ५, ७, [illegible] । इसके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास [illegible] एक वर्ष के उपरान्त ३ २ ५ वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है । [illegible] हो सकता है । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त [illegible] के उपरान्त [illegible] भी विचार नहीं करना । [illegible] ॥" [illegible] पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों और [illegible] तिथियों में [illegible] लग्नों में चतुर्थादि शुद्ध हो तो वधू प्रवेश शुभ है ।

[illegible] समयवाह :—[illegible] ।

"दिवा च रात्रौ च [illegible] ॥

द्विरागमन मुहूर्त :—पिता के घर से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या ५ वें वर्ष में वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हों तब सोम, बुध, गुरु, या शुक्र वार में २।३।६।७ या १२ वीं राशि के लग्न में, ह. अश्वि. अभि. तीन उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. म. मू. चित्रा और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है ।

सम्मुख दक्षिण शुक्रनिषेध :– सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र में पितृगृह से पति के घर जाना निषेध है । सम्मुख वा दक्षिण शुक्र में नववधू जावे तो वन्ध्या हो, बालक को लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो । गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न हो, परन्तु रेवती से मृग. नक्षत्र तक चन्द्रमा रहे तब तक जाने में दोष नहीं । यथा—

रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः ।
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः ॥

अति आवश्यकता में शुक्र की शान्ति कर श्वेत वस्त्र, छत्र, स्वर्ण दान देकर जावे । राजपीड़ा, युद्धभय, राजविग्रह, उपद्रव, दुर्भिक्ष, विवाह, एकग्राम, देवता यात्रा आदि में जाना हो तो सम्मुख दक्षिण शुक्र का दोष नहीं ।

विवाह के पश्चात् वधू के रहने का नियम :—विवाह के पश्चात् प्रथम ज्येष्ठ महीने में वधू भर्ता के घर रहे तो पति के ज्येष्ठ भ्राता को, आषाढ़ में सास को, पौष में ससुर को, अधिक मास में अपने आपको हानि करती है । चैत्र में पिता के यहाँ रहे तो पिता को हानि करती है । ज्येष्ठादि के अभाव में (न हो तो) उस मास का कोई दोष नहीं होता ।

प्रथम युवति स्त्रीसंगम मुहूर्त :—पुत्र चाहने वाले रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३. रे. रिक्ता अमावसरहित तिथि में, शुभ वार, रात्रि के प्रथम प्रहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम स्त्रीप्रसंग करे ।

नववधू को रसोई बनाने का मुहूर्त :— पंचांगशुद्धि देख कर वधू को चन्द्रबल देख रिक्ता और क्षय रहित तिथि शुभ वार कृ. रो. मृ. उत्तरा ३ पुष्य वि. ज्ये. श्र. ध. श. रेवती इन नक्षत्रों में २।५।८।११ लग्नों में लग्न चतुर्थ, अष्टम शुद्ध, सप्तम भाव बलवान् होने पर नूतन वधू से रसोई बनवाये ।

पतिगृह से पितृगृह जाने का मुहूर्त :—गुरु, चन्द्र, शुक्रवार, शुभ तिथि, भर. आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, पूर्वा. ३ ज्ये. मू. इन नक्षत्रों के बिना अन्य नक्षत्रों में शुभलग्न पंचांगशुद्धि देख कर मुहूर्त निश्चित करें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्त्री को वस्त्राभूषण धारण मुहूर्त

रिक्तामा रहित तिथि, च. गु. शु. बु. वार, अश्वि. ह. चि. स्वा अनु. ध. रे. नक्षत्रों में नवीन वस्त्र धारण और स्वर्ण रजत आदि आभूषण धारण करना है।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त –

अश्वि का. वै. माघ. मार्ग फा. श्रा. तथा मेष. कन्या तु. वृश्चि. म कुम्भ [सू]र्य में १।५।७।१०।१३।१५ तिथि या जिस देवता का अनुष्ठान हो उसकी तिथि [बु]. गुरुवार, चन्द्रवार मध्यम, पुन पुष्य स्वा. उ. ३ श्र ध- श. रे. अ. ह. रो मृ. चि ज्ये. वा स्वस्वामी नक्षत्रों में लग्न से ३।६।११ वें पापग्रह. १।४।५।७।९।१० [में] शुभग्रह, चन्द्र तारावल सहित, गुरु शुक्र के उदय में, शुभ लग्न मृत्यु आदि कुयोग [रहि]त समय में विष्णु का स्थिर में, शिव का चर में, दुर्गाका द्विस्वभाव लग्न में, [च]क्र शुद्धि सहित अनुष्ठान आरम्भ करें।

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते।
चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्धयति ॥

बावड़ी, बगीचा, तालाब कुआं, मकान का आरम्भ और प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ, [उ]द्यापन, दान, गोदान, प्रथम उपाकर्म वृषोत्सर्ग, चोल (मुण्डन) देवता स्थापन, [दीक्षा], यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्व देव तीर्थ दर्शन, सन्यास, अग्न्याधान, अभिषेक [समा]वर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ ये कर्म गुरु के अस्त, बाल वृद्धत्व, [और] मलमास में करना निषेध हैं।

कुयोगास्तिथिवारोत्था तिथिभोत्था भवारजाः।
हूणबंगखसेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा ॥

कुयोग परिहार—तिथि वार में उत्पन्न हुए ककच (दारदग्ध) मृत्यु आदि योग [हूण दे]श, बंगाल और खसदेश (शिलांग) में ही वर्ज्य करने, अन्य देशों में नहीं।

पत्निधार्द्धं पंचशूले षट् च गन्डातिगण्डयोः।
व्याघाते नवनाड्यश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु ॥

[वैधृ]तियोग का अर्धयोग, शूलयोग की ५ घटी, गण्ड और अतिगण्ड की ६ [व्य]ाघात की ९ घटी, सर्व कार्य में वर्ज्य करें। तथा जन्ममास, जन्मतिथि [जन्मन]क्षत्र, व्यतीपात, वैधृति, भद्रा, पितृदिन श्राद्ध, तिथि का क्षय वृद्धिकाल, अधिक-[मास, क्ष]यमास, कुलिक, प्रहरार्ध, पात, महापात (क्रातिसाम्य) और विष्कम्भ योग की [प्रथम घ]टी प्रारम्भ की सदा शुभ कार्य में वर्ज्य करनी चाहिए।

दुकान खोलने का मुहूर्त—रिक्ता तिथि और मङ्गल के अतिरिक्त अन्य वारों में, ह. चि रो रे. तीनों उत्तरा पुष्य अनु. अश्वि. अभि. नक्षत्रों में कुम्भ लग्न को त्यागकर अन्य लग्नों में २।१०।११ भावों में शुभ ग्रह हों, ३।६ में पाप ग्रह हों, ८।१२ वाँ स्थान पापरहित हों, चन्द्र शुक्र लग्न में हों तो अत्युत्तम। कर्त्ता की दशान्तर्दशा भी शुभ होनी चाहिए।

व्यवहार (वही) पत्रारम्भ मुहूर्त—अश्वि. रो. मृ. पुन. उत्तरा ३. ह चि. अनु श्र. रे. नक्षत्र, रिक्तामारहित तिथि र. च. बु. गु. शु. वार, चर द्विस्वभाव शुभयुत दृष्ट लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों और ८।१२ वें स्थान में पापग्रह नहीं होने पर शुभ होता है।

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त—अ. मृ. चि. ह. पुष्य अनु. रे. नक्षत्र, रिक्तामारहित तिथि, र. चं. बु. गु. शु. वार, शुभग्रह लग्न में हों, १० वें या ११ वें सूर्य मंगल हों तो अत्युत्तम। स्वामी और सेवक का परस्पर राशीश मैत्री हो तो सर्वश्रेष्ठ समझना।

अष्टम चन्द्रदोष परिहार—नीचराशिगते चन्द्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा। चन्द्रेऽष्टमारि रिःफस्थे दोषो नास्ति न संशय. ॥

अष्टम भौमदोष परिहार—नीचराशिगते भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा। कुजाष्टमोद्भवो दोषो किञ्चिदपि न विद्यते।

षष्ठस्थ शुक्रदोष परिहार—नीचराशिगते शुक्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा। भृगुषट्कस्थितौ दोषो नास्ति तत्र न संशय।

द्रव्य प्रयोग मुहूर्त—पुन. स्वा. मृग. रे चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १।४।७।१० लग्नेषु ६।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ६।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि देयः।

ऋण लेने के लिए वर्जित काल—मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्त नक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण लो तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन नहीं देना चाहिये। कृ. रो. आर्द्रा, अश्ले. उ. रे, वि ज्ये मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं, या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

ईंट के भट्ठा—में आग देने या ईंट बनाने में मंगल और शनिश्चर वार शुभ माने जाते हैं।

श्री काशीनाथमते क्रयविक्रय मुहूर्त—पुष्य. पू. भा. अनु. श्र. ह. स. स्वा. उत्तरा ३, आश्ले रे. एषु. भेषु सत्तिथौ चंद्र शुभ दिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रय विक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है।

यहां से आगे के ८ पेज पर पेज नं० १०५ से ११२ तक करलें। [illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

गृहारम्भमुहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और मे. वृष, कर्क, सि. तु. वृ.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

...तु बेचने के नक्षत्र—पू. फा. पू. षा. पू. भा. चि. कृ. ...
...र, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं।
...ट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों ... सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचने के ...ये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का ...हीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना ऐसे ...या करेंगे इन नक्षत्रों को। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी ...ान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

...नालिश (अर्जी) का मुहूर्त—४।६।१४ तिथि हों, मं. श. वार हों. कृ. आर्द्रा ...श्ले म. ज्ये मू. वि पूर्वा ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

...ात् वासकर्तुं नक्षत्र
...वद् गणना कार्या
...लग्नक्षत्रफलम्

७	धनलाभः
७	हानि नैःस्वम्
७	सुखलाभः
७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०) काक। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिये। और देव स्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं ...न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय वैश्य को ...और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिये शुभ है।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

...घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का ...दें। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ...भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ है, अन्यथा ...

वास्तु भूमि का शुभाशुभ जानना

[illegible] एक हाथ चौड़ा एक ... बस्ती में ... [illegible] ... भर देवें। प्रातःकाल उसको ... लम्बा एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। ... [illegible] ... हुआ हो तो अशुभ है। ... यदि ... हो तो शुभ, ... [illegible]

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभपरीक्षा

मकान बनाने ... [illegible] ... अथवा दूसरी मिट्टी ... मकान की नींव को ... [illegible] ... मनुष्य के बराबर खोदे। ...तक निकले, अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् ... [illegible] ... और जो पृथ्वी ...दते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो ... [illegible] ... मकान बनाने वाले को ... तो धन नाश हो और जो हाड़ ... [illegible] ... पीड़ा हो।

[illegible]—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और म. वृष, कर्क, सिं. ... श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम म. कुं. सूर्य के सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, ... इन तिथियों में, है। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. गु. शु. श. वारों में. रो. मृ. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पंचवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में, लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्स चक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः—पुष्य उ. ३ रो. म. आश्ले. पू. पा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो.ह.अ. उफा. चि. इनमे से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि.आ.चि. ध.श. आर्द्रा इनमें से जिसपर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय। दस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्राल्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च–सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचार

मध्य	ईशा.	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैऋर्त	पश्चि.	उत्त.	वाय
अर्थहानि	सुपुष्टिः	ऐश्वर्यं	पुत्रनाश	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारी तिथिसंप्रयुक्तौ वेदाहतं तद्गुणकेन कार्यम्, एकावशिष्टे च जलं हि नागे द्वाभ्यां च शेषे सलिलं च स्वर्गे, त्रिशून्य शेषेभुवि संस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः।

अथ चुल्लिचक्रविचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक २ चरण के नाशक यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में। चूल्हा बनावे, तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग)-कार्तिकमासयोः॥ (यहाँ चान्द्रमास लेना) उत्तरा ३ अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्त्री को वस्त्राभूषण धारण मुहूर्त्त

रिक्तामा रहित तिथि, चं. गु. शु. बु. वार, अश्वि. ह. चि. स्वा अनु. ध. रे. नक्षत्रों में नवीन वस्त्र धारण और स्वर्ण रजत आदि आभूषण धारण करना है।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त्त –

अश्वि का. वैं. माघ. मार्ग फा. श्रा. तथा मेष. कन्या तु. वृश्चि. म कुम्भ [illegible]र्य में १।५।७।१०।१३।१५ तिथि या जिस देवता का अनुष्ठान हो उसकी तिथि [illegible]. गुरुवार, चन्द्रवार मध्यम, पुन पुष्य स्वा. उ. ३ श्र ध- श. रे. अ. ह. रो मृ. वि ज्ये. वा स्वस्वामी नक्षत्रों में लग्न से ३।६।११ वें पापग्रह. १।४।५।७।६।१० [illegible]शुभग्रह, चन्द्र तारावल सहित, गुरु शुक्र के उदय में, शुभ लग्न मृत्यु आदि कुयोग [illegible]शु समय में विष्णु का स्थिर में, शिव का चर में, दुर्गाका द्विस्वभाव लग्न में, [illegible]क्र शुद्धि सहित अनुष्ठान आरम्भ करें।

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते।
चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति ॥

बावड़ी, बगीचा, तालाब कुआँ, मकान का आरम्भ और प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ, [illegible]द्यापन, दान, गोदान, प्रथम उपाकर्म वृषोत्सर्ग, चोल (मुण्डन) देवता स्थापन, [illegible]न, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्व देव तीर्थ दर्शन, सन्यास, अग्न्याधान, अभिषेक [illegible]वर्त्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ ये कर्म गुरु के अस्त, बाल वृद्धत्व, [illegible] मलमास में करना निषेध हैं।

कुयोगास्तिथिवारोत्था तिथिभोत्था भवारजाः।
हूणवंगखसेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा ॥

कुयोग परिहार—तिथि वार में उत्पन्न हुए क्रकच (वारदग्ध) मृत्यु आदि योग [illegible]श, बंगाल और खसदेश (शिलांग) में ही वर्ज्य करने, अन्य देशों में नहीं।

परिघार्द्ध पंचशूले षट् च गन्डातिगण्डयोः।
व्याघाते नवनाड्यश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु ॥

[illegible]रिघयोग का अर्धयोग, शूलयोग की ५ घटी, गण्ड और अतिगण्ड की ६ [illegible] [illegible]याघात की ९ घटी, सर्व कार्य में वर्ज्य करें। तथा जन्ममास, जन्मतिथि [illegible], व्यतीपात, वैधृति, भद्रा, पितृदिन श्राद्ध, तिथि का क्षय वृद्धिकाल, अधिक-[illegible]मास, कुलिक, प्रहरार्ध, पात, महापात (क्रातिसाम्य) और विष्कम्भ योग की [illegible] प्रारम्भ की सदा शुभ कार्य में वर्ज्य करनी चाहिए।

दुकान खोलने का मुहूर्त्त—रिक्ता तिथि और मङ्गल के अतिरिक्त अन्य वारों में, ह. वि रो रे. तीनों उत्तरा पुष्य अनु. अश्वि. अभि. नक्षत्रों में कुम्भ लग्न को त्यागकर अन्य लग्नों में २।१०।११ भावों में शुभ ग्रह हों, ३।६ में पाप ग्रह हों, ८।१२ वाँ स्थान पापरहित हों, चन्द्र शुक्र लग्न में हो तो अत्युत्तम। कर्त्ता की दशान्तर्दशा भी शुभ होनी चाहिए।

व्यवहार (वही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त—अश्वि. रो. मृ. पुन. उत्तरा ३. ह चि. अनु श्र. रे. नक्षत्र, रिक्तामारहित तिथि र. च. बु. गु. शु. वार, चर द्विस्वभाव शुभयुत दृष्ट लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों और ८।१२ वें स्थान में पापग्रह नहीं होने पर शुभ होता है।

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त—अ. मृ. चि. ह. पुष्य अनु. रे. नक्षत्र, रिक्तामारहित तिथि, र. चं. बु. गु. शु. वार, शुभग्रह लग्न में हों, १० वें या ११ वें सूर्य मंगल हों तो अत्युत्तम। स्वामी और सेवक का परस्पर राशीश मैत्री हो तो सर्वश्रेष्ठ समझना।

अष्टम चन्द्रदोष परिहार—नीचराशिगते चन्द्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा। चन्द्रेऽष्टमारिरिःफस्थे दोषो नास्ति न संशय. ॥

अष्टम भौमदोष परिहार—नीचराशिगते भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा। कुजाष्टमोद्भवो दोषो किञ्चिदपि न विद्यते।

षष्ठस्थ शुक्रदोष परिहार—नीचराशिगते शुक्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा। भृगुषट्कस्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशय।

द्रव्य प्रयोग मुहूर्त्त—पुन. स्वा. मृग. रे चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १।४।७।१० लग्नेषु ६।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रान्तरे ६।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि देत्रः।

ऋण लेने के लिए वर्जित काल—मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्त नक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण लो तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन नहीं देना चाहिये। कृ. रो. आर्द्रा, अश्ले. उ. ३, वि ज्ये मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं, या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

ईंट के भट्ठा—में आग देने या ईंट बनाने में मंगल और शनिश्चर वार शुभ माने जाते हैं।

श्री काशीनाथमते क्रयविक्रय मुहूर्त्त—पुष्य. पू. भा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा ३, आश्ले रे. एषु. भेषु सत्तिथौ चंद्र शुभ दिने उत्तमशकुने विचार्य क्रय विक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

...तु बेचने के नक्षत्र—पू. फा. पू. षा. पू. भा. वि. कृ. श्ले. भ. ये ७ नक्षत्र ...र, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

...ट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों ... सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचने के ...ाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का ...हीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना ऐसे ...या करेंगे इन नक्षत्रों को। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी ...ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

...नालिश (अर्जी) का मुहूर्त—४।६।१४ तिथि हों, मं. श. वार हों. कृ. आर्द्रा ...श्ले म. ज्ये. मू. वि पूर्वा ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

...त् वासकर्तुं नक्षत्र
...वद् गणना कार्या
...लानक्षत्रफलम्
७ धनलाभः
७ हानिर्नैःस्वम्
७ सुखलाभः
७ पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०) काक। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिये। और देव स्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं ... [illegible] घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय वैश्य को ... और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिये शुभ है।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

... घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का ... दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ... [illegible] ... जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ है, अन्यथा ... [illegible]

वास्तु भूमि का शुभाशुभ जानना

[illegible] ... एक हाथ चौड़ा एक ... [illegible] ... प्रातःकाल उसको ... [illegible] ... हो तो अशुभ है। ... [illegible]

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभपरीक्षा

[illegible] ... अथवा दूसरी मिट्टी ... मकान की नींव को इतना गहरा ... [illegible] ... तक निकले, अथवा ... [illegible] ... जमीन में पत्थर निकले तो ... [illegible] ... तो धन नाश हो और ... [illegible] ... पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त—[illegible] माघ. फाल्गुन और मे. वृष, कर्क, सि. तु. वृ. म. कुं. सूर्य के सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम है। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. गु. शु. श. वारों में. रो. मृ. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पंचबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में, लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्स चक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्		
सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः—पुष्य उ. ३ रो. म. आश्ले. पू. षा. इनमें से जिस पर वृहस्पति हो उस नक्षत्र में और वृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो.ह.अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि.आ.चि. ध.श. आर्द्रा इनमें से जिसपर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय। दस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।६।१२।१६।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तडाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचार

मध्य	ईशा.	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैऋ‍र्त्य	पश्चि.	उत्त.	वाय
अर्थहानि	सुपुष्टिः	ऐश्वर्यं	पुत्रनाश	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारौ तिथिसंप्रयुक्तौ वेदाहतं तद्गुणकेन कार्यम्, एकावशिष्टे च जलं हि नागे द्वाभ्यां च शेषे सलिलं च स्वर्गे, त्रिशून्य शेषेभुवि संस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः।

अथ चुल्लिचक्रविचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक २ चरण के नाशक यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में। चूल्हा बनावे, तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग)-कार्तिकमासयोः॥ (यहां चान्द्रमास लेना) उत्तरा ३ अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्षामारहित तिथियों में, चं. बु. गु. शु. इन वारों में, २।५।८।११ लग्न में अत्या- ...के ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३ ५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह ३।६।११ में क्रूर हों, १.६,८,१२ वें चन्द्रमा न हों, चौथा ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्म ...न या जन्म राशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र ... भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुण्यमाला युक्त कलश वेद ध्वनि मंगलगान ...द्य के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा ...ादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. मार्ग. फा. मास में शत. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

...खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

...मुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
...नया- सूर्यः	मी. मेष वृष	मि. कर्क सिंह	कन्या तुला वृश्चिक	धनुः मकर कुम्भ
...म्भे	सि. कं. तु.	वृश्चि ध मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कर्क
...ाया- सूर्यः	म. कुं. मी.	मे वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनुः
...दिशा	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्
सूर्यनक्षत्रात्

स्थान	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्
सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह तीनों उ. रो. ध. श. म. ...र पुष्य. मृ. नक्षत्र हों वा चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो लग्न ... या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि ...४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

...र्यनक्षत्रात्कूप वा जलचक्रम्

...	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
...	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
...न	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृत जल

सूर्यभात्तड़ागचक्रम्

ईशा. २. जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने २ जलाधिक्य
उत्त. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	दक्षि. २ जलनाश
वाय. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नैर्ऋ. २ अमृतजल

गणनाक्रम मध्य पूर्व आग्नेय-दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रम—पूर्व आग्नेय द. नै. प. वा. उ. ई. मध्ये, वारिवाहः। वाहे चामृतसंज्ञकम्।

रोहिणीभात् वापीचक्रम

ईशान अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व पुन पु. श्ले जलाभावः	अग्नेय म. पूफा. उफा. सुजलम्
उत्तर पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	मध्य रो. मृ. आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण ह. चि. स्वा. जलाभावः
वायव्य श्र. ध. श. क्षारजलम्	पश्चिम मू. पू. उषा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्य वि. अनु. ज्ये बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त

देवतागमवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने॥
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः।
महिषासुरहन्त्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।

अश्वि. रो.मृ. पुन.पुष्य. ह. चि स्वा. अनु. श्र. ध. श. उत्तरा. ३ रे. एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ एतत्तिथौ शुक्ले, १।२।३।५। तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादि रहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभैः, ३।६।११। सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवताविशेषेण लग्नम्—सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यं गदेव्यः स्थिरेऽखिलाः॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः॥

वास्तुशान्तिमुहूर्त—श्र. ध. मृ. मू. अनु. रे ह. चि. स्वा. उत्तरा ३ पुन. पु. रो. अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिन दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकरक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिये।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ट	श्रेष्ट	नेष्ट	श्रेष्ट	नेष्ट	श्रेष्ट	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

[illegible]:—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु । दुर्गाविधानेषु सुत [illegible] नचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रेव्रतेऽमायांग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा । नित्य- [illegible] अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेऽप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने । [illegible]न्ती चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे [illegible] देवखातभवने सुरालयेऽग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः ॥ दुर्गभंगे गृहे वाऽपि [illegible] विग्रहे । शान्तिकर्म नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत् ॥

[illegible]ग्रहमुखहवनकृते शान्ति—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जातेहवनेऽशुभे । शान्तिविधाय [illegible] ब्राह्मणाय कुटुम्बिने । आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखाम् । गोमूत्र- [illegible] रचितां प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधायत ॥

[illegible] ऋणी धनी विचारः—स्ववर्गद्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च [illegible] र्गे योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥

यथा—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना फिर ८ का भाग देना। [illegible]र का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना; जिसका [illegible] अधिक बचे वह ही कम बचत वाले का ऋणी जानना।

भूमि का लेन-देन—गुरु, शुक्रवार १, ५, ६, ११, १५, तिथि मृग, पुन ऽश्ले., [illegible]. वि. अनु., मूल, पू., धा., उ. भा. नक्षत्र में घर-जमीन का सौदा करना [illegible]

[illegible] अ. रे. वि. अनु. रो. उत्तरा ३. ह. अश्वि पुष्य अभि. [illegible] हलप्रवहणमुहूर्तः—[illegible] रिक्तामावष्ठचष्टमीरहितमत्तिथौ शुभग्रहस्य [illegible] भूमिशयनमद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां [illegible]

बीजवपने राहुचक्रम्

हलचक्र [illegible]	राहुनक्षत्रात् दिनर्क्षं यावत् गणना कार्या							
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	३	३	३	१	४
[illegible]	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ शुभ	अशुभ

[illegible] ह. [illegible] उत्तरा ३. चि. अनु. मू. रे. स्वा. ध. रो. बीजवपने मुहूर्त—[illegible] राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ।

विशेष [illegible] (आर्द्रा) [illegible]

[illegible]

नवान्नभक्षणमुहूर्त—मृ. रे. चि. अनु. [illegible] अश्वि पुष्य. अभि. स्वा. पुन श्र. ध. [illegible] और [illegible] को छोड़कर [illegible] रहित नक्षत्रों में शुभ है, [illegible] शुक्रवार शुभ है।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. रे. नक्षत्र में गौ लेना बेचना। अन्य पशु पुन. पूर्वा ३ ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक. फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानो। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गोनक्षत्रगणना क्रमसे शुभाशुभफल सूर्य नक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हानि करे घर आया)।

सूर्य नक्षत्रात् काष्ठादि (गुहारादि) संस्थापनचक्रम्

६ उत्तमपाक शुभ	२ शवदहन नेष्ट	४ सर्पभय नेष्ट	४ मित्रलाभ शुभ	४ रोगभय नेष्ट	४ ववाघनकम नेष्ट	४ सुख शुभ	नक्षत्र संख्या

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा. ३. रो. ह. पुष्य, अश्वि. श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तारहित शुभ तिथियों में और च. बु. बृ. शुक्रवार हो, शुक्लपक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है। तृणकाष्ठादिसंग्रह निषेधः—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ, मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त

धनि., अश्वि., हस्त., चित्रा., अनु., पुन., पुष्य, ज्ये. एवं रेवती नक्षत्र में मशीनरी चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है।

औषध मुहूर्तः—ह. अ. पुष्य, अभि. मृ. रे. चि अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्मनक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।६।१४ को छोड़कर शुभ तिथियों में, भौम शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है।

यात्रा मुहूर्त विचार

ह. म. श्र. अश्वि. मृ. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे नक्षत्र यात्रा में अत्युत्तम। रो. उत्तरा ३ पूर्वा ३ मू. मध्यम और भ. कृ. आर्द्रा अश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. ये नक्षत्र यात्रा में निन्द्य है। अत्यावश्यकता में भरण्यादि नक्षत्रों में आरम्भ की क्रमशः ७।२१।१०।१४। ११।४०।१४।१४।१४ घटिएं यात्रा में त्याज्य करें। कृष्णपक्ष की प्रतिपदा और शुक्लपक्ष की द्वितीया तथा दिग्द्वार लग्न में यात्रा शुभ है। जन्म लग्न और जन्मराशि से अष्टम लग्न नवांश में तथा कुम्भलग्न या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें।

चन्द्रवास—

मेष, सिंह, धनु का चन्द्र पूर्व में। वृष, कन्या, मकर का चन्द्र दक्षिण में। मिथुन, तुला, कुम्भ का चन्द्र पश्चिम में। कर्क, वृश्चिक, मीन का चन्द्र उत्तर दिशा में। सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः।

सर्वे दोषाः लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ योगिनीवास चक्रम

[illegible]न्ति	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
/११	५/१३	४/१२	६/१४	७/१५	२/१०	८/३०	तिथयः

दिक्शूलचक्रम				कालराहुचक्रम							
पश्चिम	दक्षिण	उत्तर	दिशा	पूर्व	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	दि०
रवि	गुरु	बुध	वार	श०	शु०	गु०	बुध०	मं०	चं०	र०	वार
शुक्र	०	मंगल	वार	सम्मुखकालवासवर्ज्यम्							

शूल	आवश्यके दिक्शूले पदार्थाः							
पूर्व दिशा	घृत र०	पय चं०	गुड़ मं०	[illegible] बु०	दधि गु०	[illegible] शु०	तैल श०	[illegible]
दक्षिण								
पश्चिम	ताम्बूल	चन्दन	मृद	तिल	दधि	यव	माषाः	धान्य
उत्तर								

एकराशिस्थचन्द्रघट्यात्मक निवासः

पूर्व	द०	प०	उ०	पूर्व	द०	प०	उ०	दि
१	३२	५१	६६	८६	१०१	१२१	१३५	घ

यात्रा शुद्धि—जन्म लग्नेश, राशीश जन्मदशेश ये अस्त हों और गुरु, शुक्र अस्त [illegible]गुरु, नीचस्थ गुरु ये सब यत्न से वर्ज्य करें।

अथ यात्रायां दिग्दोहदचक्रम्

[illegible]ग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
तण्डुल	तिलोदक	सक्तुक	मत्स्य	गोधूम	दुग्ध	पायस	वस्तूनि

यात्रायां वारदोहदम							अथ नक्षत्रशूलम				
[illegible]चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार	प०	दे	पू०	उ०	दिशा
[illegible]स	कांजी	पक्वदुग्ध	दधि	पयोध्रि	ति.अ.	वस्तूनि	ज्ये	पूभा	रो.	उफा	भानि

[illegible]यात्रा निवृत्तौ प्रवेशः—१।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथि। चं. बु. गु. शु. श. [illegible] रो. मृ. पुष्य. उ. ३, ह. चित्रा. अनु. स्वा. श्र रे. ध. श. नक्षत्र २।५।६।८ [illegible] लग्न, ४।८ शुद्ध हों, १।४।७।१०।५।९ स्थान शुभ ग्रह हों। ३।६।११ में [illegible] शुभ नवांश में प्रवेश करें।

[illegible]त्रायां शुभशकुनानि—विप्र २. अश्व, गज, मद, फल, अन्न, दुग्ध, गौ, दधि, [illegible] निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, [illegible]ी गौरी कन्या कार्यसिद्धि वाक्य, सजलपूर्णघट पश्चाद्रिक्तघट एते प्रयाणसमये [illegible]ा भवन्ति। अशुभशकुनानि—वन्ध्यास्त्री, चर्म ईन्धन, संन्यासी, मार्जारयुद्ध [illegible] विधवा, जातिभ्रष्ट, छिक्का दुष्टवाणी एते प्रयाणसमये दृष्टा अशुभफलदा

सर्वाङ्कसिद्धियोग—शुक्लादि तिथि और नक्षत्र तथा वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रखकर क्रमशः ७।८।३ का भाग देना। शेष प्रथम जगह में शून्य हो तो यात्रा में क्लेश, मध्य में शून्य हो तो धनक्षति और अन्त में शून्य हो तो महाकष्ट होता है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य जय लाभ हो।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्—यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मधुं च स्थापयेत्फलम्। विप्रादि क्रमतः स्वर्णसर्वधान्याम्बरादिकम्। (सर्वे स्वप्रियवस्तुं वा)। गमनदिशि नगराद् बहिः गृहान्तरे वा विप्रादिभिः यज्ञोपवितादिना प्रस्थानं कार्यम। तच्च क्षितीशो १०, माण्डलीकः ७, सामान्जनः ५ दिनाभ्यन्तरे यात्रा कार्या। परतोऽन्यमुहूर्तस्यावश्यकता बोध्या। प्रस्थानकर्तुर्नियमाः—मिरान्नं वर्जयेत्क्षीरं पंचाहं क्षुरकर्म्म च। तदहश्चावशेषाणि सताईं मैथुनं त्यजेत् ॥१॥ कटुतैलगुडक्षार पक्वमांसाशनं तथा। भुक्त्वा यो यात्यसौ मोहाद् व्याधितः स निवर्तते ॥

दिन चतुर्घटिका मुहूर्त								रात्री चतुर्घटिका मुहूर्त						
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	घटि	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का	३॥	शु	चं	का	उ	अ	रो	ला
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु	३॥	अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो	३॥	चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
अ	रो	ला	शु	चं	का	उ	३॥	रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं	३॥	का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला	३॥	ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ	३॥	उ	ला	रो	ला	शु	चं	का
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का	३॥	श	चं	का	उ	अ	रो	ला

उ (उद्वेग) चं (चंचल) ला (लाभ) अ (अमृत) का (काल) शु (शुभ) रो (रोग)
इस चतुर्घटिका मुहूर्त में ३॥ घटी की जगह दिनमान व रात्रिमान के अष्टमांशानुसार कुछ पल न्यूनाधिक भी हो जाते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रश्न विचार

[illegible] सिद्धिज्ञानम्—लग्नपः कार्यपश्चापि लग्नगौ कार्यगौ युतौ। मिथस्थौ [illegible] स्वोच्चादौ चेत्सुसिद्धिदौ ॥ १ ॥ एषु योगेषु चन्द्रदृष्टौ सत्यां कार्य- [illegible] भवत्यन्यथा सन्देहः।

[illegible] ततो वर्षशुभाशुभविचारः—तिथिवारर्क्षयोगानां युतिः सम्वत्सरान्विता। [illegible] रैर्युक्ता विहृता शेषके फलम् ॥ १ ॥ एकेन क्लेशं, समता द्वाभ्यां, [illegible] सुखम्।

[illegible] वासी प्रश्नः—प्रश्नकर्त्ता के उच्चारण किये हुये अक्षरों को (वा फलका नाम [illegible] कलाक्षरों को) ६ से गुणा करके उसमें एक जोड़ दें, फिर ७ का भाग देने से [illegible] दि लेकर जो अङ्क बचे उसका फल कहें। १ शेष रहे तो प्रवासी आना चाहता [illegible] तो मार्ग के अर्ध भाग में है। ३ बचे तो ग्राम के निकट आ गया है। [illegible] घर में लाभ सहित आ गया है, ५ बचें तो रोगी है। ६ बचें तो जीवित है। धनेश वक्री न हो तो प्रवासी कल्याण- [illegible] बचें तो आने का यत्न करता है।

[illegible] से पत्र आयेगा कि नहीं ?—प्रश्न लग्न चर राशि का हो और [illegible] तृतीय स्थान में शुभ ग्रहयुक्त अथवा दृष्ट हो तो जल्दी आयेगा, मार्ग में [illegible] लग्न के विलम्ब से पत्र मिले। प्रश्न लग्न में चन्द्र हो और शुभ ग्रह देखता [illegible] आयेगा, विपरीत हो तो उत्तर नहीं मिलेगा।

[illegible] पुत्र लाभ होगा कि नहीं ?—तत्कालीन तिथि की संख्या को ४ से गुणा कर [illegible] करके २ से भाग देना, जो लब्धि आये [illegible] शेष बचे उससे फल कहें। १ शेषबचे [illegible] पार्थिव शिवपूजन करना चाहिये। [illegible] हरिवंश [illegible] है कि ईश्वर कृपा [illegible] किसी गरीब की कन्या को विवाह दें या उस [illegible] होने वाले पुत्र का पूर्ण सुख होगा। [illegible] ० शेष बचे तो [illegible] शीघ्र होगी।

[illegible] विवाह होगा कि नहीं ?—यदि लग्न से [illegible] इन स्थानों में [illegible] विवाह हो जायेगा। यदि चन्द्रमा के साथ पापी ग्रह हो या [illegible] विवाह नहीं होगा। [illegible] इन राशियों में से किसी एक राशि में चन्द्रमा या शुक्र हो तो [illegible] विवाह हो जायेगा।

अङ्क प्रश्न तथा फल वर्णन—प्रश्न कर्त्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलायें या लिखायें, उनमें १२ का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्य सिद्धि हो। ८।४।६।१०।५ बचे तो कार्य नाश हो। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धिः ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्ध हो, यह फल कहे।

रोग त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू. फा.	उ. फा	अनु.	ज्ये.	ध.	श.	भ.	कृ.	आदि
पुनः	म.	ह.	वि.	मू.	श्र.	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्य
पुष्य	अश्ले.	चि.	स्वा.	पू. षा	उ. षा.	उ. भा.	रे.	मृ.	अन्त्य

सूर्यनक्षत्र, दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र त्रिनाड़ी चक्र में एक नाड़ी पर हो तो रोगी की मृत्यु होती है। प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उस दिन रोगी की मृत्यु जानें। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा युद्ध के समय भी वर्जित है।

अथ रोगोत्पत्तौ सन्तानप्रतिबन्धादौ च देवदोषज्ञानम्—तृतीय, नवम, द्वादश, षष्ठ स्थान में प्रश्न लग्न से कोई पापग्रह हो तो विष, जल, शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानना। यह योग पाप ग्रहों के साथ शुभ का संयोग होने पर नहीं होता। यदि बारहवें, आठवें, स्थान में राहु हो तो प्रेतदोष, बृहस्पति के होने से पितरदोष, चन्द्रमा के होने से जलदेवी का दोष कहें। सूर्य के होने से देवी दोष अथवा लग्न अष्टम द्वादश में सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष कहें। शनि के होने से अपने गोत्र की देवी (सती) का दोष और बुध व्यय तथा अष्टम स्थान में हो तो भूतदोष जानना। व्यय तथा अष्टम स्थान में भौम हो तो शाकिनी दोष, शुक्र के होने से जल देवी का दोष होता है। परंच जो मनुष्य स्वधर्मनिष्ठ नहीं है अथवा जो ईश्वर से विमुख रहते हैं पूर्वोक्त दोष उन्हीं को होते हैं। दोषसूचक ग्रह अपनी राशि तथा उच्च में हो, बलवान् हो तो उक्त दोष साध्य, यदि चन्द्र नीच तथा निर्बल हो और दोष सूचक ग्रह भी नीच शत्रु क्षेत्र में हो तो उक्त दोष असाध्य होते हैं, बलवान् पाप ग्रह केन्द्र में हों तो पूर्वोक्त देवता असाध्य होते हैं, यदि शुभ ग्रह केन्द्र स्थानों में हो तो पूर्वोक्त देवगण साध्य अर्थात् मन्त्र स्तुति पूजन आदि से उनका दोष दूर हो जाता है।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्—तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न प्रहर इनको जोड़ो और ८ का भाग दें। शेष ३।७ बचे तो देवता की बाधा, २।८ बचें तो पितृबाधा और ६।४ बचें तो भूत प्रेत की बाधा जानना। "उदयाद्घटिका त्रिघ्ना तिथिवारेण संयुता। भक्ते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"जीवनं मरणं वदेत्" ॥१॥ राम (३), बाण (५), रसा (६), ष्ट (८), [illegible], रुद्रा (११) श्च जीवति । एक (१), पक्ष (२), युगा (४), सत (७), दशा (१२) नात्र जीवति ।

गर्भिणीपुत्रादिज्ञानम्—तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् । सप्तभक्ते समे [illegible] च विषमे सुतः ॥१॥ तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से वार को रविवार से [illegible] की अश्विनी से करना ।

अथ नष्टवस्तुज्ञानम्

[illegible] च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम् । दिक् संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्तथा । [illegible] द्रव्यं द्वयं चेद् भांडसंस्थितम् । तृतीये जलमध्यस्थं अंतरिक्षे चतुर्थके ॥ पंचमे तु स्यात्षष्ठे गोमयमध्यगम् । सप्तमे भस्ममध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम् ।

अथ नष्टवस्तुज्ञानाय चक्रं सफलम्

मंद	मध्य	सुलोचन	संज्ञा
मू. आश्ले. ह.अनु. उषा. श. ध.	आ. म. चि. ज्ये. अभि. पूभा. श.	पुनः पू. फा. स्वा. मू. श्र. उभा. कृ.	नक्षत्राणि
दक्षिणे गतं	पश्चिमे गतं	उत्तरे गतं	दिशा
यत्नेन लाभः	दूरे श्रवणं	नैव प्राप्तिः	फलं

पशुरन्वेषणम्(सूर्यभात्) ६ भ्रमति वनेषु । १५ ग्रामसमीपस्थः । २२ गृहे आगतः । २३।२४ नष्टप्राप्तिः । २५।२६ २७ निधनमपि न श्रूयते ।

[illegible] राजय प्रश्न—यदि तीसरे भाव से लेकर आठवें तक शुभ ग्रह अधिक बलवान् [illegible] वादी (मुद्दालह) जीतेगा और यदि नवम भाव से लेकर दूसरे भाव तक शुभ [illegible] बलवान् हों तो वादी (मुद्दई) जीतेगा । यदि पापग्रह लग्न में बैठा हो तो [illegible] जीतेगा, परन्तु वहां पापग्रह नीच राशि में हो या अस्त हो अथवा शत्रु राशि [illegible] तो हार जायेगा । यदि लग्न और सप्तम स्थान में पाप ग्रह तुल्य बली हो [illegible] और सप्तमेश परस्पर मित्र हो । तो सन्धि हो जायेगी पापग्रह न्यूनाधिक बली [illegible] बली न्यून बली को जीतेगा । अर्थात् लग्न स्थित पापग्रह बली हो तो [illegible] विजय और यदि सप्तमस्थ पापग्रह बलवान् हो तो शत्रु की विजय होगी । [illegible] अतिरिक्त स्थान में दो पापग्रहों की परस्पर पूर्ण दृष्टि हो तो वादी प्रतिवादी [illegible] घायल होते हैं । प्रश्नकाल मे लग्नेश सप्तमेश परस्पर मित्र हों तो युद्ध [illegible] नहीं ।

पञ्चांग परिवर्तन पद्धति

इस पंचाङ्ग से अन्यान्य नगरों का पंचाङ्ग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारणी से देशांतर मिनट लेवें, वह मिनट+पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में हीन करे और पश्चिम के—हों तो धन करें अर्थात् जोड़ें । अक्षांशादिसारिणी पृ ९४।९५।९६ में देशांतर मिनट से पहले धन+चिन्ह हो तो ऋण करें, ऋण—चिन्ह हो तो धन करें, यह इष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय होगा । पश्चात् इष्ट दिन की रवि क्रांति और अक्षांश इन उपकरणों से पृष्ठ ९३ चरान्तर सारिणी से चरान्तर मिनट लें वह धन हों तो ऊपर के आये हुए मध्यम सूर्योदय में जोड़े, ऋण हों तो हीन करें तो वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टे. टा. से सूर्योदय होगा । आये हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे । ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में हीन करें, ऋण किये हों तो धन करें तो वह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी पलात्मक दिनमान होगा । इस दिनमान के घण्टा मिनट बनाकर आये हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा ।

इस पंचांग में तिथ्यादि की घटी पल दिल्ली मध्यम सूर्योदय स्टे. घं. ६ मि. २१ से हैं । इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ सूर्योदय इस मध्यम सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है उसके पल बनाकर (१ मि० = २॥ पल) यह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें और बाद के मिनट हों तो उनके जितने पल हों वह इस पंचांग के तिथ्यादि में घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा । उदाहरण—विगत सम्वत् २०१७ भाद्रपद शु० ७ सोमवार ता० २९ अगस्त १९६० तदनुसार राष्ट्रीय मिति ७ भाद्रपद शाके १८८२ को लखनऊ नगर का इस पंचांग से सूर्योदय दिनमान और पंचांग बनाना है । इस दिन पंचांग में दिल्ली का सूर्योदय स्टे० घं० ६ मिनट २ है । लखनऊ नगर दिल्ली से १५ मि० पूर्व में है (पृष्ठ ९६ देखो) अतः यह मि० इस पंचांग के सूर्योदय में घटा दिये तो घं० ५ मि० ४७ हुए, यह लखनऊ का इस पंचांग से मध्यम सूर्योदय हुआ । पृष्ठ ७१ की रवि क्रांति सारिणी से ता० २९ अगस्त को रवि क्रांति उत्तरा+९।३३ है । लखनऊ के अक्षांश २६।५५ है (देखो अक्षांशादिसारिणी पृष्ठ ९६ पर) चरांतर सारिणी पृष्ठ ९३ पर २७ अक्षांश और ९ क्रान्त्यंश के कोष्ठक में एक मि० है और १० क्रान्त्यंश में २ मि० है । यहां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

... यह मिनट धन आये। और ... के मध्यम सूर्योदय घंटा ५ मि० ४७ में जोड़ ... से अधिक होने के कारण १० क्रान्त्यंश मानने पर चरान्तर मिनट २ प्राप्त हुए ... चरान्तर धन होने के कारण ... चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणे तो १० पल हुए। ... में स्टे. टा. घं ५ मि० ४९ यह स्पष्ट सूर्योदय का समय हुआ। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणे तो १० पल हुए। चरान्तर धन होने के कारण ... के दिनमान ३१।४५ में १० पल हीन करने (विपरिगमन करने) से ३१।३५ यह लखनऊ का दिनमान हुआ इसके घंटा मिनट किये तो घंटा १२ ... हुए। यह ऊपर आये हुए लखनऊ के सूर्योदय घंटा ५ .मि० ४९ में मिला दिये तो १८।२७ यह लखनऊ का सूर्यास्त स्टे०टा० हुआ। यहां लखनऊ का स्पष्ट ... मध्यम सूर्योदय घंटा ६।२१ से ३२ मिनट पहले है, इसके घटी पल किये तो १ घटी २० पल हुए। यह घटी पल दिल्ली मध्यम सूर्योदय से लखनऊ का स्पष्ट सूर्योदय पहले होने से इस पञ्चांग के तिथ्यादि घटी पलों में मिला देने पर भाद्रपद शुक्ला ७ सोमवार को सप्तमी तिथि घट्यादि १७।१३, विशाखा नक्षत्र ३।५५, ऐन्द्र योग ८।८ और वणिजकरण ६।८।१३ यह लखनऊ के स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पञ्चांग हुआ। इस प्रक्रिया से संसार के किसी भी भाग का शुद्ध सूक्ष्म पञ्चांग 'श्रीविश्व विजय पञ्चांग' द्वारा बन सकता है।

चरान्तर सारिणी

उत्तराक्षांशाः चरान्तरमिनटाः

मिनट क्रान्ति दक्षिण हो तो ऋण और क्रान्ति उत्तर हो तो धन — क्रान्ति दक्षिण हो तो धन उत्तर हो तो ऋण

९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
४	४	४	४	४	३	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
६	६	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	३	३	३	२	२	१	१	१	०	०	०	१	१	१	२	३	४
९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	२	३	४
१०	१०	९	९	८	८	७	७	६	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	५	६
[illegible]	११	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	५	५	४	४	३	२	१	१	०	०	१	२	३	३	५	६	६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	८	७	६	६	५	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९	९	८	७	६	५	४	३	३	२	१	०	०	१	२	४	४	६	६	८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	०	१	३	४	५	६	७	८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	८	६	५	४	३	२	१	०	०	१	३	४	६	७	८	१०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	७	६	४	३	२	२	०	०	१	४	५	६	७	८	१०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	[illegible]	[illegible]	४	५	६	८	१०	११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	[illegible]	[illegible]	४	५	७	८	१०	१२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	[illegible]	[illegible]	४	६	७	९	१०	१३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	१	२	४	६	८	१०	११	१४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	१	३	६	९	११	१४	१६	१९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	१	३	६	९	११	१४	१६	२०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

यह मिनट ... [illegible] — क्रान्ति के विपरीत समझें

चरांतर मिनट लाने का उदाहरण.

दैनिक ग्रहों के अन्त में पृष्ठ ७७ पर सूर्य की क्रान्ति दी गई है। जिस तारीख महीने का चरांतर लाना है उस दिन की क्रान्ति कितनी है यह देखें और दक्षिण हैं या उत्तर है यह भी साथ में देख रखें (+उत्तर--दक्षिण) तदनन्तर यह देखें कि जिस नगर का पञ्चांग बनाना हो उसके अक्षांश (पृष्ठ ९४, ९५, ९६) कितने हैं। सूर्य की क्रान्ति और अक्षांश द्वारा इस सारणी से चरान्तर मिनट जान लें।

उदाहरण--जैसे ता० २९ अगस्त १९६० को लखनऊ का चरान्तर लाना है तो पृष्ठ ७८ पर इस दिन की सूर्य क्रान्ति+९।२३ है और लखनऊ के अक्षांश २६।५५ है। इस सारणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रान्त्यंश की है और आड़ी ऊपर की अक्षांश की हैं। क्रान्त्यंश ९।२३ तथा अक्षांश २७ में देखें तो अनुपात से दोनों लाइनों के सम्पात में २मिनट प्राप्त हुए। अब यहां क्रांति उत्तर अर्थात् धन होने से यह चरान्तर मिनट धन हुए। इसी प्रकार सर्वत्र साधन करना।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

…तर = दिल्ली से पूर्व + पश्चिम —अन्तर

अक्षांशादि सारिणी

स्टेण्डर्ड अन्तर-स्थानीय टाईम और स्टेण्डर्ड टाईम का अन्तर

…र नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	देशांतर मिनट	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनट	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	देशांतर मिनट	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनट	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	देशांतर मिनट	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनट
[illegible]	२६।४८	८२।१४	+२०	—१	ऊधमपुर पंजाब	३२।५६	७४।४३	—१०	—३१	कोलम्बो सिलोन	६।५६	७९।५६	+११	—१०
[illegible]	३०।२१	७६।५२	—२	—२३	एलिचपुर	२१।१८	७७।३३	+१	—२०	कोचीन बन्दरगाह	९।५८	७६।१७	—४	—२५
[illegible]	३१।३७	७४।५५	—१०	—३१	एटा कासगंज	२७।३५	७८।४१	+६	—१५	खैरपुर सिंध	२७।२८	६८।४७	—३४	—२५
[illegible]	२६।२७	७४।४२	—१०	—३१	ओरंगाबाद	१९।५३	७५।२३	—७	—२८	खंभात	२२।१९	७२।३६	—१९	—४०
[illegible]	२७।३४	७६।३८	—२	—२३	ओरंगाबाद बिहार	२४।४५	८४।२५	+२९	+८	खंडवा	२१।५०	७६।१८	—४	—२५
[illegible]	३२।५४	७४।३५	—११	—३२	कपूरथला	३१।२३	७५।२५	—७	—२८	गया	२४।४९	८५। १	+३१	+१०
…न	३३।४४	७५।१०	—९	—३०	कठूआ काश्मीर	३२।२२	७५।३६	—७	—२८	ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	+४	—१७
…होर	२८।२१	७८।२३	+४	—१७	कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	+४५	+२४	गाजीपुर	२५।३४	८३।३५	+२५	+४
… भोगांव	२७।२०	७९।१२	+८	१३	कन्नोज	२७। ३	७९।५८	+११	—१०	गिद्धौर	२४।५१	८६। ७	+३५	+१४
…ती	२०।५६	७७।४८	+२	—१९	कटक	२०।२८	८५।५४	+३५	+१४	गिलगित्त	३५।५४	७४।२२	—१२	—३३
…र	२९।१७	७१।३५	—२३	—४४	कच्छ भुज	२३।१५	६९।४०	—३०	—५१	गुजरात (पा.)	३२।३६	७४। ५	—१३	—४
[illegible]	२७।५४	७८। ६	+३	—१८	करांची (पा.)	२४।५१	६७। ४	—११	—३२	गुजरांवाला (पा.)	३२।१०	७४।१४	—१२	—३
… हथुवा	२६।१२	८४। ८	+२७	+६	कांगड़ा	३२। ९	७६।१८	—४	—२५	गुरदासपुर	३२। ३	७५।२७	—७	—२८
…ाद	२३। २	७२।३८	—१८	—३९	कांकरोली	२५। २	७३।५४	—१३	—३४	गुरुसहायगंज	२७। ८	७९।४४	+१०	—११
…ा	२९।३७	७९।४०	+१०	—११	काला बाग (पा.)	३२।५८	७१।३६	—२३	—१४	गोरखपुर	२६।४५	७३।५७	+२५	+४
[illegible]	२९। ७	८१।४७	+१८	—३	कानपुर	२६।२८	८०।२४	+१३	—८	गोंडा	२७।२८	८२। १	+१९	—२
…ा त्रिपुरा	२३।४९	९१।१७	+५६	+३५	काठमांडू नेपाल	२७।४२	८५।१२	+३२	+११	गोकर्ण	१४।३३	७४।१८	—१२	—३३
…नगर	१९। ५	७४।४८	—१०	—३१	काबुल	३४।२७	६९। ६	—३२	—५३	गोवा	१५।३०	७३।५७	—१३	—३४
[illegible]	२८।५४	७८।३४	+५	—१६	काशी	२५।२०	८३। ०	+२३	—२	गोहाटी असम	२६।११	९१।४५	+५८	+३७
[illegible]	२७।१०	७८। ५	+३	—१८	कालपी	२६। ९	७९।४३	+१०	—११	चमन (क्वेटा पा.)	३०।३५	६६।३०	—४३	—३४
[illegible]	२०।४२	७७। २	—१	—२२	कांडी लंका	७।२०	८०।४५	+१४	—७	चित्तौड़गढ़	२४।५४	७४।४२	—१०	—३१
[illegible]	२३।४२	८७।२०	+४०	+१९	कायमगंज	२७।३५	७९।२१	+९	—१२	चित्रकूट	२५।१५	८०।२८	+१३	—८
[illegible]	२४।४०	७२।४५	—१८	—३९	कालीकट	११।१५	७५।४९	—६	—२७	चेरापूंजी	२५।१७	९१।४७	+५८	+३७
[illegible]	२६। ३	८३।१३	+२४	+३	किशनगढ़ राज.	२६।३३	७४।४०	—१०	—३१	चैनपुर	२५। २	८३।२०	+२४	+३
[illegible]	२२।४४	७५।५०	—६	—२७	किश्तवाड़	३३।१२	७५।४८	—७	—२८	चम्बा	३२।३४	७६।१०	—४	—२५
[illegible]	२६।४७	७९। २	+७	—१४	कुमारी अंतरीप	८। ६	७७।३४	+१	—२०	चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	—१	—२२
[illegible]	२३।५०	७३। २	—१७	—३८	कुरुक्षेत्र	२९।५८	७६।४८	—२	—२३	छतरपुर	२४।५४	७९।३८	+१०	—११
[illegible]	२३। ९	७५।४३	—६	—२७	कुम्भकोणम्	१०।५८	७९।२५	+९	—१२	छपरा बिहार	२४।४७	८४।४१	+३०	+९
[illegible]	२६।४८	८०।४३	+१४	—७	कैम्बलपुर (पा.)	३३।४२	७२।१८	—२०	—११	छिबरा मऊ	२७।१०	७९।२९	+९	—१२
…ड़	२४।३७	७३।४२	—१४	—३५	कोटा राजस्थान	२५।१०	७५।५२	—६	—२७	जगन्नाथपुरी	१९।४६	८५।४८	+३४	+१३
[illegible]	११।१७	७६।४२	—२	—२३	कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	—१२	—३३	जंजीरा	१८।१५	७३। ०	—१७	—३८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

अक्षांशादि सारणी

र=दिल्ली से पूर्व+पश्चिम—अन्तर | स्टेण्डर्ड अन्तर-स्थानीय टाईम और स्टेण्डड टाईम का अन्तर

उत्तर अक्षांश अ. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	देशांतर मिनट	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनट	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	देशांतर मिनट	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनट	नाम नगर	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	देशांतर मिनट	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनट
[illegible]	[illegible]			जहाँगीराबाद	[illegible]	[illegible]							
२३।१०	८०। १	+११	—१०	द्वारका	२७।१४	६९। १	—३३	—५४	पोरबन्दर	२१।३७	६९।४९	—३०	—५१
२६।५६	७५।५२	—६	—२७	दार्जिलिंग	२२। ३	८८।१८	+४४	+२३	पंढ़रपुर	१७।४१	७५।२३	—७	—२८
२२।५०	८६।१०	+३६	+१५	दिल्ली	२८।३८	७७।१२	—०	—२१	फतेहपुर	२५।५५	८०।५२	+१५	—६
२२।४४	७४।५४	—९	—३०	देहरादून	३०।२०	७८। ४	+३	—१८	फतेहपुर (राज.)	२७।५२	७५। २	—९	—३०
२६।३२	८८।४६	+४६	+२५	दौलताबाद	१९।५७	७५।१२	—८	—२९	फर्रुखाबाद	२७।२४	७९।३७	+९	—१२
२६।५१	७८।५५	+७	—१४	धर्मशाला	३२।१६	७६।२३	—३	—२४	फरीदकोट	३०।४०	७४।५७	—९	—३०
२२।४४	७५। ७	—९	—३०	धवलपुर	२६।४८	७७।५३	+३	—१८	फाजिल्का	३०।२५	७४। ४	—१३	—३४
३२।३०	७५।१८	—८	—२९	धांगध्रा	२२।५९	७१।३२	—२३	—४४	फिरोजपुर	३०।५६	७४।४०	—१०	३१
३१।१९	७५।१८	—८	—२९	धार	२२।३६	७५।१२	—८	—२९	फैजाबाद	२६।४७	८२।१२	+२०	—१
२२।२७	७०। ७	—२९	—५०	धारवाड़	१५।२६	७५। ०	—९	—३०	बड़ौदा	२२।१६	७३।१२	—१६	—३७
२०।५२	७१।२५	—२३	—४४	धूलिया	२०।५८	७४।४२	—१०	—३१	बम्बई	१८।५७	७२।५०	—१८	—३९
२६।१९	७६।२३	—३	—२४	नसीराबाद	२६।१८	७४।४६	—१०	—३१	बर्दवान	२३।१६	८७।५२	+४३	+२२
२१।३१	७०।३६	—२७	—४८	नड़ियाद (गुज.)	२२।४१	७२।५५	—१७	—३८	बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३२	+९	—१२
२६।५५	७०।५७	—२५	—४६	नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	—१४	—३५	बहराइच	२७।३४	८१।४०	+१८	—३
२९।१९	७३। ४	—१७	—३८	नागपुर	२१। ९	७९। ९	+८	—१३	बरेली	२८।२२	७९।२७	+९	—१२
[illegible]	[illegible]	+२२	+१	नासिक	२०। २	७३।५०	—१४	—३५	बलरामपुर	२७। ४	८२।५०	+१९	—३
[illegible]	[illegible]	+३७	+१६	नाभा	३०।२३	७६। ९	—५	—२६	बहावलपुर (पा.)	२८।२४	७१।४७	—२२	—१३
[illegible]	[illegible]	—४	—२५	नीमच	२४।२७	७४।५२	—१०	—३१	बागलकोट	१६।१२	७५।४५	—७	—२७
[illegible]	[illegible]	+५	—१६	पटना	२५।३७	८५।१३	+३२	+११	बांदा (उ. प्र.)	२५।२८	८०।२०	+१२	—९
[illegible]	[illegible]	—२	—२२	पठानकोट	३२।१५	७५।४२	—६	—२७	बांकीपुर	२५।४०	८५।१२	+३२	+११
[illegible]	[illegible]	+४	—१७	प्रतापगढ़	२४। २	७४।५०	—१०	—३१	बांसवाड़ा	२३।३०	७४।२४	—११	—३२
[illegible]	[illegible]	—६	—२७	पटियाला	३०।२२	७६।२५	—३	—२४	बांकुरा	२३।१४	८७। २	+३९	+१८
[illegible]	[illegible]	—६	—२७	प्रयागराज	२५।२४	८१।५४	+१८	—३	बिलासपुर हि. प्र	३१।१९	७६।५०	—२	—२३
[illegible]	[illegible]	+४	—१७	पाटन (गु.)	२३।५९	७२। १	—५	—२६	बिलासपुर (म.प्र.)	२२। ५	८२।१३	+२०	—१
[illegible]	[illegible]	+७१	+५०	पाण्डीचेरी	११।५६	७९।५३	+११	—१०	बीकानेर	२८। १	७३।२२	—१६	—३७
[illegible]	[illegible]	—२९	—१९	पानीपत	२९।२३	७७। १	—१	—२१	बीजापुर	१६।५०	७५।४७	—६	—२७
[illegible]	[illegible]	+५२	+२	पीलीभीत	२८।४०	७९।५१	+१०	—२१	बूंदी (राज.)	२५।२७	७५।४१	—६	—२७
[illegible]	[illegible]	—१६	—३०	पुरुलिया	२३।४६	८६।२०	+४१	+२०	बुलन्द शहर	२८।२४	७७।५४	+३	—१८
[illegible]	[illegible]	—१	—२०	पूर्णिया	२५।४६	८७।२५	+३७	+१६	बंगलोर	१२।५८	७७।३८	+२	—१९
२०।५०	[illegible]	+६	—१५	पूना	१८।३१	७३।५५	—१३	—३४	भड़ौंच	२१।४१	७३। ०	—१७	—३८
२६।१०	[illegible]	+३५	+१४	पेशावर (पा.)	३४। २	७१।३७	—२४	—१५	भटिंडा	३०।११	७५। ०	—९	—३०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[illegible]ांतर = दिल्ली से पूर्व + पश्चिम — अन्तर

अक्षांशादि सारिणी

स्टेण्डर्ड अन्तर-स्थानीय टाईम और स्टेण्डर्ड टाईम का अन्तर

[illegible]र नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	देशांतर मिनट	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनट
[illegible]र	२७।१५	७७।३०	+१	—२०
[illegible]पुर	२५।१३	८६।५९	+३९	+१८
[illegible]र	२१।४६	७२।११	—२०	—४१
[illegible]र	२०।२८	८५।५४	+३५	+१४
[illegible]	२७।३०	९०। ०	+५१	+३०
[illegible]	२३।१६	७७।३६	+१	—२०
[illegible]	२७।२८	७७।४१	+२	—१९
[illegible]	१३। ४	८०।१७	+१२	—९
[illegible]हि. प्र.)	३१।५०	७६।५८	—१	—२२
[illegible] स्टेट	२४।४४	९३।५८	+६७	+४६
[illegible]पुर	२५।५०	८१।५०	+१८	—३
[illegible]	२०।३१	७४।३०	—११	—३२
[illegible]	२५। ६	८२।३७	+२१	+०
[illegible]ली (पा.)	३२।३५	७१।३३	—२३	—१४
[illegible]न (पा.)	३०।१३	७१।३१	—२३	—१४
[illegible]बाद	२४।१०	८८।१९	+४५	+२३
[illegible]बाद	२८।५०	७८।४९	+६	—१५
[illegible]रनगर	२९।३०	७७।४४	+२	—१९
[illegible]रपुर	२६।१२	८५।२७	+३३	+१२
[illegible]	२५।२३	८६।३०	+३७	+१६
[illegible]	२९। ०	७७।४५	+२	—१९
[illegible]	१२।१८	७६।४२	—२	—२३
[illegible]	२७।१३	७९। ४	+७	—१४
[illegible]	२६।४०	८४।५७	+३१	+१०
[illegible]	२३।२१	७५। ७	—९	—३०
[illegible](पा.)	३३।३७	७३। ६	—१७	—८
[illegible]	२२।१८	७०।५९	—२५	—४६
[illegible]	२३।४०	८५।३४	+३३	+१२
[illegible]प्र.)	[illegible]८।४८	७९। ५	+७	—१४
[illegible]	२१।५८	८३।२६	+२५	+४
[illegible]	१५।५७	७५। ४	—७	—२८

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	देशांतर मिनट	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनट
रामेश्वर	९।१७	७९।२२	—८	—१३
रायपुर (म. प्र.)	२१।१५	८१।४१	+१८	—३
रायबरेली	२६।१५	८१।१६	+१६	—५
रीवा	२४।३२	८१।१९	+१६	—५
रोहतक	२८।५४	७६।३८	—२	—२३
रंगून (बर्मा)	१६।५०	९६।१३	+७६	+५५
लखनऊ	२६।५५	८०।५९	+१५	—६
लद्दाख	३३। ०	७८।४८	+६	—१५
ललितपुर	२४।२२	७८।२८	+५	—१६
लाहौर (पा.)	३१।३७	७४।२६	—११	—२
लुधियाना	३०।५५	७५।५४	—५	—२६
वजीराबाद (पा.)	३२।२८	७४।१०	—१२	—३
शाहजहांपुर	२७।५५	८०। ०	+११	—१०
शिकोहाबाद	२७। ६	७८।३८	+६	—१५
शिलांग	२५।३४	९१।५४	+५९	+३८
शिमला	३१। ६	७७।१३	—०	—२१
शिकारपुर (पा.)	२७।५७	६८।४०	—३४	—५५
श्रीनगर काश्मीर	३४। ६	७४।५१	—१०	—३१
श्रीमाधोपुर (राज.)	२७।२५	७५।२५	—८	—२९
श्रीनगर (गढवा.)	३०।१४	७८।४२	+६	—१५
श्रीवर्धन	१८। २	७३। ०	—१७	—३८
सम्बलपुर	२१।२८	८४। ०	+२७	+६
सहारनपुर	२९।५९	७७।२३	+१	—२०
सतारा	१७।४२	७४। २	—१३	—३४
स्यालकोट (पा.)	३२।३१	७४।३६	—११	—२
सागर (म. प्र.)	२३।५०	७८।४५	+६	—१५
सांगली	१६।५२	७४।३०	—११	—३२
सिकन्दराबाद	१७।२७	७८।३३	+५	—१६
सिरोही	२४।५३	७३। २	—१७	—३८
सीतापुर	२७।३२	८०।२४	+१३	—८
सीतामढ़ी	२६।३५	८५।२७	+३३	+१२

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अ. क.	पूर्व रेखांश अं क.	देशांतर मिनट	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनट
सुलतानपुर	२६।१६	८२। ७	+१९	—२
सूरत	२१।११	७२।५२	—१८	—३९
सेलम	११।३९	७८।१५	+४	—१७
सोलापुर	१७।४०	७५।४८	—६	—२७
सोमनाथ	२१। १	७०।२६	—२७	—४८
सोजत मारवाड़	२५।२७	७३।५०	—१४	—३५
सोलन (हि. प्र.)	३०।५७	७७। ९	—१	—२२
सोनपुर (उड़ीसा)	२०।५१	८३।५५	+२७	+६
संगमनेर	१९।३५	७४।१६	—१०	—३१
संथाल पर्गना	२४।३०	८७। ०	+३९	+१८
हथुवा	२६।१२	८४। ५	+२७	+६
हरिद्वार	२९।५६	७८।१३	+४	—१७
हरदोई	२७।२३	८०।१०	+१२	—९
हजारीबाग	२३।५९	८५।२५	+३३	+१२
हाथरस	२७।३८	७८। ६	+३	—१८
हाजीपुर	२५।३५	८३।११	+२४	+३
हिसार	२९।१०	७५।४६	—६	—२७
हैदराबाद (द.)	१७।१८	७८।३०	+५	—१६
हैदराबाद (सि.)	२५।२५	६८।३८	—३४	—२५
होशंगाबाद	२२।४६	७७।४५	+२	—१९
होशियारपुर	३१।३२	७५।५७	—५	—२६

इस सारिणी में दिये हुए पाकिस्तानी नगरों के स्टेण्डर्ड अन्तर मिनट पाकिस्तानी स्टेण्डर्ड टाइम एवं लोकल (स्थानीय) टाइम का अन्तर है। भारत और पाकिस्तान के स्टेण्डर्ड स्थान में अब ३० मिनट का अन्तर कर दिया है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

...श और दीपान्तरों के अक्षांशादि

दिल्ली से

		अक्षांश अं. क.	पलभा घं. पं.	देशांतर घं. मि.
...(... अरब)	उ.	१३।०	२।४७	— २।८
...ा (द. अमे०)	द.	२६।१२	५।५४	—६।-८
...या	द.	१२।०	७।३०	+ ४।३६
...न (ईरान)	उ.	३२।२७	७।३८	— १।४३
...सीलोन लंका)	उ.	७।११	१।२१	+ ०।१३
...(अफगानिस्तान)	उ.	३४।२७	८।५४	—०।३२
...(प. अफ्रीका)	द.	६।०	१।५	— ४।१६
...मिश्र)	उ.	३०।३६	७।५	—३।३
...(यूरोप)	उ.	५१।१८	१४।५८	— ५।८
...(द. अफ्रीका)	द.	२६।०	५।५१	— ३।१२
...(उ. अफ्रीका)	उ.	३३।०	७।४७	—४।१६
...(जापान)	उ.	३५।४२	८।३८	+ ४।१६
...(अमरीका)	उ.	४०।४५	१०।२२	— ६।४४
...(द. अफ्रीका)	द.	१।२५	०।१६	— ३।४१
...(मध्य अफ्रीका)	द.	१।१०	२।४७	— ३।४८
...(चीन)	उ.	४०।०	१०।४	+ २।२६
...(...)	उ.	४०।३०	११।३५	— ४।५६
...(जर्मनी)	उ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
...(यूरोप)	उ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
...(ईरान)	उ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
...(...)	उ.	२१।०	[illegible]	[illegible]
...(रशिया)	उ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
...	उ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
... द्वीप	द.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
...(...)	उ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
...(टर्की)	उ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
...(चीन)	उ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]

विदेशों के स्टेण्डर्ड टाइम और भारतीय स्टेण्डर्ड टाइम का अन्तर ऋण धन चिन्हानुसार भारतीय स्टेण्डर्ड टाइम में संस्कार करने पर विदेशी स्टेण्डर्ड टाइम होता है।

विदेशों के नाम	अन्तर घं मि.
न्यूजीलैण्ड (क)	+ ६।०
टस्मानिया, विक्टोरिया, न्यू वेल्स ब्रोकिन हिल छोड़कर क्वीन्सलेण्ड	+ ४।३०
जापान कोरिया	+ ३।३०
दक्षिण आस्ट्रेलिया ब्रोकिनहिल प्रांत उत्तर टेरीटोरी (आस्ट्रेलिया)	+ ४।०
साइबेरिया, रेखांश ६७।३० से ११२।३० पूर्व तक तथा चीन हांगकांग	+ २।३०
साराबान (ख)	+ २।०
कलकत्ता	+ ०।२३
भारत (इण्डिया)	०।०
यूरोपियन (रशिया)	— २।३०
यूगेण्डा केनिया कालोनी	— ३।०
पूर्वीय यूरोप फिनलैण्ड (ग) तथा यूरोप कन्ट्री पूर्वीय विभाग तथा मध्य यूरोप जोन पैलेस्टाइन, सीरिया, इजिप्ट, द. अफ्रीका	— ३।३०
मध्ययूरोप, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, लिथुआनिया, जर्मनी, पोलेण्ड, चेकोस्लोवाकिया, आस्ट्रिया, हंगरी, स्विजरलैंड, युगोस्लाविया अलबानिया, इटली, ... माल्टा	— ४।३०
[illegible] (...) ... और पश्चिमी यूरोप (ङ)	— ५।३०
[illegible]	— ५।१०
[illegible]	— ६।३०

पूर्वीय ब्राजील	— ८।३०
युरुगुआ	— ९।०
न्यूफाउण्डलेण्ड (च)	— ९।१
अटलांटिक केनेडा सेण्ट्रल ब्राजील	— ९।०
पूर्वीय केनेडा ६८से८९रेखांशपूर्वीय U.S.A स्टेटस चील, (छ) पेरु पश्चिमी ब्राजील	— १०।३०
मध्य केनेडा ८९ से १०३ रेखांशपर मध्य U.S.A. स्टेट्स ब्रिटिश होण्डर्स(ज)	— ११।३०
केनेडा (१०३ रेखांश से b.c.) हद तक स्टेट U.S.A.	— १२।३०
(पेसेफिक) ब्रिटिश कोलम्बिया, केलिफोर्निया नेवाड़ा आरगिन, वाशिंगटन	— १३।३०

टिप्पणी (क) अक्तूबर दूसरे रविवार से मार्च तीसरे रविवार तक + घं० ६ मि० ३० का अन्तर रहता है।

(ख) सितम्बर ता० १४ से दिसम्बर ता० १४ तक + घ.२मि०२०का अन्तर रहता है।

(ग) जून २० से सितम्बर ता० ३० तक अन्तर घं० २ मि० ३० रहता है।

(घ) अप्रैल ता० २२ से अक्तूबर ता० ७ तक अन्तर घं० ४ मि० ३० रहता है।

(ङ) फ्रांस और बेल्जियम के लिए ता० १९ अप्रैल से ता० ४ अक्तूबर तक अन्तर घं० ४ मि० ३० रहता है।

(च) मई के पहले रविवार से अक्तूबर के पहले रविवार तक घं० ८ मि० १ का अन्तर रहता है।

(छ) सितम्बर ता० १ से ३१ मार्च तक—घं० ९ मि० ३० का अन्तर रहता है।

(ज) अक्तूबर ता० १ से फरवरी ता० १४ तक घं० ११ मि० ० का अन्तर रहता है।

इस प्रकार उपरोक्त ... काम में लाते समय, समय का अन्तर अवश्य ध्यान में रखकर ... करें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❀ वेलान्तर कोष्ठक ❀

जन. मिनट	फर. मिनट	मार्च मिनट	अप्रेल मिनट	मई मिनट	जून मिनट	जुलाई मिनट	अगस्त मिनट	सित. मिनट	अक्टू. मिनट	नव. मिनट	दिस. मिनट
—४	+१४	+१२	+३	—३	—३	+३	+६	०	—९	—१६	—११
४	१४	१२	३	३	३	४	६	०	१०	१६	११
४	१४	१२	२	४	२	४	६	०	१०	१६	११
५	१४	१२	२	४	२	४	६	—१	१०	१६	१०
५	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
६	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
६	१४	११	१	४	२	४	६	२	११	१६	९
७	१५	१०	१	४	१	४	६	२	१२	१६	९
७	१५	१०	१	४	१	४	५	२	१२	१६	८
८	१५	१०	१	४	१	५	५	२	१२	१६	८
८	१५	१०	+१	४	१	५	५	३	१२	१६	७
८	१५	१०	०	४	—१	५	५	३	१३	१६	६
९	१५	९	०	४	०	५	५	४	१३	१६	६
९	१४	९	०	४	०	५	४	४	१३	१६	६
१०	४	९	०	४	०	५	४	४	१४	१६	५
१०	१४	८	०	४	०	६	४	४	१४	१६	५
१०	१४	८	—१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
११	१४	८	१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
११	१४	७	१	४	+१	६	४	६	१४	१५	३
[illegible]	१४	७	२	४	१	६	३	६	१४	१५	३
[illegible]	१४	६	२	४	१	६	३	६	१४	१४	२
[illegible]	१४	६	२	४	१	६	३	६	१५	१४	२
[illegible]	१४	६	२	४	१	६	३	७	१५	१४	१
[illegible]	१४	५	२	४	२	६	३	७	१५	१४	—१
[illegible]	१३	५	२	४	२	६	२	७	१६	१४	०
[illegible]	१३	५	२	३	२	६	२	८	१६	१३	+१
[illegible]	१३	४	३	३	२	६	२	८	१६	१३	१
[illegible]	१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
[illegible]	१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
		४	—३	३	+३	६	१	—९	१६	१२	३
		+४		—३		+६	+१		—१६	—१२	+३

स्टेण्डर्ड स्थानिक मध्यम काल और स्पष्ट काल

स्टेण्डर्ड (रेल्वे) टाइम से स्थानीय (लोकल) मध्यम टाइम और स्थानिक स्पष्ट टाइम बनाने की विधि यह है कि अक्षांशादि सारणी पृ० ९४, ९५, ९६ में प्रत्येक नगर के स्टेण्डर्डान्तर मिनट लिखे हैं, वे मिनट ऋण हों तो स्टेण्डर्ड टाइम में घटा देने से और धन हों तो जोड़ देने से स्थानिक मध्यम काल (लोकल मीन टाईम) होगा। इस मध्यम टाइम में देशान्तर कोष्ठक से उस तारीख का वेलान्तर लेकर — ऋण हो तो जोड़ने और + धन हो तो घटाने से स्थानिक स्पष्ट काल (लोकल टाइम) का मान होगा।

समय-भेद विवरण

आजकल प्रायः सर्वसाधारण ज्योतिषियों को "समय-भेद" का ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के पंचाङ्ग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से एक अपराध है। ज्योतिषियोंको चाहिये कि पहले इस भेद को भली भांति समझ कर तदनन्तर जन्मपत्र आदि बनावें। यहां एक बात का स्मरण रखना चाहिए कि जिस मान का जन्मटाइम हो उसी मान का जहां का जन्म हुआ हों वहां का सूर्योदय लेकर ही इष्ट शोधन करना चाहिये। अथवा जहां का जन्म हुआ हो वहां का जिस मान का सूर्योदय लिया हो उसी मान का जन्म टाइम बना कर इष्ट शोधन करना चाहिये। कई ज्योतिषी जन्म टाइम स्टेण्डर्ड लेकर दिनार्ध से या दिनमान से इष्ट बना लिया करते हैं यह भी सर्वथा अनुचित बात है। दिनमान से इष्ट करना हो तो जन्म टाइम भी स्थानिक दिनमान का टाइम (स्पष्ट टाइम) करना पड़ता है, तदनन्तर इष्ट बनाना आवश्यक है। सरकार ने अपने रेलवे आदि व्यवहारों की सुविधा के लिये एक स्थान के मध्यम टाईम को सर्वत्र मान लिया है, जिससे हिन्दुस्तान में चाहे जिस स्थान में सर्वत्र वही टाइम प्रचार में है और सर्वत्र एक ही समय रहा करता है। सन् १९०६ के पूर्व भारतवर्ष में मद्रास के टाइम को स्टेण्डर्ड टाइम माना गया था। तदनन्तर ग्रीनिच नगर से पूर्व की ओर ५॥ घंटे रेखांश ८२।३० पर भारत में जहां जो स्थान है वहां का स्टेण्डर्ड टाइम माना गया है, यह स्थान बनारस से कुछ पूर्व आता है, उस स्थान से कुछ प्रसिद्ध नगरों के स्थानिक मध्यम टाइम और स्टेण्डर्ड टाइम का अन्तर दिया है उसको स्टेण्डर्डान्तर लिखा है। नगरों के आगे जो स्टेण्डर्डान्तर मिनट है उसके ऋण धन चिन्ह हैं। जिनमें ऋण के चिन्ह हो वह नगर स्टेण्डर्ड स्थान से पश्चिम में समझें और धन चिन्ह हो तो पूर्व की ओर है ऐसा समझें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वर्षफल—प्राचीन सौर वर्षमान ३६५।१५।३१।३० है। इसी वर्षमान के अनुसार सब वर्ष बनाये जाते हैं। परन्तु आधुनिक विज्ञानवेत्ताओं ने सूक्ष्म [illegible]रा शुद्ध वर्षमान ३६५।१५।२२।५७ निर्धारित किया है। अर्थात् नवीन वर्षमान से प्राचीन वर्षमान, ८॥ पल अधिक है। इस प्रकार ८ वर्ष (७ [illegible] नवीन वर्षमान और प्राचीन वर्षमान से बनाये वर्ष के इष्ट में एक घटी का अन्तर पड़ जाता है और आगे अधिक शताब्दों में अधिक अन्तर पड़ने से [illegible] बदल जाता है। पूना, बम्बई, मद्रास आदि के ज्योतिर्विज्ञानवेत्ताओं का मत है कि वर्ष का फलादेश इसी नवीन मान से बनाये गये वर्ष का ही ठीक [illegible]र कई स्थलों पर हमने भी देखा है कि इसी नवीन मान से फल ठीक घटित होता है। यहाँ विद्वानों के लिए हम नवीन और प्राचीन मान की [illegible]श सारिणियां दे रहे हैं—

वर्षयोगिनीमते मुद्दादशा

मं.	पिं	धा	भ्रा.	भ.	उ	सि	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

वेधसिद्धनवीनवर्षमानानुसारेण वर्षप्रवेश सारिणी

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
[illegible]	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
[illegible]	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
[illegible]	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
[illegible]	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
[illegible]	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
[illegible]	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
[illegible]	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
[illegible]	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीन मान से वर्ष प्रवेशसारिणी

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
[illegible]	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
[illegible]	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
[illegible]	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
[illegible]	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
[illegible]	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
[illegible]	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
[illegible]	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
[illegible]	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

मुद्दादशा विधिः जन्म-नक्षत्र की संख्या में गत वर्ष जोड़के २ घटा दें. ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़ें, २ और जोड़ें, ८ से शेष करें तो मङ्गलादि योगिनी दशा होती है।

मुद्दादशा क्रमशो ग्रहा मा दि.

	मा	दि.
१ सूर्य	०	१८
२ चन्द्र	१	०
३ मंगल	०	२१
४ राहु	१	२४
५ गुरु.	१	१८
६ शनि	१	२७
७ बुध	१	२१
८ केतु	०	२१
९ शुक्र	२	०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दशमलग्न सारिणीयम् (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	० मेष	१ वृषभ	२ मिथुन	३ कर्क	४ सिंह	५ कन्या	६ तुला	७ वृश्चिक	८ धनु	९ मकर
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारिणी पलभा ६।३२ वर्षादी केतकी अयनांशाः

अंशाः	० मेष	१ वृषभ	२ मिथुन	३ कर्क	४ सिंह	५ कन्या	६ तुला	७ वृश्चिक	८ धनु	९ मकर	१० कुम्भ	११ मीन
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ज्योतिष की दृष्टि में आगामी विश्व

[illegible] परमानन्द "नन्द" बी.ए. आयुर्वेदरत्न, लाडनूँ, राज.)

[illegible]ष्य के बारे में उत्सुकता और उसे जानने की इच्छा अत्यन्त प्राचीन [illegible] सभी मानव प्राणियों में रही है। राजा, रंक, व्यवसायी, नागरिक सभी [illegible] और साथ ही अपने देश का भविष्य जानना चाहते हैं। और इस [illegible]ज्ञान की प्राप्ति प्रायः ज्योतिष शास्त्र के द्वारा होती है।

[illegible] वर्तमान कांग्रेसी सरकार के बड़े-बड़े मन्त्री और प्रधानमन्त्री, जो विना [illegible] अध्ययन और मनन के अपने आप को प्रत्येक विद्या में पण्डित मान बैठे हैं, [illegible] कथनों पर कीचड़ उछालने का असफल प्रयास करते हैं। उनका कहना [illegible] भविष्य की चिन्ता करने से मनुष्य कायर और उत्साह हीन बनता है। किन्तु [illegible] समझना यह विचार भ्रामक और मूर्खता पूर्ण है। भविष्य की जानकारी [illegible] प्रकार से हानिकारक नहीं हो सकती। जब आने वाले अच्छे समय की [illegible] की जाती है तो व्यक्ति अपने सम्पूर्ण उत्साह और साहस के साथ उस [illegible] पहुँचने के लिये प्रयत्न करना प्रारम्भ कर देता है। दूसरी ओर यदि [illegible] हुआ तो व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण बुद्धि और योग्यता के साथ उससे [illegible] की तैयारी करता है। इतना ही नहीं, ज्योतिष के द्वारा तो [illegible] को [illegible] भी जा सकता है, अस्तु। भविष्य सम्बन्धी हर प्रकार की [illegible] इसका अध्ययन और मनन करना चाहिए। [illegible] संसार प्रसिद्ध विचारकों, भविष्यवक्ताओं [illegible] के विचारों का अध्ययन और मनन करें।

[illegible] अत्यन्त प्राचीन हस्तलिखित ज्योतिष [illegible] जिसका अनुवाद बहुत [illegible] की कुण्डली दी गई है [illegible] विश्व-कुण्डली पर विचार किया गया है। [illegible] ज्योतिष की [illegible] सुन्दर और [illegible] बातें इस प्रकार हैं—

(१) तृतीय विश्वयुद्ध के पूर्व पाकिस्तान का भारत में विलय हो जायेगा। (२) सन् १९७२ के बाद [illegible]

(३) सन् १९७३ से १९७८ में दो नयी शक्तियां उदय होंगी। रूस और अमेरिका परस्पर अभिन्न मित्र बन जायेंगे तो दूसरी ओर फ्रांस, चीन और जर्मनी का गठबन्धन होगा।

(४) अफ्रीका के छोटे-छोटे राष्ट्र पुनः सैनिक गठबन्धनों में बंधकर अपनी आजादी खो देंगे।

(५) सन् १९८३ के आसपास निश्चय ही तृतीय महायुद्ध आरम्भ होगा और यह पूर्णतः अणु-परमाणु युद्ध होगा। विश्व के पूर्वीय स्थल पर युद्ध का उदय होगा और संसार का प्रत्येक छोटा, बड़ा राष्ट्र इस युद्ध में उलझेगा। सन् १९८४ के सितम्बर तक भारत युद्ध में कूदेगा और नवम्बर ८५ में यह युद्ध समाप्त होगा।

(६) भारत को उक्त तृतीय महायुद्ध में सर्वाधिक लाभ होगा और युद्ध के बाद वह प्रमुखतम शक्ति के रूप में रहेगा।

(७) सन् १९९७ से आगे का समय विश्व के लिये अत्यन्त सुखकर है।

इंगलैण्ड के सबसे बड़े ज्योतिषी और हस्त-रेखा-विशेषज्ञ 'कीरो' का नाम आज भी समस्त संसार में अपनी सच्ची भविष्य वाणियों के लिये प्रसिद्ध है। उन्होंने 'वर्ल्ड प्रिडिक्शनस्' नामक अत्यन्त लोकप्रिय और आश्चर्यजनक पुस्तक लिखी है। पाठकों की जानकारी के लिये उक्त पुस्तक की मुख्य-मुख्य भविष्य वाणियां यहां उद्धृत की जा रही हैं—

(१) आगामी पचास या कुछ न्यूनाधिक वर्षों में अटलांटिक महासागर के तल में कुछ ऐसा अन्तर पड़ जायेगा कि अमेरीका का बहुत या पूर्वी हिस्सा, इंगलैण्ड, रूस, जर्मनी और फ्रांस आदि देशों के उत्तरी भाग इतने ज्यादा ठण्डे हो जायेंगे कि वहां मनुष्यों का रहना कठिन हो जायेगा। इसके विपरीत भारत, मिश्र और अफ्रिका की गर्म जलवायु सर्द जलवायु में बदल जायेंगी।

(२) सन् १९८० के आस पास निश्चय ही एक भयंकर विश्व-युद्ध होगा जिसके बाद यहूदी अथवा इसराईल जाति के लोग सम्पत्ति और शक्ति में खूब तरक्की करेंगे।

(३) आगामी युद्ध में मजदूरों की प्रधानता होगी और कम्युनिज्म का सिद्धांत ही उस युग का धर्म बन जायेगा। ईसाई धर्म में भी बड़ी क्रांति हो जायेगी और [illegible] से बड़े अजीब सिद्धान्तों का प्रचार किया जाने लगेगा।

अमेरिका की विचित्र भविष्यवक्ता श्रीमती 'जेन डिक्सन' आज सारे संसार में प्रसिद्ध है। इस रहस्यमय नारी ने दो अमेरिकी राष्ट्र पतियों की मृत्यु और भारत के विभाजन की सच्ची भविष्यवाणी की थी। बचपन में इस महिला का हाथ देखकर एक रहस्यमय जिप्सी ने इसे एक 'क्रिस्टल बाल' दी थी, जिसमें वह आज भी भविष्य की घटनायें देख लेती है। 'जेन डिक्सन' की भविष्यवाणियों में कहा गया है कि—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(१) अमेरिका को जाति-समस्या और चीन की समस्याओं का भयंकर सामना करना पड़ेगा।

(२) बहुत से अफ्रीका और एशियाई देश सन् १९८० में निश्चय ही [illegible]द्ध छेड़ेंगे। वियतनाम और कोरिया के झगड़ों के कारण चीन से अवश्य-युद्ध होगा।

(३) इतिहास बताएगा कि अमेरिका के लिये 'अणुबम निरोधक संधि' [illegible]रक होगी और आणविक हथियार स्वयं अमेरिका के विरुद्ध प्रयुक्त किये।

(४) चीन रूस पर आक्रमण करेगा, लेकिन यह युद्ध रूस की सीमा तक ही इस युद्ध में रूस और अमेरिका एक साथ होंगे।

(५) १९६१ से १९६९ तक अमेरिका में तीन राष्ट्रपति होंगे। रिपब्लिकन [illegible]९६८ में चुनाव जीतेगी।

(६) मध्य पूर्व में ५ फरवरी १९६२ को जन्म लेने वाला बालक संसार में [illegible]ा करेगा। संसार के सभी धर्मों को वह संगठित करेगा। यह व्यक्ति सन् [illegible] बाद संसार में शांति स्थापित करेगा।

(७) सन् १९८० के आगे का समय विश्व के लिये अत्यंत कल्याणकारी और [illegible]यक है।

[illegible]इसराईल राष्ट्र के आत्मदर्शी विद्वान् प्रो० हरार ने हिटलर की मृत्यु का [illegible] ही बताकर एवं दो भूकम्पों एवं एक विनाशकारी समुद्री तूफान की [illegible]णी कर अपना नाम सच्चे भविष्यवक्ताओं में लिखा लिया है। आपकी [illegible]लिखित नवीन भविष्यवाणियां अत्यंत प्रसिद्ध लोगों की गवाहियों के साथ टेप की गई हैं —

(१) राष्ट्रपति जानसन अमेरिका के १९६८ के चुनाव में हारेंगे। (नवीन [illegible] अनुसार अब राष्ट्रपति चुनाव में खड़े ही नहीं हो रहे हैं—लेखक)

(२) सन् १९६९ में वियतनाम का युद्ध समाप्त होगा। इसमें अमेरिका को [illegible]मिलेगी।

([illegible]३) सन् १९६८ में राष्ट्रपति नासिर की हत्या करदी जायेगी।

([illegible]) सन् १९६९ में अरबों और इजराईल में युद्ध छिड़ेगा जिसमें दोनों की [illegible] हो जाने के बाद सन्धि हो जायेगी।

([illegible]) सन् १९७० में रूस और चीन के बीच मंगोलिया और साईबेरिया के [illegible] होगा जिसमें अणु शस्त्रों का प्रयोग किया जायेगा और इसका प्रभाव [illegible] पर पड़ेगा। साथ ही इसी वर्ष एक भीषण तूफान भी आयेगा जिसमें [illegible]नान, जोर्डन और अधिकांश इजराईल नष्ट हो जायेगा।

भारत में भी सच्चे भविष्यवक्ताओं की कमी नहीं है, किन्तु सहयोग के अभाव और सरकारी रुख के कारण उन्हें अधिक ख्याति नहा मिलती और न ही विशेष प्रचार होता है। भारत के सभी प्रमुख समाचारपत्रों ने यह स्वीकार किया है कि 'श्रीविश्वविजय-पंचाग' अपनी सच्ची भविष्यवाणियों के लिये विशेष प्रसिद्ध है। उक्त पंचाग के सम्पादकजी की भविष्यवाणियां, जा अभी तक सच्ची होती आयी है नये पंचाग और 'ज्योतिष्मती' में पढ़ते रहियेगा।

पत्रकार की दृष्टि में 'भावी विश्व'

[ले०—श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार,]

एम—११८ कनाट सर्कस नई दिल्ली—१

[इस लेख के विद्वान् लेखक श्री अवनीन्द्रजी भारतीय आर्य-संस्कृति के पोषक सुप्रसिद्ध पत्रकार हैं। अनक दनिक साप्ताहिक मासिक पत्रों के आप सम्पादक रह चुके हैं। मेरा इन से ३० वर्ष पुराना मैत्री सम्बन्ध स्नेह सहयोग के रूप में वृद्धिगत हो रहा है। 'श्रीविश्वविजय-पंचांग, के इस रजतजयन्ती-अङ्क के लिए आपने यह उपयोगी लेख लिखा है। आप दैवज्ञ नहीं हैं, परन्तु पत्रकार की व्यापक दृष्टि एवं सर्वतोमुखी प्रतिभा हाती है। इतिहास और अर्थशास्त्र के आप मर्मज्ञ हैं। अतः इस लेख में प्रदर्शित भावी विचार सम्बन्धी बातें केवल कल्पना ही नहीं, भावी ग्रहगति से भी वे अधिकांश में मेल खाता हैं। इस लिए पूरा लेख प्रकाशित किया जा रहा है। मित्रता के नाते श्री अवनीन्द्रजी ने दस लाख से अधिक संख्या में प्रकाशित होने के विश्वास के साथ लिखा है—

"श्री त्रिवेदीजी को स्वर्ण-जयन्ती मनाने का विश्वास प्रतीत नहीं होता, सम्भवतः इसी कारण वे रजत-जयन्ती महोत्सव सूखा ही सूखा मना रहे हैं।" इसके लिए सहयोगी बन्धु श्रीअवनीन्द्रजी से इतना ही निवेदन है कि इस वर्ष जब भारत में कहीं अतिवृष्टि और कहीं अनावृष्टि से त्राहि-त्राहि मची है, विशेषतः मेरी जन्म-भूमि राजस्थान भयंकर सूखा ग्रस्त है, ऐसी स्थिति में मैं हरे-भरे आर्द्र रूप में रजत जयन्ती कैसे मना सकता हूं? स्नेही पाठकों के अनुरोध से ही इस रजत-जयन्ती अङ्क का आयोजन कुछ विशेष साहित्य-उपयोगी लेखों के रूप में किया है। वर्तमान विषम परिस्थिति में सूखा हरा-जैसा भी बन पड़ा सादर समर्पित है। सहृदय पाठकों का स्नेह पाकर सूखा भी हराभरा हो सकता है ऐसा मुझे विश्वास है।]

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[illegible]श्वविजय पंचांग' की रजत-जयन्ती पर उसको बधाई देने के लिए इस [illegible] की कलम-उठी है। १९८३ में 'श्री विश्वविजय पंचांग' अपना नाम [illegible] एवं दस लाख से अधिक संख्या में मुद्रित व प्रकाशित हो, इस विश्वास [illegible] उठाई है। श्री त्रिवेदी जी की लगभग तीस साल पुरानी मैत्री का [illegible]है, परन्तु श्री त्रिवेदी जी को स्वर्ण जयन्ती मनाने का विश्वास प्रतीत नहीं [illegible]वतः इसी कारण वे रजत जयन्ती महोत्सव सूखा ही सूखा मना रहे हैं। [illegible]विजय पंचांग' की स्वर्ण जयन्ती बीसवीं शताब्दी समाप्त होने से पहले हो [illegible] भावी विश्व की सीमा को इससे और आगे बढ़ाना उचित न होगा। [illegible] दूर की बात सोचना उस व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं, जो भारत से [illegible] नहीं गया, और जो फ्रेंच, जर्मन, रूसी और स्पेनिश आदि भाषायें नहीं [illegible] इस देश में यह धारणा दृढ़ की जा रही है कि अंग्रेजी विश्व-भाषा है, [illegible]य भाषा है। यह भ्रमात्मक प्रचार वही लोग करते हैं, जो ब्रिटिश साम्राज्य [illegible] और भारत में ब्रिटिश भाषा कायम रखना चाहते हैं और जनता का [illegible]स्थापित नहीं होने देना चाहते। १९२० में अदालतों का बहिष्कार किया गया [illegible]न्तु आज भी ब्रिटिश कानून भारत में चल रहे हैं। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी [illegible] हुई है। वस्तुतः भारत के शासक अंग्रेजी के प्रचारक हैं और भारत को [illegible] का बाजार बनाये हुए हैं।

[illegible] ही तीसरे विश्व युद्ध का एक कारण होगी। भारत [illegible] भारत में भारतीय जनता का स्वतन्त्र राज्य [illegible] ने केवल सत्ता का हस्तान्तरण किया। [illegible] किन्तु वह शासन सत्ता अपने विश्वस्त [illegible] शान्तिपूर्ण रीति से और कृपा [illegible] करेगा। भारत से ब्रिटिश भाषा [illegible] ब्रिटिश कानून, ब्रिटिश सभ्यता, एवं ब्रिटिश नैतिक सदाचार का तब अन्त [illegible]

[illegible] और यूरोप का अन्त नहीं हुआ। दूसरे [illegible] का अन्त नहीं हुआ। क्योंकि [illegible] सम्पूर्ण एशिया [illegible]

[illegible]

ये मूर्तियां भारत सन्तान को लेटिन अमेरिका में बुला रही है और कह रही हैं कि कभी तुम्हारे पूर्वजों ने यहां भय और इनकी सभ्यता एवं संस्कृति की स्थापना की थी, जिनके वंशज आज भी एंडेन पहाड़ी पर बसे हुए हैं। स्पेशिनों के क्रूर नर-संहार से बचे भारतीय भारत को पुनः वहां आने का निमंत्रण दे रहे हैं। उनके इस निमंत्रण को भारत ने अभी तक सुना नहीं है। परन्तु मार्शल अयूब खां के कानों में यह ध्वनी पड़ी है। भूत भविष्य होता है, और अतीत भावी में परिणत होता है; इस पर विश्वास करये वाले मार्शल अयूब खां इससे चिन्तित हैं। उन्होंने १९६५ में (फारेन अफेयर्स) अमेरिका से कहा था, भारत को सशक्त और बलवान् बनाने में सहायता न दो। हिन्दू ने यदि हथियार उठा लिया, तो वह वृहत्तर भारत का निर्माण करेगा, और उसकी सीमा तीमोर द्वीप न होगा (आज यह टापू पुर्तगाल के अधिकार में है) बल्कि लेटिन अमेरिका होगा, क्योंकि हिन्दू विश्वास करते हैं कि भय सभ्यता को फैलाने वाले उनके पूर्वज थे। इस सत्य को पेरू देश के इतिहास लेखक ने स्वीकार किया है। मैक्सिको और पेरू में सीता-राम का उत्सव मनाया जाता रहा है। वृहत्तर भारत का निर्माण तीसरे विश्व-युद्ध के बाद ही प्रारम्भ होगा, क्योंकि तभी, विभक्त भारत संयुक्त होगा। संयुक्त भारत ही इस युग के महानतम व श्रेष्ठतम भारतीय ऋषि दयानन्द की इस वसीयत को पूरा करने का भार लेगा।

"जब तक पुनः भारत का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य स्थापित न होगा, तब तक विश्व में शान्ति स्थापित न होगी।" युग प्रवर्तक ऋषि का यह वचन मिथ्या नहीं हो सकता, अतः तीसरे विश्व-युद्ध के बाद पुनः भारत सन्तान लेटिन अमेरिका पहुँचेगी और निर्जन पड़े अमेजन घाटी को बसायेगी। लेटिन अमेरिका में स्पेनिश और पुर्तगाली समुद्र तट के किनारे-किनारे बसे हुए हैं। इन देशों की संख्या २० है। इनकी संख्या २० करोड़ है। अतः सरलता से ३-४ करोड़ भारतीय लेटिन अमेरिका में जाकर बस सकते हैं। मार्शल अयूब खां की नींद यह सोच कर ही गायब हो गई है। परन्तु विभक्त भारत यह सोच नहीं सकता। तीसरा महायुद्ध पाकिस्तान का अन्त करेगा।

भारत का विभाजन एवं पाकिस्तान की स्थापना तीसरे विश्व-युद्ध का मुख्य कारण होगा।

एक दृष्टि से दूसरा महायुद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है। जर्मनी और रूस एवं रूस और जापान के बीच आज तक भी स्थायी शान्ति सन्धि नहीं हुई है। युद्ध-विराम सन्धि ही हुई है। जैसे काश्मीर में हुई है। अतः विभक्त जर्मनी ही नहीं, यह युद्ध-विराम की कृत्रिम स्थिति तीसरे विश्व युद्ध को जन्म दे रही रही है।

पहले महायुद्ध के बाद जर्मनी के उपनिवेश छीन लिए गए थे। उपनिवेशों का छीना जाना दूसरे महायुद्ध का कारण हुआ। जर्मनी बलवान न हो, इस वास्ते [illegible] ने प्रशिया [illegible] किया गया, और जर्मनी का अंग-भंग किया गया। [illegible] का बड़ा भाग अधिकार में कर लिया। इतना ही नहीं, इस भू-भाग से जर्मनों को [illegible] निकाल दिया गया, जिससे भविष्य में जर्मन कभी इस प्रदेश की मांग न करें, जैसे कि १९३९ में हिटलर ने सुडेटन लैंड को मांगा था।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जित जर्मनी ने यह दण्ड सहा। उसने अपने ऊपर लगाये प्रतिबन्धों को
। परन्तु, जर्मन राष्ट्र ने इस अपमान और अपहरण को भुलाया नहीं।
शान्ति उसकी छीन ली गई, उसके कल कारखाने उठा ले जाये गए।
हिटलर ने जिस जर्मनी का निर्माण किया था, वह मरा नहीं। फलतः आज
जार में दुर्लभ मुद्रा डालर नहीं है, मार्क हो गया है। भारत का रुपया विश्व
र मुद्रा नहीं बना, क्योंकि रुपये को भारत के शासकों ने स्टर्लिंग से नत्थी
और ब्रिटिश-भक्ति के कारण जर्मन-इन्जीनियरों, शिल्पियों की सहायता से
त के कारखाने तैयार करने से इन्कार कर दिया। मार्क की बढ़ती अमेरिका
सकता। जर्मन एक हो, शान्ति हो, यह रूस और फ्रांस को अभिष्ट नहीं
दो साल पहले बान में जर्मन पार्लमेंट का उद्घाटन करते हुए जर्मन
ल्युबेक ने मंत्रीमण्डल से और सरकार से कहा था कि उसका सर्वप्रथम
य कार्य जर्मनी को शीघ्र से शीघ्र संयुक्त करना है। यूरोप में एकमात्र
आर्य होने का अभिमान है। उन्होंने इसी कारण स्वस्तिक चिन्ह को
ड़ा। भारत के झण्डे पर स्वस्तिक नहीं है, पर जर्मनी के झण्डे पर है।
अपना झण्डा गीत भी भुला दिया है:—

"विश्व-विजयी तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा"

तु जर्मनों आर्यों ने इसको भुलाया नहीं है।
क्त जर्मनी बिना युद्ध के संयुक्त होगा नहीं, यह रूस ने १९५६ में बुडापेस्ट
में टैंक भेज कर और अगस्त १९६८ में प्राग में रूसी टैंक और वार्सा
कर बता दिया है। दूसरे महायुद्ध में विजित भू-भाग को रूस छोड़ने को
नहीं है। अतः रूस और जर्मनी की टक्कर होना अनिवार्य है। रूस, जर्मनी
वैर पुराना है। नैपोलियन के समय से यह चला आ रहा है। तब जारोंने
न की सहायता से प्रशिया का विनाश किया था। अतः रूस और जर्मनी
र ही विश्व-युद्ध को प्रारम्भ करेगी। अमेरिका असमंजस में रहेगा। वह
का पक्ष लेगा न रूस का। वह इनमें जिसको विजयी होता देखेगा, उसका
: क्योंकि उसको चीन से लड़ना है।
और चीन परस्पर न लड़ें, यह सम्भव है, पर यह सम्भव नहीं कि चीन
का युद्ध में न कूदें। क्योंकि फारमोसा में आज भी च्यांग काई शेक
यह बूढ़ा, चीनी पुनः चीन लौटने का स्वप्न देख रहा है। माओत्से
अमेरिका से लड़क रही समाप्त कर सकता है। अतः अमेरिका के सातवें
सागर में संचार करते रहते, माओ-त्से तुंग का मनोरथ पूर्ण न होगा,
न-कार्य पूर्ण होगा। अतः चीन-अमेरिका महासागर में भाग लेने को
यह इस बात का निर्णय करेगा कि रूस अमेरिका का साथ देता है, या
क्योंकि दोनों ही अवस्थाओं में उसको एशियाई रूसी साम्राज्य का त्याग
। चीन रूस का मित्र उसी अवस्था में हो सकता है, जब रूस चीन का
उसको वापिस कर दे, जैसे उसने मंचूरिया वापस कर दिया है। यदि
का पक्ष लिया, तो जापान अमेरिका की ओर से लड़ेगा और सखालिन

द्वीप समूह से रूस को निकाल देगा।

चीन का मित्र बनने से रूस विश्व की एक शक्ति न रहेगा। अतः विश्वप्रभुत्व
पाने की आकांक्षा में रूस अमेरिका का मित्र और चीन का वैरी होगा। इससे उसको
दो मोर्चों पर लड़ना पड़ेगा। एशियाई मोर्चे पर उसको न लड़ना पड़े, इस विचार
से वह भारत की सहायता लेगा, पाकिस्तान की मदद नहीं। यदि यह हुआ, तो रूस,
अमेरिका और भारत एक पक्ष में होंगे और यूरोप के समान भारत इस बार रणक्षेत्र
बनेगा। भारत युद्ध से अलिप्त न रह सकेगा। विभक्त भारत के लिए सम्भव नहीं है।

क्योंकि पाकिस्तान या इस्लामिस्तान आज की विभक्त स्थिति में जीवित नहीं
रह सकता। दोनों पाकिस्तानों के मध्य १००० मील का अन्तर है। यह अन्तर
पाकिस्तान भारत-विजय करके ही पूरा कर सकता है। दूसरा तरीका है, इस्लाम
अपने को बदले। वह वेद, रामायण, और महाभारत को राष्ट्रीय सम्पत्ति माने और
राम-कृष्ण को राष्ट्र पुरुष और पूज्य पुरुष माने। उसके साथ वह उर्दू लिपि—विदेशी
लिपि का त्याग करे। आज का इस्लाम अपने को भारतीय रंग में रंगने को तैयार
नहीं है। वह पूर्णतः अराष्ट्रीय और अभारतीय है। अतः पाकिस्तान चीन का पक्ष
लेकर लड़ेगा और आशा करेगा कि चीन उसको असम विजय करके दे देगा। भारत
में काश्मीर, पंजाब और राजस्थान के समान असम भी एक मुख्य रण-क्षेत्र होगा।
चीनी सेना की टक्कर यहीं अमेरिका से होगी। चीन फारमूसा पर नौ-हमला करने
का साहस न करेगा। असम की लड़ाई भारत के लिए ही नहीं एशिया के लिए भी
भाग्य-निर्णायक सिद्ध होगी क्योंकि चीन की मदद पाकिस्तान को पश्चिम में न
मिलेगी। इधर उसको अकेले भारतीय सेना से लड़ना होगा। भारत की शूरता,
वीरता और सूझबूझ ने पहले हमले में रावलपिण्डी, करांची और लाहौर को भूमि-
सात कर दिया, तब इस्लामिस्तान शीघ्र ही आत्म-समर्पण कर देगा। इस्लाम में
वीरता नहीं है। यह अरब इजराईल संघर्ष ने बता दिया है। अतः भारत-पाक
संघर्ष काश्मीर-युद्ध सम्भवतः लम्बा न चलेगा। जर्मनी ने जैसे १९४० में नीदरलैंड
और फ्रांस को दो पक्षों में समाप्त कर दिया था, ठीक उसी प्रकार भारत पहले ही
आघात में पाकिस्तान को आत्म-समर्पण करने को बाध्य करेगा। पाकिस्तान का
आत्म-समर्पण भारत से इस्लाम का उसी प्रकार अन्त कर देगा, जैसे बौद्धधर्म का
भारत से अन्त हो गया। इस्लाम भारत में यह अन्तिम लड़ाई लड़ेगा।

चीन यदि अमेरिका से भिड़ा जैसा कि वह बहुधा भाव प्रदर्शित करता रहता
है, तो चीन में गृह-युद्ध होना सम्भव है। फारमूसा (तैवान) में बैठा मार्शल च्यांग
काई शेक का पुत्र चीन की भूमि पर सेना उतारेगा, और दक्षिणी चीन-कैंटन को
चीन से अलग कर लेगा। कैंटन के अलग होने का परिणाम होगा कि सभाईं मंचू-
रिया पर्वतीय चीन भी पृथक हो जायेंगे। बाह्य मंगोलिया के साथ अन्तर मंगोलिया
हो जायगा। बाह्य मंगोलिया, आज भी रूसी संरक्षण में है। चीन के संकट का
लाभ उठाकर तिब्बत १९१२ के समान स्वाधीन हो जायगा, और भारत सरकार के
संरक्षण में आ जायगा। तिब्बत की आज की पराधीनता का कारण श्री नेहरू का
तिब्बत को संरक्षण देने से इन्कार करना है। कोरिया संयुक्त होगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मंचूरिया हस्तगत करने की कोशिश करेगा। और पराजय का
१६११ में डा० सनयात सेन ने मांचू साम्राट् यूआना शिकाई की
चीनी गणतंत्र राज्य की स्थापना की थी। मांचू चीनी नहीं है, और
तक चीनीकरण हुआ है। अतः चीन में पुनः प्रबल सेना पतियों के
[illegible] और उसका छिन्न-भिन्न होना सम्भव है। बीसवीं शती के अन्त में
[illegible] शक्ति न होगा, जैसे कि वह इस शती के प्रारम्भ में है। आग्नेय-
संरक्षण पाने के लिए भारत का पल्ला पकड़ेंगे। जैसा कि अरबों का
हमला होने से पहले था। इस भाग में हिन्दू धर्म पुनः फैलेगा, और
ईसाइयत की दासता का चिन्ह मानने के कारण अन्त होगा, फलतः
[illegible] और भूतान एक प्रान्त होकर भारत में सम्मिलित होंगे। नेपाली
[illegible] साभिमान भारतीय कहेंगे।
[illegible] भारत संघ राज्य यूनिटरी (एकावयवी) शासन में परिणत होगा।
[illegible] सरकारों का अन्त होगा। पर, भारत संघ राज का अन्त न होगा। नूतन
राज्य में बर्मा, सीलोन अफगानिस्तान और आग्नेय एशिया के अनेक
[illegible] इन्डोशिया इसका एक सदस्य होगा। इस प्रकार बृहत्तर भारत के निर्माण
[illegible] का आधार स्थापित होगा। भारतीय साइबेरिया और लेटिन अमेरिका
करेंगे। भारत की जनसंख्या की कमी की समस्या परेशान करेगी। यह
राज्य एशिया के एक बड़े भाग में शान्ति स्थापित करने में सफल होगा।
[illegible] पर्वत उत्तर में होगी और दक्षिण में अमेजन घाटी। कनाडा
[illegible] दुनिया से ब्रिटिश साम्राज्य समाप्त
मिल जायगा। और इस प्रकार नई दुनिया से ब्रिटिश साम्राज्य समाप्त
[illegible] राज्य है, और वह आज तक कनाडियन राष्ट्रीयता
[illegible] उनके लिए नियाना, फीजी और मारीशस भारत
[illegible] यदि भारत की भी सेना और हवाई सेना प्रबल होगी।
[illegible] बस्तियां हैं। पूर्वी अफ्रीका भी भारत को शरण
[illegible] भारत को देने का प्रस्ताव किया गया
[illegible] के लिये और दूसरे महायुद्ध
[illegible] करेगा। अरब राष्ट्रीयता
[illegible] करने का प्रयत्न करेगा। अरब राष्ट्रीयता
[illegible] परन्तु मोरक्को, अल्जीरिया इस मिस्री
[illegible] "[illegible]" विश्व-विद्यालय
[illegible] अफ्रीका दो या तीन भागों में
[illegible] मण्डल में सम्मिलित न
[illegible] और जर्मनी के आर्थिक [illegible]
[illegible] होगा। दक्षिणी अफ्रीका [illegible]
[illegible] अमेरिका [illegible] जायगा। [illegible]
[illegible] का प्रभुत्व [illegible] से अफ्रीका
[illegible] फ्रांस या जर्मनी के हाथ [illegible]
[illegible] पर आर्थिक दृष्टि से नहीं।
[illegible] अमेरिका के प्रभुत्व से
[illegible] अमेरिका के बीस देशों से [illegible] अमेरिका का प्रभुत्व [illegible]
[illegible] है। शेष किसी न किसी [illegible]

हैं, और संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका की इच्छानुसार वोट देते हैं। युद्धोपरान्त इस
स्थिति में मामूली परिवर्तन होगा। मध्य अमेरिका और आमेजन घाटी में भारतीय
बस्ती के बस जाने और उसका एक सुव्यवस्थित राज्य बन जाने पर और उसके
भारत संघ राज्य का सदस्य होने पर लेटिन अमेरिका स्वरूप बदलेगा। स्पेनिश और
पुर्तगाली बड़ी संख्या में अमेरिका और कनाडा चले जायेंगे और जो लोग शेष रहेंगे,
वह इस नूतन भारतीय राज्य के नागरिक हो जायेंगे। मार्शल अयूब खाँ इस संभा-
वना की कल्पना से ही परेशान हैं और समय-समय पर अमेरिका को सावधान करते
रहते हैं। भारत वस्तुतः 'विश्व-शान्ति' की स्थापना का सूत्रधार होगा।
नवीन संयुक्त राष्ट्र का नेतृत्व भारत-जर्मनी, जापान और अमेरिका होंगे। एच०
जी० वेल्स ने जिस एशिया के पुनः उदय होने की आशा प्रथम महायुद्ध के बाद की
थी, वह एशिया तीसरे महायुद्ध के बाद उदय होगा। इसका नेता और प्रमुख भारत
होगा, चीन नहीं।

यूरोप का नक्शा फिर बदलेगा। रूस अनेक राज्यों में विभक्त होगा। १६४२ में
हिटलर ने आशा बांधी थी कि यूक्रेन और श्वेत रशिया विद्रोह करके रूस से अलग
हो जायेंगे। परन्तु हिटलर की आशा पूर्ण न हुई। परन्तु तीसरे महायुद्ध का लाभ
लेकर ये दोनों स्वतंत्र हो जायेंगे, और ये आज भी संयुक्त राष्ट्र के सदस्य हैं, जैसे
नेपाल है। इसी प्रकार एशियाई रूस रूस से अलग हो जायेगा। मध्य एशिया में पुनः
कुड़णाल का गीत गुंजरित होगा। रूस और चीन को मध्य एशिया खाली करना
होगा। मध्य एशिया का नया राज्य भारत संघ राज्य का सदस्य होगा। तुर्की
केस्पियन सागर का उत्तरी भाग पुनः प्राप्त करने में सफल होगा। ईरान भी अपना
खोया उत्तरी भाग पुनः प्राप्त करेगा। इस कारण शकसमान, पारतिक और हिरात
को यह भारत को खुशी-खुशी देना स्वीकार करेगा और पुनः पारसी धर्म को वह
ग्रहण करेगा, इस्लाम को वह दासता का धर्म मानेगा। यूरोप के छोटे-छोटे राज्य
अपने को संगठित करने में सफल होंगे। जर्मनी के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए
वह इस मार्ग को ग्रहण करेगा। स्पेन-पुर्तगाल मिलकर अरेबियन राज्य बनायेंगे और
स्वीडन, नार्वे, डेन्मार्क, और फिनलैंड मिलकर एक स्कैंडेनेवियन राज्य का निर्माण
करेंगे। फ्रांस बेल्जियम और इंगलैण्ड को अपनी मैत्री में बांधेगा। आस्ट्रिया जर्मनी
का एक प्रान्त होगा। पोलैण्ड और चेकोस्लोवाकिया, स्वतंत्र रहेंगे, पर जर्मन मण्डल
के अन्तर्गत होगा। ब्रिटेन का "मुरारे स्तृतीयः पन्थ" कायम रहेंगे। वह तृतीय
युद्ध में लाभ भर को रहेगा। अतः उसके सामने कोई नई समस्या न आयेगी। वह
१६वीं शती के समान पुनः एक यूरोपियन लघु राष्ट्र हो जायगा।

भावी विश्व का नया यह स्वरूप कहा जा सकता है कि यह इस लेखक की
कल्पना-प्रसूत चित्र है। क्योंकि—

"जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।"

परन्तु मुख्य प्रश्न है तीसरा महासमर कब छिड़ेगा? इसके लिये कुछ कसौटियां
ही पेश की जा सकती हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

) जर्मनी पर इस समय अनेक प्रतिबन्ध लगे हुए हैं। वह शस्त्रीकरण में जब ..., उसके पांच-सात साल बाद युद्ध होगा। यथा १९३९ में हिटलर को हिण्डन बर्ग ने चांसलर बनाया और जर्मनी ने सेना का निर्माण प्रारम्भ १९३९ में जर्मनी ने रण-घोषणा कर दी। अतः जब ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका ... अणुबम बनाने पर आपत्ति न करेगा। उसके सात साल या दस साल बाद प्रारम्भ होगा।

१९३१ में जापान ने मंचूरिया हस्तगत किया था। इसके ठीक दस साल ...न ने मनीला और हवाई द्वीप पर बम वर्षा करके युद्ध घोषणा की।

१९३६ में इटली ने अबीसिनिया जीता। और १९४० में वह जर्मनी के ...लिया।

रूस का प्राग में टैंक भेजने का कार्य हंगरी में टैंक भेजने के बारह साल ...है अतः रूस से टक्कर लेने के लिए और बारह चौदह साल लें तो आश्चर्य

इस प्रसंग में और एक बात याद रखने की है कि जर्मनी ने पहला महायुद्ध प्रारम्भ किया, जब उसने पनडुब्बियों के निर्माण में सिद्धहस्तता प्राप्त ...। दूसरा महायुद्ध उसने टैंकों के बल पर जीता। और उत्तरी अफ्रीका ...के बल पर ही जीता। मास्को, लेनिनग्राड भी वह टैंकों के बल पर ... जनरल रोमल जिस सफाई से रेगिस्तान में टैंक लेकर काहिरा के द्वार ...पास में पहुंच गया था और विश्व को चकित कर दिया था, आज वह ...वित नहीं रही। बुडापेस्ट में रूसी टैंक पहुंचकर रूसी शासन स्थापित करने हुए थे परन्तु अगस्त १९६८ में वही रूसी टैंक चेक लोगों को आत्मःसमर्पण बाध्य न कर सके। वीर चेक नागरिक टैंकों के आगे लेट गये। टैंक भेदी भी उनको आवश्यकता नहीं हुई।

जर्मनी तीसरा महायुद्ध टैंकों, मिसाइल के सहारे नहीं छेड़ सकता। उसको ... शस्त्र का आविष्कार करना होगा। जब तक यह न होगा जर्मनी रूस से ...कर न लड़ेगा। इसके लिये जर्मनी को दस-बारह साल का समय चाहिए। ... महायुद्ध १९८०-८२ से पहले छिड़ने की सम्भावना कम ही है।

...स अवधि का लाभ उठाकर गांव-गांव में बिखरे अपने लोहारों को ...थियार बनाने के कार्य में लगा सकता है। शास्त्रास्त्र के निर्माण और ...भारतीय प्राचीन परम्परा का आश्रय ले सकता है। वह सूर्य किरणों से ...त करके नये ढंग का ब्रह्मास्त्र बना सकता है। भारत को यदि पुनः ... होना है और अतीत भारत को भावी भारत में परिणत करना है, ...स्त्र बनाने की दिशा में कदम उठाने में विलम्ब न करना चाहिए। ... लिए कोई नूतन शस्त्रास्त्र अवश्य चाहिए। जिसका ज्ञान आजके ...है। यह हथियार भारत के लोहार ही तैयार कर सकते हैं, भारत ...टरियां नहीं। इसमें दस-बारह साल लग जाना स्वाभाविक है। ...अणुबमों का निर्माण करके अणुबम-युद्ध का नया प्रकार प्रारम्भ कर सकता है। ये कम विनाशक होंगे, संहारक होंगे, पर महाविनाशक और महासंहारक न होंगे। अभी तक अणुअस्त्र ही बने हैं, पर्जन्यास्त्र नहीं बने हैं। भारत पर्जन्यास्त्र जल से बने हथियारों का तीसरे महायुद्ध में व्यवहार करके चीन में बाढ़ ला सकता है और चीनी जनता को आत्म-समर्पण करने के लिए बाध्य कर सकता है। इसमें प्राण नाश कम से कम होगा। बाढ़ लाने वाले हथियार बनाने का कार्य भारत के मिस्त्रियों को और शिल्पियों को करना है। इसी प्रकार वायवास्त्र है, जो तूफान आंधी लाकर शत्रु देश को आत्म-समर्पण करने को बाध्य कर सकता है। इससे भी प्राण नाश अधिक न होगा। अभी दुनिया ने पानी और वायु के शस्त्रास्त्र नहीं बनाये हैं। गोला-बारूद की सहायता से बने सब शस्त्रास्त्र आग्नेय हो हैं। अतः शस्त्रास्त्र निर्माण करने की बुद्धि के लिए वृहद क्षेत्र खुला हुआ है। इस दिशा में भारत के धनुर्वेद की सहायता लेनी चाहिए। यदि श्रीमद् बाल्मीकि रामायण का जर्मन पाठक यह सोच सकता है कि लक्ष्मण ने सीता की रक्षा के लिए जो रेखा खींची थी, उसको रण-पण्डित रावण ने पार करने का साहस क्यों नहीं किया? क्या भूमिगत ऐसी मिसाइल थी, जो बाहर से अन्दर आने पर ही फटती और आगन्तुक मर जाता। और रावण ने इस रहस्य को रेखा देखते ही जान लिया। अतः उस साधु ने आग्रह किया कि यदि माता सीता को भिक्षा देनी है, तो वह रेखा से बाहर आकर साधु की झोली में भिक्षा दे। जर्मन पाठक यह सोच सकता है, तो भारतीय क्यों नहीं?

अतः अतीत भारत को भावी में परिणत करने के लिये हमें ऋषि वचनों के रहस्यों को जानना और सोचना चाहिए। मंत्रों की शक्ति को पुनः जगाना चाहिए क्या भारत राष्ट्र इधर ध्यान देगा?

व्यापारिक-भविष्य संवत् २०२६

(ले. प्रो. बी. सी. मेहता, जैन ज्योतिष ब्यूरो, ब्यावर (राज.)

श्री विश्व विजय पंचाग के रजत जयन्ती के इस अंक में हम अपनी शुभ कामना प्रेषित करते हुए अपना यह व्यापार-भविष्य सं० २०२६ का लेख प्रस्तुत करते हैं। विश्व-विजय पंचाग' अत्यन्त सफलता पूर्वक गत २५ वर्षों से ज्योतिष संसार की सेवा कर रहा है। इस पंचाग की प्रगति व सफलता का श्रेय श्रीमान् पं० हरदेव जी शर्मा त्रिवेदी जी को ही है। जिनके अथक परिश्रम व प्रेरणा से वह पंचाग इतना लोकप्रिय बन गया है। तथा जब तक इसके सम्पादक श्री त्रिवेदीजी रहेंगे तब तक यह पंचाग आगे भी उत्तरोत्तर उन्नति करता जावेगा। ऐसी हमारी आशा तथा दृढ़ विश्वास है।

संवत् २०२६ अर्थात् १९६९ का साल व्यापारिक संसार के लिये अत्यधिक महत्व का वर्ष है। इस वर्ष के योगायोग ग्रहों के राशि व नक्षत्र चार तथा इन ग्रहों के आपस में बनने वाले दृष्टि-सम्बन्धों से हमें ऐसा प्रतीत होता है कि यह वर्ष ... प्रमुख बाजारों के लिये भयंकर घटा बढ़ी का सिद्ध होगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

…घटा बढ़ी का सम्बन्ध पूर्ण रूपेण ग्रह योगों के आधार पर ही है, …ों से व्यापारिक-ज्योतिष का अत्यन्त जिज्ञासा पूर्वक अध्ययन, अनुभव …र करते आ रहे है तथा हम इस नतीजे पर पहुँचे है कि बाजारों की …सीधा व ठोस असर, बड़े ग्रह नेपच्यून-हरशल-शनि-राहु-केतु तथा …शि व नक्षत्र चार के परिभ्रमण तथा आपस के दृष्टि-संबंध तथा …दि से पड़ता है। तथा इन्हीं योगा योगों के कारण बाजारों में भयंकर …ती है। छोटे ग्रह मंगल-सूर्य-बुध-तथा शुक्र के योगों का भी बाजारों की …वश्य प्रभाव पड़ता है लेकिन चूंकि यह ग्रह बहुत कम टाइम के लिये …ठहरते हैं अत: इन ग्रहों का असर भी टेम्परेरी तथा थोड़े समय के लिये …: हम पहले यहां बड़े ग्रह नेपच्यून हरशल-शनि-राहु-केतु-बृहस्पति ग्रहों की …१९६९ अथवा संवत् २०२६ की सही पोजिशन स्थिति राशि व नक्षत्र …विवेचन करते है तथा इन योगों के प्रभाव से बाजारों पर होने वाले असर …ों का यहां दिग्दर्शन करते हैं :—

…न-ग्रह:—नेपच्यून ग्रह सबसे बड़ा तथा व्यापारिक-ज्योतिष में विशेष महत्व-…पूर्ण ग्रह …। यह ग्रह प्राचीन ज्योतिष शास्त्रों मे उल्लिखित नहीं है, …गया है। यह ग्रह … ज्योतिष के महान् विद्वानों ने इसकी शोध तथा अनुभव दुनिया के … यह ग्रह एक राशि में पूरे १४ वर्ष रहता है, तथा पूरा राशि मंडल … [illegible] … १४ वर्षों का व्यापारिक जगत् को यह एक स्पेशियल … [illegible] … तिलहन बाजारों की … नेपच्यून ग्रह का विशेष सम्बन्ध [illegible] … [illegible] … ता० … अगस्त १९६७ को आया है … [illegible] … रहेगा। अब इस नेपच्यून से हरशल-… [illegible] … तब तेजी सूचक तथा … [illegible] … सन् १९६९ में इसके साथ राहु ग्रह का … [illegible] … तेजी सूचक ही रहेगा।

[illegible] … तथा सायन तुला … [illegible] … दोनों … [illegible]

… रहेगा?

[illegible]

शनि—जमीन से खेती द्वारा पैदा होने वाली प्रत्येक वस्तुओं के बाजारों की बढ़ घट पर असर करता है। तेल-वाना, जूट, बीट्टील, रुई, कपास, अनाज, दालवाना, गुड़, खांड, किरयाना आदि तमाम प्रमुख बाजारों पर इसका अधिकार है। प्राचीन ज्योतिषयों ने इस ग्रह को खेती से विशेष सम्बन्धित ग्रह माना है यह एक राशि में २॥ वर्ष रहता है—तथा पूरे २॥ वर्ष का यह ट्रेन्ड बाजारों का देता है।

शनि :— इस वर्ष सन् १९६९ में भी मीन तथा मेष राशि से प्रसार करेगा। गत वर्ष शनि ने सन् १९६८ में भी मीन तथा मेष राशि से प्रसार किया था। मीन राशि चूंकि गुरु ग्रह की राशि है इसलिए मीन राशि में शनि तेल-वाना व अनाज आदि उपरोक्त बाजारों में मन्दी सूचक योग है। जिस तारीख को राहु तथा शनि मीन राशि में शामिल हुए अर्थात १२ जनवरी १९६८ से तेल-वाना बाजारों में मन्दी कीशुरुआत हुई सो जब तक मीन में शनि राहु शामिल चलते रहे बाजार घटते ही गये। तथा कई बाजारों में तो रुपये के आठ आने हो गये—तेल ४५ का २२॥ अलसी १६५ की १०१, अरंडा १४५ का ९४ तथा कपासिया ८० का ४५ टच हुए। तथा ता. २१ जून १९६८ को ज्यूं ही शनि मीन से निकल कर मेष राशि में प्रवेश हुआ और मन्दी समाप्त व तेजी शुरू हुई और भयंकर तेजी आई तथा सभी बाजारों में भाव टॉप के हो गये। अत: कहने का तात्पर्य यह है कि शनि जब मीन में रहेगा, बाजारों का धारण मन्दी में रहेगा, तथा जब मेष में आवेगा तब वापिस तेजी का धारण शुरू हो जावेगा।

सन् १९६९ में शनि ता. ७ मार्च को मेष राशि में प्रवेश होता है। तथा जो शनि ता. २१ जून १९६८ को मेष राशि में प्रवेश हुआ था वह ता. २७ सितम्बर १९६८ को पुन: मीन में प्रवेश होता है। अत: यह शनि मीन राशि में ता. २७ सितम्बर १९६८ से ६ मार्च १९६९ तक चलेगा। तथा ७ मार्च १९६९ से ३१ दिसम्बर १९६९ तक शनि मेष राशि में परिभ्रमण करता रहेगा। मेष राशि अश्विनी भरणी तथा कृतिका नक्षत्र से बनती है—अत: यह सन् १९६९ में अश्विनी तथा भरणी दोनों नक्षत्रों में प्रसार करेगा। ये दोनों ही नक्षत्र शनी के लिए तेजी सूचक है। अत: पूरे वर्ष यह शनि मार्च १९६९ के बाद तेजी सूचक रहेगा। तथा शनि सम्बन्धी प्रत्येक जिन्स बाजारों में तेजी का बड़ा प्रकोप रहेगा नोट कर लें। कभी भयंकर व तूफानी तेजी आ सकेगी। शनि जब वक्र होगा—मार्गी होगा तथा अस्त व उदय होगा उन दिनों में व्यापारियों को विशेष सावधान व सतर्क रहना चाहिये। उन तारीखों को नोट कर लेना चाहिये—शनि की नीचे लिखी पोजिशन विशेष महत्व की है :—

(१) ता. २८-९-६८ शनि मेष से चलता हुआ वक्र गति से पुन: मीन राशि में प्रवेश होता है :— (२) ता. २१-१२-६८ शनि मार्गी होता है (३) ता. …-…-६९ शनि मीन राशि को छोड़कर मेषराशि में प्रवेश होता है (४) ता. ४-…-६९ शनि … होता है (५) ता. २०-४-६९ शनि सायन वृष राशि मे प्रवेश होता है (६) ता. ९-५-६९ शनि उदय होता है (७) ता. १-७-६९ शनि भरणी नक्षत्र … मेष राशि में वक्र … ता. …-…-६९ शनि भरणी नक्षत्र में मेष … [illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

) ता. २२-१०-६६ जब शनि वक्र गति से चलता हुआ पुनः अश्विनी
है—इस प्रकार इन ६ तारीखों में शनि अपनी पोजिशन चेंज करता है
की विशेष बढ़ घट करेगा। इन तारीखों में अगले दो दिन जिधर
उसी के आधार पर व्यापार करने वालों को लाभ हो सकेगा। तेजी
तो तेजी का तथा मन्दी चले तो मन्दी का व्यापार करना चाहिये। यह
ग्न १५ दिन चलेगा सो नोट कर लें।

—शनि के बाद व्यापारिक ज्योतिष में राहु ग्रह का असर बाजारों पर
अनुभव में आया है। 'राहु' सन् १९६९ में दो राशियों से प्रसार
के प्रारम्भ से ३० जुलाई १९६९ तक राहु मीन राशि में चलेगा तथा
ाई से आखिरी दिसम्बर १९६९ तक या यूं कह सकते हैं कि संवत्
खिर तक यह राहु कुंभ राशि में ही चलता रहेगा। कुंभ राशि शनि
है अतः इस राशि में राहु बहुत जबरदस्त तेजी सूचक योग है। अतः
शनि ता० ७-३-६९ को तथा कुंभ राशि में राहु ता० ३१-७-६९ को
है ता० ७-३-६९ से चालू तेजी का ट्रेण्ड ता० ३१-७-६९ को विशेष
न जावेगा। कुंभ का राहु मेष के शनि से तीसरी राशि में चलेगा
दोनों क्रूर तथा महत्वशाली ग्रहों का आपस में सेक्स्टायल योग बनेगा।
न योग बहुत महत्व का तेजी योग शास्त्रकारों ने माना है। ऐसा योग
र ३० वर्षों में एक बार बनता है और शास्त्रकारों ने इस योग को भयानक
योग माना है, अतएव आपको बहुत सावधान रहना चाहिये। अनाज
था खेती से होने वाली तमाम जिन्सों के बाजारों में यह तेजी का
र्स लावेगा। अनावृष्टि तथा अतिवृष्टि से फसलें खराब हो जावेंगी और
कमी से विशेष तेजी आ सकेगी।

३१ से नवम्बर १९६९ तक का पीरियड हमको विशेष भयंकर तेजी का
है! चार महीने का लम्बा चान्स है। सो बहुत सावधानी से काम करें।
न अन्य छोटे मोटे ग्रहों के योगों से मन्दी के रिएक्शन आते रहेंगे। तथा
साथ बाजार बढ़कर टोप पर पहुंच जावेंगे। शनि राहु के बाद गुरु ग्रह
ापारिक ज्योतिष में माना है।

ग्रह इस वर्ष कन्या तथा तुला राशि में परिभ्रमण करेगा। ता० १२
८ को यह गुरु सिंह राशि से चलता हुआ कन्या राशि निरयन में प्रवेश
ा० १२ नवम्बर १९६९ को गुरु निरयन तुला राशि में प्रवेश करेगा।
शि में गुरु कई बाजारों में तेजी सूचक तथा कई बाजारों में मन्दी सूचक
२ अक्टूबर से पहले जिन जिन बाजारों में मन्दी का फोर्स चलेगा उन
१२ अक्टूबर १९६८ से तेजी की लायन शुरु हो जावेगी। तथा जिन
अक्टूबर से पहले तेजी आवेगी उन बाजारों में गुरु मन्दी सूचक रहेगा।
नवम्बर १९६८ को गुरु सायन तुला राशि में प्रवेश करेगा और यहां
तु राहु ग्रह से ता० २५ दिसम्बर १९६८ को बनेगा, अतः ता० १५
से ६ मार्च १९६९ तक बाजारों का धोरण जनरल में मन्दी सूचक
ही समझना चाहिये। लेकिन जब ७ मार्च ६९ को शनि मीन से निकल कर मेष
राशि में प्रवेश हो जावेगा तब सभी बाजारों में तेजी का फोर्स फिर से शुरु हो
जावेगा। फिर गुरु ता० १५ नवम्बर १९६९ को तुला में प्रवेश कर जावेगा तब यह
मन्दी सूचक हो जावेगा, अतः उपरोक्त विवेचन से हम आपको नीचे लिखी स्पेशियल
लायन व चान्स प्रस्तुत करते हैं—

(१) तारीख १६ नवम्बर १९६८ से ६ मार्च १९६९ तक मन्दी की लायन।
(२) तारीख ७ मार्च से ३० जुलाई १९६९ तक तेजी का लायन।
(३) तारीख ३१ जुलाई से १५ नवम्बर १९६९ तक तेजी की बड़ी लायन।
(४) ता० १५ नवम्बर से ३१ दिसम्बर १९६९ तक मन्दी की बड़ी लायन—

यह उपरोक्त विवेचन व रूपरेखा सन् १९६९ के साल की सभी प्रमुख बाजारों के बढ घट के लिहाज से हमने आपकी सेवा में प्रस्तुत की है। आशा है व्यापारी बन्धु समझ पूर्वक सावधानी से इनका अनुसरण करेंगे।

सं० २०२६ वि० का द्वादश राशिफल

[यह राशि फल गोचर ग्रह स्थिति के अनुसार दिया गया है। जन्म कालीन ग्रहों एवं दशान्तर प्रत्यन्तर-दशा का फल मुख्य है। एतदर्थ इस राशिफल का सत्यता की कसौटी पर शत प्रतिशत खरा उतरना सभी व्यक्तियों के लिये अनिवार्य नहीं है, क्योंकि एक राशि के सभी व्यक्तियों का कार्य एवं भाग्य एक समान नहीं होता। अतः यह राशिफल एक स्थूल फलादेश मात्र है। वार्षिक मासिक फल यथार्थ रूप से जन्म-पत्र वर्ष फल के सूक्ष्म गणित से ही ज्ञात हो सकता है। बहुत से लोगों को अपनी जन्म या नाम राशि का भी ज्ञान नहीं होता, अतः यहां प्रत्येक राशि के आगे कोष्ठक में उस राशि के अक्षर दे दिये हैं। जिस राशि में अपने नाम का आदि (पहला) अक्षर मिले वही अपनी राशि समझना चाहिये। व, ब, श, स, ह्रस्व दीर्घ मात्राओं से राशि में कोई अन्तर नहीं पड़ता।]

—सम्पादक

मेष :— (चू चे चो ल ला ली लु ले लो अ आ)

इस वर्ष मेष राशि वालों को शनि की साढे साती हृदय पर तांबे के पाद
से चालू है। गुरु भी षष्ठ स्थान में है। अतः शरीर पीड़ा एवं स्त्री सुख में बाधा
होगी। शत्रुओं की प्रबलता एवं आधि-व्याधि ग्रस्त होने से चित्त व्याकुल रहेगा।
काम धन्धों में भी बाधाएं उपस्थित होंगी। इसलिये धैर्यपूर्वक समय बिताना ही ठीक
रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मंगल गुरु शनि की उपासना करना श्रेयष्कर होगा। भ्रातृ-
सुख, पुत्र-सुख, एवं बुद्धि सुख ठीक रहेगा। ता० ३१ जुलाई से राहु लाभ भवन में
प्रवेश करेगा, जो कि लाभप्रद कार्यों में विकास करेगा। केतु पंचम स्थान में आने से
संतान कष्ट एवं विद्या बुद्धि में कमी करेगा। ता० ११ नवम्बर से गुरु सप्तमस्थ होने से
व्यापार, नौकरी आदि में सुधार होगा। धन लाभ होगा, मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।
रुके हुये कार्य बनने लगेंगे। अप्रेल मई में शरीर पीड़ा, गृहस्थ में बेचैनी व धन खर्चा
होगा। वैर विरोध बढ़ेंगे। यात्रा में कष्ट चोट घाव तथा रक्त विकार होगा। जून जुलाई

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

…न्ति होगी। शत्रु उत्पन्न होकर नष्ट होंगे। चिंता पीड़ा बनी रहे। स्त्री सामान्य होगा। अगस्त में संतति पीड़ा, बुद्धि में कमी होगी। कलह …ध बढ़ेंगे किंतु लाभ होता रहेगा। सितम्बर अक्टूबर में भाग्य सहारा …न्ति के मध्य शान्ति प्रयत्न भी होंगे। रोग व शत्रु बढ़ेंगे। स्वास्थ्य व …ध्यम रहे। नवम्बर दिसम्बर में पीड़ा चिंता रहेगी किंतु रोजी रोजगार में …से मन को शांति मिलेगी। धन लाभ होगा। स्त्री सुख ठीक संतान सुख …। जनवरी सन् ७० में लाभ खर्च समान होंगे। भाग्योन्नति, मान प्रतिष्ठा …राज में जय, काम धन्धों में तरक्की होगी। फरवरी मार्च में मिश्रित फल …तिनी अच्छेफल तो कभी बुरे फल होंगे। शरीर नरम, कुछ चिंता होगी। …कुछ झंझट होंगे। महिलाओं के लिये वर्ष अच्छा नहीं है। विद्यार्थियों को …उत्तम और उत्तरार्ध अशुभ है।

(ई उ ए ओ व वा वि वु वे वो)

…:—

इस वर्ष आपके लिये सिर पर शनि की साढे साती सुवर्ण पाद से चालू … शनि व्यय भवन में है जो खर्च …ठीक रहेगा लेकिन केतु की स्थिति नेष्ट है। शनि व्यय भवन में है जो खर्च … शारीरिक कष्ट, स्वभाव में चिड़चिड़ापन, स्त्री पीड़ा आदि से चिन्तित रहोगे। … नवम्बर तक पंचमस्थ गुरु उत्तम रहेगा। वाणी की चातुर्यता एवं विवेक से … धन बढ़ेंगे। काम धन्धा लाभकारी रहें, परन्तु खर्च भी विशेष रहेगा। ता० … भवन में आयेगा जो कि विघ्न बाधाएं उपस्थित करेगा। … भूमि वाहन जायदाद पशु आदि से फायदा नहीं रहेगा। … ता० ११ नवंबर से गुरु छठे घर में … अनुकूल रहेगा। … ठीक रहेगा। अप्रैल मई में स्वा- … किंतु लाभ भी होता रहेगा। … स्त्री संतान सुख भी मध्यम … भाग्योन्नति होगी। अग- … काम धंधों में सुधार होगा। … नवम्बर में भाग्योदय, काम … [illegible]

[illegible]

([illegible])

[illegible]

ईर्ष्या द्वेष में बढ़ोतरी होगी। चौपाया पशु खेती तथा उत्पादक पूंजी से लाभ कम होगा। स्त्री पुत्रादि से सुख सहयोग मिलेगा। ता० ३१ जुलाई से पराक्रम भवन में केतु तथा ११ नवम्बर से पंचम घर में गुरू आयेगा। यहां से समय में सुधार होगा। खर्च में कमी एवं लाभ में वृद्धि होगी। बड़े लोगों से साक्षात्कार होगा। पुत्र सुख सहयोग से मन में संतोष होगा। घर में वैभव के साधन जुटेंगे। व्यापार धन्धा, खेती, वाहन आदि से लाभ होगा। राज में विजय होगी। अप्रैल में उत्तम फल होंगे, धन लाभ मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होकर भाग्योदय होगा। मई जून में धन खर्चा सार्थक होगा। शत्रु पराजित होंगे। गृहस्थ में कुछ झंझट होंगे। रोजगार धन्धा ठीक चलेगा। जुलाई अगस्त में पहिले मध्यम फल पीछे उत्तम फल होंगे। शत्रु दबे रहेंगे। काम धन्धों में लाभ सामान्य होगा। प्रतिष्ठा बनी रहेगी। सितम्बर अक्टूबर में शरीर सुख रहे। स्त्री को पीड़ा होगी। सन्तान सुख सामान्य, काम धन्धा ठीक चलते रहेंगे। लाभ भी होगा। नवम्बर दिसम्बर में मान सम्मान के साथ रोजगार धन्धों में तरक्की होगी। शत्रु उत्पन्न होकर नष्ट होंगे। लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। जनवरी सन् ७० में कुछ चिन्ता पीड़ा होगी। स्त्री पुत्रादि का सुख होगा। उन्नति के साधन प्राप्त होंगे। फरवरी मार्च में प्रभाव वृद्धि के साथ लाभ के चांस मिलेंगे। राज में विजय काम धन्धों में तरक्की धन लाभ व भाग्योदय होगा। महिलाओं के लिये वर्ष उत्तम है। विद्यार्थियों को पूर्वार्द्ध मध्यम और उत्तरार्ध उत्तम रहेगा।

(ही हु हे हो ड डा डी डु डे डो)

कर्क :—

कर्क राशि वालों के लिये वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। भाग्येश गुरु भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखता है अतः ११ नवम्बर तक भाग्योदय के साथ सम्मान में वृद्धि होगी। शरीर सुख अच्छा रहेगा। सरकारी कर्मचारियों के उच्चाधिकारी संतुष्ट रहेंगे। कार्यों में सफलता तथा धन लाभ होगा। कृषि, जायदाद एवं पशुओं से साधारण लाभ होगा। ता० ३१ जुलाई से राहु अष्टम स्थान में नेष्ठ आयेगा। मन इतस्ततः भ्रमित होगा तथा लोग कटु वाक्य कहने में नहीं चूकेंगे। आप रोग ग्रस्त होंगे और धन व्यय होगा। नौकर वर्ग के स्थानांतर होंगे। बनते कार्यों में बाधा उपस्थित होगी। जप दान आदि से राहु केतु की शांति कराने से उत्तम रहेगा। अप्रैल मई में भाग्योन्नति, रोजगार धन्धों में तरक्की होगी। स्त्री पुत्रादि सुख साधारण होगा। राज में विजय, धन का लाभ होगा। जून जुलाई में भी उत्तम फल होंगे। भाग्योदय होकर धन लाभ होगा। मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। गृहस्थी के सुख सामान्य रहेंगे। अगस्त में धन खर्चा होगा। स्वास्थ्य नरम चलेगा। मान प्रतिष्ठा अच्छी रहे। राज काज में साधारण है। सितम्बर अक्टूबर में हिम्मत बढ़ेगी। बिगड़े कामों को सुधार होंगे। परिश्रम व खर्चा अधिक होगा किंतु उससे भी सिद्धि प्राप्त होगी। नवम्बर दिसम्बर में सभी फल मध्यम होंगे। स्वास्थ्य कमजोर तथा स्त्री को पीड़ा होगी। … बुद्धि की प्रबलता से काम चलेगा। जनवरी सन् ७० में भाग्य में कमजोरी चित्त … चिन्ता रहे। … और धन हानि होगी। फरवरी में अशुभ फल होंगे। कहीं … स्वास्थ्य में कमजोरी होगी। गृहस्थ सुख बने रहेंगे। मार्च में सुख शान्ति की वृद्धि होगी। रोजी रोजगार बढ़ेंगे। धन लाभ अधिक, खर्चा कम होगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है —

की [illegible] को वर्ष मध्यम है। विद्यार्थियों को परिश्रम से सफलता संभव है।

उनी — (म मा मी यू मे मो ट टी टु टे)

[illegible] तेस वर्ष में ग्रह उन्नति कारक हैं। शनि भाग्य स्थान में एवं गुरु धन स्थान में [illegible] १ भाग्योदय एवं धन वृद्धि के साधन बनेंगे। मान सम्मान, विद्या एवं संतान —[illegible] वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में प्रवृति होने से व्यापार, नौकरी एवं राज कार्यों [illegible] अनुभव प्राप्त होगी। राहु केतु की स्थिति अच्छी नहीं है इससे कुछ कार्यो में रोड़ा [illegible] प्रा[illegible]। शरीर में पीड़ा, मन में असन्तोष धन व्यय तथा यात्रा एवं भय होगा। [illegible]ई से ग्रहों की शांति कराने से ही अशुभ फल दूर होंगे। लेकिन गुरु की चाल [illegible]खर [illegible] काम धन्धों में तरक्की, धन लाभ तथा भाग्योन्नति कारक योग बनेगा। [illegible] है [illegible] चतुरता से सभी काम सिद्ध होंगे। मन में उत्साह एवं कार्य तत्परता शनि शत्रुओं को मुंह की खानी पड़ेगी। राज काज में विजय तथा उच्चाधिका- [illegible] ता० प्रेम बढेगा। अप्रेल मई में भाग्य फल साधारण रहे। परिश्रम व प्रयत्न [illegible] जावे कुछ सफता मिलेगी। गृहस्थ में बेचैनी होगी। धन लाभ भी होगा। कुछ दोनों [illegible] भी गोगी। जुलाई में खर्चा अधिक, लाभ कम होगा। रोजगार धन्धा [illegible] योग[illegible]गा। प्रतिष्ठा बनी रहे। अगस्त सितम्बर में शरीर नरम रहे शुभ कामों ३० [illegible] खर्च होगा। मन में कमजोरी आवे। स्त्री पुत्रादि को पीड़ा होगी। अक्टूबर [illegible] में मान प्रतिष्ठा बढ़े और धन लाभ होगा। शत्रु परास्त होंगे। अपना तथा [illegible] स्वास्थ्य नरम चलेगा। दिसम्बर में पीड़ा चिन्ता बढेगी। शत्रु प्रबल होंगे। [illegible] लक्ष्य में बाधा पैदा होगी। मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी। जनवरी फरवरी सन् [illegible] कमी [illegible] धन्धा ढीला चले। शरीर में पीड़ा, स्त्री की तरफ से चिन्ता रहे। लाभ २१ [illegible]। इज्जत बनी रहेगी। मार्च में सुधार होकर काम धन्धों में उन्नति लाभ है। भाग्य सहारा देगा जिससे काम चल सकेगा। महिलाओं को पूर्वार्ध [illegible] और उत्तरार्ध नेष्ट है। विद्यार्थियों को वर्ष उतम हैं।

साथ — (टो प पा पि पु प ण ठ पे पो)

[illegible] वर्ष कन्या राशि वालों को शनि ढ़ैया (अष्टम) है। कन्या राशि का केतु ग्रह [illegible] राहु भी अनिष्ट फल कारक हैं। रोग पीड़ा मानसिक चिन्ता, यात्रा, ८ [illegible] में हानि, पारिवारिक झंझट, क्रोधाधिक्य तथा धन का अपव्यय आदि अशुभ [illegible] ० [illegible] गुरु कन्या राशि व धन भाव में है, यह कुछ अंश में आर्थिक सहारा देता [illegible] मान-सम्मान को आंच नहीं आवेगी। शत्रु पस्त होंगे, पुरुषार्थ के बल पर कार्यों [illegible] २ [illegible] मिलेगी। सरकारी नौकरों को उच्चवर्ग का सहयोग मिलेगा। ता० ३१ १२ [illegible] छठे घर में आने से भाग्योदय में सहायक होगा। धन लाभ तथा [illegible] वृद्धि होगी। मुकदमों में विजय होगी। कोई नया धंधा होगा जिस में [illegible] लाभ भी होगा। अप्रेल में स्वाष्य साधरण एवं पत्नी सुख सामान्य [illegible] बनी रहेगी यात्रा दौड़ धूप अधिक होगी। भाई को पीड़ा रहे। मई [illegible] ६ फल मध्यम होंगे। पीड़ा चिन्ता बनी रहे। काम धन्धों में लाभ भी हो संतोष रहे। जुलाई में भाग्योन्नति होकर रोजी रोजगार में तरक्की प्रतिष्ठा बनी रहे। अगस्त सितम्बर में कौटुम्बिक क्लेश तथा धन खर्चा होगा। शत्रु पराजित होंगे। मान सम्मान बढेगा। स्वास्थ्य अच्छा एवं स्त्री का सुख प्राप्त होगा। अक्टूबर नवम्बर में शरीर सुख स्त्री सुख होगा। संतान को कुछ पीड़ा होगी। धन खर्चा होगा किन्तु उससे भी अपना काम बना लोगे। दिसम्बर में चित्त में प्रसन्नता होगी। धन लाभ के चांस मिलेंगे। शत्रु हार मानेंगे। मित्र सुख बढ़ेगा। जनवरी सन् ७० में स्वास्थ्य नरम, पत्नी को पीड़ा व धन खर्चा होगा। काम धन्धा सामान्य चले। प्रतिष्ठा बनी रहे। फरवरी मार्च में शत्रु रोग प्रबल होकर दब जायेंगे। स्त्री कष्ट, कहीं की यात्रा, धन खर्चा होगा। मन में अशान्ति रहेगी। महिलाओं को यह वर्ष अच्छा नहीं है विद्यार्थियों को मध्यम है। सावधानी से ही सफलता मिलेगी।

तुला— (र रा री रू रे रो त ती तु ते)

इस वर्ष आपकी राशि से सातवें शनि और गुरु केतु द्वादशस्थ हैं यह अच्छे नहीं हैं। मनस्ताप एवं असंतोष बना रहेगा। पारिवारिक जनों से स्नेह व स्त्री पुत्र मित्रादि का सुख सम्बन्ध मध्यम श्रेणी का रहेगा। शत्रु पराजित होंगे। धन लाभ समयानुकूल होगा। लोगों में अपना प्रभाव बना रहेगा। रोजगार धन्धा नौकरी में परिश्रम करना पड़ेगा। ता० ३१ जुलाई से राहु संतान भाव में आयेगा, यह पुत्रादि के लिये कष्ट कारक है। बुद्धि में निर्बलता आयेगी। भलाई करने पर भी आपकी लोग बुराई करने में तत्पर रहेंगे। चिन्ता बढ़ेगी तथा व्यय भी होगा। ता० ११ नवम्बर से गुरु तुला राशि में प्रवेश करेगा अतः इस समय से स्थिति में सुधारात्मक परिवर्तन होगा। काम धन्धा ठीक चलेगा, जिससे सन्तोष मिलेगा। परिश्रम का फल मिलेगा। मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी। अप्रेल मई में स्वास्थ्य नरम स्त्री सुख कम होगा। यात्रा व चिन्ता होगी। धन खर्च व वैर विरोध भी होंगे जून में भाग्य मध्यम, शुभ कामों में धन खर्च होगा। स्वास्थ्य ठीक रहे स्त्री कष्ट होवे। जुलाई अगस्त में भाग्योन्नति, काम धन्धों में तरक्की होगी। अच्छे कामों में धन व्यय होगा। स्त्री को पीड़ा होगी। धन लाभ भी होगा। सितम्बर अक्टूबर में कुटुम्ब में कष्ट होगा। धन खर्चा बढ़ेगा। समयानुकूल लाभ नहीं होगा। जिससे मनमें अशान्ति रहेगी। नवम्बर दिसम्बर में मन संतोषदायक कार्य होंगे। मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। स्त्री पुत्रादि को कष्ट होगा। विद्या बुद्धि में कमी होगी। जनवरी सन् ७० में राज्य में विजय होगी। शत्रु हार मानेंगे। शरीर सुख ठीक, स्त्री को कुछ पीड़ा होगी। फरवरी मार्च में शत्रुनाश व स्त्री कष्ट होगा। काम धन्धा नरम, लाभ साधारण होगा। मन में उद्वेग, कहीं की यात्रा होगी। महिलाओं को वर्ष अशुभ है। विद्यार्थियों को मध्यम है।

वृश्चिक— (तो न ना नी नु नो ने य यी यू)

इस वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिये ठीक नहीं है। पूर्वार्द्ध में समय अच्छा बीतेगा। शनि षष्ठ स्थान में एवं गुरु ग्यारहवें हैं सो उत्तम फल कारक हैं। शरीर की स्थिति स्वस्थ रहेगी। नये व्यक्तियों से संपर्क होगा तथा नये कार्यो से जानकारी होगी। व्यापार, रोजगार, नौकरी आदि में लाभ होगा। भ्रातृ सुख मिलेगा। मित्रों की ओर से मदद मिलेगी। पुत्रादि कुछ कष्ट से युक्त होंगे। शत्रुओं पर विजय होगी। राज्याधिकारी वर्ग सहानुभूति रखेंगे। ता० ३१ जुलाई से समय विपरीत

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सवारी, तथा घर गृहस्थ के सुख में रुकावट होगी। ईर्ष्या द्वेष में असंतोष व्याप्त होगा। ता. ११ नवंबर से गुरु भी व्यय स्थान में है इससे धन व्यय अधिक होगा। दौड़ धूप का फल कम मिलेगा। [illegible] गुरु राहु की शान्ति कराना हितकर रहेगा। अप्रैल मई में शत्रु [illegible] होकर नष्ट होंगे। रोजगार धन्धों में तरक्की होकर धन लाभ होगा। [illegible] सुख सामान्य होगा। जून जुलाई में स्वास्थ्य साधारण, स्त्री सुख ठीक [illegible] संतान को कुछ पीड़ा होगी। लाभ के चांस प्राप्त होंगे। अगस्त सितम्बर [illegible] ति, मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। घर गृहस्थ में अशान्ति बढ़ेगी। व्यापार [illegible] च्छा रहेगा। अक्टूबर में भाई व कुटुम्ब कष्ट होगा। राज काज में उत्तम [illegible] पराजित होंगे। नवम्बर दिसम्बर में मन में उद्वेग, धन खर्चा, परिश्रम [illegible] ना होगा। लाभ कम होगा। मान सम्मान बना रहेगा। जनवरी सन् [illegible] न खर्चा होगा। जिससे आपके काम बनेंगे। शत्रु हार मानेंगे। पारिवारिक [illegible] फरवरी मार्च में शत्रु नाश, राज्य में विजय होगी। रोजगार ठीक, [illegible] र, संतान को कुछ पीड़ा होगी। महिलाओं को पूर्वार्ध उत्तम, उत्तरार्ध मध्यम [illegible] विद्यार्थियों के लिये वर्ष अशुभ है।

धनु— (ये यो भ भा भी भू ध फ ढ भे)

[illegible] के लिये यह वर्ष मध्यम है। शनि राहु की अशुभ स्थिति [illegible] होने से चिन्ता [illegible] में मनमुटाव होगा। आपसी वैर विरोध होने से चिन्ता [illegible] स्वामी गुरु [illegible] और लाभ स्थान में है, यह धन और [illegible] सरकारी कार्य, नौकरी, मुकदमे [illegible] ता. ३१ जुलाई से राहु पराक्रम भवन में [illegible] में विकास एवं सुधार होगा। [illegible] के प्रभावों से बढ़ोतरी [illegible] विद्या के [illegible] घन [illegible] जून जुलाई में [illegible] स्वास्थ्य [illegible] परिश्रम द्वारा लाभ [illegible]

[illegible] विद्यार्थियों को वेद है।

मकर— (भो ज जी खु खे खो ग गु गे गो ग नि)

आपको इस वर्ष चतुर्थ पद में शनि (ढैया) है जो गृहस्थ में गंदा वातावरण उत्पन्न करेगा। आपस में तनातनी रहेगी। तन्दुरुस्ती कमजोर एवं दौड़धूप करनी पड़ेगी। दूर की यात्रा में कष्ट होगा। गुरु भाग्य भवन में तथा राहु पराक्रम भवन में है, ये [illegible] रहेंगे। अतः विघ्न बाधाएं दूर होकर अच्छे कार्य भी [illegible] होंगे। भाग्य में सुधार की लहर आयेगी। चालू व्यापार, नौकरी तथा कृषि आदि में भी लाभ नजर आने से मन में प्रसन्नता होगी। पुत्र सुख, विद्या एवं सफलता के कारण मनस्तोष होगा। ता. ३१ जुलाई से राहु धन स्थान एवं केतु अष्टम पद में प्रवेश करेंगे। तब चिन्ता, पीड़ा एवं असन्तोष बढ़ेगा। विशेष धन का व्यय भी होगा। वाणी में असत्यता आने से कई विपरीत कार्य होंगे। यहां राहु शनि की उपासना हितकर रहेगी। लेकिन गुरु भाग्य एवं राज्य भवन में स्थित है, इससे सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। विघ्न बाधा भी होती रहेगी। अप्रैल मई में मान सम्मान बढ़े। भाग्योन्नति के साथ रोजगार धन्धों में लाभ होगा। घर गृहस्थ व संतान आदि सुख कम होंगे। जून जुलाई में परिवार सुख ठीक, स्वास्थ्य नरम चले, किन्तु हिम्मत बनी रहे। काम धन्धों में लाभ एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। अगस्त में चिन्ता पीड़ा बढ़े, धनखर्चा भी होगा। गृहस्थी में पीड़ा, पशु वाहन हानि होगी। सितम्बर अक्टूबर में वाणी में क्रूरता आवे, बनते काम रुक जावेंगे। भाग्य सहारा देगा जिस से काम धन्धों में लाभ होता रहेगा। स्वास्थ्य नरम व धन खर्चा होंगे। नवम्बर में शरीर पीड़ा, धन खर्चा होगा। धन लाभ के चांस भी प्राप्त होंगे, जिससे इज्जत बनी रहेगी। दिसम्बर में धन खर्च अधिक होगा। चालू कामों में लाभ हो होगा किन्तु मन में शान्ति नहीं रहेगी। जनवरी सन् ७० में रोजगार धन्धा ठीक चले। मान प्रतिष्ठा बनी रहे। पारिवारिक बन्धन बढ़े। राज में सामान्य है। फरवरी मार्च में स्वास्थ्य में सुधार होगा। धन व्यय व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। गृहस्थ सुख में बाधा, पशु वाहन भूमि जायदाद में हानि होगी। महिलाओं को यह वर्ष सामान्य है। विद्यार्थियों को उत्तम रहेगा।

कुम्भ— (गु गे गो स सा सी सु से सो द दा)

आपके लिये यह वर्ष साधारण चलेगा। ता. ३१ जुलाई तक धन भाव में राहु और ता. ११ नवंबर तक गुरु अष्टम में अशुभ फलदाता रहेंगे। धन हानि एवं चिन्ता बनी रहेगी। अधिक मेहनत के बाद भी पूरा फल नहीं मिलेगा। बनते काम रुक जावेंगे। मन में घबराहट, दूर की यात्रा, स्त्री पुत्रादि को कष्ट होगा। धीरज से काम लेना ही ठीक रहेगा। मानप्रतिष्ठा पूर्ववत् बनी रहेगी। ता. ११ नवंबर से [illegible] में सुधार होगा। अपने बल, बुद्धि से व्यापार, धन्धा तथा कृषि, वाहन आदि [illegible] में लाभ एवं उन्नति होगी। शरीर की स्थिति कुछ नरम रहेगी। स्त्री सुख कम होगा। [illegible] अधिक तथा साहस बढ़ेगा। पुत्रों से सुख होगा। भातृसुख में बाधा [illegible] होकर धन लाभ तथा मान सम्मान बढ़ेगा। अप्रैल में धन खर्चा [illegible] शत्रु पराजित होंगे। [illegible] भाई को कष्ट किन्तु प्रतिष्ठा बनी रहे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

...गृह कलह या पीड़ा होगी। काम धन्धा व राज्य में उत्तम है। शुभयात्रा ...फल सामान्य होवे। जुलाई में घर गृहस्थी के सुख होंगे। शत्रु रोग का नाश ...कुछ चिन्ता बनी रहेगी। लाभ खर्च समान है। अगस्त सितम्बर में शरीर ...की को पीड़ा रहे। शुभयात्रा, धार्मिक भावना होवे। काम धंधों में लाभ ...। अक्टूबर में मध्यम फल होंगे। धन खर्चा बढ़ेगा। परिश्रम दौड़ धूप ...स्थ्य नरम, स्त्री कष्ट रहे। नवम्बर दिसम्बर में भाग्योन्नति होकर काम ...लाभ होगा। धन खर्चा भी बढ़ेगा। शरीर कमजोर व स्त्री सुख भी कम ... सुख पुत्रसुख अच्छा है। जनवरी फरवरी सन् ७० में शरीर ढीला रहे। ... भी बढ़े। भाग्य सहारा देता रहे जिस से काम धन्धों में लाभ होगा। ...दि का सुख सामान्य होगा। मार्च में मान सम्मान बढ़ेगा। व्यापार धंधा ...लाभ कम होवे। स्त्री सुख स्वास्थ्य सुख सामान्य होवे। महिलाओं को यह ...शुभ है। विद्यार्थियों को पूर्वार्ध सामान्य और उत्तरार्ध उत्तम है।

मीन— (दी दु थ झ दे दो च चा ची)

इस वर्ष आपको शनि की उतरती साढ़े साती है तथा राहु मीन राशि ...केतु सप्तम में हैं, ये सभी क्लेश एवं हानिकारक रहेंगे। पारिवारिक ...धन व्यय तथा द्वेष की भावना बढ़ेगी। वाणी में कठोरता तथा क्रोध ...कता रहेगी। ता: ११ नवंबर तक गुरु सातवें होने से सहारा ...भी सुख सामान्य रहेगा। पुत्र सुख ठीक है। ११ नवंबर से गुरु अष्टम अशुभ फल अधिक होंगे। तन्दुरुस्ती में गिरावट आवेगी। यात्रा में ...एवं कष्ट होगा। परिवार में अशांति का वातावरण रहेगा। शत्रु तथा ...पक्ष होकर नष्ट होंगे। धन खर्चा व चिंता बढ़ने से मन में अशान्ति ...अप्रेल में स्वास्थ्य सुख, स्त्री सुख सामान्य रहे। भाग्य व्यापार एवं ...ठीक चले। लाभ कम होवे। मई जून में कारोबार तथा मान सम्मान ...है। भ्रातृ कष्ट, गृह कलह होवे। धन लाभ साधारण होगा। जुलाई में ...था सामान्य एवं लाभ भी साधारण होगा। शरीर नरम चले। धन ...है। अगस्त सितम्बर में स्त्री पुत्र परिवार सुख होगा। धन खर्चा होगा ...आपके काम सिद्ध होंगे। शत्रु हार मानेंगे। राज में विजय होगी। ...में रोजगार में लाभ होगा। मनके मनोरथ सिद्ध होंगे। कुछ चिंता ... भी होगा। नवम्बर दिसम्बर में भाग्योन्नति होकर रोजगार धन्धों ...गा। धन खर्चा भी होगा। शत्रु परास्त होंगे। शरीर सुख स्त्री सुख ...जनवरी फरवरी सन् ७० में स्वास्थ्य पीड़ा स्त्री की चिंता रहे। धन ...काम धन्धों में लाभ सामान्य है। राज में विजय होगी। मार्च में ...सामान्य, समयानुकूल लाभ। राज्य में जय, कुछ धन व्यय होगा। ...कम होंगे। सम्मान बना रहे। महिलाओं को यह वर्ष मध्यम है। ...वर्ष उत्तम है।

भारतीय साहित्य संस्कृति इतिहास और ज्योतिर्विज्ञान की एक मात्र अद्वितीय त्रैमासिक पत्रिका

वार्षिक मूल्य ७.५० रु०

'ज्योतिष्मती'

एक प्रति का २.१५ रु०

[संचालक और सम्पादक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

भारत की यही एकमात्र ऐसी पत्रिका है जिसके प्रत्येक अङ्क में ज्योतिर्विज्ञान के रहस्य को प्रकट करने वाले गम्भीर लेख रहते हैं। साथ ही संसार की राजनैतिक सामाजिक स्थिति पर विवेचनात्मक भविष्यवाणी, ग्रहों के योग दृष्टि आदि का फल, राशिफल, हर्शल-नेपच्यून प्लुटो का फल और सरल भाषा में ज्योतिष तथा हस्तरेखा शास्त्र के प्रारम्भिक ज्ञान सम्बन्धी लेख भी रहते हैं, जिससे पाठक घर बैठे ज्योतिष के अच्छे जानकार हो जाते हैं। अब १२ वें वर्ष का कार्तिक मास का 'नववर्षाङ्क' एक मास के अन्दर ही समाप्त हो गया है। 'ज्योतिष्मती' भी छपते ही इस पञ्चाङ्ग की भांति हाथों-हाथ बिक जाती हैं। पिछले अङ्क ५) पांच रुपये में भी नहीं मिलते, इससे आप पत्रिका की उपयोगिता एव लोकप्रियता का अनुमान लगा सकते हैं।

व्यापारियों के लिए—यदि आप किसी प्रकार का व्यापार करते हैं तो इस पत्रिका की सहायता से कई गुणा लाभ उठा सकते हैं। इसमें तेजी मन्दी के विद्वान विद्वानों के अचूक चान्स और साप्ताहिक तथा दैनिक रुख भी प्रत्येक वस्तु की रहती है। हजारों व्यापारी लाभ उठा रहे हैं, आप भी आज ही मंगाइये।

ज्योतिष आयुर्वेद और मन्त्र-तंत्र शास्त्र के गूढ रहस्य, कलापूर्ण कहानी, कविता, व्यंग्यविनोद और पर्व व्रत त्यौहारों के वैज्ञानिक स्वरूप पर प्रकाश डालने वाले लेख तथा अप्राप्य ग्रन्थों एवं साधनारत अनुभवी विशेषज्ञ प्राचीन अर्वाचीन विद्वानों के परिचय 'ज्योतिष्मती' में रहते हैं। वार्षिक मूल्य ७॥) सात रुपये पचास पैसे मनीआर्डर से भेजें। वी० पी० नहीं होगी। नमूने की प्रति २) दो रुपये पन्द्रह पैसे प्राप्त होने पर भेजी जावेगी।

पता—ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)

पंचांगकर्त्ता को बाहर बुलाने की फी.

'श्रीविश्वविजय-पंचांग' और 'ज्योतिष्मती' के प्रधान सम्पादक एवं अ० भा० ज्योतिष परिषद् के अध्यक्ष श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदीजी को कोई सज्जन ज्योतिष सम्बन्धी कार्य-विशेष के लिए अपने स्थान पर बुलाना चाहें तो १००) प्रतिदिन और फर्स्टक्लास का मार्ग व्यय (रेल किराया आदि) देना होगा। एक मास पहले मार्ग व्यय भेजकर पहुँचने की तिथि निश्चित करा लेनी चाहिए। स्थानीय कार्य की अधिकता के कारण जन्मपत्र वर्षफल आदि बनाने का कार्य स्थगित है, अतः इस सम्बन्ध में कोई सज्जन पत्र व्यवहार न करें।

—व्यवस्थापक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(पृष्ठ २६ का शेष)

धार्मिकदल में प्रच्छन्नरूप से प्रवेश कर जासूसी करेंगे। सरकार को सतर्क [illegible] पचमार्गियों का सफाया करना चाहिए। नागालैण्ड, असम, बंगाल में [illegible] प्रकृति-प्रकोप एवं प्रजापराध से समुद्र-[illegible] विशेष [illegible] है। [illegible] विशेष हानि होगी। [illegible] में [illegible] तूफान [illegible] में विशेष हानि होगी। मणिपुर [illegible] विशेष [illegible] है। [illegible] फसल अच्छी होते हुए भी कहीं [illegible] में भी [illegible] होगा। [illegible] से बाढ़ी फसल नष्ट होगी और [illegible] दुर्भिक्ष की स्थिति उत्पन्न होगी।

अन्तर्राष्ट्रीय जगत्

गत वर्ष के पंचांग में इसी स्तम्भ में पृष्ठ २३ पर हमने लिखा था—

"[illegible] में शनि-मंगल प्रतियोगसे ......वर्तमानमें [illegible] (१० सितम्बर १९६८) में [illegible] अरब राष्ट्रोंकी दुर्मति से [illegible] स्थिति अधिक बिगड़ेगी। सीरिया इजराइल [illegible]। शनि-मंगल प्रतियोगसे दक्षिण-अमेरिका और [illegible] युद्धकी ज्वाला [illegible]। इसी अवधिमें भारत पर पाक-चीनकी ओरसे [illegible] क्रान्ति सम्भव है। [illegible] रचा जायेगा। सरकार सतर्क रहे।"

[illegible] समय अब प्रारम्भ होने वाला है और भविष्यवाणी [illegible] नये वर्ष (सं० २०२६ वि०) की ग्रह-[illegible] नहीं होती। प्रमुख बड़े [illegible] इस प्रकार है—

पाकिस्तान—[illegible] के पंचांग (२०२५) में इस सन्निकटस्थ पड़ोसी राष्ट्रके [illegible] भारतकी सद्भावनाका दुरुपयोग करेगा। [illegible] सारी शक्ति लगा देगा।......भारत [illegible] आक्रमण की तय्यारी [illegible] सिद्ध कर [illegible] करेगा। [illegible] अतः भारतको [illegible] बनायेगा। [illegible] होगा। पश्चिमी पाकिस्तान [illegible] होगी। [illegible] होगी। [illegible] और [illegible] [illegible] के लिए [illegible] [illegible] आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो जायेगी। [illegible] नहीं छोड़ेगा। [illegible] की तय्यारी [illegible] आर्थिक स्थिति [illegible] हो जायेगी। [illegible] राजनैतिक [illegible] उत्पन्न करेगा।

नेपाल—मेषका शनि नेपाल की राजनैतिक आर्थिक परिस्थिति के लिए प्रतिकूल रहेगा। चीनकी ओर से नेपालमें भारी दबाव और आतङ्क फैलानेका षड्यंत्र होगा। चीनी एजेण्ट गुप्त रूपसे नेपालमें घुसकर राजभक्त प्रजाको विद्रोही बनानेके नानाविध षड्यंत्र रचेंगे। नेपाल सरकारको सतर्क रहना आवश्यक है। वर्षके उत्तरार्ध में महाराजाधिराजका स्वास्थ्य बिगड़ेगा। भारतके साथ मैत्री यथापूर्व बनी रहेगी।

चीन—आगामी दो वर्ष चीनके लिए महान् संकट के हैं। चीनमें सत्ता परिवर्तन होगा। दुर्भिक्ष और प्रकृति-प्रकोपसे जनधन का विनाश होगा। अणु आयुधों शस्त्रास्त्रों की होड़ बढ़ती जायेगी और विस्तारवादका उन्माद चीनको विनाशकी ओर धकेलेगा। नेता दुर्घटनाग्रस्त होगा। भारत पर आक्रमणके लिए पाक को प्रेरित करेगा, अपने गुप्तचर भारतमें भेजकर युद्धस्थिति का अवसर ढूंढेगा। अणुविस्फोट और नया अन्तरिक्ष यान छोड़कर पड़ौसियोंको धमकाने का प्रयत्न करेगा। वर्ष के उत्तरार्धमें कुछ प्रमुख पुरुषोंकी हत्या होगी या पदच्युत किये जावेंगे। माओत्से तुंगके विरुद्ध वर्षान्तमें भयंकर उपद्रव होंगे।

अमेरिका—[illegible] और आर्थिक तंत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन होंगे। नवम्बर के [illegible] पार्टी सदस्य के विजयी होने की सम्भावना है। इस वर्ष प्रकृति-प्रकोप आंधी तूफान हिमपात हत्याकाण्ड और रंगभेद नीति तथा [illegible] के उत्पातों से प्रजा पीड़ित होगी। विश्व के समुन्नत इस धनी महादेश की आर्थिक दशा आगामी वर्षों में उत्तरोत्तर क्षीण होती जायेगी। स्वर्ण उत्पादन कम होगा। भारत के साथ सम्बन्ध यथापूर्व बने रहेंगे, परन्तु आर्थिक लाभ में वृद्धि नहीं होगी। दक्षिण अमेरिका में अन्तर्विग्रह और प्रकृति-प्रकोप से विशेष हानि होगी।

रूस—सोवियत रूस के लिए यह वर्ष क्रान्तिकारक है। अनेक अकल्पित परिवर्तन वर्षान्त में होंगे। कुछ राजनैतिक हत्याएँ होंगी। [illegible] के शनि के उत्तरार्ध में रूस के २ प्रधान पुरुष सत्ता-च्युत या [illegible] होंगे। भारत के साथ यथा-पूर्व मैत्री बनाये रखने का प्रदर्शन करेगा, परन्तु आन्तरिक रूप में पाक का सहायक बनेगा। विश्व-शांति का प्रयत्न मौखिक होगा। इस वर्ष के अन्त तक चन्द्र-लोक की यात्रा के लिए अन्तरिक्ष में [illegible] स्टेशन स्थापित करने के प्रयत्न में आंशिक सफलता प्राप्त करेगा। प्रकृति-प्रकोप से विशेष हानि होगी।

ब्रिटेन—मंत्रि-मण्डल में परिवर्तन होगा। आर्थिक संकट बढ़ेगा। राज-परिवार में शोक होगा। प्रकृति-प्रकोप भयंकर शीतलहर तूफान हिमपात और [illegible] से हानि होगी। भारत के साथ सम्बन्ध यथापूर्व बने रहेंगे।

अन्य राष्ट्र—[illegible] के [illegible] के लिए वर्ष प्रतिकूल है। आर्थिक [illegible] भूकम्प समुद्री तूफानादि उत्पात से [illegible] होगी। अफ्रीका और [illegible] अधिक [illegible] होगी। [illegible] में इस वर्ष राज्य क्रान्ति होगी। [illegible] बढ़ेगा। इस वर्ष के उत्तरार्ध से [illegible] छोटे मोटे राज्यों में अन्तर्विग्रह [illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

...कुछ चिन्ता बनी रहेगी। लाभ खर्च समान है। ... गृहस्थी के सुख होंगे। शत्रु रोग का नाश ... की पी... ...मिक भावना होवे।

...के ... वर्ष अरब यवन राष्ट्रों के लिए प्रतिकूल है। अरब इजरायल युद्ध ...ड़ेगा। राष्ट्रपति नासर का समय आगे अनुकूल नहीं है। अरब राष्ट्र, तुर्की, ..., फ्रांस, जर्मनी और आस्ट्रेलिया में कहीं अकल्पित राजनैतिक उलटफेर ... और कहीं प्रकृति-प्रकोप से भयंकर बिनाश होगा। स्थानाभाव के कारण ...न्तरों का दिग्दर्शन यहाँ संक्षेप में किया गया है। देश विदेश के सम्बन्ध में ...न विचार 'ज्योतिष्मती' में समय-समय पर प्रकाशित किये जाते हैं। जिज्ञासुजन देख सकेंगे। सारांश में यह वर्ष ही नहीं अपितु आगामी कुछ वर्ष संसार के क्रान्तिकारक ऐतिहासिक सिद्ध होंगे।

राष्ट्रनायकों और भारतीय जनता से हम इतना ही निवेदन करना चाहते हैं अगले वर्ष आपकी अग्नि-परीक्षा के हैं—इनमें अपने सभी रागद्वेष वैमनस्य और ...ष्ठा के लोभ को भुलाकर संगठित रूप में राष्ट्र की प्रतिष्ठा और आत्मरक्षा ...र कटिबद्ध हो जाइये, शत्रु की गतिविधि और जयचन्द बन्धुओं से सदा सतर्क ... यदि इस संकट काल में भी आपने निजी स्वार्थ के वशीभूत होकर पारस्परिक ... फूंक से कलहाग्नि को बढावा दिया तो इसमें राष्ट्र का बहुत बड़ा अपकार और आप राष्ट्रद्रोह के पातकी बनेंगे। हमारा आदर्श तो 'राष्ट्रदेवो भव' है।

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण महीं महीपाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकास्समस्तास्सुखिनो भवन्तु ॥

...तिष्मती-निकेतन (हिमाचल-प्रदेश)

शुभाशंसी
हरदेव शर्मा त्रिवेदी

भारत का भविष्य और कांग्रेस की समस्यायें

ले०—ज्योतिर्मणि श्री लक्ष्मीप्रसाद डी० ज्योतिषी बी० ए०
३५३ कालबा-देवी रोड, बम्बई—२

[इस भविष्यवाणी के लेखक बम्बई के सुप्रसिद्ध विद्वान् दैवज्ञ हैं। गुजराती ...बई-समाचार' आदि पंचांगों में प्रतिवर्ष आपका वार्षिक भविष्य फल प्रकाशित ...। हिन्दी में पहली बार आपने इस पंचांग के 'रजत-जयन्ती' अंक के लिए यह ...वाणी विशेष रूप से भेजी, अतः 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' आपका आभारी है। ... हिन्दी न होने से आपकी हिन्दी कुछ अटपटी सी थी, उसको हमने शुद्ध ... कर दिया है। आशा है राष्ट्रभाषा हिन्दी-प्रेमी पंचांग-पाठक आपके ... लाभ उठावेंगे। —सम्पादक]

तारीख १४।१५ अगस्त १९४७ रात्रि-१२।१ मिनट पर भारत को स्वतंत्रता ... तारीख २६ जनवरी १९५० को प्रातः स्टे. टाइम १०।१७ को गणतन्त्र ...घोषणा देहली में की गई। दोनों समय की कुंडलियाँ देखनी चाहिएँ। ... की कुंडली का महत्व अधिक है।

...घोषणा तारीख १४।१५ अगस्त १९४७ को रात्रि स्टे० टा० १२।१ बजे सायन लग्न मिथुन १ अंश और दशम बिन्दु कुम्भ १४।३४ है, मिथुन हर्शल २५°, कर्क मंगल ०।३५ और चन्द्र २७ अंश, सिंह बुध ..., प्लुटो १३°, शनि १३°, शुक्र १५° और सूर्य सिंह २१ अंश है। तुला नेफ्च्यून ९°, वृश्चिक गुरु १९° और केतु २८ और द्वादश स्थान में वृष में राहु २८ और श्रीसहम ७ अंश है।

तारीख २६।१।१९५० प्रजा सत्तात्मक भारत की कुंडली में सायन मेष लग्न ५°-५२' और लग्न में राहु १०° वृषभ में चन्द्र ५-४४, कर्क में हर्शल १।४१ वक्री और श्रीसहम ६°, रिपु स्थान में कन्या में शनि १८।४७ वक्री, सप्तम स्थान प्रतिस्पर्धा स्थान में तुला का मंगल ९°, केतु १०° और नेपच्यून १७° वक्री, दशम स्थान मकर ३।४०, मकर में बुध १८।३४ और कुंभ में एकादश स्थान में कुम्भ का सूर्य ५-२०, गुरु १२।२४ और शुक्र १३।५२ वक्री है।

पहली सायन कुंडली १९४७ की है, इसमें लग्न प्रोग्रेस करके हर्शल के साथ युति करेगा। यह योग १९७२ तक सत्तारूढ़ पक्ष को हटाकर नये पक्ष को स्थापित करेगा, या सत्तारूढ़ पक्ष का कलेवर बदल जावेगा। नया खून आगे आवेगा, पुराने खून को अपनी सत्ता छोड़नी पड़ेगी। सन् १९७०—७१ में बड़ी क्रान्ति होने का योग दृष्टिगोचर होता है। शनि का मेष संक्रमण कुंडली का चन्द्रमा सायन कर्क २७ अंश है उसका केन्द्र से प्रसार होगा। यह मंत्रिमंडल के लिये अच्छा नहीं है। खाद्य सामग्री अन्न संकट बना रहेगा। सायन वृष का शनि ता० ३०-४-१९६९ से प्रारम्भ होता है वह बुध प्लुटो शुक्र और सूर्य के केन्द्र में रहेगा यह सत्तारूढ़ पक्ष को कष्ट देगा। सत्ता परिवर्तन का योग भी सम्भव है। इस संक्रमण का प्रभाव १९६९ मई से १९७०।७१ तक रहेगा। गुरु का कन्या तुला और वृश्चिक से संक्रमण भारत की आर्थिक स्थिति को सुधारने वाला है। शुक्र पर से शनि का संक्रमण स्त्री वर्ग के लिये, सत्ताधारी महिलाओं के लिये अच्छा नहीं है, कष्ट पीड़ा करेगा।

प्रजा सत्तात्मक भारत की ता० २६-१-१९५० की कुंडली में शनिदेव का मेष लग्न और मंगल के सामने से प्रसार होना खतरनाक हुआ। १९६७ में दुष्काल जैसी खतरनाक परिस्थिति थी, और १९६९ में शनि महाराज सायन वृषभ में तारीख ३० अप्रेल ६९ को प्रवेश करेंगे। यह चन्द्र वृषभ पर से भ्रमण करेंगे और सूर्य के केन्द्र में रहेंगे। भारत के लिये खेती बाड़ी, बागवानी और स्वास्थ्य की दृष्टि से संक्रमण खराब है, सत्तारूढ़ पक्ष के लिये अशुभ है। उपद्रव बहुत होंगे। राष्ट्रपति प्रधान-मंत्री, गृह-मंत्री के लिये अनिष्टकारक है। यह संक्रमण मई-जून, अक्टूबर नवम्बर १९६९ और जनवरी-फरवरी १९७० में सत्तारूढ पक्ष के लिए संकट सूचक है। राष्ट्रपति, प्रधान-मंत्री के लिये खतरा है।

हर्शल-युरेनस ता० २९-९-१९६९ को सायन तुला में प्रवेश करेंगे और वहां ७ वर्ष तक रहेंगे। यह संक्रमण सप्तम स्थान में से होता है और मूल का मंगल प्रोग्रेस मंगल के साथ युति कर आगे बढ़ेगा, यह युति भारत पर शत्रु पाकिस्तान चीन को भारत के साथ शत्रुता बढ़ाने और आक्रमण करने के लिये उत्तेजित करेगी। यूरेनस का सूर्य से शुभ योग सितम्बर, अक्टूबर १९६९ और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

...जून, जुलाई १९७० में भारत का गौरव बढ़ाने वाला है। सत्ताधारी ... र होवे और शत्रुओं को पराजित करे। स्थल, जल और वायु शक्ति बहुत ... और शत्रुओं को बहुत गहरी शिक्षा देवे। परन्तु १९७० में हर्षल का ...ल की युति में होने से सत्ताधारी पक्ष में फूट होवे और आपस के झगड़ों ...ा छोड़ने के लिये विवश होना पड़े।

... यह प्रतीत होता है कि भारत ...रत के अन्य सब योगों का प्रभाव देखते हुए ... आधुनिक जल और स्थल शक्ति बहुत अच्छी बढ़ेगी, और सेना को श्रेष्ठतम ... ...ों से सज्जित किया जावेगा। शत्रु आक्रमण करने का विचार न करे ऐसी ... ...गी, किन्तु भारत युद्ध का प्रारम्भ अपनी ओर से कभी भी न करेगा, ... की रक्षा के लिये शक्तिशाली प्रत्याक्रमण करके अपनी शक्ति का परिचय ... ...समें फिर कभी शत्रु अपनी तरफ वक्र दृष्टि से देखने का साहस न करे। युद्ध भय ...९७१-७२ पर्यन्त भारत पर युद्ध की नौबत बजती रहेगी। ... और अति ...-७२ पर्यन्त रहेगा। भारत का शासन तन्त्र बहुत खर्चीला है ... आर्थिक परिस्थिति सुधरने न ...ा जनता रहेगा। ... भारत की ... सन् १९७१-७२ में आर्थिक तन्त्र में ... विदेशी मुद्रा का संकट रहेगा। ... करने के लिये नवीन नीति अपनानी ... और ... में कटौती ... अच्छा विकास होगा और जनता को भी ... विद्युत शक्ति, अणु शक्ति का ... सैन्य संगठन में उत्तम परिवर्तन होगा। अस्त्र, शस्त्र ... मिलेगी। ... आवश्यक वस्तुओं का, ... का उत्पादन बहुत अच्छे ... नये-नये कुंवे निकलेंगे, तथा ... भारत में ... का उत्पादन बढ़ेगा ... पेट्रोलजन्य अन्य पदार्थ ... विदेशी मुद्रा का ... लिये जावेंगे। ... के ... इत्यादि उपयोगी ... उन्नति के लिये बहुत अच्छा ... की सहायता में धीरे धीरे कमी होगी ... [illegible]

होकर पूर्व की परम्परा और नाम को उज्ज्वल करेगा। भारत भविष्य में महान शक्तिशाली राष्ट्र बनेगा इसमें संशय नहीं है।

कांग्रेस

इण्डीयन नेशनल कांग्रेस की स्थापना तारीख २८-१२-१८८५ को दोपहर को बम्बई में लोकल टाईम १२ बजे हुई थी। उस समय पूर्व क्षितिज पर सायन मेष लग्न राशि ९ अंश और दशम मध्यान्ह मकर ९° है। चतुर्थ स्थान में कर्क का शनि ४/४६, दशम स्थान में मकर सूर्य ६/४६ और सप्तम स्थान तुला में चन्द्र ४°, गुरु ५°, और हर्षल ७°। यह बड़ा T. Square का योग होना बड़ा खतरनाक है। यह योग कांग्रेस का गुणधर्म नष्ट करना बतलाता है, जो उसने ब्रिटिश राज्य समाप्त करके बतलाया, नई चीज बनाने के लिये यह ग्रहयोग नहीं है। सत्ता के सूत्र २१ साल से हाथ में होने के बावजूद कांग्रेस ने अब तक कोई भी निश्चयात्मक रचनात्मक कार्य नहीं किया है। अस्थिर नीति विचार, विचार-आचरण में भिन्नता, पक्षपात, गुटबन्दी आदि कांग्रेस को समाप्त करने वाली है। कांग्रेस के हाथ से अच्छे नहरें, बांध जलाशय इत्यादि निर्माण कार्य प्रशंसनीय है। कांग्रेस के हाथ से अच्छे कार्य भी हुए हैं, जैसे भाखड़ा नंगल बान्ध, दामोदरघाटी योजना, तटस्थनीति और विदेशों में भारतीय गौरव को बढ़ाना। किन्तु कांग्रेसजनों की धनलोलुपता, लोभ प्रभुत्वाकांक्षा, लखपति-करोड़पति बनने की लालसा इसे पतन के गर्त में धकेल रही है। १९६८ अक्टूबर से हर्षल का तुला में संक्रमण कांग्रेस के सप्तम स्थान में होगा। यह १९६९-७० में कांग्रेस को नष्टप्राय स्थिति में पहुँचावेगा। कांग्रेस समाप्त ही जावेगी, या उसका कलेवर बदल जावेगा। हर्षल का गुण पुराने का नाश कर नया बनाना है। सन् १९६९ से १९७१ पर्यन्त और खास करके १९७० में राजसत्ता में बहुत बड़ी क्रान्ति आ रही है। इस क्रान्ति के बाद भारत सुखी होगा। आंग्ल ज्योतिर्विद् सेफारियल साहब ने कांग्रेस की आयु ८५ वर्ष की मानी है। इस प्रकार कांग्रेस को १९७० में ८५ वर्ष पूरे होंगे। भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाली यह राष्ट्रीय संस्था स्वयं अपने ही लोभी लालची सत्तालोलुप सदस्यों के हाथों नष्ट हो जावेगी यह महान् दुःख की बात है। विरोधी साम्यवादी पक्ष जो न कर सका वही कार्य स्वयं कांग्रेस के अपने ही जन करेंगे। प्रकृति बलवान् है।

पाश्चात्य राष्ट्र

अमेरिका में काले और गोरे का ... वाला है। ... तो केनेडी ... की हत्या होना संभव है। ... प्रारम्भ हो चुका है। ... ... १९८१ तक यह प्रश्न ... धारण करेगा। ... क्योंकि आर्थिक कठिनाई रहेगी, तो अमेरिका की विदेश नीति असफल होगी। ... विचित्र आवेंगे। वियटनाम ... शक्तिशाली राष्ट्र होगा। ... के परिणाम ... निधि पर विपरीत प्रभाव ... में अमेरिका की प्रतिष्ठा को हानि पहुँचेगी। ... ब्रिटेन की आर्थिक व्यवस्था ... होगा। अमेरिका और ब्रिटेन की ... [illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

...ल रहेगा। रूस म राज्य-क्रान्ति परिवर्तन होने का योग है। जापान में आर्थिक ...द्धि बढ़ेगा, किन्तु भूकम्प समुद्री तूफान आंधी से हानि होगी। बृटेन में बर्फीले ...ी से नुकसान होगा।

पाकिस्तान के लिये समय अच्छा नहीं है। सन् १९७०-७१ में पाकिस्तान का ...तत्व मय में रहेगा। चीन में बहुत बड़ी राजनैतिक घटना घटित होगी। चीन ...ीति में बड़ा परिवर्तन १९७१-७२ के बाद होगा। साम्यवाद नष्ट होगा।

...ये वर्ष की समस्याओं पर शास्त्रीय दृष्टि

...केन्द्र में कांग्रेस की सत्ता कब तक? मध्यावधि चुनाव का परिणाम

—श्री पं० मनुभाई प्र. शुक्ल ज्योतिषाचार्य, अर्थशास्त्रज्ञ, पाटड़ी सौराष्ट्र]

[इस लेख के विद्वान् लेखक सौराष्ट्र गुजरात के प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य हैं, ... समर्घ (तेजी मंदी) पर आपने विशेष अनुसंधान किया और गुजराती भाषा ...छ बहुमूल्य ग्रन्थ भी प्रकाशित किये हैं। श्रीविश्वविजय-पञ्चांग की रजत ...ी पर आपने यह विशेष लेख भेजा जो पाठकों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। ...भाषा गुजराती होने से हिन्दी आपकी अटपटी सी थी उसका संशोधन भावार्थ ...क्षित रखते हुए किया है। —सम्पादक]

इस वर्ष पूर्व दिशा, अग्निकोण व उत्तर विभाग में अशान्ति रहेगी। ...र्मी बंगाल में मध्यावधि चुनाव की अवधि नवम्बर से आगे बढ़ेगी। इस वर्ष ...थम छः मास पश्चिमी बंगाल में साम्यवादी दंगे, फिसाद, घेराव इत्यादि से ...ही अनिष्ट फलदायक हैं। बंगाल का मुख्य उद्योग शण, पाट, जूट में खतरा ...ेगा। जहां जहां खेती, पैदावर की सिंचाई, कुंए, ट्यूबवेल के पानी से ... है वहां फसल सुरक्षित अच्छी होगी। उत्तर भारत में हिमालय प्रदेश में ...त से वायुमण्डल पर खराब असर पड़ेगा और पश्चिमी भारत की इस वर्ष ...ी हानि पहुंचेगी। वहां कपास, तम्बाकू व चने की फसल को क्षति पहुंचेगी। चावल गेहूं के भावों में जैसे जैसे वर्ष आगे बढ़ेगा महंगाई भी बढ़ती ... । फाल्गुन तक मंदी रहेगी, बाद में भावों की चाल आगे बढ़ती रहेगी। इस ...मंगल ग्रह वृश्चिक राशि में ११-२-६९ से १०-९-६९ तक रहेगा। वृश्चिक ...ण राशि मानी गयी है। तरुणावस्था को प्राप्त जीवों में अत्यधिक अशान्ति ...इस उग्रावस्था को नियन्त्रित करने का यत्न हो यह राष्ट्र के बुद्धिमान् पुरुषों ...र होना चाहिये। वृश्चिक राशि जलतत्व की राशि होने के कारण राष्ट्र ...र में जल का प्रश्न, समुद्री व्यापार, नदी व समुद्र के किनारे बसने वाले ...वक वर्ग को कष्ट सहना पड़े। समुद्र जल को कृषि व पीने योग्य बनाने के ...करण का कार्य जोरों से आगे बढ़ेगा। केमिकल्स, छोटे धान्य (तुअर, अरहर उर्द) इस्पात, पारा, बीया, चपड़ा, गुग्गुल, गुड़ में काफी तेजी वर्ष ...ग में चलेगी।

भारत का आर्थिक ... वर्ष ... लिये ... , रहेगी, किन्तु मेष प्रवेश काल की कुंडली में मंगल ... स्थान में स्वगृही होने के कारण ... रत अपनी आर्थिक कठिनाइयां हल करने में यशस्वी रहेगा। विकास व्यापार वृद्धिगत होगा, आयात व्यापार घटाने का भारत का उद्देश्य फलदायक रहेगा। विदेश का देनदारी पूर्णतया चुकती न होगी। भारत के व्यापार में सहकारी पद्धति से वृद्धि होगी व पुरानी पद्धति से व्यापार करने वाले वर्ग को कम लाभ का दुःख रहेगा। मेष प्रवेश काल की कुंडली में चन्द्र पंचम स्थान में, प्लूटो व ... घनेशतम सप्तमेश से पूर्ण दृष्ट हैं। गुरु वक्र गति से व्यय में बैठा हुआ हर्षल, केतुस युक्त रह का लग्नेश व अष्टमेश शुक्र को देख रहा है। सप्तमस्थ शनि नीच होता हुआ भी लग्न-बली होते हुए चतुर्थ भाव में अपनी मकर राशि को गुरु के साथ देख रहा है; मातृ बताता है कि भारत में खेती आधुनिक यन्त्रों से सुधरे हुए बीज से उत्तम प्रगति करेगी, व स्वाश्रयी बनने में कृतनिश्चयी फल प्राप्त कर कृषि उत्पादन बढ़ेगा। शियालू खेती का उत्पादन लगभग उच्च स्तर पर रहेगा। पीने के पानी और घास चारे की तकलीफ अगस्त के दिनों में पश्चिम भारत में उग्रता धारण करेगी, किन्तु प्रत्येक पुरुषार्थ से प्रश्न हल किया जावेगा। सप्तम भाव में शनि बुध सूर्य होने के कारण व्यवस्थापक तन्त्र विदेशी राष्ट्रों के साथ के व्यवहार में यश उन्नति प्राप्त करेगा और भारत का विश्व से राजकीय, व्यापारिक आर्थिक क्षेत्र में बर्ताव अच्छा रहेगा। चीन, पाकिस्तान सरीखे पड़ोसी राष्ट्र की दुर्नीति सफल नहीं होगी। पाकिस्तान में इस वर्ष में राष्ट्रप्रमुख का चुनाव आ रहा है। चीन व पाकिस्तान के राष्ट्र-प्रमुखों के लिये समय प्रतिकूल होता जा रहा है। पाकिस्तान भारत की किसी सीमा में आक्रमण बड़े पैमाने पर कर नहीं पावेगा, मगर जासूसी व गुरिल्ला कारगुजारी से भारत के पूर्वीय भाग, उत्तरीय भाग काश्मीर में कठिनाई उपस्थित करेगा। भारत की कन्या राशि-जन्म राशि गिनते हुए वृश्चिक राशि तीसरे स्थान में आती है। यहां पर मंगल दीर्घ काल तक भ्रमण करता है, इसलिये भारत की सीमायें किसी राष्ट्र से पददलित नहीं होंगी।

रक्तचाप, रक्तविकार, हैजा जैसे रोगादि से भारतीय प्रजा बहुत कष्ट पावेगी और मरणासन्न होगी।

भारत में कांग्रेसी प्रधान-मंडल अग्नि-परीक्षा से अवश्य गुजरेगा मगर इसके भंग होने की मेरी कोई मान्यता नहीं है। भारत की अन्न समस्या वर्ष के अन्तिम भाग में कठिनाई उपस्थित करेगी। विदेश से आशान्वित अन्न सामग्री मिल नहीं सकेगी। भारत की कन्या राशि में गुरु का भ्रमण होने के कारण भारत की प्रजा इस वर्ष में अधिकाधिक मानवता पूर्ण व्यवहार के लिये उत्सुक बनेगी। पाक या चीन की ओर से खुल्लमखुल्ला कोई गति विधि नहीं होगी, मगर वह पहाड़ी जातियों से मिलकर अव्यवस्था उत्पन्न करने में सफल होंगे। मध्यावधि चुनावों में हरएक राज्य में कांग्रेस ही यश प्राप्त कर मंत्रिमंडल बना सकेगी *

* यहां हमारा मतभेद है। मध्यावधि चुनावमें सब राज्योंमें कांग्रेस सफल नहीं होगी, जहां सफलता मिलेगी वहां भी स्थायी सुदृढ़ मंत्रिमंडल नहीं बन सकेगा। —सम्पादक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection